श्री महावीर ग्रन्थमाला—द्वितीय पुष्प

★ प्रशस्ति-संग्रह ★

प्रबन्धकारिणी कमेटी

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

जयपुर



(आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर के संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की ग्रन्थ तथा लेखक-प्रशस्तियों का अपूर्व संग्रह)

☆

सम्पादक:—

श्री कस्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., शास्त्री

प्रकाशक:—

बधीचन्द गंगवाल

मंत्री—

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी

महावीर पार्क रोड

ज य पु र

प्रथमावृत्ति
४०० प्रति

श्रावण वीर निर्वाण सं० २४७६
वि० सं० २००७
अगस्त १९५०

मूल्य
छह रुपया

पुस्तक—प्राप्ति स्थान

१—मंत्री कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर पार्क रोड जयपुर (राजस्थान)

२—क्षेत्र कार्यालय

श्री दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी [जिला जयपुर]

8637

मुद्रक—

भंवरलाल जैन न्यायतीर्थ,

श्री वीर प्रेस,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर।

दो शब्द

—:o:—

यह लिखते हुये अत्यधिक दुःख एवं वेदना होती है कि आज भा० रामचन्द्रजी खिन्दूका मन्त्री अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी इस संसार में नहीं रहे। यदि वे होते तो वे ही इस पुस्तक के प्रकाशक बनते। इस प्रशस्ति-संग्रह को शीघ्र प्रकाशित देखने की उनकी अतिशय उत्कंठा थी। लेकिन काल के सामने किसी की भी नहीं चली, यही सोच कर सन्तोष कर लेना पडता है। श्री खिन्दूकाजी के हृदय में साहित्य प्रकाशन की कितनी प्रबल इच्छा थी-यह उनके प्रकाशकीय वक्तव्य से अच्छी तरह जाना जा सकता है। राजस्थान के जैन भण्डारों की विस्तृत सूची बनाने के वृहद् कार्य को प्रारम्भ तो वे कर गये; लेकिन दुःख है कि वे इसे पूर्ण नहीं देख सके। अब हमें साहित्य प्रकाशन के इस पवित्र कार्य को और भी तेजी के साथ करना है जिससे उनकी स्वर्गीय आत्मा को भी शान्ति मिल सके। मैं आशा करता हूं मुझे समाज का अधिक से अधिक सहयोग मिलेगा जिससे राजस्थान के अज्ञात अवस्था मे पडे हुये साहित्य को प्रकाश मे लाया जा सके।

बधीचन्द गंगवाल

जयपुर — मंत्री—प्रबन्ध कारिणी कमेटी

ता० २१-७-५० — दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषत: जयपुर प्रान्त मे दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पड़ा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान है, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की बाट देख रहा है। राजस्थान में उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान में रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारों की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमें उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों में गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थो की प्रशस्तियों का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड़ दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय मे काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह में मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने में काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज मे कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त प० अखयराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बड़ी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा में जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था में है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा में श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहब मुख्तार देवबंद वालों से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी मे लाने तथा वही बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा—ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध में घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दरजा

मानती है, नित नये मन्दिर तथा नयी प्रतिमाओं का निर्माण कराती हैं और लाखों रुपया मेले प्रतिष्ठादि कार्यो मे प्रतिवर्ष व्यय करती है, उस समाज के लिये किसी एक ग्रंथ की १००० कापी भी नहीं खरीद सकना कितनी लज्जा की बात है। इस तरफ समाज का लक्ष्य होना ही चाहिये। यदि नये प्रकाशित ग्रन्होने वाले थों की १००० प्रतियों मे से ५०० भी ग्रन्थ के छपते ही बिक जावें तो भी बहुत से ग्रन्थों का उद्धार हो सकता है इसलिये समाज से मेरी नम्र प्रार्थना है कि जो भी ग्रन्थ प्रकाशित हों उसकी एक एक कापी हर एक शास्त्र भण्डार तथा पंचायती मन्दिरो मे अवश्य विराजमान करें — जैन धर्म की स्थिरता एवं उन्नति का यह सबसे बडा साधन है। आशा है कि हमारी धर्मप्राण समाज इस तरफ अवश्य ध्यान देगी और साहित्य प्रचार के पवित्र कार्य मे सहयोग देकर साहित्य सेवियों का उत्साह बढावेगी

विनीत
रामचन्द्र खिन्दूका
मंत्री प्र० का० कमेटी
दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

जयपुर
ता० १-६-५०

प्रस्तावना

प्राचीन काल में मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पत्रों (ताम्रपत्र व ताडपत्र) तथा कागजों पर हाथ से लिख लिख कर ही अपने साहित्य एवं ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत में सैकड़ों एवं हजारों विद्वानों ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगों को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के इस युग में शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एवं गांव मे मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यो ने दान के चार भेदों में शास्त्रदान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन में उतारा। जिस तरह मन्दिरों को बनवाने एवं प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाने मे पुण्यलाभ बतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारों को भेंट करने में भी कम पुण्यलाभ नहीं बतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं में रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यों के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमें प्रत्येक मन्दिर में शास्त्रभण्डार के दर्शन होते हैं अन्यथा हजारों वर्षों से राज्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा में नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यों के इस उपदेश को अक्षरशः पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुत भाग इस पुण्य कार्य में भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने में साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रों की प्रतिलिपियां करवाकर उसका अत्याधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकांश अपभ्रंश एव हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एव भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तियां इस सग्रह में दी गई हैं। एक तो वे जो स्वयं कवि अथवा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा लिखी गयी हैं तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी हैं। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति में कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहां के शासक का परिचय आदि दिये हुये होते हैं। लेखक प्रशस्ति में सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहां के शासक का नाम, उसके पश्चात् भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, इसके पश्चात् लिपि करवाने वाले का विस्तृत वंश परिचय, लिपि किस निमित्त से करायी गयी और अन्त में लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति में निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्त्ता जब साधु अथवा भट्टारक होते हैं तो वे अपना वंश परिचय नही लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते है उसका ही परिचय लिखते हैं। संस्कृत ग्रन्थों की अधिकांश ग्रन्थ प्रशस्तियां इसी

प्रकार की हैं। यही नहीं किन्तु इनके लेखकों ने श्रावकों के अनुरोध का भी बहुत कम उल्लेख किया है। इस दिशा में अपभ्रंश ग्रन्थों की प्रशस्तियां बड़े महत्त्व की हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में कवियों अथवा ग्रन्थकर्त्ताओं ने अपने परिचय से भी अधिक उन श्रावकों का परिचय लिखा है जिनके अनुरोध से उन्होंने ग्रन्थ का निर्माण किया था। उदाहरणार्थ महाकवि श्रीधर ने अपने पार्श्वनाथ चरित्र में श्रावक नट्टल साहू का जो सुन्दर वर्णन लिखा है वह पठनीय है। श्रीधर ने ही नहीं किन्तु महाकवि पुष्पदन्त और नयनन्दि, श्रीचन्द, यशःकीर्ति, धनपाल, रइधू, माणिक्कराज आदि सभी ने श्रावकों का बड़ा ही सुन्दर परिचय लिखा है। इस प्रकार हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियां भी कम महत्त्व की नहीं हैं। अधिकांश प्रशस्तियों में कवियों और लेखकों ने अपना अच्छा परिचय लिखा है। हिन्दी और अपभ्रंश भाषा में ग्रन्थ समाप्ति का भी समय प्राय सभी लेखकों ने दिया है।

इन सबके अतिरिक्त ग्रन्थ प्रशस्तियों में ग्रन्थकारों ने अपने पूर्ववर्त्ती आचार्यों, लेखकों का भी नामोल्लेख किया है जो बड़े महत्त्व का है। इन पूर्ववर्त्ती आचार्य-लेखकों का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थ में कम एवं अपभ्रंश साहित्य में अधिक हुआ है। संस्कृत ग्रन्थों में पूर्ववर्त्ती आचार्यों का उल्लेख करने वालों में ज्ञानभूषण, नेमिदत्त एवं श्रुतसागर आदि प्रमुख हैं तथा अपभ्रंश साहित्य में नयनन्दि, श्रीचन्द, हरिषेण, कनकामर तथा धनपाल आदि प्रमुख हैं। महाकवि धनपाल ने तो नामोल्लेख के अतिरिक्त उन आचार्यों की कृतियों का भी उल्लेख किया है। महाकवि नयनन्दि ने अपने सकलविधि विधान काव्य में जैनेतर विद्वानों के नामों का भी उल्लेख किया है जो इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व की वस्तु है। जैनेतर विद्वानों के नामों में वररुचि, वामन कालिदास, मयूर, श्रीहर्ष, शेखर, पतंजलि आदि प्रमुख हैं। संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में किसी किसी ग्रन्थकर्त्ता ने अपनी अन्य २ कृतियों का भी उल्लेख किया है और इस दिशा में भट्टारक शुभचन्द्र प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रह में केवल आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर में उपलब्ध शास्त्रों की प्रशस्तियों का ही संग्रह है। भण्डार में सभी प्रतियां कागज पर ही लिखी हुई हैं। संवत् १३९१ में लिखित प्रति भण्डार में सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति है। इस भण्डार के शास्त्रों की प्रतिलिपियां भारत के प्रायः सभी ग्राम व नगरों में लिखी गयी हैं और फिर वहां से इस भण्डार को भेंट स्वरूप दी गयी हैं। दक्षिण में बीजवाड़ा तथा सिकन्दराबाद, उत्तर में लाहौर तथा मुल्तान, पूर्व में ढाका और पश्चिम में गुजरात आदि प्रान्त एवं नगरों में लिखित प्रतियों का भण्डार में संग्रह है। इससे इस भण्डार की महत्ता को काफी अच्छी तरह से समझा जा सकता है। साधारण रूप से दिल्ली आगरा, नागपुर, ग्वालियर तथा जयपुर प्रान्त में लिपिबद्ध प्रतियों का संग्रह है। बैलगाड़ियों के उस युग में तथा मुगलों के कठोर शासन में भी श्रद्धालु श्रावकों ने जैन साहित्य की कितनी वृद्धि की तथा उसे सुरक्षित रखा यह हमारे लिये कितने गौरव की बात है।

भाषा के अनुसार प्रशस्तियों को तीन भागों में बांटा गया है प्रारम्भ में संस्कृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं, तत्पश्चात् प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा की प्रशस्तियां आती हैं तथा अन्त में हिन्दी ग्रन्थों की प्रशस्तियों का संग्रह है। ग्रन्थ प्रशस्ति के साथ लेखक प्रशस्ति भी लगा दी गयी है जिससे ग्रन्थ की कितनी प्रतियां कब और कहां कहां हुईं इस परिचय के साथ २ ग्रन्थ निर्माण के समय का भी अनुमान लगाया जा

मकता है। अब तीनों भागों का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सकलकीर्ति, शुभचन्द्र, सकलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोमकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आधार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने साधु अवस्था धारण करने के पश्चात् ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी साधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एवं कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

प्राकृत अपभ्रंश- विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जैनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जैनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्रायः सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदंत, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द, हरिषेण, अमरकीर्ति, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रइधू, माणिक्कराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इसके पश्चात् भी रइधू, यशःकीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्कराज ने १६वीं शताब्दी तक इस भाषा में खूब साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्रायः सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उस समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तिया प्रायः सभी विशद एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विशद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे इसलिये इन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी अच्छा परिचय लिखा है। आमेरशास्त्र भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे आगे है। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य

भण्डारों में अभी तक नहीं मिली है अथवा जिनकी भारत में एक दो प्रतियां ही हैं। इनमें सकलविधि विधान (नयनन्दि) बाहुबलि चरित्र (धनपाल) तथा परमेष्टि प्रकाशसार (श्रुतकीर्त्ति)—आदि उल्लेखनीय हैं। भण्डार में प्राकृत साहित्य तो काफी मात्रा में है किन्तु प्राकृत ग्रन्थों की प्रशस्तियां बहुत ही कम हैं—इसीलिये इनका अधिक संग्रह नहीं किया जा सका।

हिन्दी विभाग—

हिन्दी भाषा की इन पुस्तकों की प्रशस्तियों का संग्रह किया गया है। १५वीं शताब्दी से पूर्व की भण्डार में कोई रचना नहीं है। भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा निर्मित 'आराधनासार प्रतिबोध' प्रशस्ति संग्रह में हिन्दी की सबसे पुरानी रचना है। १६वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में जिनदास भट्टारक ज्ञानभूषण, धर्मदास चतुरुमल एवं ठक्कुरसी की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में धर्मोपदेश, श्रावकाचार (धर्मदास) तथा पंचेन्द्रिय बेल (ठक्कुरसी) दो रचनायें भाषा और शैली की दृष्टि से भी उत्तम हैं। १७वीं शताब्दी में पद्य के साथ साथ गद्य के भी दर्शन होते हैं। पांडे राजमल्ल कृत समयसार भाषा की रचना संवत् १६०० के आस पास हुई थी। इस रचना में हमें आज से ४०० वर्ष पूर्व की हिन्दी गद्यशैली के दर्शन होते हैं। अखयराज कृत चतुर्दशगुणस्थानचर्चा आदि कृतिया भी इसी शताब्दी की रचनायें हैं। १७वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों में ब्रह्म रायमल्ल बनारसीदास, रूपचन्द, त्रिभुवनदास, कुमुदचन्द्र आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों की कृतिया सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। १८वीं शताब्दी में गद्य साहित्य खूब लिखा गया। ऐसा मालूम पड़ता है कि जन साधारण में गद्य की ओर रुचि बढ़ रही थी। गद्य लेखकों में पांडे रूपचन्द, हेमराज, दीपचन्द कासलीवाल आदि हैं। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद ही नहीं किया, किन्तु दीपचन्दजी ने तो स्वतन्त्र रचनायें भी लिखीं। इसी प्रकार इस शताब्दी में पद्य साहित्य में भी उत्कृष्ट रचनायें मिलती हैं। इनमें भैय्या भगवतीदास एवं भूधरदास आदि की रचनायें उल्लेखनीय हैं। इसके आगे की रचनायें भण्डार में बहुत ही कम हैं तथा उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं है।

भट्टारक इतिहास—

जैन साहित्य के निर्माण में भट्टारकों का प्रमुख हाथ रहा है। प्राचीन काल में इनका अधिकांश समय साहित्य निर्माण में ही व्यतीत होता था। एक एक भट्टारक की अधीनता में बहुत से शिष्य रहा करते थे। इनका कार्य पठन पाठन के अतिरिक्त ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना भी होता था। भट्टारक गण श्रावकों को उत्साहित एवं प्रेरित किया करते थे जिससे श्रावकगण प्रायः व्रतविधान समाप्त करने पर अथवा अन्य समय पर ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करवा कर शास्त्र भण्डारों को भेंट करते थे। जब कोई भट्टारक नवीन रचना का निर्माण करते तब तो उसमें अपने से पूर्व के प्रायः सभी प्रमुख भट्टारकों का परिचय लिखते थे। यही नहीं, किन्तु जब उनके शिष्य भी किसी ग्रन्थ की प्रतिलिपि करते तब भी अपने गुरु भट्टारक की परम्परा का उल्लेख करते थे। प्रशस्ति-संग्रह में इस सम्बन्ध में काफी साहित्य मिलता

है। संग्रह में अधिकांश प्रशस्तियां एवं लेखक-प्रशस्तियां आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय में होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती है। यद्यपि इनमें भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है, उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्त्ति के सभी पट्टधर शिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त सेनगण, पुष्करगण एवं विद्यागण में होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

जैन समाज की प्रमुख जातियां—

उत्तर भारत में खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रक्षा एवं वृद्धि में विशेष हाथ रहा है। राजस्थान में प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहां के साहित्य निर्माण एवं प्रचार का अधिकांश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों में व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल मे अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीधर ने १२वीं शताब्दी की रचना में जिस नट्टल साह की प्रशंसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंचाल, सिंधु, गौड़ आदि सभी देशों में व्याप्त था। महा पंडित रइधू ने अपनी अधिकांश रचनायें इसी जाति मे उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनों जातियों के अतिरिक्त बघेरवाल, श्रीमाल, पुरवाल, लमेचू, जैसवाल आदि जातियों में उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेट दिया हुआ साहित्य भी काफी संख्या मे मिलता है। इसी प्रकार इच्वाकु, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वंश के एवं कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-संग्रह मे आये हुये आचार्य-लेखकों एवं कवियों का अति संक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जारहा है—

संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सुविख्यात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यों में आप अग्रगण्य हैं। आपके जीवन के सम्बन्ध में अनेक कहानियां प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल में आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे अजेय एवं उत्कर्षमय बना दिया। आपने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इनकी राजवार्तिक, अष्टशती, न्यायविनिश्चयालंकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।

आप ६वीं शताब्दी के महा विद्वान थे।

२. अमितिगति—परमारवंश के राजाओं से सम्मानित विद्वानों में इनका विशेष स्थान माना जाता है। ये माथुरसंघ के आचार्य थे तथा माधवसेन के शिष्य थे। इन्होंने सुभाषितरत्नसंदोह (१०५०), धर्मपरीक्षा (१०७०) पंचसंग्रह (१०७३), उपासकाचार, सामायिकपाठ, भावनाद्वात्रिंशिका एवं योगसार प्राकृत आदि ग्रन्थों की रचना की है। इनकी भाषा काफी प्रौढ एवं उच्चकोटि की है।

३. आशाधर—ये मूल निवासी माण्डलगढ़ थे लेकिन शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमणों से त्रस्त होकर धारा नगरी में आकर रहने लगे थे। ये बघेरवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम सल्लक्षण, माता का नाम श्री रत्नी, पत्नी का नाम सरस्वती एवं पुत्र का नाम छाहड था। आशाधर जीवन भर गृहस्थ रहे और इसी अवस्था में रह कर इन्होंने अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इनका काव्य, न्याय, सिद्धान्त, अलंकार, योगशास्त्र एवं वैद्यक आदि सभी विषयों पर अधिकार था। इन्होंने २० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की। आशाधर ने जैन साहित्य पर ही कलम नहीं चलायी किन्तु जैनेतर साहित्य पर भी अपने पांडित्य की अमिट छाप छोडी और अष्टांगहृदय, काव्यालंकार, अमरकोष जैसे ग्रन्थों पर टीका लिखी। जैन ग्रन्थों में जिनयज्ञकल्प, सागार और अनगारधर्मामृत त्रिषष्टिस्मृतिशास्त्र आदि ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, शेष प्रमेयरत्नाकर, भरतेश्वराभ्युदय, ज्ञानदीपिका, राजमतीविप्रलंभ, अध्यात्मरहस्य, काव्यालंकार टीका, अष्टांगहृदय द्योतिनी टीका अभी तक अप्राप्त ही हैं। आप १३वी शताब्दी के उत्कृष्ट विद्वान माने जाते हैं।

४. श्री कृष्णदास—कवि लाहौर के निवासी थे। लेकिन ग्रन्थ को काल्पवल्ली नगर में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम हर्ष था जो तत्कालीन व्यापारियों में बडे प्रसिद्ध थे। काष्ठासंघ से इनका सम्बन्ध था और रत्नभूषण इनके गुरु थे। श्री पूरमल्ल के आग्रह से इन्होंने मुनिसुव्रत पुराण की रचना की थी। इनके छोटे भाई का नाम मंगलदास था।

५. गुणसुन्दर—इन्होंने संवत् १४२६ में भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति लिखी थी। ये आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका सम्बन्ध कृपल्लीय गच्छ से था।

६. गुणाकर सूरि—इन्होंने संवत् १५०४ सम्यक्त्व कौमुदी की रचना की थी। कवि ने अपने आपको चैत्रगच्छ से सम्बन्धित बतलाया है।

७. गुणभद्राचार्य—भगवज्जिनसेनाचार्य के समान गुणभद्र भी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान थे। इन्होंने आदिपुराण को ही पूरा नहीं किया किन्तु उत्तरपुराण, आत्मानुशासन और जिनदत्तचरित्र की भी रचना की। इनका समय विद्वानों ने शक संवत् ७८० से ८२० से पूर्व तक निश्चित किया है।

८. चन्द्रकीर्ति—सारस्वत व्याकरण के टीकाकार हैं। नागपुरीय तपोगच्छ के आप अधिनायक आचार्य रहे थे। संवत् ११७४ के पश्चात् होने वाले सभी आचार्यों का आपने स्मरण किया है। इस गच्छ के

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम सुबोधिका टीका है।

९. **चन्द्रकीर्ति**—काष्ठासंघ मे होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा मे ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पास रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१० **चारित्रसुन्दरगणि**—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र सूरि को स्मरण किया है उनके पश्चात् होने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. **जिनसेनाचार्य**—हरिवंश पुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम कीर्तिषेण एव दादा गुरु का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर में शके संवत् ७०५ में समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों मे सर्वोपरि है। इसका ग्रन्थ परिमाण बारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गो में समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वे सर्ग मे भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्पर का उल्लेख किया है।

१२. **ज्ञानकीर्ति**—यशोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्ति यति वादिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नानू के आग्रह से की थी। नानू उस समय बंगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्मेद शिखर की यात्रा पर गये तो वहां इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि स्वयं बंगाल प्रान्त के अकब्बरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने ग्रन्थ को संवत् १६५९ में समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेंट किया था।

१३. **ज्ञानभूषण**—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रशिष्य एव भुवनकीर्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के अच्छे विद्वान थे। इनका मूल निवास स्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक बनने के पश्चात् अहीर, बागड़, तौलव, तैलंग द्राविड़, एव महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तो और गांवों में ही विहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत मे भी घूम २ कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञान-तरंगिनी सुन्दर एव सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एवं कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा मे भी आपकी कई रचनाये मिलती हैं इनमे आदीश्वरफाग उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल संवत् १५६० है।

१४. **धर्मकीर्ति**—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) में की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेकप्रशस्तियों मे हुआ है। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को संवत् १६६९ में समाप्त किया था। संवत १६७० की प्रति में लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक बने थे।

१५. **आचार्य नरेन्द्रसेन**—इन्होंने सिद्धान्तसारसंग्रह की रचना की है। आप वीरसेन के प्रशिष्य एव गुणसेन के शिष्य थे।

१६. प्रभाचन्द्र—परमार नरेश भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजा जयसिंहदेव के शासन काल में इन्होंने साहित्य निर्माण किया था। इन्होंने प्रमेयकमलमार्त्तण्ड एवं न्यायकुमुदचन्द्र जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। महाकवि पुष्पदंत के आदिपुराण और उत्तरपुराण पर टिप्पणी लिखी है। इनके अतिरिक्त जैनेन्द्र व्याकरण, शब्दाम्भोजभास्कर, रत्नकरण्डटीका, क्रियाकलापटीका समाधितंत्रटीका, आत्मानुशासनतिलक, द्रव्यसंग्रह पंजिका, प्रवचनसरोजभास्कर, सर्वार्थसिद्धि टिप्पण आदि रचनायें भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

१७. कायस्थ पद्मनाभ—कायस्थ जाति मे होने वाले जैन कवियों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपने महामुनि गुणकीर्ति के उपदेश से तोमर वंश मे उत्पन्न राजा वीरमेन्द्र के शासन काल में रचनायें की थीं। वीरमदेव के महामात्य श्री कुशराज थे और इन्होने ही पद्मनाभ को यशोधर की रचना करने के लिये उत्साहित किया। ग्रन्थ तैयार होने के पश्चात् संतोष नाम के जैसवाल ने उसकी बहुत प्रशंसा की तथा विजयसिंह जैसवाल के पुत्र पृथ्वीराज ने उक्त ग्रन्थ की अनुमोदना की थी। पद्मनाभ ने कुशराज के वंश का विस्तृत परिचय दिया है। कवि ने यशोधरचरित्र को १५ वीं शताब्दी के प्रथम काल मे लिखा था।

१८. भगवज्जिनसेनाचार्य—ये हरिवंशपुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन से भिन्न आचार्य है। इनके गुरू का नाम आचार्य वीरसेन था। जिनसेन अपने समय के महान विद्वान एवं सिद्धान्त के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। इन्होंने धवला और जय धवला की टीका को पूर्ण करके जैन समाज का महान उपकार किया है। इन टीकाओं के अतिरिक्त आदिपुराण एवं पार्श्वाभ्युदय की भी रचना की। आचार्य महोदय ने आदिपुराण को पूर्ण करने से पहिले ही संसार से विदा ले ली किन्तु आपके महान् कार्य को योग्य एवं प्रतिभाशाली शिष्य आचार्य गुणभद्र ने पूरा किया। आदिपुराण उच्च श्रेणी का प्रथमानुयोग महाकाव्य है।

१९ पं० मेधावी—श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे। धर्मसंग्रहश्रावकाचार को हिसार नगर में प्रारम्भ करके नागपुर मे संवत् १५४१ मे समाप्त किया था। उस समय नागपुर पर फिरोजशाह का शासन था। मेधावी ने श्रावकाचार की समन्तभद्र, वसुनन्दि एवं आशाधर कृत श्रावकाचारों के अध्ययन के पश्चात् रचना की थी।

२०. रामचन्द्र मुमुक्षु—पुण्याश्रवकथाकोष के कर्त्ता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु मुनि केशवनन्दि के शिष्य थे। पुण्याश्रवकथाकोष का जैन समाज मे बहुत अधिक प्रचार है। इनके वंश परम्परा के सम्बन्ध मे अधिक परिचय नहीं मिलता है।

२१. रत्नमन्दिरगणि— भोजप्रबन्ध के कवि श्री रत्नमन्दिर गणि तपोगच्छ के साधु थे। इनके गुरू का नाम सोमसुन्दरगणि था। इन्होंने अपनी रचना को संवत १५१७ मे समाप्त किया था।

२२. वादिचन्द्र— ज्ञानसूर्योदय नाटक के कारण वादिचन्द्र जैनसमाज मे बहुत प्रसिद्ध हैं। उक्त नाटक की रचना प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर की गई है। ज्ञान सूर्योदय को इन्होंने संवत् १६४८ में समाप्त किया था तथा इसके पश्चात् यशोधरचरित्र को संवत् १६५७ मे रचा। इनका पवनदूत नामक एक खण्ड

काव्य भी है जिसकी पद्य संख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. विवेकनन्दि—इनका जन्म बघेरवाल जाति में हुआ था । इनके नाना श्री नारसिंह तथा माता निजोणी थीं । त्रिभंगीसार की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा में लिखी उसके पश्चात् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत में टीका का निर्माण किया था ।

२४. ब्रह्म कामराज—इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की । कवि ने सकलकीति की भट्टारक परम्परा में होने वाले भट्टारकों की अच्छी नामावली दी है । प्रशस्ति में इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है । पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर में स्थापित किया ।

२५. ब्रह्मजिनदास—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे । अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनायें लिखी हैं । संस्कृत में इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की है जिनमें हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जम्बूस्वामी चरित्र, हनुमच्चरित्र, व्रतकथा कोष आदि उल्लेखनीय हैं । हिन्दी में आदिनाथपुराण, श्रेणिकचरित्र, सम्यक्त्वरास, यशोधररास, धनपालरास, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं । इन पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव झलकता है ।

२६. ब्रह्म नेमिदत्त—ये अग्रवाल जाति के थे । गोयल इनका गोत्र था । मालव देश में आशानगर के रहने वाले थे । भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे । सवत् १५८५ में इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शांतिदास के अनुरोध से रचना की थी । इसके अतिरिक्त सुदर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है । सुदर्शनचरित्र में इन्होंने ग्रथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मालूम पड़ता है कि सुदर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी ।

२७. ब्रह्मरायमल्ल—हूंवड़ जाति में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम महीय एव माता का नाम चपा था । समुद्र तट पर स्थित ग्रीवापुर में इन्होंने भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था । संवत् १६६७ में रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है ।

२८. ब्रह्मजित—सुरेन्द्रकीर्त्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे । आपका जन्म गोलशृंगार जाति में हुआ था । इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था । हनुमच्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है ।

२९. भट्टारक सोमसेन—ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे । इन्होंने पद्मपुराण की रचना वैराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी । उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक सवत् १६५६ में निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है । लेकिन इसी की एक लेखक प्रशस्ति में शक सवत् १६१६ दे रखा है ।

३०. सकलकीर्त्ति—१५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं साहित्य सेवी थे । इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया था । इन्होंने अपने आपको भट्टारक

पद्मनन्दि का शिष्य लिखा है। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण इन्होंने एक नयी भट्टारक परम्परा की स्थापना की। इनकी परम्परा में ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र आदि उच्च कोटि के साहित्य निर्माता हुये। इन्होंने सभी भाषाओं में साहित्य सर्जना की। आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसारसंग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमानपुराण, आदि रचनायें संस्कृत में णमोकारमन्त्रफलगीत, आराधनासार आदि रचनायें हिन्दी में लिखीं।

३१. सकलभूषण—भट्टारक शुभचन्द्र के समय के विद्वान थे। इन्होंने भट्टारक शुभचन्द्र के पास ही अध्ययन किया और उन्हीं की देख रेख में ग्रन्थ रचना की। शुभचन्द्र ने करकण्डुचरित्र के निर्माण में इनसे काफी सहायता ली थी। सकलभूषण भट्टारक वादीभसिंह के शिष्य एवं सुमतिकीर्ति के बड़े भाई थे। सन् १६०७ में इन्होंने संस्कृत में उपदेशरत्नमाला नामक ग्रंथ का निर्माण किया। रचना सुन्दर एवं सरस है।

३२. सोमकीर्त्ति — भट्टारक रामसेन की शिष्य परम्परा में से भट्टारक भीमसेन के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १५३० में प्रद्युम्नचरित्र को समाप्त किया था।

३३. सोमप्रभसूरि— सिन्दूर प्रकरण कवि की रचना है। इसमें अच्छी २ सूक्तियां हैं। इसका हिन्दी अनुवाद महाकवि बनारसीदास एवं कौरपाल ने मिलकर किया था। इसी से उक्त रचना का महत्त्व जाना जा सकता है। इसका दूसरा नाम सूक्तमुक्तावली भी है। कवि ने विजयसिंहाचार्य के चरण कमलों में बैठ कर इसकी रचना की थी।

३४. श्रुतसागर— ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके गुरु का नाम विद्यानंदि था। श्रुतसागर ने अपने को कलिकालसर्वज्ञ, कलिकालगौतम, उभयभाषाकविचक्रवर्ति, व्याकरणकमलमार्तण्ड आदि अनेक विशेषणों से अलंकृत किया है। इन्होंने अधिकांश ग्रन्थों की टीका लिखी है उनमें से यशस्तिलकचन्द्रिका, तत्त्वार्थवृत्ति जिनसहस्त्रनामटीका औदार्यचिन्तामणि, महाभिषेकटीका, व्रतकथाकोष आदि रचनायें उल्लेखनीय हैं।

३५. शुभचन्द्र—भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में आपका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। षटभाषाकविचक्रवर्ति, त्रिविधविद्याधर आदि विशेषणों से आप जनता द्वारा विभूषित किये गये थे। आपने सिद्धान्त एवं पुराण साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया था। इन्होंने संस्कृत में ४० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से चन्द्रप्रभचरित्र, जीवधर चरित्र, पाण्डवपुराण श्रेणिकचरित्र, स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा की टीका आदि उल्लेखनीय हैं।

३६. हर्षकीर्त्ति— इन्होंने योगचिन्तामणि ग्रन्थ का संग्रह किया था। यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है। इनका सम्बन्ध नागपुर के तपोगच्छ से था तथा चन्द्रकीर्त्ति इनके गुरु थे।

प्राकृत—अपभ्रंश ग्रन्थों के लेखक

३७. स्वयंभु—अपभ्रंश भाषा के आचार्यों में आप सबसे प्राचीन आचार्य हैं। इनके पिता का नाम

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयंभु था। स्वयंभु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयंभु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की – पउमचरिय, रिट्ठणेमिचरिउ या हरिवंशपुराण, पंचमिचरिउ। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयम्भु की रचनाये सबसे प्राचीन हैं। रचनायें साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि रविषेणाचार्य के पीछे हुये हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति --माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। संवत् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। इसमें १८ संधियां हैं। संवत् १४९६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत---अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के आश्रयदाता महामात्य भरत और नन्न थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पदवियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनायें मिलती हैं। महापुराण के दो खड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खन्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण---इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले संवत् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड देश मे श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एव माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मगलाचरण मे चतुर्मुख, स्वयभु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा मे कुल ११ सधियां हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१ महाकवि वीर---कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड बागड था। यह काष्ठा संघ की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कविवर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और अर्थ की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जम्बूस्वामी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको संवत १०७६ माघ शुक्ला दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेघवन में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ स्त्रियां जिनवती, पोमावती, लीलावती, और जपादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२ श्रीचन्द---ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नकरण्ड को संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनी थे और इसी अवस्था मे इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीवालपुर के शासक कर्ण

नरेन्द्र के अध्ययन के लिये ग्रन्थ रचना की थी। कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख मुनी कनकामर ने भी किया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ति आचार्यों—वीरनन्दि, समंतभद्र, विद्यानन्दि, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, सोमदेव, स्वयम्भु, पुष्पदंत, श्रीधर आदि का उल्लेख किया है। कवि श्रुतकीर्ति के शिष्य थे।

४३. नयनन्दि—महाकवि स्वयम्भु एवं पुष्पदंत के पश्चात् इनका नाम अपभ्रंश के श्रेष्ठ कवियों मे गिना जाता है। इनके दो महाकाव्य मिलते हैं, सुदर्शन चरित्र और सकलविधिविधान और ये दोनों ही सभी दृष्टियों से उच्च श्रेणी के काव्य हैं। सुदर्शन चरित्र की रचना इन्होंने संवत् ११०० में भोजदेव के राज्य मे की थी। सकलविधिविधानकाव्य को इन्होंने आचार्य हरिसिंह के अनुरोध से बनाया था। इस काव्य में आपने वररुचि, वामन, कालिदास, बाण, मयूर, जिनसेन श्रीहर्ष राजशेखर, पाणिनी, प्रवरसेन, वीरसेन, अकलंक रुद्र गोविंद, भामह, भारवि, चउमुह स्वयम्भु, पुष्पदंत, श्रीचन्द्र, प्रभाचन्द्र आदि आचार्यों का स्मरण किया है। नयनंदि आचार्य माणिक्यनन्दि के शिष्य थे। कवि ने धारा नगरी एवं राजा भोज का बड़ा ऐतिहासिक वर्णन किया है। इन दोनों काव्यों के आधार पर कितने ही ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की जा सकती है।

४४—श्रीधर — अपभ्रंश भाषा के महाकवि पं० श्रीधर १२ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखित ३ रचनायें उपलब्ध हैं, पार्श्वनाथचरित्र, भविष्यदत्तचरित्र तथा सुकुमालचरित्र। पार्श्वनाथचरित्र को संवत् ११८६ से भविष्यदत्त को १२३० में तथा सुकुमालचरित्र को संवत् १२०८ मे समाप्त किया था। इनके अतिरिक्त अन्य कितनी रचनायें अपभ्रंश मे लिखीं, इनका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिला है। ये कायस्थ जाति के थे और माथुर कुल में पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम नारायण एवं माता का नाम रुपिणी था। ये देहली के रहने वाले थे। इन्होंने दिल्ली को 'ढिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है। अपने प्रथम महाकाव्य को इन्होंने नट्टल साह के आग्रह से लिखा था। उस समय नट्टल साह सारे भारत में प्रख्यात थे। कवि ने लिखा है कि अंग बंग कलिंग आदि सभी देश में आपकी कीर्त्ति व्याप्त थी।

४५—महाकवि अमरकीर्त्ति — इन्होंने संवत् १२७४ मे षट्कर्मोपदेशरत्नमाला को समाप्त किया था। रचना बहुत ही सुन्दर एवं प्रिय है। इनकी रचना के आधार पर ही पीछे के संस्कृत कवियों ने अनेक रचनायें लिखीं। इनकी माता का नाम चच्चिणी एवं पिता का नाम गुणपाल था।

४६—कनकामर — ये मुनि थे। इन्होंने अपने गुरु का नाम पं० मंगलदेव लिखा है। ये ब्राह्मण वंश के चन्द्र ऋषि गोत्र मे उत्पन्न हुये थे और वैराग्य लेकर दिगम्बर मुनि बन गये थे। करकण्डु चरित्र को इन्होंने 'आसाइय' नगरी मे लिखा था। कवि ने अपनी रचना मे सिद्धसेन, समंतभद्र, अकलंक, जयदेव, स्वयंभु और पुष्पदंत का उल्लेख किया है। कनकामर ने अपनी रचना में कर्ण नरेन्द्र का उल्लेख किया है। उन्हीं के आश्रित श्रीचन्द्र कवि भी थे जिन्होंने रत्नकरण्ड को ११२० में समाप्त किया था। इसी के आधार पर इनका समय १२वीं शताब्दी निश्चित होता है।

४७—यशःकीर्त्ति — अपभ्रंश साहित्य मे यशःकीर्त्ति द्वारा लिखित दो काव्य मिलते हैं—पाण्डवपुराण तथा चन्द्रप्रभचरित्र। यशःकीर्ति मुनि थे और इसी अवस्था में इन्होंने दोनों काव्यों की रचना की थी।

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश में उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगात्रपुर मे लिखवाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्त्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र में इन्होंने 'महाकवि' विशेषण से अपने आपको अलंकृत किया है।

४८—पं० लाखू — इन्होंने संवत् १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लक्खण भी था। आपका सन्मान करने वालों में श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय हैं और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लाखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणिदेवसेन — अपभ्रंश भाषा में इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश में वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि पद्मनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा में इनके द्वारा रचित उपदेशमाला श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों मे ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती हैं इससे ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या इससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कथा और श्रीपालचरित्र इन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं में नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थावस्था में ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि संग्रह मे १५१२ में लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध— इनके पिता का नाम रल्हण था। कवि गुज्जर कुल के सूर्य थे। प्रद्युम्न चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अमियचन्दु) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल— ये १५वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुबलिचरित्र तथा (भविष्यदत्तचरित्र) १५वीं शताब्दी की रचनायें है। महाकवि ने बाहुबलिचरित्र काव्य के प्रारम्भ तथा अन्त में बहुत सुन्दर प्रशस्ति लिखी है। ये गुर्ज्जर देश के रहने वाले थे। पिल्हणपुर इनका निवास स्थान था। उस समय वहां वीसलदेव राजा राज्य करते थे। इनके पिता का नाम सुहदेव तथा माता का नाम सुहदा था। ये पोरवार जाति में उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली को योगिनीपुर लिखा है तथा वहां

के शासक का नाम महम्मदसाह लिखा है। ग्रंथ को लिखाने वाले श्रावक का कवि ने विस्तृत परिचय दिया है। इन सब के अतिरिक्त कवि ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियों का नामोल्लेख उनकी कृतियों के साथ साथ किया है।

५५—धनपाल (द्वितीय)—महाकवि धनपाल से ये भिन्न कवि हैं। इनका जन्म धक्कडवाण वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम माएसर तथा माता का नाम धनश्री था। इनके द्वारा लिखित भविष्यदत्त चरित्र अपभ्रंश भाषा के प्रकाशित होने वाले काव्यों मे सर्व प्रथम है।

५६—पंडित रइधू— अपभ्रंश भाषा मे सबसे अधिक रचनायें लिखने वालो मे पं० रइधू का नाम सर्व प्रथम आता है। इनके काव्यो मे उच्च साहित्य के दर्शन होते हैं। इनके गुरु का नाम गुणकीर्त्ति था। ये ग्वालियर के निवासी थे और अधिकांश साहित्य का निर्माण उक्त स्थान पर ही किया था। इन्होंने आत्मसंबोधन काव्य, धनकुमारचरित्र, पद्मपुराण, मेघेश्वरचरित्र, श्रीपाल चरित्र, सन्मतिजिनचरित्र, नेमिनाथचरित्र, आदि-पुराण, यशोधरचरित्र, जीवधरचरित्र, पार्श्वनाथपुराण, सुकौशलचरित्र आदि २५ से अधिक की रचना की हैं। इन्होंने प्रत्येक ग्रन्थ के अन्त मे अपने सक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त ग्रन्थ लिखाने वाले का विस्तृत परिचय दिया है और इसके साथ साथ वहा के राज्य शासन का भी इतिहास लिखा है। इनके समय में ग्वालियर पर तोमर वंश के महाराजा डूगरेन्द्र सिंहजी का शासन था तथा वंश के राजकुमार का नाम कीर्तिपाल था। इनका समय १५ वीं शताब्दी का अनुमानित किया गया है।

५७—श्रुतकीर्ति— ये १६ वीं शताब्दी के विद्वान थे। ये देवेन्द्रकीर्तिके प्रशिष्य एवं त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। मालवा प्रान्त में मडवगढ इनका निवास स्थान था। इन्होंने हरिवंश पुराण की रचना संवत् १५५२ मे समाप्त की थी तथा परमेष्ठिप्रकाशसार को संवत् १५५३ मे समाप्त किया था। दोनों ही काव्य भाषा की दृष्टि से उत्तम हैं।

५८—माणिक्कराज— ये जैसवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे। इनकी माता का नाम वसुधरा था। माणिक्कराज के गुरु पद्मनन्दि थे इनके पहिले पाच आचार्य हो गये थे। इन्होंने दो चरित्र काव्यों की रचना की है अमरसेन चरित्र को सं० १५७६ चैत सुदी ५ के दिन रोहतक मे देवराज चौधरी से आग्रह से समाप्त किया था तथा नागकुमार चरित्र को संवत् १५७६ फाल्गुण सुदी ६ के दिन सपूर्ण किया था। इसमे जगसी के पुत्र साहु टोडरमल्ल का विस्तृत परिचय एवं प्रशसा की गयी है। श्री टोडर मल्ल के पढने के लिये ही उक्त चरित्र का निर्माण करना पडा था। दोनों ही काव्य अपभ्रंश की सुन्दर रचनायें है।

५९—भगवतीदास— ये देहली के भट्टारक गुणचन्द्र के प्रशिष्य तथा भट्टारक महेन्द्रसेन के शिष्य थे। हिसार, सहिजादपुरा, सकिसा, कपिस्थल आदि स्थानों मे रहने के पश्चात् ये दिल्ली मे आकर रहने लगे थे। इनके पूर्वज अम्बाला जिले के बूढिया नामक ग्राम के निवासी थे। ये अग्रवाल दि० जैन थे। अपभ्रंश भाषामें

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० में समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम काव्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनायें मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य के कवि एवं लेखक

६०—किशनसिंह — कवि रामपुर के निवासी संगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहीं पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत् १७८४ में समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रबाहुचरित्र एवं रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई है।

६१—कुमुदचन्द्र — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाविनती, ऋषभविवाहलो, भरतबाहुबलिछन्द आदि रचनायें लिखी हैं। भरतबाहुबलिछन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ में समाप्त किया था।

६२— कुसुललाभगणि — संवत १६१६ मे जैसलमेर में इन्होंने 'माधवानलचौपाई' को पूर्ण की थी। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—खडगसेन— ये लाभपुर (लाहोर) के निवासी थे। लाहोर में उस समय अच्छे२ विद्वान् रहते थे। उन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम लूणराज था। कवि के पूर्वज पहले नारनौल में रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल मे चतुर्भुज बैरागी के पास शिक्षा प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् १७१३ मे सम्पूर्ण किया था।

६४— खुशालचन्द काला— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने विद्याध्ययन किया था। इनका मूल निवास स्थान देहली था। लेकिन सागानेर भी कभी२ आकर रहा करते थे। इनके पिता का नाम सुन्दर एवं माता का नाम अभिधा था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७८०), पद्मपुराण (१७८३), धन्यकुमारचरित्र, जम्बूचरित्र, व्रतकथाकोश आदि ग्रन्थों की रचना की है।

६५— चतुरूमल— ये ग्वालियर के निवासी थे। इनके पिता का नाम जसवत था। इन्होंने संवत १५७१ में 'नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके समय मे ग्वालियर के शासक महाराजा मानसिंह थे। नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. छीतर ठोलिया— ये मोजमाबाद के रहने वाले थे। इन्होंने होली की कथा को संवत् १६६० में समाप्त की थी। उस समय जयपुर के राजा मानसिंह का वहां राज्य था। रचना साधारण है।

६७. जयसागर—ये भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे। गंधार नगर के भट्टारक श्री मल्लिभूषण की शिष्य–

परम्परा से इनका सम्बन्ध था। हूमड जाति में उत्पन्न श्री रामा तथा उसके पुत्र के पढ़ने के लिये संवत् १७३२ में इन्होंने 'सीताहरण' नामक काव्य की रचना की थी।

६८. जोधराज गोदीका—ये सांगानेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम अमरराज था। हरिनाथ मिश्र के पास रह कर इन्होंने प्रीतिंकर चरित्र, कथाकोष, धर्मसरोवर, सम्यक्त्वकौमुदी, प्रवचनसार, भावदीपिका आदि रचनायें लिखी थीं।

६९. जगतराय—ये आगरे के निवासी थे। इनके पिता का नाम नन्दलाल था। सिंघल इनका गोत्र था। संवत् १७२२ में इन्होंने पद्मनन्दिपर्चागिका को समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त आगम विलास एवं सम्यक्त्वकौमुदी आदि भी इन्हीं की लिखी हुई हैं।

७०. टीकम—इन्होंने संवत १७१२ में चतुर्दशीचौपई नामक रचना समाप्त की थी। ये 'कालख' (जयपुर) के रहने वाले थे। आप धार्मिक चर्चाओं के अच्छे जानकार थे।

७१. ठकुरसी—इन्होंने 'कृपणचरित्र' तथा 'पचेन्द्रिय बेल' ये दो रचनायें लिखी हैं। दोनों ही भाषा और भावों की दृष्टि से उत्तम रचनायें हैं। पचेन्द्रिय बेल को कवि ने संवत् १५८५ में समाप्त किया था। इनके पिता का नाम घेल्ह था और ये भी अच्छे कवि थे।

७२. त्रिभुवनचन्द्र—ये महाकवि बनारसीदास एवं रूपचन्द के समकालीन कवि थे। इन्होंने अनित्यपचाशत, प्रस्ताविकदोहे, षट्द्रव्यवर्णन, फुटकरकवित्त आदि रचनायें लिखी हैं। सभी रचनायें उच्चकोटि की हैं।

७३. दीपचन्द कासलीवाल—ये सांगानेर के रहने वाले थे लेकिन फिर आमेर आकर रहने लगे थे। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों ही प्रकार का साहित्य लिखा है। चिद्विलास, गुणस्थानभेद, अनुभवप्रकाश आदि गद्य में तथा अध्यात्म पच्चीसी, द्वादशानुप्रेक्षा, परमात्मपुराण आदि पद्य में इनकी रचनायें मिलती हैं। चिद्विलास को इन्होंने संवत् १७७९ में समाप्त किया था।

७४. पं० दौलतरामजी—ये मूल निवासी बसवा के थे। जयपुर के महाराजा का इन पर विशेष प्रेम था। ये उदयपुर में महाराजा की ओर से राज्य कार्य करते थे। श्रावकों की संगति से इनको जैन ग्रन्थों के अध्ययन की रुचि हुई। धीरे धीरे इनकी रुचि बढ़ती गई और ये अपना अधिकांश समय साहित्य-सर्जना में ही लगाने लगे। इन्होंने पुण्याश्रवकथाकोश, क्रियाकोश, अध्यात्मबारहखड़ी, वसुनन्दिश्रावकाचार की टीका तथा पद्मपुराण की भाषा लिखी है। वसुनन्दिश्रावकाचार की टब्बा टीका इन्होंने उदयपुर में वेलजी सेठ के अनुरोध से की थी। ये श्री आनन्दराम के पुत्र थे। संवत् १८०० के पूर्व ही इन्होंने

रचनायें लिखी हैं ।

७६—देवेन्द्रकीर्त्ति— ये भट्टारक सकलकीर्त्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक पद्मनन्दि के शिष्य थे । इन्होंने सूरत निवासी संघपति श्री क्षेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर में प्रद्युम्नप्रबन्ध को संवत् १७९२ में समाप्त किया था । प्रबन्ध की भाषा साधारण है ।

७७—दिलाराम—इनके पूर्वज खंडेले के रहने वाले थे । वहां से बूंदी नरेश के अनुरोध से बूंदी आकर रहने लगे थे । इनका गोत्र पाटणी था । कवि ने बूंदी नगर तथा वहां के राजवंश की खूब प्रशंसा लिखी है । इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है । इन्होंने दिलारामविलास और आत्मद्वादशी ये दो रचनाये लिखी हैं । कवि ने दिलारामविलास को संवत् १७६८ में समाप्त किया था । इनकी वर्णन शैली अच्छी है ।

७८—धर्मदास— कवि बारहसैनी (द्वादशश्रेणी) जाति में उत्पन्न हुये थे । इनके पूर्वज अपने प्रान्त में बहुत ही प्रतिष्ठित थे । इनके पिता का नाम राम और माता का नाम शिघी था । कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ में समाप्त किया था । रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है । इसमें जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है ।

७८. नथमल विलाला— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद में भरतपुर में और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे । इनके पिता के नाम शोभाचन्द था । इनने सिद्धान्तसारदीपक की रचना भरतपुर में सुखराम की सहायता से की थी और भक्तामर की भाषा हीरापुर में पं० लालचन्द जी की सहायता से की थी । इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवंधरचरित्र, जम्बूस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियां हैं ।

७९. नरेन्द्रकीर्त्ति— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे । इन्होंने नेमीश्वर चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है ।

८०. नेमिचन्द— ये भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य थे । आमेर इनका निवास स्थान था । सवत १७९२ में इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी । कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है । कवि के छोटे भाई का नाम झगडू था । इनका गोत्र रुठी था । कवि के रूपचन्द, डूंगरसी, लक्ष्मीदास, दोदराज आदि शिष्य थे ।

८१. प्रभाचन्द्र मुनि— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है । प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है । इनके समय के सम्बन्ध में विशेष ज्ञात नहीं हो सका है । तत्त्वार्थसूत्र भाषा की एक प्रति संवत् १८०३ की लिखी हुई शास्त्र भण्डार में है ।

८३. पांडे जिनदास— ब्रह्म शांतिदास के पास इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। ये मथुरा के रहने वाले थे। यहीं रहते हुए संवत् १६४२ में जम्बूस्वामी चरित्र को समाप्त किया था। आपकी एक अन्य रचना जोगी रासो भी है जिसकी भाषा एवं शैली उत्तम है।

८४.पांडे रूपचंद— इन्होंने सोनगिरि में संवत् १७२१ में महाकवि बनारसीदास कृत समयसार की गद्य टीका लिखी थी। सोनगिरि में श्री जगन्नाथ श्रावक रहते थे और इन्हीं के अध्ययन के लिये कवि को पद्य से गद्य में अनुवाद करना पड़ा। ग्रन्थ की भाषा सुन्दर एवं प्रौढ है।

८५.परिमल्ल— इनके पितामह का नाम रामदास एवं पिता का नाम आस्तिमल्ल था। ये बिरहिया जाति के थे। इनके पूर्वज ग्वालियर के रहने वाले थे। स्वयं परिमल्ल आगरे में रहते थे। इन्होंने अकबर के शासन काल में श्रीपालचरित्र की रचना की थी।

८६—बनारसीदास — जैन हिन्दी साहित्य के सूर्य महाकवि बनारसीदास १७वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये आगरे के निवासी थे। माता पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण इनका विवाह बचपन में ही हो गया था। ये प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। प्रारम्भ से ही इनको कविता करने का शौक था। यौवनावस्था में ये सांसारिक झगड़ों में फसे रहे। इसी अवस्था में इन्होंने नवरस पद्यावली नामक पुस्तक की रचना की लेकिन जब उसकी असत्यता मालूम हुई तो इन्होंने उसे गोमती नदी में बहा दिया। इसके पश्चात् इनका झुकाव आध्यात्मिकता की ओर हुआ और फिर नाममाला, नाटक समयसार, बनारसीविलास, एवं अर्द्धकथानक का निर्माण किया। कवि की सभी कृतियां उच्च कोटि की हैं।

८७—भैया भगवतीदास — ये आगरे के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम लालजी था। ये ओसवाल जैन थे तथा कटारिया इनका गोत्र था। महाकवि बनारसीदास के समान ये भी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। कवि हिन्दी, संस्कृत, फारसी, गुजराती आदि सभी भाषाओं के विद्वान् थे। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी इनकी कवितायें मिलती हैं। आपकी कविता अलंकार एवं प्रसाद गुण से ओत प्रोत रहती है।

८८. भूधरदास — ये आगरे के रहने वाले थे। खण्डेलवाल जाति में इनका जन्म हुआ था। इनकी ३ रचनायें उपलब्ध हैं—पार्श्वपुराण, जैनशतक तथा पद संग्रह। ये कवि ही नहीं थे, किन्तु जैन सिद्धान्त के अच्छे विद्वान् भी थे। पार्श्वनाथपुराण इनका बहुत ही सुन्दर काव्य ग्रन्थ है। इनके बनाये हुये पद जैन समाज के अत्यधिक प्रिय हैं।

८९. मनोहरदास — ये धामपुर के निवासी थे। आसू साह के यहां इनका आश्रय था। सेठ के सम्बन्ध में इन्होंने बड़ी मनोरंजक घटना लिखी है। सेठ की दरिद्रता आने के कारण वह बनारस से अयोध्या चले गये किन्तु वहां के सेठ ने उन्हें खूब सम्मान तथा अतुल सम्पत्ति देकर वापिस ही विदा कर दिया।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. राजमल्ल — उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. रूपचंद — कविवर रुपचंद पांडे रुपचन्दजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास ने गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एव नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. लब्धरुचि—ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्दनृपरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ में समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति में भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरू परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. लोहट—इनका जन्म बघेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा था। ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बडे थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा में श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने संवत् १७२१ में समाप्त किया था।

९४. लक्ष्मीदास— पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पंडितजी ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र संवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. ब्रह्म रायमल—ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न २ स्थानों पर लिखी थी। इनमें हरसोर गढ, रणथम्भोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध है। रायमल्ल अन्त में आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीश्वर रास, हनुमंतकथा, प्रद्युम्नचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीपालरास भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय है। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान होने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. ब्रह्म गुलाल— ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगभूषण के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता में रह कर कविता किया करते थे। त्रेपनक्रिया को इन्होंने संवत् १६९५ में समाप्त की थी। ग्वालियर पर उस समय सलीम (जहांगीर) का राज्य था।

९७ सुरचंद— ये इन्द्रभूषण के प्रशिष्य एवं ब्रह्म श्रीपति के शिष्य थे । कवि ने गृहस्थावस्था मे रह कर रत्नपाल रासो की रचना की थी । कविता साधारण है। कविता पर गुजराती का प्रभाव है । रासो की रचना संवत् १७३२ मे हुई थी ।

९८ समयसुन्दरगणि— सकलचन्द्र इनके गुरू थे । ये खरतरगच्छ के मुनि थे । संवत् १६९८ मे इन्होंने मृगावति चरित्र को समाप्त किया था ।

अन्त मे मैं श्री महावीर अतिशय क्षेत्रकमेटी के सभी सदस्यों तथा विशेषत श्रीमान् मन्त्री महोदय को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजस्थान के जैन साहित्य के प्रकाशन का दृढ़ संकल्प किया है । श्रद्धेय गुरुवर्य पं० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ को धन्यवाद देना छोटे मुंह बड़ी बात करना है क्योंकि यह सब उनकी कृपा का फल है। भा० भंवरलाल जी न्यायतीर्थ प्रो० वीरप्रेस भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने प्रशस्ति संग्रह को सुन्दर बनाने मे बहुत योग दिया है। इसके अतिरिक्त सम्माननीय प० जुगलकिशोर जी मुख्तार तथा प्रो० रामसिंह जी तोमर एम ए. भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय समय पर अपनी बहुमूल्य सम्मति देकर मुझे उत्साहित किया है।

प्रशस्ति सग्रह को सुन्दर बनाने का काफी प्रयत्न किया गया है किन्तु फिर कुछ खटकने योग्य कमियां रह सकती हैं । आशा है विद्वानगण इस ओर उदारता से ध्यान देंगे ।

जयपुर
१—७—५०

कस्तूरचन्द कासलीवाल

शुद्धाशुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ तथा पंक्ति
ससारभीमुखे	संसारभीमुपे	१ × ७
भर्येड्डु	भर्येंदु	२ × ८
प्राकृत	अपभ्रंश	२ × १३
प्रार्थना ते	प्रार्थनातों	३ × ३०
प्रणित	प्रीणित	३ × ५
चंचद्र व:	त्वंचद्रू च:	५ × १५
षव्याधिक :	षष्ट्यधिका:	८ × ७
वहूनयग्नि	वहन्यग्नि	८ × २५
राद्रस्यो तत्पुराणं	राद्रस्यै तत्पुराण	१३ × ६
मेंद	मेंद	१३ × ६
त्रिभगसार	त्रिभगीसार	१८ × ३
सयौरजन:	सपौरजन:	२१ × २
वर्णतां	वर्णनां	२६ × २
सर्व्वकर्मारसंतान	सवकर्मारिसंतानं	४१ × २
प्रख्यातमनपां	प्रख्यातमनीपां	४२ × २०
वीरनार्थं	वीरनाथ	५६ × २१
अकच्छरपुर	अकव्वरपुर	५६ × २१
भव्यौवनिस्तारक:	भव्यौघनिस्तारक:	६० × २
घातद्रामा	घा तद्रामा	६१ × २
जैसवालान्यये	जैसवालान्ये	६५ × १७
अभपद	अभवद	६७ × १
वृह्माजित	वृह्म अजित	६९ × २०
तदीय	तदीय	७० × ४
भमिणि	भामिणि	८१ × ३
घवते	मववते	६१ × २
मुण दाण इट्ठ	मुणिदाणइट्ठ	१०७ × ५
णरयण	णरयणत्त	१०७ × २०
पावसु	परवसु	११२ × १२

ग्नावहारि	सतावहारि	११४ × ७
मिरिक्मरन्मेहु	भिरिकरमसींहु	११७ × १८
माह्यमेणु	साहवसेणु	१२८ × १
चारुटनु	कडरतु	१२८ × ५
छदु	छदु	१५५ × १३
नयू	णायू	१५७ × २३
१६२४	१६२४	१८७ × ९
काल पता	कालव नाहि	२०८ × २८
त्रि	त्रिभुव	२२० × १९
पट्टन	पट्टन	२२३ × १२
कवर्हा	कर्हा	२३३ × २३
ले	लेस	२३३ × १३
मत्तर	सनरह	२३९ × २३
श्मान	आलि	२४४ × १३
फु दिगयाल	फु गिडयाल	२५१ × ४
बयाहोई	बयावा होई	२५१ × २०
किनसिंह	किशनसिंह	२५४ × २३
श्मसह	रिसह	२६३ × ४
निरगय	निरगय	२६३ × ४
सङ्क	सेहरु	२८७ × ५
जमडधु	जसडधु	२८८ × १९
पिगलु	पिंगलु	२८७ × १९

विषय—अनुक्रम



आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के
ग्रन्थों का
प्रशस्ति-संग्रह

---

१. आदिपुराण।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य तथा गुणभद्राचार्य। भाषा संस्कृत। साइज १२×४॥ इञ्च। पत्र संख्या ३६६. लिपि संवत् १८०३ माघ सुदी १५. प्रति मे ४२वें सर्ग तक आचार्य जिनसेन का नाम दे रखा है तथा अन्तिम पांच सर्गों मे आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

श्रीमंत सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुपे।
धर्म्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुखे ॥१॥

अन्तिम पाठ—

यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयंभूरिति,
त्यक्ताशेषपरिग्रहोपि सुधियां स्वामीति यः शब्द्यते।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेवोपकारीमतो,
निर्दानोपिबुधैरुपास्यचरणो यः सोस्तुवः शांतये ॥

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरपुराण-परिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपर्व्वं समाप्तः।

संवत् १८०३ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीविश्वभूषण तच्छिष्य ब्रह्मश्रीविनयसारजी तच्छिष्य ब्रह्म श्रीहर्षसागरजी तद्गुरुभ्राता पंडित हरिकृष्णजी तच्छिष्य पं० जीवनरामजी तदनुचर पं० हेमराजस्येदं पुस्तकं पठनार्थं पंडित हरिकृष्णेन दत्तं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३७. साइज ११॥×५ इञ्च।

संवत् १५८७ वर्षे मार्ग्ग सुदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

पंक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पंक्ति ३६–४२. अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रंथ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७. लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

वंदे श्रीवृषभं देवं दिव्यलक्षणलांछितं।
प्रणितप्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तम ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिगच्छे
गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे।
श्रीकुंदकुंदगुरुपट्टपरंपरयां
श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूज्जिताक्षः ॥१॥
तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी।
भट्टारकः श्रीसकलादिकीर्त्तिः प्रसिद्धनामाजनिपुण्यमूर्त्तिः ॥२॥
भुवनकीर्त्तिगुरुस्ततऊर्जितो, भुवनभासनशासनमंडनः।
अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो, विविधधर्म्मसमृद्धिसुदेशकः ॥३॥
श्रीज्ञानभूषापरिभूषितांगः, प्रसिद्धपंडित्यकलानिधान.।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ॥४॥
भट्टारकश्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे वरलब्धकीर्तिः।
महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूव जैनावनियार्च्यपादः ॥५॥
भट्टारकश्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपंकेरुहातग्मरश्मिः।
त्रैविद्यवंद्यः सकलप्रसिद्धो वादीभसिंहो जयताद्धरित्र्यां ॥६॥
पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः
शांतोदांतः शीलशालीसुधीमान्।
जीयात्सूरिः श्री सुमत्यादिकीर्त्तिः
गच्छाधीशः कम्रकांतिकलावान् ॥७॥
तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्ना सकलभूषणः।
सूरिर्जिनमते लीनमनाः संतोषपोषकः ॥ ८ ॥
तेनोपदेशसद्रत्नमालासंज्ञो मनोहरः।
कृतः कृतिजनानंदनिमित्त ग्रंथ एषकः ॥ ९ ॥
श्रीनेमिचंद्राचार्यादियतीनामाग्रहात्कृतः।
सद्वर्द्धमानां येलादि 'प्रार्थना ते मयैषकः ॥ १० ॥

सप्तादिशत्यं वर्ष षोडशशतवत्सरेसुविक्रमतः।
श्रावणमासे शुक्ले पक्षे षष्ठ्या कृतोऽयं ग्रंथ.॥ ११॥
न मया ख्यातिनिर्मित्ति न चाभिमानेन विरचितो ग्रंथ.।
धर्मरतानां गृहिणा हितायं च स्वस्य पुण्याय॥ १२॥
यावत्सिद्धाः सिद्धधामप्रपन्नामेरुश्चा ये भूधराः भूरि सत्त्वाः।
चन्द्रादित्याद्याश्च खे सत्यसत्त्वाः नर्तिष्ठंते तावदास्ता ममाय॥१३॥
श्रीवीरगौतमाद्यैश्च श्रेणिकस्य पुरस्सरा।
यदुक्तं तच्च सारांश्च मयापीह निरूपितं॥ १४॥
सिद्धांतशास्त्रयुक्त्यादिविरुद्धं यन्मयोदितं।
क्षमितव्यं मुनीशैस्तत्सर्वशास्त्राब्धिपारगैः॥ १५॥
न्यूनमक्षरमात्राद्यैरज्ञानान्मयकाव्यत्।
प्रोक्तं क्षमस्व तद्देवि शारदे श्रीजिनास्यजे॥ १६॥
जिनसिद्धसूरिपाठकसाधुमुनीनांश्चतुर्विधस्य संघस्य।
विदधातु मंगलमतुलं भुक्तिं मुक्तिं च यच्छतु॥ १७॥
सहस्रं त्रितयं चैव त्रिशतत्र्यशीतिसंयुतं।
३३८३ अनुष्टुपछंदसा चास्य प्रमाणं निश्चितं बुधैः॥ १८॥

इति भट्टारक श्रीशुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसकलभूषणविरचितायां उपदेशरत्नमालायां पुण्यपदकर्म-प्रकाशिकायां तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नाम अष्टादशपरिच्छेदः।

संवत् १८२६ मिती मार्गशिर सुदी ८ बृहस्पतिवारे सवाईजयपुरनगरे चंद्रप्रभचैत्यालये पंडितोत्तमपंडितजी श्री रायचंदजी तत् शिष्य सेवक सवाई रामेण इदं पुस्तकं लिपिकृतं॥

प्रति नं० २, पत्र संख्या १३६, साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७४५. प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

संवत्सरे बाणाब्धि मुनींदुमिते १७४५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशीतिथौ गुरुवारे शतभिषा नक्षत्रे शुभनामयोगे श्रीमद्वणपुरे श्रीमच्चन्द्रप्रभचैत्यागारे पातिसाह श्री अवरंगसाहि तरमामत महाराजा श्री रामसिंहजी राज्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति स्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिनिभा गांभीर्य धैर्यौदार्यपांडित्यसौजन्यप्रमुखगुणगणामणि रोहणोक्षितिभृतः भट्टारकश्रीजगत्कीर्त्तितदाम्नाये खंडेलवालान्वये छावडा गोत्रे साह श्री गंगाराम; बजगोत्रे साह श्री अनदराम, साह श्री खेतसी साह श्री माधो, पहाड्या गोत्रे साह श्री वनमालीदास तत्पुत्र नंदराम साह श्री तेजसिंह, सेठी गोत्रे साह श्री मनराम साह श्री पूरा, साह मेघा तिलोकचंद; पांड्या गोत्रे साह श्री वेणा, साह श्री ढोला, साह घडसीजी, पाटणी

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जंसा. अजमेरा गोत्रे साह श्री पूरा एते सर्वाः भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूराम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी मगहू संज्ञाय एताभ्यामिदं पुस्तकं नामषट्कर्मोपदेशरत्नमालाग्रंथं सर्वे श्रावकाः लिखाप्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं।

५. करकण्डुचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र तथा मुनि श्री सकल भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६। साइज १०½×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर। रचना संवत् १६११. लिपि संवत् १८६१. प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे जनि पद्मनंदी तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः
कीर्तिं कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्ता सकला पवित्र ॥ १ ॥
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाधिपो भवनभासनभूरिमतिस्तुतः।
इतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाहि खगेट् क्षितिभूत्तमः ॥ २ ॥

× × × × × × × ×

पट्टे तस्य गुणांबुधिव्रतधरो धीमान् गरीयान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्रएष विदितो वादीभसिंहो महान्।
तेनेदं चरितं विचारुरुचिरं चाकारि चंचद्रुचः
श्रीमच्छ्री करकंडुनामनृपतिः नीत्यान्नरस्तंद्विपं ॥ ३ ॥
चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभ चरितं शुभचन्द्रः।
मन्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकार ॥ ४ ॥
चंदनायाः कथा येन दृष्ट्वा नांदीश्वरी तथा।
आशाधरकृताच्चार्या धृत्तिः सद्वृत्तशालिनी ॥ ५ ॥
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनंयः वृद्धं च सिद्धार्चन मान्विधत्त।
सारस्वतीयार्चनमत्रचित्रं चितामणीयाच्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ६ ॥
श्रीकर्मदाह विधिवंधुरसिद्धसेवां
नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च।
श्रीपार्श्वनाथव काव्यसुपंजिगां च
यः सचकार शुभचन्द्रयतीन्द्रः ॥ ७ ॥
उद्यापनमदीपिष्ठा पल्योपमविधिश्च यः।
चारित्रशुद्ध तपसश्च शुस्त्रिद्वादशात्मनः ॥ ८ ॥

शंसयित्वदर्नानिराकरण सप्तशङ्कसुखंडनं परं ।
तर्क स तत्त्वनिर्णयवरस्वरूपसंबोधिनीवृत्ति ॥ ६ ॥
अध्यात्मपद्यवृत्तिर्सद्वाथोपूर्व्वंतोभद्रं ।
यो कृत् सद्व्याकरणं चिंतामणिर्नामधेय च ॥ १० ॥
युग्म कृता येनाम्प्रज्ञप्तिः सर्व्वा गार्थ प्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षट्पदाः श्रीजिनेशिनां ॥ ११

× × × × × × × ×

करकंडु नरेंद्रस्य चरित तेन निर्म्मितं ॥
जिनेशपूजनेप्रीत्येत्यैदं समुद्धृत्य शास्त्रतः ॥ १२ ॥
शिष्यस्तस्य समृद्धिबुद्धिविशदो यस्तर्कवादीवरो
वैराग्यादिविशुद्धिवृद्धजनकः सर्व्वार्थसुद्रोमहान् ॥
संप्रीत्यासकलादिभूषणमुनिः सशोध्य वेदं शुभ,
तेनालेखिसुपुस्तकं नरपतेराद्यसुचर्येशिनः ॥ १३ ॥

× × × × × × × × ×

द्व्याब्दो विक्रमतः शातसमुद्रातचैकादशाब्दविक्षा
भाद्रे मासिसमुब्रालयुगतिथोखङ्गे जावाईपुरे ॥
श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदने चक्रो चरित्रत्विद,
राज्ञः श्रीशुभचद्र सूरि यतियश्चंपाधिपस्याद्भुवं ॥ १४ ॥

इति श्री शुभचन्द्रविरचितमुनीश्रीसकलभूषणसहाय्यसापेक्षे भव्यजनजेगीयमानयशोराशि श्री करकंडुमहाराजचरिते करकंडु दीक्षाग्रहणसर्वार्थसिद्धिगमनो नाम पंचदश सर्गः ।

६. कर्म्मकांडसटीक ।

टीकाकार श्री ज्ञानभूषण तथा श्री सुमतिकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २४ । साइज १२×५॥ इञ्च । टीका काल १६ वीं शताब्दी । लिपि संवत् १७७७ । प्रतिपूर्ण तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीरं प्रणम्यादौ विश्वतत्त्वप्रकाशकं ।
भाष्यं हि कर्मकांडस्य वक्ष्ये भव्यहितंकरं ॥
विद्यानंदिमल्ल्यादि भूपलक्ष्मींदु सद्गुरुन् ।
वीरेंदुज्ञानभूप हि वंदे सुमतिकीर्त्तिकं ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमहासाधुर्लक्ष्मीचंद्रोयतीश्वरः ।
तस्य पट्टे च वीरेंदुर्विबुधो विश्ववंदितः ॥ १ ॥
तदन्वये दयांभोधिर्ज्ञानभूषोगुणाकरः ।
टीकां हि कर्मकांडस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामांकिता सूरी श्रीसुमतिकीर्ति विरचिता कर्मकांडस्य टीका समाप्तः।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अषाढ सुदी ६ भौमदिने श्रीमद्भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकीर्ति तच्छिष्य पंडितकिशनदासस्य वाचनार्थे लिखितं महात्मा धनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में, ३८–४२ अक्षर । विषय—आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

मंगलाचरण—

श्रीवृषं वृषभं वंदे वृषदं वृषभांकितं ।
वृषभादिसभाश्लिष्ट पादद्वितयपंकजं ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभं जिनं स्तौमि चन्द्रकांतं सुचंद्रकं ।
चंद्रांकं चेहितं चन्द्रैश्चांद्रिकाहततामसं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यसारादिसुलोकग्रंथान्, सद्गोम्मटादीन् वरदीवहेतून् ।
सत्तर्कशास्त्राष्टसहस्र्यधीशान्नो वेद्मि यहं मोहवशी कृतांतः ॥ १ ॥
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवंश्च सद्भिः सकलैः परैश्च ।
क्षम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि शुभं न दधीत् ॥ २ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः ।
तत्पट्टधारी भुवनादिकीर्ति, जीयाच्चिरं धर्मधुरीणदक्षः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनिबोधबुद्धनिखलन्यायादिशास्त्रार्थ—
करिचन्द्र पामृतपानलालसमतिः श्रीज्ञानभूषोजयी ।
जीयात् पंचमकालकल्पशिखरी तत्पट्टधारो चिरं,
श्रीमच्छ्री विजयादिकीर्त्तिमुनियो भूयाद्यशास्त्रार्थवित् ॥ ४ ॥

सोम प्रभः सोमसमानतेजाः श्रीसोमसल्लांछनडढ्दकीर्तिः ।
सोम. सुमूर्त्तिश्च करोतु साम्यं श्री शुभचन्द्रस्य सुयोगिनः मः ॥ ५ ॥
यः संश्रणोति भजते निखिलं चरित्र,
यः ऋयतिप्रथयतींदुनिभस्यभावान् ।
यः पाठयन् पठयति जिनभक्तिरागात्,
स सिद्धिभोहसुखपंकजमश्नुतेहि ॥ ६ ॥
षट्पथविका. नव्वें शतपचचन्द्रामताः
प्रमारणमस्य विज्ञेयं लेखकैः पाठकैः सदा ॥ ७ ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभचरिते भट्टारक श्रीशुभचन्द्रविरचिते भगवतो निर्वाणगमनो नाम दशमः सर्गः ।

संवत्सरे मदनविक्रमसवसुरूपमिने मासोत्तममासे श्री चन्द्रप्रभुतीर्थंकरजन्मनि पवित्रते चैत्रमासे कृष्णपक्षे ज्ञालसोटशुभस्थानमध्ये वनोपवननदीर्घिकाआगारसमाकुले महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहराज्य-प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये पंडित श्री परसराम जी तत् शिष्य अणदराम चि० तदन्तेवासी भगवानदास पठनार्थं लिखापित ॥

८. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८७. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर रचना संवत १८३३.

मंगलाचरण—

श्री वीरं प्रणिपत्योच्चै र्विघ्नसंदोहनाशकं ।
प्रारब्ध कार्यकर्त्तारं वक्ष्ये द्वीपप्रज्ञप्तिकं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एवं श्रीपद्मनन्दिगुणगणकलितो मानसे मे पदं स्वं,
कृत्वान्यस्मा. सुकृतकृतं श्रीसुरेंद्रादिकीर्त्तेः ।
श्रीमत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिप्रवरसुविबुधश्रेष्ठशिष्यस्य नित्यं,
जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रवररचनाटिप्पणीत्वद्विधातुः ॥ १ ॥
अब्दे वह्नियग्निवस्विदुमित अमले पौष शुक्लस्य षष्ठ्यां,
श्रीमन्नाभेयगेहे विततमतिना, प्राकृतात्संस्कृतेन, ।
श्रीमूलाख्ये सुसंघे तनुमतिनिचयं बोधनायार्थमेषा,
वृंदे नोच्चैः प्रक्लृप्ता सकलजनशुभार्थमंगलं मे करोतु ॥ २ ॥

श्रीमद्बलात्कारगणे सुरम्ये सरस्वतीगच्छमुनीन्द्रपूज्ये।
श्रीकुन्दकुन्दान्वयके सरोजे देवेंद्रकीर्त्तिः प्रबभूव भानुः ॥ ३ ॥
भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके भूत्यमहींद्रकीर्त्तिः।
देमेद्रकीर्त्तिर्ममवै गुरुर्या भूम्यां ततोऽभूत्तरसा सुधीरः ॥ ४ ॥

× × × × × × × × × ×

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रहे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदो नाम त्रयोदशपरिच्छेदः समाप्तः।

६. जम्बूस्वामिचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०५. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३१ अक्षर। विषय–अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र। लिपि सवत १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृत ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिर्विदितः पृथिव्यां।
सरस्वतीगच्छविभूषणं च, बभूव भव्यालिसरोजहंसः ॥ १ ॥
ततोऽभवत्तस्य जगत्प्रसिद्धेः, पट्टे मनोज्ञे सकलादिकीर्त्तिः।
महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निर्ग्रंथराजा जगति प्रतापी ॥ २ ॥
जयति सकलकीर्त्तिः पट्टपंकेजभानुः,
जयति भुवनकीर्त्तिः विश्वविख्यातकीर्त्तिः।
बहुयतिजनयुक्तो मुक्तिमार्गप्रणेता,
कुसुमशरविजेता भव्यसन्मार्गनेता ॥ ३ ॥
विबुधजननिषेव्यः सत्कृतानेककार्यः,
परमगुणनिवासः सद्वृतालीविलासः।
विजितकरणमारः प्राप्तसंसारपारः,
स भवतु गतदोषः शर्मणे वः सतोषः ॥ ४ ॥
पट्टाष्टमांदेस्तपसो विधाता,
क्षमाभिधः श्रीनिलयं धरित्र्यां।

जीयाज्जितानेकपरीषहारिः

संबोधयन् भव्यगण चिर सः ॥ ५ ॥

भ्रातास्ति तस्य प्रथितः पृथिव्यां सद्ब्रह्मचारी जिनदासनामा ।

तनोति तेन चरि त पवित्रं, जंबूदिनाम्नो मुनिसत्तमस्य ॥ ६ ॥

देशे विदेशे सततं विहार, वितन्वता येन कृताः सुलोकाः ।

विशुद्धसर्वज्ञमतप्रवीणाः परोपकारव्रततत्परेण ॥ ७ ॥

सद्ब्रह्मचारी किल धर्मदासस्तस्यास्ति शिष्यः कचिवद्धसख्यः ।

सोजन्यमल्लो जलदः कृतोय, तद्योगतो व्याकरणप्रवीणः ॥ ८ ॥

कविर्महादेव इति प्रसिद्धस्तन्मित्रमास्ते द्विजवंशरत्नं ।

महीतले नूनमसौ कृतश्च, साहाय्यतस्तस्य शुभमें हेतोः ॥ ६ ॥

ग्रंथः कृतोऽयं जिननाथभक्त्या, गुणानुरागाच्चमहामुनीनां ।

पूजाभिमानाद्रहितेन नूनं मया प्रशस्तः परमार्थ बुद्ध्या ॥ १० ॥

ये श्रृण्वन्ति चरित्रमुत्तमसिदं श्री जंबुनाम्नो मुने,

नानाचित्र कथाविभूपितमतिप्रवीणयसबोधन ।

तेपां स्याद्बहुपुण्यकर्मनिपुणा बुद्धिः शुभ भूरिव,

त्यक्तशेपभवप्रसूतसुखसार्थस्यासुधर्मास्पद ॥ ११ ॥

पठनीयपाठनीयशास्त्रमेतन्मुनीश्वरैः ।

जंबूस्वामिचरित्राद्य रोमांचजननं नृणां ॥ १२ ॥

क्षन्तव्य शारदे देवि यदत्रस्खलित मया ।

मोहप्रमादवशतः श्रुताब्धौ को न मुह्यति ॥ १३ ॥

जंबूस्वामिजिनाधीशो भूयान्मांगल्यसिद्धये ।

भवतां भुवि भो भव्याः श्री वीरांतिम केवली ॥ १४ ॥

एकविंशतिसंख्यानि शतान्यत्र चरित्रके ।

त्रिंशद्युतानि श्लोकाना, शुभानां सति निश्चितं ।१५॥

इति श्री जम्बूस्वामिचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिशिष्य ब्रह्मचारी श्रीजिनदास विरचिते विद्युच्चर-महामुनिसर्वार्थसिद्धि गमन नामैकादशः सर्गः ।

१०. जयकुमार पुराण ।

रचयिता ब्रह्म कामराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर । प्रतिपूर्ण है तथा प्राचीन है। लिपि संवत् १७१६ ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभ नृसुरार्च्चितं।
भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥
नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकर्मारये निशं।
पञ्चभ्यस्सद्गुरुभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराण योगिनो वरं।
पठनपाठनश्रोतृशीलानां जयपुण्यदं ॥ १ ॥
प्राप्तशिवो जयीदेयाज्जयोस्माभिः स्तुतः श्रुतः।
युस्माभि र्नः पुराणस्य व्याआद्रत्नत्रयं वचः ॥ २ ॥
प्रकथ्यतेऽन्वयोऽथात्र ग्रंथकृद्ग्रंथभक्तजः।
मूलसंघे वरे वीरपारंपर्यान्वितुगंणे ॥ ३ ॥
अभूद्गणो बलात्कारः पद्मनंद्य दि पंचसु।
नामास्मिन्नथ मुनिग्रीव शारदा बलवाचकः ॥ ४ ॥
आचार्यो कुदकुदाख्यात्तस्मादनुक्रमादभूत्।
सकलकीर्तियोगीशो ज्ञानी भट्टारकेश्वरः ॥ ५ ॥
येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वागवरादिके।
निर्ग्रंथे न कवित्वादिगुणे न वाहिता पुरा ॥ ६ ॥
तस्माद् भुवनकीर्ति श्रीज्ञानभूषणयोगीराट्।
विजयकीर्त्त्योऽभवन् भट्टारकपदेशिनः ॥ ७ ॥
तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिकीर्त्ति संयमि।
गुणकीर्त्याह्वया आसन् बलात्कारगणेश्वरः ॥ ८ ॥
ततः श्री गुणकीर्त्तीयपदव्योमदिवाकरः।
वादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् वादिभूषणः ॥ ९ ॥
तत्पदाधीश्वरो विश्वव्यापिनी श्वेतकीर्त्तिधृत्।
रामकीर्तिरभूदस्य रामो वा सुखदो गुणैः ॥ १० ॥
तस्मात् स्वगच्छपतिरस्ति स पद्मनन्दी।
निष्णांतकोकसुखकारकपद्मनन्दी।
भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी
श्रीरामकीर्त्तिपदभूधरपद्मनन्दी ॥ ११ ॥

यः शब्दतर्कपरमागमविद्विरागी
　　　　रागो शिवे विहितसर्वतपः समूहः ।
भाऽयत्र वस्त्रपरिवर्जनजातरूपः,
　　　　कालकलौ परिहृताखिलवस्तुलोभ. ॥ १२ ॥
पस्त्राणा त्यजनदृशोऽस्य यतिनो वशादिवालस्यविद्
　　　　धृत्वाग्रे समरं विसिद्नृपतिः खङ्ग पुरस्येति सः ।
शाहसि प्रविस्तीर्य मां मुनिवरस्त्वं चाम्बराणि प्रभो
　　　　राजन्यं कुरु सम्रगृह्य सतदां स्वामीकृतान्नाचलत ॥ १३ ॥
गिरिपुर विपतिन् पपुंगवस्तमभिवीक्ष्य मुदोल्लमते प्रभुः ।
गिरिधरादिमहासमाहृय. जलधिरंबु च येन विधु यथा ॥ १४ ॥
तदुपदेशवशेन तदीयसत्प्रवरपुण्यभराकृतसाहस ।
जयपुराणमिदं तनुबुद्धिना रचितमग्रजनाथसुप्रार्थिना ॥ १५ ॥
नाम्रध्रवसभवपंडितजीवराजमेधावलात्सकलसौख्यकरः कृतोऽय ।
जैनालयः स्थपतिबुद्धिभरादपूर्वो ग्रंथो नु वा जयभृतो जिनदर्शनोर्व्या ॥ १६ ॥
भट्टारकस्य गुरुबंधुरभूत्प्रसिद्धो,
　　　　मेधावतः सुमतिकीर्तिमुनेर्गुणाढ्यः ।
आचार्यमुख्यसकलादिमभूषणाख्य-
　　　　स्तच्छिष्य सूरिरभवत् स नरेन्द्रकीर्तिः ॥ १७ ॥
पूर्णस्य वक्तृकवितादिगुणोरदभ्रोः
　　　　शिष्यो बभूव नृपमान्यनरेन्द्रकीर्तिः ।
वर्णीस्मरा भवयुपः सहिलाह्वयाख्यः,
　　　　शिष्योऽस्ति तस्य जयसेवकनामराजः ॥ १८ ॥
मात्रासंधिविभक्तिलिंगवचनालंकारंरीत्यादिभिः,
प्रोक्तं यद्रहित सरस्वतिमया ग्रंथेऽत्र सूरीश्वरोः ।
निर्वाह्य विदभावत. क्षममयिन्नंतद्विहिते बालके,
मातेवास्फुटवाग्रते शिवकरा तारुण्यकालाद्रुते ॥ १९ ॥
दुःसंध्यादिमलं विनाश्य गुणिनः सत्रीक्ष्य यूयं बुधाः,
　　　　हर्षन्तः कविचित्तकं कुरुत भो ग्रंथद्रहः स्वात्मनि ।
शुद्ध सज्जनता गुणाद्धृदमिवा कृतादिनैर्मल्यदं,
　　　　गंभीरं पृथुलं विशेषसलिलं पंकाकरद्वासराः ॥ २० ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,
　　सम्यकूपदेन सहितो भवसौख्यवर्गात्।
अन्योत्थकर्मजनकाद्विमुखस्य काचि-
　　च्चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोऽन्यः॥ २१॥

अमृतवार्द्धि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमंदिरचपककः।
समूहोः सहिताः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये॥ २२॥
शिल्पिरुत्पादयत्येव जिनबिंबं तथा कविः।
शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानितं जनोः॥ २३॥
राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमंदपाटस्यमुख्ये।
　　पश्चात् सवत्सरस्य प्ररचितमटतः पंच पंचाशतोहि।
अभ्राभ्रात्तोक संवत्सरनिकरयुजः फाल्गुणे मासि पूर्णे।
　　द्रुम्रेवोचोदयाख्ये सुकवि वनयिनो लालजिष्ठोश्च वाक्यात्॥ २४॥
सकलकीर्त्तिकृतं पुरुदेवजं समवलोक्य पुराणमियंकृतिः।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च वृहद्दलं जिनसेनकृतकृता॥ २५॥

इति श्री जयांके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरूपदेश ब्रह्मकामरा जविरचिते प० जीवराज-सहाय्यात त्रयोदशमः सर्गः॥

प्रति न० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर। प्रति पूर्ण है।

संवत् १६६१ वर्षे भादवा बुदी ३ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचायान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तदन्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवास्तदूपट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदीस्तदाम्नाये श्री गुर्जरदेशे श्री सूरतबिंदार श्री वासपूज्यचैत्यालये हुवडजात य साह श्री संतोषी भ्राता साह जीवराज तयोः जननी आर्यिका बाई करमा तया स्थविराचार्य श्री नरेंद्रकीर्त्तिस्तच्छिष्य ब्रह्म श्री लाड्यका तत्च्छिष्यब्रह्म श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाप्य दत्तं॥

संवत् १७३० वर्षे ब्र० कामराजेन स्वाभिष्ट शिष्य ब्र० वाघजीष्टवे जयपुराणमिदं दत्तं॥

११. जिनसहस्रनाम सटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन। टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर। भाषा सस्कृत। पत्र संख्या १६१। साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

प्रशस्ति—

अर्हंतः सिद्धनाथ स्त्रिविधमुनिजनाभारती चार्हती ऽस्या
मंत्रं यो कुन्दकुन्दो विबुधजननुतास्तंदनःपूज्यपादः
विद्यानंदोऽकलंक-कलिमलहरणः श्रीसमंतादिभद्रो
भूयान्मे भद्रबाहुर्भवभयमथनो मंगलं गौतमादि ॥ १ ॥
श्रीपद्मनन्दिपरमात्मपर. पवित्रो
देवेन्द्रकीर्त्तिरथसाधुजना भवंद्य. ।
विद्यादिनन्दिवरसूरिरनल्पबोध.,
श्रीमल्लिभूषण इतोस्तु च मंगलं मे ॥ २ ॥
× × × × × ×
श्रीश्रुतसागरकृतिवरवचनामृतपानमत्र यैर्विहितं
जन्मजरामरणहरं निरंतरं तैः शिवं लब्ध ॥ ३ ॥
अस्ति स्वस्ति समस्तसघतिलकः श्रीमूलसघं,
वृत्तं यत्र मुमुक्षुवर्गशिवदं ससेवितं साधुभि. ।
विद्यानंदिगुरुस्त्वहास्तिगुणवद्गच्छेगिरः सांप्रतं,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिरं नंदतु ॥ ४ ॥
इत्याचार्यश्रीश्रुतसागरविरचितायां जिननामसहस्रटीकायामंतकृच्छतविवरणो नाम दशमोऽध्यायः।

१२. जीवंधर चरित्र ।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है। रचना संवत् १५९६. लिपि संवत् १६३०. जीवंधर चरित्र अभी तक अप्रकाशित है।

मंगलाचरण—

श्रीसन्मति. सतां कुर्यात्सद्धीहितं मलं पर ।
येनाप्येत महामुक्तावस्य सर्वेश्वरः ॥ १ ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री मूलसंघो यतिमुख्यसेव्यः, श्रीभारतीगच्छविशेषशोभः ।
मिथ्यामतध्वांतविनाशदक्षो, जीयाच्चिरं श्रीशुभचंद्रभासी ॥ १ ॥
श्रीमद्विक्रमभूपतेर्वसुहताद्वैतेशतेसप्तह,
वेदैन्यूनतरे समे शुभतरे पिमासे वरे च शुचौ ।

वारे गीष्पतिके त्रयोदशतिथौ सन्नूतने पत्तने,
श्री चन्द्रप्रभधाम्नि वै विरचितं चेद मया तोषतः ॥ २ ॥

इति श्री जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्षगमनवर्णननामत्रयोदशो भलंः ।

संवत् १६३६ वर्ष अषाढ सुदी १३ सोमवारे सांपणाग्रामे राय श्री सुरजनजी प्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवातच्छिष्य-मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री चन्द्र-कीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे साह श्री कमा तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या करणादे द्वितीया लहुडी । तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र साह ऊदा, द्वि० सा. माधु. तृ. सा० माधु चतुर्थ सा. चादु पचम सा. कालु । सा. ऊदा तद्भार्या उत्पिदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदरान्, दानगुणे श्रेयांस, कीर्त्ति-गुणे रामचन्द्र, शीलगुणे सुदर्शन, प्रभावनागे वज्रकुमार, इत्याद्यनेकगुणालंकृतगात्रान साह श्री भीखा तद्भार्या दानशीलतपभावना भावलदे तयोः पुत्राः चत्वारिः । प्रथम पुत्र साह जेसा भार्या जसमादे, द्वि० पुत्र मोटा, तृतीय चि० वेणा चतुर्थ चि० हरीदास । द्वितीय पुत्र साह सेखा तद्भार्यास्तिस्रः प्र० भा० शृंगारदे तयोः पुत्र चि० तेजा । द्वितीया भार्या सक्तादे । तृतीया भार्या संकरदे । सा, माधु भार्या मुक्तादे तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. चीतु भार्या चीतादे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रमथ पुत्र खीवा द्वितीय पुत्र सांगा । तृतीय पुत्र माल्हा । द्वितीय पुत्र धर्मा भार्या धारादे तत्पुत्र ताल्हू । तृतीय पुत्र लाखा भार्या लखमादे । चतुर्थ पुत्र परवत भार्या पाटमदे । पंचम पुत्र नानू भार्या नारंगदे । सा. माधु भार्या पदमपती । साह चांदू भार्या ज्ञानशीलतप-भावना सुहागीचांदणदे तयोः पुत्रा चत्वारः । प्रथम पुत्र कुलमंडन सा. श्रिया तद्भार्या प्रथम सुहागदे द्वि० भार्या लाहुडी । द्वितीय पुत्र हीरा भार्या हीरादे तृ० पुत्र वोहिथ भार्या वहुरंगदे चतुर्थ पुत्र होला भार्या हरषमदे । साह काल्हू भार्या द्वे प्रथम केलवदे, द्वितीया भार्या कौतिगदे तयोः पुत्राः चत्वारः । प्रथम पुत्र सा० आखा भार्या अहंकारदे द्वि० पुत्र चि० देवा तृतीय पुत्र गढमल चतुर्थ पुत्र जालप एतेषां मध्ये जिनपूजा-पुरंदरान्, राजसभाशृंगारहारोपमान, सौम्यगुणचंद्रमा प्रतापगुणसुर्यसम, गंभीरगुणसमुद्रतुल्यान इत्याद्यनेक गुणगणालंकृतगात्रान् साह श्री ऊदा तत्पुत्र कुलमंडन साह सेखा तेनेदं कर्मक्षयार्थं जीवंधरचरित्रं लिखाप्य पं० श्री पदारथपठनाय दत्तं ।

१३. ज्ञानसूर्योदय नाटक ।

रचयिता श्री वादिचंद्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१, साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४४ अक्षर । रचना संवत १६४८. लिपि संवत् १८३५. श्री वादिचन्द्र सरस्वतिगच्छ के आचार्य थे तथा प० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । नाटक अभी तक अप्रकाशित है ।

मंगलाचरण—

अनाद्यनंतरूप च पंचवर्णात्ममूर्तये ।
अनंतमहिमाताय नमोंकाराय नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

मूलसंघे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमा ।
दुस्तरं हि भवाम्भोधिं सुतरं मन्यते हृदि ॥

तत्पट्टामलभूषणं समभवद्दैगम्बरीये मत
चच्चद्बर्हकरः सभातिचतुरः श्रीमत्प्रभाचंद्रमा ।
तत्पट्टे ऽजनि वादिवृंदतिलकः श्री वादिचन्द्रोयति ,
तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिर्भव्याब्जसंबोधनः ।
वसुवेदरसाब्जांके वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽयं बोधसंरम्भः ॥

इतिसूरिश्री वादिचंद्रविरचिते ज्ञानसूर्योदय नामनाटके आत्मकर्मजयविवरणो चतुर्थोऽध्यायः

संवत् १८३५ मिती आषाढ सुदी १३ सोमवासरे लिखापितं शाह श्री पूलीचंद गोधा धर्महेतवे लिखितं जती नूरजमल बुगांवतीमध्ये राज्ये श्री रावराजा श्रीविष्णुसिहजी ।

१४. तत्वज्ञानतरंगिणी

रचयिता मुमुक्षु भट्टारक श्री ज्ञानभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८ । साइज १२×५॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६–४० अक्षर । रचना संवत् १५६०. लिपि संवत् १८२५. तरंगिणी प्रकाशित हो चुकी है ।

मंगलाचरण—

प्रणम्यशुद्धचिद्रूपं सानंदं जगदुत्तमं ।
तल्लक्षणादिकं वच्मि तदर्थी तस्य लब्धये ॥

प्रशस्ति—

जातः श्री सकलादिकीर्त्तिमुनि यः श्रीमूलसंघेऽग्रणी-
स्तत्पट्टोदयपर्वतेरविरभूद्भव्यांबुजानंदकृत् ।
विख्यातो भुवनादिकीर्त्तिरथयस्तत्पादकंजेरजः,
तत्त्वज्ञानतरंगिणी स कृतवानेतां हि चिद्भूषणः ॥
क्रीडंति ये प्रविश्ये मां तत्त्वज्ञानतरंगिणीं ।
ते स्वर्गादिसुखं प्राप्य सिद्ध्यंति तदनंतरं ॥ २ ॥

ये च विक्रमातीताः शतपंचदशाधिकाः ।
षष्टिसंवत्सराः जातास्तदेयं निर्मिताकृतिः ॥ ३ ॥
ग्रन्थसंख्यात्रविज्ञेया: लेखकैः पाठकैः किल ।
षड्त्रिंशदधिका पंचशती श्रोतृजनैरपि ॥ ४ ॥

इति मुमुक्षुभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचितायां तत्त्वज्ञानतरंगिण्यां शुद्धचिद्रूपप्राप्तिक्रमप्रतिपादकोऽष्टादशोऽध्यायः ।

संवत् १८२५ लिखत माणिकचंदमहात्मना सवाईजयपुरमध्ये ।

१५. त्रिभंगीसार टीका ।

टीकाकार श्री विवेकनन्दि । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ३४. साइज ११×४॥ इञ्च ।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञं करुणार्णवं त्रिभुवनाधीशार्च्यपादं विभुं ।
यं जीवादिपदार्थमार्थकलने लब्धप्रशंसं सदा ॥ १ ॥
कर्म्मद्रुमोन्मूलनदिक्करींद्रं सिद्धांतपाथोनिधिदृष्टपारं ।
षट्त्रिंशदाचार्यगुणैः प्रयुक्तं नमाम्यहं श्रीगुणभद्रसूरिं ॥
या पूर्वं श्रुतमुनिना टीका कर्णाटकभाषया विहिता ।
लाटीयभाषया सा विरच्यते सोमदेवेन ।

× × × × ×

प्रणिपत्य नेमिचंद्रं वृषभाद्यान् विपश्चिमान् जिनान् सर्वान् ।
वक्ष्ये स्वभाषयाहं विशदां टीका त्रिभंग्यायां ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेंद्रस्य पुलोमपुत्रा प्रियानारायणस्याब्धिसुता बभूव ।
तथा तदेवस्य विजोणिनाम्नी प्रिया सुधर्म्मा सुगुणा सुशीला ॥१॥
तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कोमुदवृद्धिकारी ।
व्याघ्रेरवालांबुनिधिः सुरत्नं जीयाच्चिरं सर्वजनानवृत्तिः ॥ २ ॥
श्रीमज्जिनोक्तानि समंजसानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मशक्त्या ।
श्रीमूलसंघाब्धि विवर्द्धनेंदोः श्रीपूज्यपादं प्रभुसत्प्रसादात् ॥ ३ ॥

× × × × × ×

श्रीपद्मांद्रियुगे जिनस्य नितरां लीनः शिवाशाधरः ...
सोमः सद्गुणभाजनं सविनयः सत्पात्रदाने रतः ।

सद्गुणरत्न ... सदा बुधमनोह्लादी चिरं भूतले,
संख्यातिना ... विरचिता टीका सुबोधाविधा ॥ ४ ॥
इति त्रिवर्गात्मारटीका समाप्ता ।

१६, दुर्गपदप्रबोध ।

रचयिता वाचनाचार्य श्री वल्लभ गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३० । साइज १०×३॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ७३-७६ अक्षर हैं । अति जीर्ण है, अनेक स्थानों पर अक्षर मिट गये हैं ।

मंगलाचरण—

स्वस्ति श्री दायकं देवं नायकं शांतिनायकं ।
सद्बुद्धिदायकं शास्त्रकारिणां प्रणमाम्यहं ॥

प्रशस्ति—

श्री अकबरराजाधिप......आप्तमान्यशीर्षाणां तेषां गुरुराजानां धर्मे राज्ये सुविख्याते । भूमि-पसू" १६८१ सम्ये वर्षे सुखाधिके मासे कार्त्तिके सप्तमी दिने...... .... ।

पुत्रीत्वेन सुरी ब्रह्मी शारदेयं ब्राह्मणः श्रियः ।
नित्यधिक्यं पराभूता येरा ते ऽमी यं जयन्तिह ॥ १ ॥
ज्ञानविमलनामानः उपाध्यायाः गुणाश्रयाः
तर्कसाहित्यसिद्धांतप्रमुखग्रंथसद्विधः ॥ २ ॥
तेषां शिष्यवरैश्चक्रे श्री श्रीवल्लभवाचकैः ।
दुर्गपदप्रबोधोऽयं प्रकटज्ञानहेतवे ॥ ३ ॥
श्री हेमचंद्रसूरीन्द्रः कृते लिंगानुशासने ।
विधाने या शुभा वृत्तिः तस्या दुर्गार्थबोधदः ॥ ४ ॥
× × × × ×
इति श्री दुर्गपदप्रबोधः समाप्तः ।

संवत १८१२ का मिती पोष सुदी १० आदित्यदिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री महेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडला-चार्य श्रीअनंतकीर्ति स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये वडजात्या गोत्रे साह श्री ठाकुरसी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र साह श्री गोरधनदास तत्पुत्र साह श्री मयाराम, द्वितीय पुत्र साह श्री सूर्यमल तत्पुत्र साह श्री नव-निधिराम, तृतीय पुत्र साह श्री षेमराज तत्पुत्र साह श्री साहिबराम, चतुर्थ पुत्र साह श्री परमानंद तत्पुत्रौ चि० राजाराम हरिचन्द्रौ एतेषां मध्ये साह श्री नवनिधिरामेन इदं ग्रंथं मंडलाचार्य श्री १०८ श्री अनन्त कीर्ति जी तच्छिष्य पंडित उदयरामाय घटापितं ।

१७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नमः श्री वर्द्धमानाय पंचकल्याणभागिने ।
जिनाय विश्वनाथाय मुक्तिभर्त्रे गुणाब्धये ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थकरा जगत्त्रयहिताः सिद्धाः अनंताविदः
पंचाचारपरायणाश्च गणिनः सत्पाठकाः साधवः
स्वमुक्त्यादिसु साधकावरतपो युक्ताश्च वंद्या स्तुता
भव्यैर्विश्व मया दिशतु शिवद सन्मंगलं मेभवः ॥ १ ॥
भवेयुः श्रीमतोधन्यकुमारख्यसुयोगिनः ।
चरित्रस्याखिलाः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसंख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारकं श्री पद्मनन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्त्ति विरचिते धन्यकुमारतपः सर्वार्थसिद्धि गमनो नाम सप्तमो संधिः ।

संवत् १५३३ वर्षे पौष सुदी ३ गुरो श्रवणे नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरत्राण गयासुद्दीन राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतिगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सिहकीर्त्तिदेवाः तच्छिष्य मुनि रत्नभूषण तन्निमित्ते खंडेलवालान्वये साह नाथू तद्भार्या नैणसिरी तयोः पुत्राः पचायण भार्यापुसरी । साह तेजा भार्या तेजसिरी । तत्पुत्र साह डूंगर । साह गोल्हा भार्या गोल्हसिरी तयोः पुत्रौ साह दासा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थमिदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रदत्तं ।

१८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमितगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६०. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४० अक्षर । रचना संवत् १०७०. लिपि संवत् १७३३. प्रति साधारण अवस्था में है । ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नभस्त्रत्रयतुंगशाले जगद्गृहे बोधमयः प्रदीपः ।
समंततो द्योतयते यदीयो भवंतु ते तीर्थकराः श्रिये नः ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सिद्धांतपयोनिधिपारगामी श्रीवीरसेनोऽजनिसूरिवर्यः।
श्रीमाथुराणां यमिनां वरिष्ठः कषायविध्वंसविधौ पटिष्ठः ॥ १॥
आसितास्त्रिलवनार्थसमृद्धो निर्मलोमितगतिर्गणनाथः।
वासरो दिनमणेरिव तस्माज्जायते स्म कमलाकरबोधी ॥ २ ॥
नेमिषेणगणनायकस्ततः

पावनं द्रव्यमधिष्ठितोविभुः।

पार्वतीपतिरिवास्तमन्मथो

योगगोपनपरोगणार्चितः ॥ ३ ॥

कोपनिवारी शमदमधारी माधवसेनः प्रणतरसेनः।
यो ऽभवदस्मान्द्धलिमहस्मा यो यतिसारः प्रशमितमारः ॥ ४ ॥
धर्मपरीक्षाकृतवरेख्या ,

,धर्मपरीक्षामखिलशरण्या

शिष्यवरिष्ठोमितगतिनामा

तस्य पटुत्वो ? नघ मग्धिामा ॥ ५ ॥

× × × × × × × × ×

सवत्सराणां विगते सहस्रे संसप्ततौविक्रमपार्थिवस्य।
इदं निषेध्यान्यमतं समाप्तं जिनेंद्रधर्मामितियुक्तशास्त्रं ॥

इति धर्मपरीक्षायाममित गतिकृतायां समाप्तः परिच्छेदः।

संवत् १७३३ कार्तिक सुदी २ दिने शुक्रवारे श्रीपातसाह मुलकगीर राज्ये सहादरामध्ये सा० परसराम तत् पुत्र बनारसीदास तत्पुत्र निर्मलदास लिखावितं। लेखक श्वेतांबररामचंदेनलिख्यतं।

प्रति नं० २। पत्र संख्या १४५। साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत १६६६।

अथ सवत्सरे श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६६६ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ शुक्रवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः द्वितीयः शिष्यमंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म. श्रीधर्मकीर्तिदेवास्तत्पट्टे म. श्रीविसालकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र देवास्तत्पट्टे म श्री नेमचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्तिस्तदाम्नाये गंगवाल गोत्रे जोवनेरवास्तव्ये राजि मनोहरदासविजयराज्ये सा० काल्हू तस्य भार्या कवलादे तस्य पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० तेजा तस्य भार्या तिलकादे तस्य पुत्राः षट्। प्रथम पुत्र ना तिलोका तस्यभार्या तिहुसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० श्रवण

द्वितीय पुत्र चि० करमचंद। सा० तेजा द्वितीय पुत्र सा० वेगा तस्य भार्या वेगमदे तस्य पुत्र चि० गोवीदास। सा० तेजा तृतीय पुत्र चि० सीहा चतुर्थ पुत्र चि० हीरा पंचम पुत्र चि० नराइण षष्ट पुत्र चि० सिरीपाल .... एतेषां मध्ये सा० रूप तस्य पुत्र चि० डूंगरसी इदं धर्मपरीक्षानामशास्त्र मुनिगुणचद्राय प्रदत्तं

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १५६६.

संवत् १५६६ पौष सुदि ६ शुक्रे दूष्टिकापथदुर्गे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुन्दाचायान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तदाम्नाये मिथ्यातमध्वांतसूर्याः परमसैद्धांतिकमंडलाचार्यः श्रीसहनन्दिदेवास्तच्छिष्य वादिगजकेशरिचरित्रपात्र-परमतपस्वीमंडलाचार्यः श्री धर्मकीर्त्तिदेवाः। तस्याम्नाये सकलगुणसमन्वितपंडिताचार्यः अभू भार्या साध्वी लाडो पुत्र ६ प्रथम पुत्र पं० दीन भाया '''द्वितीयः पुत्रः पं० घाघो तृतीयपुत्रः पं० धीरु भार्या साध्वी सुलखा। चतुर्थपुत्र वीरु पंचमपुत्र पं० दासे षष्ट पुत्र खरगु एतेषां मध्ये साध्वी सुलखा एतत् शास्त्रं लिखापितं।

१६. धर्मसंग्रह श्रावकाचार।

रचयिता पंडित श्री मेधावी। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७१। साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ३६-४३ अक्षर। रचना संवत् १५४१. लिपि संवत् १५४२। कवि ने बादशाह फिरोजखां के शासन का उल्लेख किया है तथा लिपिकर्त्ता ने बहलोलसाह के राज्य का उल्लेख किया है। ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

श्रियं दद्यात् स वो देवो नित्यानंदपदप्रदां।
यस्यानंतानिदृग्ज्ञानवीर्यसौख्यान्यनतवत्॥ १॥

अन्तिम पाठ—

मेधाविनो गणधरात् स निशम्य धर्म्मं
श्रीगौतमादिति सयौरजनः प्रशस्त।
भूयो निजं दृढतरां प्रविधाय दृष्टिं,
नत्वा जिनं मुनिवरांश्च गृहं जगाम॥ १॥
अनादिकाल भ्रमता मया या नाराधिता क्वापिविराधितैव।
आराधनां मंगलकारणीं, तामाराधयामीह जिनेंद्रभक्तः॥ २॥

इति सूरि श्री जिनचंद्रांतेवासिना पंडितमेधाविना श्रीधर्म्मसंग्रहे सल्लेखनास्वरूपकथनं श्रेणिकराजस्य गृहप्रवेशनं च दशमोधिकारः

प्रशस्ति—

स्वस्ति स्वतिलकायमानमुकुटघृष्टांहिपाथोरुहे,
स्वस्त्यानंदचिदात्मने भगवते पूजार्हते चार्हते।

स्वस्ति श्रीगणहिनन्दाय विभवे सिद्धाय बुद्धायते
स्वस्त्युदयत्ति जगविना तर हतस्वरधाम शुद्धायते ॥ १ ॥

१
गगनस्पतनचमरामननपुष्पवृष्टी
पिशीद्व मासमृदुरवेगतदनाः ।
ये ऽनतबोधसुखदर्शनवीर्ययुक्ता—
स्ते सन्तु नोजिनवराः शिवसौख्यदा वै ॥ २ ॥

सम्यक्त्वमुख्यगुणरत्नतलान्दाये, संभूय लोकशिरसि स्थितमादधानाः ।
सिद्धाः सदा निरुपमागतमूर्त्तिवद्या. भूयास्तनुराणु मम ते भवदुःखहान्यैव ॥ ३ ॥

मूलोत्तरादिगुणराजिविराजमानाः
क्रोधादिदूषणमहीधृतहिममानाः ।
ये पचधाचरणचारणलब्धमानाः
नन्दतु' ते मुनिवराः बुधवंद्यमानाः ॥ ४ ॥

ये ऽध्यापयन्ति विनयोपनतान्विनेयान्
सद्द्वादशांगमखिलं रहसि प्रवृत्तान ।
अर्थं दिशति च धिया विविधद्विदत-
स्ते ऽध्यापका. हृदि मम प्रवसतु सतः ॥ ५ ॥

रत्नत्रय त्रिविधमप्यमृताय नूनं,
ये ध्यानमौननिरतास्तपसि प्रधानाः ।
ससाधयन्ति सतत परभावमुक्ता

२
स्ते साधवो ददतु वः श्रियमात्मनीना ॥ ६ ॥

३
लोकोत्तमाः शरणमगलमगभाजामर्हद्विमुक्तसमुनयो जिनधर्मकाश्च ।
ये तान्नमामि च दधामि हृदंबुजेहं, संसारवारिधिसमुत्तरणैकसेतून् ॥ ७ ॥
स्याद्वादचिह्न खलु जैनशासनं, जीयात्त्रिलोकीजनशर्मसाधनं ।
चक्रे सता वद्यमनिंद्यबोधनं, जन्मव्ययध्रौव्यपदार्थशासनं ॥ ८ ॥
सन्नदिसंघसुरवर्त्मदिवाकरोभू-
च्छ्रीकुदकुद इति नाम मुनिश्वरोऽसौ ।

१ वाग्मान २ आत्मनीना ३ धर्मकश्च

जीयात्स यद्विहितशास्त्रसुधारसेन
मिथ्याभुजंगगरलं जगतः प्रणष्टं ॥ ६ ॥
आम्नाये तस्य जातो गुणगणसहितो निर्म्मलब्रह्मपूतः
सद्विद्या पारयातो जगति सुविदितो मोहरागव्यतीतः।
सूरिश्रीपद्मनन्दी भवविहृतिनदी नाविको भव्यनंदी
स्यन्नित्यानित्यवादी परमतविलसन्निर्मदी भूतवादी ॥ १० ॥
तत्पट्टे शुभचन्द्रकोऽजनि जनिध्रोव्यांतरुपार्थवि-
द्वेधा स तपसां विधानकरणः सद्धर्म्मरक्षाक्षणः।
येनोद्योति जिनेंद्रदर्शननभो नक्तं कलौ ज्योत्स्नया,
सद्वृत्त्यामृतगर्भया गुरुबुधा नंदात्मना स्वात्मना ॥ ११ ॥
तस्मान्नीरनिधेरिवेंदुरभवच्छ्रीमज्जिनेंद्रर्गणी,
स्याद्वादांबरमंडलेकृतगतिर्दिग्वाससां मडनः।
यो व्याख्यानमरीचिभिः कुवलये प्रल्हादनं चक्रिवान्,
सद्वृत्तः सकलः कलंकविकलः षट्तर्क्कनिष्णातधीः ॥ १२ ॥
श्रीमत्पुस्तकगच्छसागरनिशानाथः श्रुतादिर्मुनि—
र्जनोर्हन्मततर्कर्कशतया न्यायवादिनो योऽभिनत्।
यस्मादष्टसहस्रिकां पठतिवान् विद्वंभरन्यैरहं,
सोऽयं सूरमत्तल्लिको विजयते चारित्रपात्रं भुवि ॥ १३ ॥
सूरि श्री जिनचद्रकस्य समभूद्रत्नादिकीर्तिर्मुनिः,
शिष्यस्तत्त्वविचारसारमतिमानसद्ब्रह्मचर्यान्वितः।
योनेकैर्मुनिभिस्त्वगुणाव्रतिभिराभातीहमौड्यौर्गणे,
चन्द्रो व्योम्नि यथा गृहैः परिवृतो यैश्चोल्लसत्कांतिमान् ॥ १४ ॥
तच्छिष्यो विमलादिकीर्तिरभवन्निग्रन्थचूडामणि-
र्यो नाना तपसा जितेंद्रियगणः क्रोधेभकुंभे शृणिः।
भव्यांभोजविरोचनोद्धरशशांकाभस्वकीर्त्योज्वलो,
• नित्यानंदचिदात्मलीनमनसे तस्मै नमो भिक्षवे ॥ १५ ॥
यः क्षापटमात्रवस्त्रमलं धत्ते च पिच्छं लघु,
लोचं कारयते सकृत् करपुटे भुक्ते चतुर्यादिभिः।
दीक्षां श्रौतमुनीं बभार नितरां सत्क्षुल्लकः साधकः,
आर्यो दीपक आख्यात्र भुवने सौदीप्यतां दीपवत् ॥ १६ ॥

छात्रोऽमूज्जैनचंद्रो विमलतरमतिः श्रावकाचारभूच-
स्वगोत्रोद्धरणात्तनुहो सीपुहीमातृसूतः ।
मीहाख्यः पंडितो वै जिनमतनयनः श्रीहिमारे पुरेस्मिन्,
ग्रंथं ग्रन्थसितेन त्रिमहनि वसता नूनमेष प्रसिद्धेः ॥ १७ ॥

सप्तदसके निपर्वति सुन्दरे, श्रिया पुरे नागपुर समस्ति तत् ।
पेरोजखाना नृपति प्रयाति न्यायेन शौर्येण रिपून् निहन्ति च ॥ १८ ॥

नंदंति यस्मिन् धनधान्यसंपदा लोका स्वसंतानगणेन धर्म्मतः ।
जैनाघनाश्चैत्यगृहेषु पूजनं स्त्रपनदानं विदधत्यनारतं ॥ १९ ॥

नैनाणी नाना 'नरसगह बुधः, पूर्ण व्यधा ग्रंथमिम तु कार्त्तिके ।
चन्द्राब्धि बाणैक १५४१ मितेत्रवत्सरे, कृष्णे त्रयोदश्यं दिनश्चशक्तितः ॥ २० ॥

चन्द्रप्रभसद्मानि तत्र महिते कूटस्थसत्कुंभमुकेतनादिभिः ।
महाभिषेकादिमहोत्सवैर्ल्लसत, प्रवृद्धसगीतरसेन चातिशं ॥ २१ ॥

मेवाविनाम्न, कविता कृतोयं, श्रीनन्दनोर्हन्पदपद्मभृंगः ।
यो नंदनो भूजिनदाससंज्ञो, तु मोदको स्यास्तु सुदृष्टिरेषः ॥ २२ ॥

मानभद्रवसुनन्दिकृत समीक्ष्य
सछ्रावकाचरणसारविचारहृद्य ।
आशाधरस्य च बुधस्य विशुद्धवृत्तेः
श्रीधर्म्मसंग्रहमिम कृतवानह भो ॥ २३ ॥

यद्यर्थदोषः क्वचिदर्थजातः शब्देषु वा छन्दसि कोथवा स्यात् ।
युक्त्या विरुद्धं गदित मया यत्, संशोध्य तत् साधुधियः पठंतु ॥ २४ ॥

शास्त्रं प्राच्यमतीवगभीर पृथुतरमर्थैर्ज्ञातुमलकः ।
तस्मादल्प पिच्छलममल कृतमिदमन्योपकृतौ नूनं ॥ २५ ॥

गर्व्वान्न मया कारि न कीर्त्तौ न च धनमाननिमित्तं त्वेतत् ।
हितबुद्धयाकेवलमपरेषां स्वस्य च बोधविशुद्धिविवृद्धयै ॥ २६ ॥

सद्दर्शनं निरतिचारभवंतुभव्याः
श्रद्धां दिशंतु हितपात्रजनायदानं ।
कुर्वंतु पूजनमहो जिनपुंगवानां,
पांतु व्रतानि सततं सह शीलकेन ॥ २७ ॥

गाढं तपन्तु जिनमार्गरतामुनींद्राः संभावयंतु निजतत्त्वमनद्यमुक्तं ।
धर्म्मो भवेद्विजयवान्नृपतिः पृथिव्यां, दुर्भिक्षमत्र भवतान्न कदाचनापि ॥ २८ ॥

राज्यं न वांछामि न सौख्यसंपदो, न स्वर्गवासं न च रूपयौवनं ।
सर्वं हि संसारनिमित्तसंगिनां, तदान्त्यमृष्टं क्षणिकं च दुःखदं ॥ २९ ॥
यद्दलभं भवभृतां भवकाननेऽस्मिन
दंभ्रमतां विविधदुःखमृगाग्निभीमे ।
रत्नत्रयं ... सौख्यविधायि तन्मे,
भूयाम्तु देव तव पादयुगप्रसादात ॥ ३० ॥
अज्ञानभावात यदि किंचिनूनं, प्रजल्पितं स्यात्प्यधिकं प्रमादे ।
सर्वज्ञवक्रोद्भवकि हि तन्मे, क्षांत्वा हृदब्जेऽधिवसे सदार्हं ॥ ३१ ॥
यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः स्नानस्य पीठंगिरि—
स्त्वाकाशे शशिभानुबिंबमथवे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।
व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्ततां,
तद्भक्त्या श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥
भूयाद् चरणाजिनस्य शरणं तद्दर्शने मे रतिः
भूयाज्जन्मनि प्रियतमासंगादिमुक्तिगिरौ ।
सद्भक्तिस्तपसश्च शक्तिरतुला भूयापि मुक्तिप्रदा,
ग्रंथस्यास्य फले न किंचिदपरं या चेत्तयोगस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥
व्याख्याति वाचयति शास्त्रमिदं शृणोति
विद्वांश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात ।
अन्येन लेखयति वा लिखति प्रवृत्ते,
स स्याल्लघुश्रुतधरश्च महस्रकीर्त्तिः ॥ ३४ ॥
शांतिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शांतिर्नृपाणां सदा,
शांतिः सुप्रजशां तयोभरभृतां शांतिर्मुनीनां सदा
श्रोतृणां कविताकृतां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,
शांतिः शांति रथापि जीवनमुचः श्री सज्जनस्यापि च ॥ ३५ ॥
यः कल्याणपरंपरा प्रकुरुते यं सेवते सन्मता,
येन स्यात सुखकीर्त्ति जीवितं सुरु स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।
यस्मान्नास्त्यपरः सुहृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रिय-
स्तं धर्माभिकर्समहं श्रयत भो यस्मिन जनो वल्लभः ॥ ३६ ॥
कूपान्निःकाश्य पातुं भवति हि सलिलं दुष्करं यस्य ..स्य
केनाप्यन्येन नूनोत्कटनिहतमहोऽन्यथा वा तदेव ।

नव्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनविवरणात् ज्ञातुऽर्थोऽत्र शक्यः
केश्चिच्चज्ञातप्रबोधैस्तदितरसुगमो ग्रंथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥

धर्मसंग्रहमिम निशम्य यो, धर्ममार्गमवगम्य चेतन. ।
धर्मसंग्रहमल करोत्यसौ, सिद्धिसौख्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥

धमनः सकलमंगलावली, रौऽसीपतिविभूतिमान्वली ।
स्यादनंतगुणभाक् केवली, धर्मसंग्रहमनः क्रियासुधीः ॥ ३९ ॥

सुधी. क्रियाद्वलमसुष्य, रक्षणे
तैः लाभः परहस्तयोगत. ।

ज्ञानत्कविश्राति सथप्रवर्त्तन
भूयादसमुत्तश्च परपोक्षवतः ॥ ४० ॥

चतुर्दशशतान्यस्य चत्र त्रिंशोत्तराणि वै ।
सर्वं प्रमाणमावेद्य लेखकेनेन सशय ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रंथ कविसर्व वसंसूचिकाचूलिकः समाप्ता ।

श्रीविक्रमादित्यराज्यात संवत १५४२ वर्षे कातिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमान चैत्यालये विराजमाने श्री हिसारपेरजापत्तने सुलतान श्री वहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः...... .. . . ।

२०, नेमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५० साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा बहुत छोटे हैं । विषय-भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि संवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकं ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥
×
नमद्देवेन्द्रमौलीनां लसत्कांतिसरोवरे ।
यस्य पादद्वयं प्राप्य मोल्लसत्कमलश्रिय ॥ २ ॥
सर्वसौभाग्यसंदोहः सर्वशक्रसमर्चितः ।
यो भवत्सर्वसौख्यानां, कारणं भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

× मुखेकले इत्यपि पाठ.

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
विद्यानन्दिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः।
ज्ञानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्रचूडामणिः
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरु र्जीयात्सतां भूतले ॥ १॥
शोधेसम्यक्त्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरंगैः
निर्द्धूतैकांतमिथ्यामतमलनिकरक्रोधनैकाद्विदूरः।
*
श्रीमज्जैनेंद्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि
जीयान्मे सूरिवर्योत्रनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः ।२॥
मिथ्यावादांधकाराचयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राह्रिपद्म,
द्वं द्वे निर्द्धूभ्रमः कर्जिनगदितमहाज्ञानविज्ञानबंधुः।
चारित्रोत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलोकैकबंधुः,
जीयादाचार्यवर्यो विशदगुणनिधिः सिंहनन्दिर्मुनीन्द्रः॥ ३॥
यस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—
नेमिपुराणममतुलं शिवसौख्यकारी,
चक्रे मयापि मतितुच्छतयात्र भक्त्या,
कुर्यादिदं शुभमतं मम मंगलानि॥ ४॥
शांतिं कान्तिं सुकीर्त्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः
सौभाग्यं साधुसंगं सुरपतिमहितं सारजैनेन्द्रधर्मं।
विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजनजनशतं पुत्रपौत्रादिजातं,
श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं चात्र भव्याः पवित्रं॥ ५॥

इति श्री त्रिभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणे भट्टारके श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्यः श्रीसिंहनन्दि-नामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमकल्याणवर्णनो नाम षोडशमोधिकारः।

संवत्त १६४३ शाके १५०८ समये फागुणवुदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोभननामयोगे श्रीमत्का-ष्ठासंघे नंदीतटगच्छे, विद्यागणे भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति तत्पट्टे आचार्य श्री पद्मकीर्त्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री धर्मसागर तच्छिष्य पं० केशा वर्द्धन इदं पुराणं लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर। प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सीम लगने से बदल गया है।

* जिनेंद्र इत्यपि पाठः

सवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे मह्ग्या तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाड-मध्ये श्री जहागीर राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचायोन्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवाला-न्वये अजमेरागोत्रे साह वीवा तस्य भार्या वहरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह माल्हा तस्य भार्या मैन्हालादे तस्य पुत्राः त्रय. । प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैंलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे । साह माल्हा द्वितीय पुत्र साह केसौ तस्य भार्या कसुभदे । साहा माल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या ललतादे । तस्य पुत्र साह भोजा चीरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः । प्रथम पुत्र साह पेमा । द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या आसलदे । साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुभा तस्य भार्या प्रथम कुभलदे द्वितीया कैरादे । साह पेमा चतुर्थ पुत्र साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया सुजाणदे तस्य पुत्र साह सुद्रचिरंणजी । साह पेमा पंचम पुत्र साह पचायण ···· ·· ·· · ····· ····· ·· ।

२१. पद्मपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २६७ । साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६-२६ अक्षर । लिपि सवत १७५१ ।

मगलाचरण—

वदेऽहं सुव्रतं देव पंचकल्याणनायकं ।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृंदसुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

× × × × × ×

शाके षोडशशतत्रयके पट्पंचासत्युक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
निष्पन्न चरित रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥
महेन्द्रकीर्त्तियोगीन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया ।
सोमसेनेन रामस्य पुराण पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥
यदुक्तं रविषेणेन पुराणं विस्तराद्वरं ।
तदेवात्र च संकुच्य किंचिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥
गर्वेण न कृतं शास्त्र नापि कीर्त्तिफलाप्तये ।
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

राज्यं न वांछामि न भोग्यसंपदो, न स्वर्गवासनं न च रूपयौवनं ।
सर्वं हि संसारनिमित्तमंगिनां, तदान्वमृष्टं क्षणिकं च दुःखदं ॥ २९ ॥
यद् लंभ ऋद्धभृतां भवकाननेऽस्मिन्
दंभ्र-यतां विविधदुःखमृगारिभीमे ।
रत्नत्रयं ।।. सौख्यविधायि तन्मे,
द्वेधास्तु देव तव पादयुगप्रसादात् ॥ ३० ॥
श्ज्ञानभावात् यदि किंचिनूनं, प्ररूपितं क्वाप्यधिकं वभाषे ।
सर्वज्ञवक्त्रोद्भविके हि तन्मे, क्षांत्वा हृदब्जेधिवसे सदात्वं ॥ ३१ ॥
यावत्तिष्ठति भूतले जिनपतेः स्नानस्य पीठंगिरि—
स्त्वाकाशे शशिभानुविंबमधरे कूर्मस्य पृष्ठे मही ।
व्याख्यानेनच पाठनेन पठनेनेदं सदा वर्त्ततां,
तद्वच्च श्रवणेन चित्तनिलये संतिष्ठतां धीमतां ॥ ३२ ॥
भूयासुः चरणाजिनस्य शरणं तद्दर्शने मे रतिः
भूयाज्जन्मनि प्रियतमासंगादिमुक्ते गिरौ ।
सद्भक्तिस्तपसश्च शक्तिरतुला द्वेधापि मुक्तिप्रदा,
ग्रंथस्यास्य फले न किंचिदपरं या चेत्तयोगैस्त्रिभिः ॥ ३३ ॥
व्याख्याति वाचयति शास्त्रमिदं शृणोति
विद्वांश्च यः पठति पाठयतेऽनुरागात् ।
अन्येन लेखयति वा लिखति प्रदत्ते,
स स्याल्लघुश्रुतधरश्च सहस्रकीर्त्तिः ॥ ३४ ॥
शांतिः स्याज्जिनशासनस्य सुखदा शांतिर्नृपाणां सदा,
शांतिः सुप्रजशां तयोभरभृतां शांतिर्मुनीनां सदा
श्रोतृणां कवितकृतां प्रवचनव्याख्यातृकाणां पुनः,
शांतिः शांति रथाग्नि जीवनमुचः श्री सज्जनस्यापि च ॥ ३५ ॥
यः कल्याणपरंपरा प्रकुरुते यं सेवते सत्तमा,
येन स्यात् सुखकीर्त्ति जीवित मुरु स्वस्त्यत्रयस्मै सदा ।
यस्मान्नान्यपरः सुहृत्तनुमतां यस्य प्रसादाच्छ्रिय—
स्तं धर्मादिकसंग्रहं भयत भो यस्मिन् जनो वल्लभः ॥ ३६ ॥
कूपान्निःकाश्य पातुं भवति हि सलिलं दुकष्टं यस्य ।.स्य
केनाप्यन्येन नूनोत्कुटनिहतमहोऽन्यथा वा तदेव ।

नन्वत्पूर्वप्रणीतात्कठिनविवरणात् ज्ञातुऽर्थोऽत्र शक्यः
कैश्चिज्ज्ञानप्रबोधैस्तदितरसुगमो ग्रंथ एव व्यधायि ॥ ३७ ॥
धर्मसंग्रहमिम निशम्य यो, धर्म्ममार्गमवगम्य चेतनः ।
धर्मसंग्रहमल करोत्यसौ, सिद्धिसौख्यमुपयाति शाश्वतः ॥ ३८ ॥
धर्मतः सकलमंगलावली, रोदसीपतिविभूतिमान्वली ।
स्यादनंतगुणभाक्केवली, धर्मसंग्रहमनः क्रियासुधीः ॥ ३९ ॥
सुधी क्रियाद्यलमसुष्य, रक्षणे
तैः लाभः परहस्तयोगतः ।
जानन्कविश्रांति मथप्रवर्त्तने
भूयात्समुक्तश्च परपोकृघतः ॥ ४० ॥
चतुर्दशशतान्यस्य चत्व रिंशोत्तराणि वै ।
सर्व्वं प्रमाणमावेद्य लेखकेत्वेन संशय ॥ ४१ ॥

इत्येतद्ग्रंथ रचिसर्वं ग्रसूचिकाचूलिकः समाप्त ।

श्रीविक्रमादित्यराज्यात सवत १५४२ वर्षे कातिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमान चैत्यालये विराजमाने श्री हिसारपेराजावत्तने सुलतान श्री वहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः······ ·· ······· ···· ।

२०. नेमिनाथपुराण ।

रचयिता श्री ब्रह्म नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५०. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४७ अक्षर । प्रति पूर्ण है । अक्षर अस्पष्ट तथा बहुत छोटे हैं । विषय- भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र । लिपि संवत् १६४३.

मंगलाचरण—

श्रीमन्नेमिजिनं नत्वा लोकालोकप्रकाशकं ।
तत्पुराणमहं वक्ष्ये भव्यानां सौख्यदायकं ॥ १ ॥
×
नमद्देवेन्द्रमौलीनां लसत्कांतिसरोवरे ।
यस्य पादद्वयं प्राप्य प्रोल्लसत्कमलश्रिय ॥ २ ॥
सर्वसौभाग्यसंदोह. सर्व्वशक्रसमर्चितः ।
यो भवत्सर्व्वसौख्यानां, कारणं भव्यदेहिनां ॥ ३ ॥

× प्रोल्लसे इत्यपि पाठ

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमत्मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
विद्यानन्दिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।
ज्ञानध्यानरतः प्रसिद्धिमहिमा चारित्रचूडामणिः
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरु जीयात्सतां भूतले ॥ १ ॥
प्रोद्यत्सम्यक्त्वरत्नो जिनकथितमहासप्तभंगीतरंगैः
निर्द्धूतैकांतमिथ्यामनमलनिकरक्रोधनकादिदूरः ।
*
श्रीमज्जैनेंद्रवाक्यामृतविशदरसः श्रीजैनेन्द्रप्रवृद्धि
जीयान्मे सूरिवर्योव्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः ॥ २ ॥
मिथ्यावादांधकाराक्षयकरणरविः श्रीजिनेन्द्राह्विपद्म,
द्वंदे निर्द्वंद्वभक्तिर्जिनगदितमहाज्ञानविज्ञानबंधुः ।
चारित्रोत्कृष्टभारो भवभयहरणो भव्यलोकैकबंधुः,
जीयादाचार्यवर्यो त्रिशदगुणनिधिः सिंहनन्दिमुनीन्द्रः ॥ ३ ॥
यस्योपदेशवशतो जिनपुंगवस्य—
नेमिपुराणमतुलं शिवसौख्यकारी ,
चक्रे मयापि मतितुच्छतयात्र भक्त्या,
कुर्यादिदं शुभमतं मम मंगलानि ॥ ४ ॥
शांतिं कान्तिं सुकीर्त्तिसकलसुखयुतां संपदामायुरुच्चैः
सौभाग्यं साधुसगं सुरपतिमहितं सारजैनेन्द्रधर्म्मं ।
विद्यां गोत्रं पवित्रं सुजनजनशतं पुत्रपौत्रादिजातं,
श्रीनेमेः सत्पुराणं दिशतु शिवपदं चात्र भव्याः पवित्रं ॥ ५ ॥

इति श्री त्रिभुवनैकचूडामणिश्रीनेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्यः श्रीसिंहनन्दि-नामांकिते ब्रह्म नेमिदत्त विरचिते श्रीनेमिनाथनिर्वाणं पंचमकल्याणवर्णनो नाम षोडशमोधिकारः ।

संवत् १६४३ शाके १५०८ समये फागुणवुदि ८ सोमवासरे मघा नक्षत्रे शोभननामयोगे श्रीमत्का-ष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति तत्पट्टे आचार्य श्री पद्मकीर्त्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री धर्मसागर तच्छिष्य पं० केशा वर्द्धन इदं पुराणं लिखित ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर । प्रति प्राचीन है, कागजों का रंग सीम लगने से बदल गया है ।

* जिनेंद्र इत्यपि पाठः

संवत् १६७४ वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे महम्या तिथौ शुक्रवासरे श्री नेमिनाथचैत्यालये वीजवाड-मध्ये श्री जहांगीर राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवाला-न्वये अजमेरागोत्रे साह वीचा तस्य भार्या वहरंगदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र साह माल्हा तस्य भार्या मेल्हालादे तस्य पुत्राः त्रय। प्रथम पुत्र साह नेना तस्य भार्या नैलादे तस्य पुत्र खीवा तस्य भार्या खेमलदे। साह माल्हा द्वितीय पुत्र साह केसौ तस्य भार्या कसुमदे। साहा माल्हा तृतीय पुत्र साह लीला तस्य भार्या ललतादे। तस्य पुत्र साह भोजा चीरंजीव साह वीवा द्वितीय पुत्र साह धाना तस्य प्रथम भार्या धारादे द्वितीया लाडमदे तस्य पुत्रा त्रयः। प्रथम पुत्र साह पेमा। द्वितीय पुत्र साह आसा तस्य भार्या आसलदे। साह पेमा तृतीय पुत्र साह कुभा तस्य भार्या प्रथम कुंभलदे द्वितीया केरादे। साह पेमा चतुर्थ पुत्र साह सैसा तस्य भार्या प्रथमा सुहागदे द्वितीया दुजाणदे तस्य पुत्र साह सुदरचिरंजी। साह पेमा पंचम पुत्र साह पचायण ... .।

२१. पद्मपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६७। साइज ६॥x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६-२६ अक्षर। लिपि संवत १७५१।

मंगलाचरण—

वंदेऽहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकं।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृन्दसुखप्रदं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

× × × × × ×

शाके षोडशशतवर्षके षट्पंचासत्युक्ते मासेश्रावणिके तथा ॥ १ ॥
शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामस्य पावनं ॥ २ ॥
महेन्द्रकीर्त्तियोगीन्द्रप्रसादाच्च कृतं मया।
सोमसेनेन रामस्य पुराणं पुण्यहेतवे ॥ ३ ॥
यदुक्तं रविषेणेन पुराणं विस्तराद्वरं।
तदेवात्र च संकुच्य किंचिद्विकथितं मया ॥ ४ ॥
गर्वेण न कृतं शास्त्रं नापि कीर्त्तिफलाप्तये।
केवलं पुण्यहेत्वर्थं श्रुताः रामगुणाः मया ॥ ५ ॥

× × × × × ×

रविषेणकृते ग्रंथे कथा यावत्प्रवर्त्तते।
तावच्च सकलात्रापि वर्त्तते वर्णतां विना ॥ ६ ॥
वैराट विषये रम्ये जितुरनगरे वरे मंदिरे।
पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रंथः शुभे दिने ॥ ७ ॥
सेणगणेति विख्याते गुणभद्रो भवन्मुनिः।
पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेन यतीश्वरः ॥ ८ ॥
तेनेदं निर्मितं शास्त्रं रामदेवस्य भक्तितः।
स्वस्यनिर्वाणहेत्वर्थं संक्षेपेण महात्मनः ॥ ९ ॥
यस्मिन्निदं पुरे शास्त्रं श्रृण्वन्ति च पठन्ति वा।
तत्र सव सुखं क्षेम परं भव निर्मर्गलं ॥ १० ॥
सेणगणे यतिपरमपवित्रे वृषभसेनगणधर शुभवंशे।
पंडितवर्गसुखकरं जातः सोमसुसेनयतिवरमुख्यः ॥ ११ ॥
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरि·
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारके भूविदुषां शिरोमणिः ॥ १२ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारकश्री सोमसेनविरचिते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णनो नाम त्रयत्रिंशत्तमोऽधिकारः ॥

संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ मिति भादवा सुदी १४ बृहस्पतिवारे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री नरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति तच्छिष्याचार्यवर्यं आचार्य श्री शुभचंद्र तच्छिष्य पंडित श्री ताराचंद पंडित श्रीनगराज पंडित श्रीजीवराज पंडित श्री देवकरण पंडित श्रीमेघराज पंडित मयाचन्द इत्यादि पंडित ७ तदाम्नाये पचवारा देशे लिवाणनगरे खंडेलवालवंशे भौंसा गोत्रे साह श्री पिलालभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र साह श्री नेहंदु भार्या नमोनेमादे तयोः पुत्रः साह श्री गुणराज भार्या सुगणादे तयोः पुत्र साह श्री पासो भार्या पाटमदे तयोः पुत्रः साह श्री टोडरमल भार्या लाडी तयोः पुत्र साह श्री दयालदास भार्या दाडिमदे तयोः साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयोः पुत्र साह श्री जीवराज भार्या जौणद तयोः पुत्र साह श्री आणंदराम भार्या अणदादे द्वितीय पुत्र साह श्री चि० बखतराम भार्या बखतावरदे एतेषां मध्ये साह श्री हरराम भार्या हीरादे तयो पुत्र साह श्री जीवराज पितृभ्यां भक्तिकार्ये श्री सोलहकारणदशलक्षणकी व्रतों का उद्यापन ग्रहोत उछाह से भंडार कियो ज्ञानदानार्थं श्री रामपुराणजी शास्त्र घटायो आचार्य श्री शुभचंद्रजी ने।

२२. पद्मपुराण ।

रचयिता श्रीमच्चन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१२. प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर । साइज ११×४।। इञ्च ।

मंगलाचरण—

सिद्धं जिनं सद्द्रव्यापेक्षया साधनाद्यव ।
सद्द्रव्यसाधन ध्रौव्यव्ययोत्पत्त्यंकितं मतं ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

सत्काष्टसंघभवनंदितटाख्यगच्छे
जातो मुनिः सकलसद्गुणमंडितात्मा ।
श्रीरामसेन इति यस्य जगत्प्रकाशं,
वादीभकेसरपतेरभिधानमासीत् ॥ १ ॥
तस्यान्वये समभवत् किल सूरिवर्यः
श्रीधर्मसेन इति नाम दधन् मनोज्ञं,
यस्येहवादिकरिकेसरिणो विशाला
कीर्त्तिजगद्ध चिरमंडपगा बभूव ॥ २ ॥
तस्याभवद् विमलसेन इति प्रसिद्धः
सूरिपदांबुजविकासनसप्तसप्तिः ।
प्राप्तानवद्यशुभविद्यउदारकीर्त्तिः
विद्वज्जनप्रकरपूजितपादपीठः ॥ ३ ॥
तस्याभ्यभूदखिलपंडितपूजिताघ्रि
सरस्तूपंकजरविः सुचरित्रपात्र ।
नाम्नार्यमत्रधिगात् न विशालकीर्त्ति-
र्यस्मात्प्रबोधमधिगम्य बुधा ननंदुः ॥ ४ ॥
तत्पट्टसागरनिशाकर आविरासीत्
श्रीविश्वसेन इति नाम दधन् मुनींद्रः ।
यादृशानां समधिगम्य जगत्प्रबोधम्
लब्ध्वा समस्तवृजिनार्णवपारमापत् ॥ ५ ॥
तत्पट्टेप्यभवत् समस्तजनतांध्यामोहवन्यादवो
विद्वत्पंकजभास्कराः मुनिजनोः सेव्यांघ्रिपाथोरुहः ।

विद्याभूषण इत्यशेषविदुषां श्रोत्रप्रकाशेन यो:
नाम्नाख्येन बुधान·········दह्योकांस्कान्मुनींद्रश्चिरं ॥ ६ ॥
श्रीभूषणाख्यो भवदस्यपट्टे भट्टारको लब्धसमस्तविद्यः।
यो वादिगर्वाकुलशैलवज्रो नावोधयत्कान्दिद्र पोवचोभिः ॥ ७ ॥
लब्धा गुरुत्वंव खलु वाक्यतित्वं कलानिधित्वं च महामतिर्यः।
प्रकाशतां देवसभे·····यासीत् किं तस्य वाच्यं तपसो महत्त्वं ॥ ८ ॥
तस्यास्त्येको नामतश्चंद्रकीर्तिः
शिष्यं स्वाम्यं च यंवुजेर्दिदिरोयः।
पात्रे जाड्यापि यस्मिन्नजस्त्रं
जाता दृष्टिः सद्गुरोः स्नेहपूर्णा ॥ ९ ॥
तेन व्यधायि मुनिनाखिलदोषहारी लोकत्रयप्रथितसारमुदारभावं।
सीतारघूत्तमचरित्रपयोधिरत्नं क्लृप्तं ष्टदानविधिपद्मपुराणमेतत् ॥ १० ॥
रघुपतितरुरस्मात्पातुसम्यक्त्वबीजः
शुभभवति शाखो योगिसंसत्पलाशः।
सुरमधुपयुतेश्रीपंचकल्याणयुक्तो
लसदमृतफलोऽयं सत्तपः पीठवंधः ॥ ११ ॥
यावद्धरासेप सुमेरुशैलो विभर्त्ति सूर्यश्चतपत्यजस्त्रं।
तावन्मुदि पद्मपुराणमेतद् भूयो जनानां निखिलाघहारि ॥ १२ ॥

इति श्रीमच्चंद्रकीर्त्तिमुनींद्रविरचितं पद्मपुराणं समाप्तमगमत्।

२३. पद्मपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री धर्मकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या २५१. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८—४२ अक्षर। प्रति प्राचीन है। रचना संवत् १६६६ लिपि संवत् १६७०.

मंगलाचरण—

शक्रालीमौलिरत्नांशुवारिधौतपदांवुजं।
ज्ञानादिमहिमाव्याप्त विष्टपं विष्टपाधिपं ॥ १ ॥
मुनिसुव्रतनामानं सुव्रताराधितक्रमं।
वंदे भक्तिभरानम्रः श्रेयसे श्रेयसि स्थितं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

एतद्कथाश्रवाद् भव्यः श्रद्धावान सत्क्रियायुतः।
संसाराब्धिं समुत्तीर्य प्राप्नुयात् शिवमुल्वणं ॥ १ ॥

अथाभवन्मूलसुसंघएव गच्छे सरस्वत्यभिधेगणे च ।
वलाकृतौ श्री मुनिपद्मनन्दिः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धसूतिः ॥ २ ॥
देवेंद्रकीर्त्तिश्च बभूव तस्य पट्टे महिष्ठेसु महानुभावः ।
त्रिलोककीर्त्तिस्ततश्चात्तदीक्षो भट्टारकास्तत्पदलब्धनिष्ठः ॥ ३
सहस्रकीर्त्तिमुनिवृंदसेव्यो यशःसुकीर्त्तिः शुभकीर्त्तिसिंधुः ।
बभूव भट्टारकस्तत्पदस्थो मुनिः स्मरारेर्हनने प्रवीणः ॥ ४ ॥
तत्पट्टपंकेजविकाशने यः साम्यं विभर्त्तीह सहस्रभानोः ।
हतस्मरारिर्जितदुःकषायो विनष्टदुर्भाव च यो महात्मा ॥ ५ ॥
यं वीक्ष्य लोकव्रतभासुरांगतपस्विनं शास्त्रविदं मुनीशं ।
भजति मिथ्यात्वं च यं न जातु क्रियापरं शीलनिधि सुशांतं ॥ ६ ॥
यं सेव्यमानाः सततं सुशिष्याः विख्यातत्वाव्रतभासुरांगाः ।
भवन्ति नूनं जगति प्रकाशास्तपःकृशा गौरविणो गुणौघैः ॥ ७ ॥
यं सेवमानः समकुक्षिजातं मुनीशमासीद्बुधपालः ।
पटुत्ववाग्मित्वकवित्वविस्त्वविनीततासद्गुणरत्नपात्रं ॥ ८ ॥
एवं विधोऽसौ मुनिसंघसेव्यो भट्टारको भासितदिक् समूहः ।
संघस्य कल्याणतति प्रदेया नाम्नागुरुः श्रीललितादिकीर्त्तिः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यस्तत्पदस्थो व्रतनिचययुतो जैनपादाब्जभृंगो,
नाम्नाधर्मादिकीर्त्तिमुनिरमलमनास्तेन चैतत्पुराणं ।
स्वल्पप्रज्ञेन दृष्टं निजदुरितचयप्रक्षयाय हिताय,
भव्यानां च परेषां श्रवणसुपवने प्रोद्यतानामजस्रं ॥ १० ॥
मूलकर्त्तापुराणस्य श्री जिनश्चोत्तरस्तथा ।
गणीशो यतयोन्ये च उत्तरोत्तरकर्त्तकाः ॥ ११ ॥
इदं श्री रविषेणस्य पुराणं वीक्ष्य निर्मितं ।
चिरस्थेयाः क्षितौ भव्यैः श्रुतं चाधीतमन्वहं ॥ १२ ॥
संवत्सरे ह्यष्टशते मनोज्ञे चैकोन सप्तत्यधिके सुमासे ।
श्रीश्रावनेसूर्यदिने तृतीया तिथौ देशेषु हि मालवेषु ॥ १३ ॥
सरोजपुर्यामिवधर्म्मपुर्यां सहायतः श्री ललितादिकीर्त्तिः ।
पारंगतश्चास्य पुराणचाद्धे रहं प्रहीणोपि मतिप्रपंचैः ॥ १४ ॥
तर्क्कव्याकरणछंदोलंकारादिन् प्रपंचतः ।
न वेद्म्यहं ततस्तेषां च्युतौ कार्याक्षमासतां ॥ १५ ॥

अथो विस्तारणीयोयं सद्भिः परहिते रतैः ।
यतः पद्मानि सूतेंभस्तद्‌ग्रंथं नयतेनिलः ॥ १६ ॥
अथ धर्मोजिनैरुक्तो वर्द्धतामात्र शाश्वतः ।
संघस्य तुष्टिपुष्टी च भूयास्तां सर्वकर्म्मसु ॥ १७ ॥
क्षेमं च सवलोकानां भूयाच्च विजयी नृपः ।
काले काले प्रवर्षंतां मेघामौभिख्यकारिणः ॥ १८ ॥
व्याधयो यान्तु नाशं च दुर्भिक्षं चौरमारयः ।
प्रलयं यांतु पृथ्वीस्तु फलिनी धर्मशक्तितः ॥ १६ ॥
श्रोतृणां पाठकानां च लेखकानां तथैव च
भूयात्कल्याणसत्प्राप्तिर्धर्मचक्रप्रसादतः ॥ २० ॥
धमकार्येपु सर्वेपु सत्रोश्च जिनदेवताः ।
सहायिन्योह भूय सुः प्रमादपरिमुच्य च ॥ २१ ॥

इति श्री पद्मपुराणे भट्टारक श्रीधर्मकीर्त्तिविरचिते पद्मदेवनिर्वाणगमनवर्णनो नाम चतुश्चत्वारिंश पर्व्वः ॥

संवत्सरे १६७० मिते मासे चंद्रकारावदाते पक्षो मंगलास्य दीपां मंगल······ तिरस्कृतां विघ्नप्रसारे रविवारे प्रशस्तगुणश्रेष्टायां ज्येष्ठायां च घनो-पवनादिशोभाभरित····· सेरमंलासे महानगरे विद्वज्जनपूरिताकारे चंद्रप्रभजिनागारे श्रीमति नष्टाघे मूलसघेह शारदागच्छे वर्द्धितसुकृतवने बलात्कारगणे च स्वयशसा व्याप्ताखिलमूर्त्ति भट्टारको यशःकीर्त्ति नामासीत्। तत्पट्टे ललितवाक्यामृत न्यक्कृताखिलमूर्त्ति भट्टारको ललितकीर्त्तिर्वर्त्तते। तत्पट्टोदयाद्राविनमूर्त्तिभट्टरको धर्मकीर्त्तिः वर्त्तते मुनींद्रः। तेनेदमुपासिकार्पितद्रव्येण लेखियित्वा निजांते वासिने गांगानाम्ने प्रदत्तं अधीत्यो—

२४. प्रतिष्ठापाठ ।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६४. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर। रचना संवत् १२८५. इसका दूसरा नाम जिनयज्ञ कल्प भी है। ग्रंथ मे ६ अधिकार हैं तथा सम्पूर्ण पद्य संख्या ६५४ हैं। ग्रन्थ छप चुका है।

प्रशस्ति—

श्रीमानस्ति सपादलक्षविषयः शाकंभरीभूषणः
तत्र श्री रतिधाममंडलकरं नामास्ति दुर्गं महत्।
श्री रत्न्यामुदपादि तत्र विमलव्याघ्रेरवालान्वयात,
श्री सल्लक्षणतो जिनेंद्रसमयश्रद्धालुराशाधरः ॥ १ ॥

व्याघ्रेरवालवरवंश सरोजहंसः
काव्यामृतौघरसपानसुतृप्तगात्रः ।
सल्लक्षणस्य तनयो नयविश्वचक्षु
राशाधरो विजयतां कविकालिदासः ॥

× × × × × ×

आशाधरत्वं मयि विद्धि सिद्धं निसर्गसौन्दर्यमजर्यम् ।
सरस्वती पुत्रतया देवदर्थं परं वाच्य मयं प्रपंचः ॥

× × × × ×

श्रीमदर्जुनभूपालराज्यश्रावकसंकुले ।
जिनधर्मोदयार्थं यो नलकच्छपुरे वसन् ॥

× × × × ×

विक्रमवर्ष सपंचाशीति द्वादशशतेष्वतीतेषु ।
आश्विनि सितान्त्यदिवसे साहसमल्लापराख्यस्य ॥

× × × × × × ×

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है ।

संवत् १५६० वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमायां तिथौ शनिवारे अदेहद्वारपल्लीनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्यानंदिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री मल्लिभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवा स्तेषां शिष्य ब्र० श्रीवृषभदासस्य उपदेशात् श्री शांतिदास लिखापितः ॥

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५५. साइज १३×५।। इञ्च ।

संवत् १७२० वर्षे भाद्रमासे प्रतिपदातिथौ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नद्यम्नाये बलात्कारगणे …… …. कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकवृन्दशोभित श्रीनरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य पंडितराज श्री तेजपालजी तत् शिष्य आचार्य श्री चंद्रकीर्त्तिजी तत् शिष्य पं० घासीराम प० मोवमी चिरंजीवी नयाचंद पठनार्थं लिखापितं ।

२५. प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री सोमकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०५. साइज १०×४।। प्रत्येक पृष्ठ पर १५-१८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर । रचना संवत् १५३० लिपि संवत् १७२४. सोलह सर्ग हैं । चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं सन्मतिं नत्वा नेमिनाथं जिनेश्वरं ।
विश्वजेतापि मदनो बाधितुं न शशाक यं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

नंदीतटाख्ये विमले सुगच्छे श्री रामसेनो गुणवारिराशिः।
बभूव तस्यान्वयशोभकारी श्री रत्नकीर्त्तिः दुरितापहारी ॥ १ ॥
श्रीलक्ष्मीसेनोऽत्र ततो बभूव शीलालयः सर्वगुणैरुपेतः।
तस्यैव पट्टोद्धरणैकधीरः श्री भीमसेनः प्रगुणः प्रवीरः ॥ २ ॥
श्री भीमसेनस्यपदप्रसादात् सोमादिकीर्त्तिर्युतेन भूमौ।
रम्यं चरित्रं विनतं स्वभक्त्या संसोध्य भव्याः पठनीयमेतत ॥ ३ ॥
संवत्सरे षन्निधि सन्नकेवि वर्षत्रि-त्रिंशैर्युतेपवित्रे।
विनिर्मितं पौषसुदेश्चतस्यां त्रयोदशा या बुधवारयुक्ता ॥ ४ ॥
यावन्मेरु महीतलेति विदितो यावद्रविमडले
यावद्भूवलयः परग्रहगणो यावत्सता चेष्टितं।
तावन्नंदतु शास्त्रमेतदमलं श्री शांतिचैत्यालये,
भक्त्या येन विनिर्मितं सुखकरं तस्यास्तुवे सर्वदा ॥ ५ ॥
यावन्मेरु मही यावच्चंद्रार्क तारकाः।
त वन्नंदत्वदं नूनं चरित्रं पापनाशनं ॥ ६ ॥

इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री नेमिनाथप्रद्युम्नशबकुमरअनुरुद्धादि निर्वाणगमन नाम षोडशः सर्गः ॥

संवत् १०२४ वर्षे कार्त्तिक बुदी १३ दिने श्र मालवदेशमध्ये श्री सुलतानपुर मध्ये लिखितं शुभं ॥

सवत्सरे रसैकस्मैकांकयुक्ते: मासि भाद्रपदे सितेतरे प्रथमायां तिथौ सजीवाया कृष्णगढपुरे श्रीमन्महाभूपबहादुरसिंहजिद्राज्ये श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक जिछ्री रत्नक त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक जिछ्री विद्यानन्दि जी तत्पट्टे भट्टारक जिछ्री महेन्द्रकीत्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री अनंतकीत्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री भवनभूषणजी तत्पट्टे सकलविमलकलकलकलानिधिः करांत्र मलतरयशो वरसावरीकृतदिक्प्रमादनिकरभव्यः भव्यनिरशाानासारांधकारचयैककारणप्रभाकरः सद्वचोः विराजमानमहामानजनोघिमव्रातः महाबलपंचानसमानः क्रोधमानमायालोभमहधराधरवज्रोपमान सकलेतरयतिगणनक्षत्रेशविराजमानतरवरजनविहितः प्रशंसवरगुणगणरंलगणरत्नाकरः भट्टारकप्रवर भट्टारकजिछ्री १००८ श्री विजयकीर्त्तिस्त्द्विनयतत्परविनेयाचार्यजिछ्री देवेन्द्रभूषणजीस्तत्सतोर्थं बुधास्त्रिलोकचंद्रः सदारामस्ति ब्विनेया बुधा दयाचद्र वर्द्धमान विमलदास दौलतिराम ऋषभदास गुलाबचंद भगवानदास वीरदास मोती जगजीवणदयभि धानवरा एतेषां पठनार्थं आचार्य श्री देवेन्द्र भूषणेन स्वपठनार्थं इदं चरित्रं लिखितं।

२६. प्रवचनसार प्राभृत वृत्ति ।

श्री अमृतचन्द्रदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है। लिपि संवत् १५४३.

मंगलाचरण—

नमः परमचैतन्यस्वात्मोत्थसुखसंपदे ।
परमागमसाराय, सिद्धाय परमेष्ठिने ॥

समाप्ति—

एवं पूर्वोक्तक्रमेण एषु सुरासुर इत्याद्येकोत्तरशतगाथापर्यन्तं सम्यक्ज्ञानाधिकारस्तदनन्तरं तम्हा-तस्सणमाइ इत्यादि त्रयोदशोत्तरशतगाथापर्यंत ज्ञेयाधिकारोऽपरनामदर्शनाधिकारस्तदनंतरं एवं पणमियसिद्धे इत्यादि ··· महाधिकार त्रयेणैकादशाधिकत्रिशत गाथाभि. प्रवचनसारप्राभृतवृत्तिः समाप्ता । संवत १५४३ वर्षे भाद्रपद सुदी ६ तिथौ ।

प्रशस्ति—

श्रीजिनसूरस्य वाक्योतरकरोत्करः ।
अज्ञानध्यातनाशाय भवतु जगत. पर ॥ १ ॥
श्रीदेशीमूलसंघे च नद्याम्नाये लसद्गणे ।
बलात्कारि जगद्वंद्ये गच्छे सारस्वत्याभिधाः ॥ २ ॥
श्रीमत्कुंदादिकुंदाख्यसूरेरन्वयकेभवत् ।
पद्मनंदी शिवानंदी भट्टारकपदस्थितः ॥ ३ ॥
तत्पट्टाभोजमार्त्तंडः शुभचन्द्रोगणाग्रणी ।
तत्पट्टे चाभवच्छ्रीमान जिनचंद्राभिधोग्रणी ॥ ४ ॥
तच्छिष्यस्सद्गुणैः प्राप्ताचार्यपदवीं मुनिः ।
रत्नकीर्त्तिरितस्य तस्तदाम्नाये बभूव च ॥ ५ ॥

मगही गोरा तद्भार्या गुणसिरि तयोः पुत्रा. सं० सागा, सं० गोगा सं० देवा रत्नपाल तयोः मध्ये सं० गोगा तद्भार्या केल्ह् इदं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं श्रीमन्मंडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्यमुनिविमलकीर्त्तिप्रदत्तमिदं पुस्तकं । लिखित प० गोगा ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ७७, साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संवत १५७७ वर्षे आषाढसुदी ३ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्-शिष्यमंडलाचार्यः धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भौंसागोत्रे साह पोंराज भार्या पिवसिरि तत्पुत्र सा.

तिहुणा द्वितीय वीरदास तिहुणा भार्या श्रीमति तत्पुत्र सा. लोहट भार्या ललितादे तत्पुत्रमेघा नेमाभार्या नमणसिरी तत्पुत्र दुलहणी भार्या जैणादे असू तत्पुत्र आसू इदं शास्त्रं नागपुरमध्ये लिखाप्य श्री मुनिधर्म-चन्द्रायदत्तं।

२७. पाण्डवपुराण।

रचयिता आचार्य श्री शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३४७. प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३०-३४ अक्षर। रचना संवत् १६०८. लिपि सवत् १८३१. ग्रन्थ में २५ अधिकार हैं। प्रशस्ति में शुभचन्द्र ने अपनी १० रचनाओं का तथा कितने ही स्तोत्रों का उल्लेख किया है। पाण्डवपुराण की रचना मे शुभचन्द्र को अपने शिष्य श्रीपाल वर्णी से सहायता प्राप्त हुई है। ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित ही है। प्रति नवीन है लेकिन दीमक ने खा लिया है। अन्तिम पाठ नहीं है।

मंगलाचर—

सिद्धं सिद्धार्थसर्व्वस्वं सद्विदं सिद्धसत्पद।
प्रमाणनयसंसिद्धं सर्वज्ञं नौमि सिद्धये॥ १॥
वृषभं वृषभं भांतं वृषभांकं वृषोन्नतं।
जगत्सृष्टिविधातारं वंदे ब्रह्माणमादिमं॥ २॥
चन्द्राभं चंद्रशोभाद्यं चंद्राच्र्यं चन्द्रसंस्तुतं।
चन्द्रप्रभं सदा चन्द्रमीडे सच्चन्द्रलांछनं॥ ३॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

तादृग्विधोऽहं प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवंश्चसद्भिः सकलैः परैश्च।
क्षाम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि हितं न कुर्यात॥ १॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः।
कीर्त्तिः कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्री सकला पवित्रा॥ २॥
भुवनकीर्त्तिरभूद् भुवनाधिपैः।
भुवनभास्करचारुमतिस्ततः।
वरतपश्चरणोद्यतमानसो
भवभयाद्दि खगेट् क्षितिवत्क्षमी॥ ३॥
चिद्रूपवेत्ता चतुरश्चिरंतनं
चिद्भूपश्चार्चितपादपद्मकः।
सूरिश्चचंद्रादिचयैश्चिनोतु वै
चारित्रशुद्धिखलु नः प्रसिद्धिदां॥ ४॥

विजयकीर्त्तिर्यतिमुदितात्मको,
ह्यजिततान्वमतः सुगतै स्तुतः ।
अवतु जैनमतः सुमतो मतो
नृपतिभि र्भवतो भवतो .... ॥ ५ ॥
पट्टे तस्य गुणांवुधि र्व्रतधरो धीमान गरोचान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एष विदितो वादीभसिंहोमहान् ।
तेनेदं चरितं विचार सुकरं चाकारि चचंद्रार्चां,
पाद्मो श्रीशुभसिद्धि सात जनकं सिद्ध्यै सुताना सदा ॥ ६ ॥
चन्द्रनाथचरित चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।
मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥
चंदनाया कथा येन बद्धवा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचार्या वृत्तिः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं यः सद्वृद्धसिद्धार्चन माव्यधत्ता ।
सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चित मणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ९ ॥
श्री कर्मदाहविधिवधुरसिद्धसेवां
नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिकां च यः,
स चकार शुभचन्द्रचंद्रतथौंचद्रः ॥ १ १० ॥
उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविधेश्चयः ।
चारित्रशुद्धितपसश्चतुस्त्रिंद्वादशात्मनः ॥ ११ ॥
संशयवदनविदारणमपशब्दसुखडन परं तर्क्कं ।
स तत्त्वानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्तिं ॥ १२ ॥
अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थपूर्वसर्वतोभद्रं ।
योकृतसद्व्याकरणं चिंतामणिर्नामधेयं च ॥ १३ ॥
कृता येनागमब्धमिः सत्रा गार्थं प्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षट्पादः श्री जिनेशिनां ॥ १४ ॥
तेन श्री शुभचन्द्रदेवविदु–सत्पांडवानां परं,
दीप्यद्वशविभूषणं शुभभरभ्राजिष्णुशोभकरं ।
शुभद्भारतोनाम निर्मलगुणं सच्छन्दचिंतामणि,
पुष्पत्पुण्यपुराणमन्त्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तस्य समृद्धबुद्धिविशदो यस्तर्के वेदीवरो,
वैराग्यादिविशुद्धिवृद्धजनकः श्रीपालवर्णीमहान् ।
संशोध्याखिल पुस्तकं वरगुणं सत्पांडवानामिदं
तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वे वरे पुस्तके ॥ १६ ॥
श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थ संग्रहे ।
साहाय्यं सुचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥
ये भव्यन्ति पठंति पांडवगुणं सलेखयंत्यादरात्-
लक्ष्मीराज्यनराधिपस्यच सुता चक्रित्वशक्रेशिना ।
भुक्त्वाभोगमिदं पुराणमखिलं संबोभुवत्कुन्नता,
मुक्तो ते भवभीमनिम्नजलधिं संतीर्य शांतं गताः ॥ १८ ॥
अर्हंतो ये जिनेंद्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभव्यान्,
सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददतु इह शिवं साधवः……

× × × × × ×

संवत् १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्तिः आम्नाये आचार्य श्री विजयकीर्त्ति शिष्य रूपचंद उपदेशात् आदौ वासी शेरपुर अधुना वासी कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहाजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति जैतरामजी भार्या बाई अनोपमातत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति तुलारामजी साहजी श्री वर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी तुलारामस्य भार्या बाई जगा वर्धमानजी भार्या वरधादे ताराचंदस्य भार्या तारमदे बाई कुंदना वर्धमानस्य पुत्र उमेदराम । ताराचंदस्य पुत्र माणिकचंदजी आत्मकल्याणार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं साहजी श्री धर्ममूर्त्ति श्री तुलारामजी घटापित शास्त्र पाण्डवपुराण ।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयिता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या १५६, साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४६ अक्षर । कोश में ५२ कथायें है । ग्रन्थ के अन्त सूची दे रखी है ।

मंगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानम्य वस्तुत्त्वप्रकाशकं ।
वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानकं ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे केशवनन्दिदिव्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः ।

विजयकीर्त्तिर्यतिमुदितात्मको,
ह्यजितताम्वमतः सुगतै स्तुतः ।
अवतु जैनमतः सुमतो मतो
नृपतिभि भॅवतो भवतो ...... ॥ ५ ॥
पट्टे तस्य गुणांबुधि व्रतधरो धीमान गरोयान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एव विदितो वादीभसिंहोमहान् ।
तेनेदं चरित विचार सुकर चाकारि चचंद्रचां,
पांद्रो श्री शुभसिद्धि सात जनकं सिद्ध्यै सुतानां सदा ॥ ६ ॥
चन्द्रनाथचरित चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचन्द्रः ।
मन्मथस्य महिमानमतन्द्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७ ॥
चंदनाया कथा येन बद्ध्वा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचार्या वृत्तः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ८ ॥
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं यः सद्वृद्धसिद्धार्चन माव्यधत्त ।
सारस्वतीयार्चनमत्रशुद्धं चित मणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ६ ॥
श्री कर्मदाहविधिबंधुरसिद्धसेवां
नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिका च यः,
स चकार शुभचन्द्रचंद्रतथौचद्र ॥ १ १० ॥
उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविधेश्चयः ।
चारित्रशुद्धितपसश्चतुस्त्रिंद्वादशात्मनः ॥ ११ ॥
संशयवदनविदारणमपशब्दसुखडनं परं तर्क्कं ।
स तत्त्वानिर्णयं वरस्वरूपसंबोधनीं वृत्तिं ॥ १२ ॥
अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थपूर्वसर्वतोभद्रं ।
योकृतसद्व्याकरणं चिंतामणिनामधेयं च ॥ १३ ॥
कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वांगार्थ प्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षट्पादः श्री जिनेशिनां ॥ १४ ॥
तेन श्री शुभचन्द्रदेवविदुषा सत्पांडवानां परं,
दीप्यद्वंशविभूषणं शुभभरभ्राजिष्णुशोभकरं ।
शुभद्भारतोनाम निर्मलगुणं सच्छन्दचिंतामणि,
पुण्यत्पुण्यपुराणमत्रसुकरं चाकारि प्रीत्यामहत् ॥ १५ ॥

शिष्यस्तस्य समृद्धबुद्धिविशदो यस्तर्क वेदीवरो,
वैराग्यादिविशुद्धिवृद्ंजनकः श्रीपालवर्णीमहान् ।
सशोध्याखिल पुस्तक वरगुणं सत्पांडवानामिदं
तेनालेखि पुराणमर्थनिकरं पूर्वे वरे पुस्तके ॥ १६ ॥
श्रीपालवर्णिनाकारि शास्त्रार्थं संग्रहे ।
साह्यात्रं सचिरं जीयात् वरविद्याविभूषणः ॥ १७ ॥
ये भएवन्ति पठंति पांडवगुणं सलेखयंत्यादरात्—
लक्ष्मीराज्यनराधिपस्यच सुता चकित्वशक्रेशिनां ।
भुस्काभोगमिद पुराणमखिलं सत्रोभुवत्कृन्नता,
मुक्तो ते भवभीमनिम्नजलधि संतीर्य शांतं गताः ॥ १८ ॥
अर्हतो ये जिनेंद्रावरवचनचयैः प्रीणयंतः सुभव्यान् ,
सिद्धाः सिद्धिं समृद्धिं ददत् इह शिवं साधवः ......

× × × × × ×

संवत १८३१ वर्षे वैशाखसुदि ६ रविदिने श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्तिः आम्नाये आचार्य श्री विजयकीर्त्ति शिष्य रूपचंद उपदेशात् आदौ वासी शेरपुर अधुना वासी कोटा नगरे रामपुरा मध्ये जाति वैद साहाजी श्री कवलापति जी तत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति जैतरामजी भार्या बाई अनोपमातत्पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्त्ति तुलारामजी साहजी श्री वर्द्धमानजी साहजी श्री ताराचंदजी-तुलारामस्य भार्या बाई जगां वर्धमानजी भार्या वरधादे ताराचदस्य भार्या तारमदे बाई कुदना वर्धमानस्य पुत्र उमेदराम । ताराचदस्य पुत्र माणिकचदजी आत्मकल्याणार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थ साहजी श्री धर्ममूर्त्ति श्री तुलारामजी घटापित शास्त्रं पाण्डवपुराणं ।

२८. पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचियता श्री मुनि केशवनन्दि के शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या १५६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४६ अक्षर । कोश में ५२ कथायें है । ग्रन्थ के अन्त सूची दे रखी है ।

मंगलाचरण—

श्रीवीरं जिनमानम्य वस्तुत्त्वप्रकाशकं ।
वक्ष्ये कथामयं ग्रंथं पुण्याश्रवाभिधानकं ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति—

इति पुण्याश्रवाभिधाने ग्रंथे केशवनन्दिदिव्यमुनिशिष्यरामचंद्रमुमुक्षु विरचिते दानफलाख्य-वर्णनो षोडशवृत्ताः समाप्ताः ।

प्रशस्ति—

यो भव्याब्जदिवाकरो यमकरो मारेभपचाननो,
नानादुःखविधायिकर्मकुभृतो वज्रायते दिव्यधीः।
यो योगीन्द्रनरेन्द्रवंदितपदो विद्यार्णवोत्तीर्णवान्,
ख्यात. केशवनन्दिदेवयति यः श्री कुन्दकुन्दान्वयः॥ १॥
शिष्योऽभूत्तस्य भव्यः सकलजनहितो रामचन्द्रो मुमुक्षुः,
ज्ञात्वा शब्दापशब्दान् सुविशदयशसः पद्मनंद्याह्वयात्
वंद्या वादीभसिंहात्परमयतिपते सो व्यधाद् भव्यहेतो
ग्रंथं पुण्याश्रवाख्यं गिरिसमितिमितैं र्दिव्यपद्यैः कथार्थैः॥ २॥
कुंदकुंदान्वये ख्याते ख्यातो देशी गणाग्रणी।
अभूत सर्वाधिपः श्रीमान् पद्मनन्दी त्रिरात्रिकः॥ ३॥
वृषभाधिरूढो गणयोगणोद्यतो
विनायकानंदितचित्तवृत्तिकः।
उमासमालिंगित ईश्वरोपम
स्तनोप्यभूत् माधवनन्दिपंडितः॥ ४॥
सिद्धांतशास्त्रार्णवपारदृश्वा
मासोपवासी गुणरत्नभूषः।
शब्दादिविद्यार्थी विबुधप्रधानो.
जातस्ततः श्रीवसुनन्दिसूरिः॥ ५॥
दिनपतिरिवानित्यं भव्यपद्माविबोधी
सुरगिरिरिवदेवैः सर्वदा सेव्यपादः।
जलनिधिरिव शश्वत् सर्वसत्त्वानुकंपी,
गणभृदजनिशिष्यो मौलिनामातदीयः॥ ६॥
कलाविलासः परिपूर्णवृत्तो
दिगंबरालंकृति हेतुभूतः।
श्री नंदिसूरिर्मुनिवृंदवंद्यः
तस्मादभूच्चंद्रमानकीर्त्तिः॥ ७॥
चार्वाकबौद्धजिनसांख्यशिवद्विजानां,
वार्तिमत्त्ववादिगमकत्वकवित्वचित्तः।
साहित्यतर्कपरमागमभेदभिन्नः
श्री नन्दिसूरिगगनांगनपूर्णचंद्रः॥ ८॥
समाप्तोऽयं पुण्याश्रवाभिधानकं..........।

२६. पुराणसार संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत (गद्य)। पत्र संख्या १२६, साइज १२×४॥ इंच। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४९-५१ अक्षर। विषय-आदिपुराण उत्तर पुराण पाण्डवपुराण आदि के सार का वर्णन। लिपि संवत् १८२२. संग्रह अभी तक अप्रकाशित है।

मंगलाचरण—

सर्व्वकर्मारसंतानं हत्वा येन तपस्विना।
मोक्षश्रीसाधिता तस्मै नमोऽजितजितात्मने ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

धर्म्मांगं धर्म्ममूलं गुणगणसदनं तीर्थराजस्य ज्ञातं
विश्वार्च्यं विश्ववंद्यं गणधररचितं कीर्त्तितं कीर्त्तिमद्भिः।
भव्याराध्यं शरण्यं भवभयसकृतां धर्म्मिणांमुक्ति हेतोः,
दुः कर्मघ्नं हि जीयान्नरसुरमुनिभिः ज्ञानतीर्थं धरित्र्यां ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

संवत् १८२२ वर्षे शाके १६८७ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ ८ सोमवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शिवयोगे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे द्वितीयशिष्यमंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीविशालकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्री लक्ष्मीचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मं० श्रीनेमचंददेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भानुकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री भूषणजी देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यः श्रीअमरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिजी तदाम्नाये त्रयोदशप्रकारचारित्रप्रतिपालक आचार्य श्री १०८ लक्ष्मीचन्द्रजी तत्पट्टे आचार्य १०८ नरेंद्रकीर्त्तिस्तत्पट्टे परमपूज्य सकलगुणगणालंकृताचार्य १०८ श्री सकलकीर्त्तिजी तत्पट्टे पंचमहाव्रतधारकः पंचसमितिधारकः त्रयगुप्तिसाधकः अष्टाविंशमूलगुणयुक्तः द्वाविंशपरिषहसहनधीरः सप्तदशसयमभेदनित्याचरन आचार्यवर्य्यधैर्यः सकलशिरोमणि आचार्य जी श्री १०८ श्री क्षेमकीर्त्ति जी तच्छिष्य लिखितं पंडित जीवराज द्वितीय शिष्य पं० ईसर स्वहस्तेन।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् संवत १८२५ वर्षे मार्गशिरमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ शनिवासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री चन्द्रकीर्त्ति जी तदाम्नाये खंडेवालान्वये नागपुरवास्तव्ये महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्री विजयसिंह जी राज्यप्रवर्त्तमाने पाटणी गोत्रे साहजी श्री हीरानंदजी तस्य भार्या हीरादे तत्पुत्र सा० टकुदास भार्या तिलकादे। तत्पुत्र सा० जीवराज तस्य भार्या जिणादे तयो पुत्राः त्रयः। प्रथम पुत्रा सा० ईसरदास

द्वितीय सा० कपूरचंद तस्य भार्या कपुरादे तस्य पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र सा० बधूराम भार्या बोहरंगदे द्वितीय पुत्र सा० जीवणराम तस्य भार्या जिणादे तृतीय पुत्र सा० कचरदास तस्य भार्या कचरादे चतुर्थ पुत्र सा० गुलाबचंद तस्य भार्या गुलाबदे। तृतीय पुत्र सा० डालुराम तस्य भार्या डालमदे तयोः पुत्रौ द्वौ। प्रथम पुत्र सा० चूहड तस्य भार्या चूहडदे द्वितीय पुत्र सा० फतेचंद तस्य भार्या फतमलदे। सा० मनुजी तस्य भार्या मानादे तयो पुत्रा सा० भावुजी तस्य भार्या भावलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र रूपचन्द तस्य भार्या रूपलदे द्वितीय पुत्र रामचंद। सा० कचरदास जी तस्य भार्या कचरदे तयोः पुत्राः साह रिषभदास भार्या रिषभादे। साह गुलाबचंद तत्पुत्र सा० भिलाजी भार्या भिलादे तयोः पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र मोतीराम द्वितीय पुत्र माणिकचंद तृतीय पुत्र नैणचंद चतुर्थपुत्र दौलतराम। साह फतेहचंद तत्पुत्र सयाराम एतेषा मध्ये जिनपूजापुरंदरान् संघभार धुरंधुरान् जिनचैत्यालययात्राप्रतिष्ठाकरणसमर्थान् द्वादशव्रतप्रतिपालकान् सद्गुरूपदेशनिर्व्वाहकान् साहजी श्री रिषभदासजी इदं शास्त्र सकलपुराणाख्यं लिखाप्य स्वज्ञानावरणीकर्मक्षय निमित्तं सत्पात्रा आचार्यवर्य श्री १०८ श्री क्षेमकीर्त्तये प्रदत्तं ॥

३०. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति।

वृत्तिकार श्री गुणसुंदर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४३-४५ अक्षर। लिपि संवत् १४२६. लिपि संवत् १६५४. श्री गुणसुंदर आचार्य गुणचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्य थे। इनका दूसरा नाम गुणाकरसूरि भी है।

वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीचंद्रगच्छेऽभयसूरिवंशे श्रीरुद्रपल्लीयगणाब्धिचंद्राः।
श्रीचंद्रसूरिप्रवरावमुन्ते येभ्रातरः श्रीविमलेंदुसंज्ञाः॥ १॥
तत्पट्टे जिनभद्रसूरिगुरवः संल ध्वंलब्धप्रभा.।
सिद्धांताम्बुधिकुंभसंभवनिला. प्रख्यातमन पां शुभाः॥ २॥
जातः श्रीगुणशेखराभिधगुरुस्तस्मात्तपोनिर्म्मलः।
शोल. श्रीनिलयोजगत्तिलक इत्य······प्रणोः॥ ३॥
स्तद्धर्मकविः कविस्वध्याता चारित्रचारुकरुणाः करुणास्तकामः।
तत्पट्टभूषणमणिर्गतदूषणोऽभूत श्रीमान् मुनींद्र गुणचंद्र गुरुर्गरिष्ठा॥ ४॥
संप्रत्य·······निदेश.भयदेव सूरिणा।
गुणचंद्रसूरि शिष्यःगुणसुन्दरवाचकोल्पे मतिः॥ ५॥
वर्षे षड्विंशाधिकचतुर्दशशती मितेत्रपंर्त्ती।
आश्विनमासे रचितामरस्वपत्तनिवृत्तिः॥ ६॥
× × × × × ×
इति श्री भक्तामरबृहद् वृत्ति समाप्ता।

संवत १६५४ वर्षे कार्त्तिक शुक्लचतुर्दश्यां लिखित सारुंडानगर मध्ये ।

३१. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार ब्रह्म श्रीरायमल्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज ११।।×६।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर । टीका काल संवत् १६६७ लिपि संवत् १६६८. वृत्तिकार की प्रशस्ति—

श्रीमद् हूंवडवशमडणमणिर्महीयेति नामा वणिक्,
तद्भार्या गुणमंडिता व्रतयुता चांपामितीताभिधा ।
तत्पुत्रो जिनपादपंकजमधुपो रायादिमल्लो व्रती
चक्रे वृत्तिमिमा स्तवस्य नितरं नत्वा श्रीयादींदुकं ॥ १ ॥
सप्तषष्ट्यधिके वर्षे षोडशाख्ये (१६६७) हि संवति ।
आषाढश्वेतपक्षस्य पचम्यां बुधवारके ॥ २ ॥
श्रीवापुरे महीसिंधो स्तटभागंसमाश्रिते ।
प्रोत्तुंगदुर्गसयुक्ते श्रीचन्द्रप्रभसद्मनि ॥ ४ ॥
वर्णिनः कर्मसीनाम्नः वचनात् मयकारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्तः रायमल्लेन वर्णिना ॥ ४ ॥
इति श्री ब्रह्मरामल्लेन विरचिता भक्तामरस्तोत्र वृत्तिः समाप्ता

सवत् १६६८ वर्षे कार्त्तिक बुदी १३ शनिवारे श्री काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री विद्याभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री भूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति तत्पट्टाभरण श्रीं भट्टारक श्री राजकीर्त्ति तत्पट्टाभरण भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन विजयराज्ये भट्टारक श्री राजकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री कल्याणसागरस्य पठनार्थे ।

३२. भक्तामरस्तोत्र वृत्ति ।

वृत्तिकार श्री अमरप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर ।

मगलाचरण—

अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजनशलाकया ।
नेत्रोन्मुनिमीलतेजेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

प्रशस्ति—

श्रीअमरप्रभसूरिणां वैदुष्यगुणभूषिताः ।
भक्तामरस्तवींवृत्ति प्रकार्षुः सुखबोधिकां ॥ १ ॥

संवत् १६३६ माघ सुदी २ सोमवासरे लिखायितं पंडित शिरोमणि केसोदास आपज्ञोग्यपठनथँ लिख्यते कायस्थ पूरनमल माथुरान्वये।

संवत् १६६५ पौष वुदी ११ वृहस्पतिवासरे शेरपुर वास्तव्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये महाराजा श्रीजगन्नाथराज्ये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये ...... भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगणी गोत्रे सा० सांगा तद्भार्ये प्र० सिंगारदे द्वि० लाडमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० सा० नांदा तद्भार्ये द्वे प्र० नारंगदे द्वि० व्हौडी तयोः पुत्राः चत्वारः प्रथम सा० टीला तद्भार्या त्रिभुवनदे। द्वि० सा० मोहन चि० गूजर एतेषां मध्ये सा० नांदा तद्भार्या नारिंगदे इद शास्त्रं देवशास्त्रगुरुर्भक्तितया भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तये प्रदत्तं।

३३. भोजप्रबन्ध।

रचयिता श्री रत्नमन्दिर गणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२. साइज १२×५॥ इञ्च। ग्रन्थ पद्य संख्या ३३२१. रचना संवत् १५१७ लिपि संवत् १८०५. ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

मंगलाचरण—

ॐकारः कल्पकारस्करनिकरतिरस्कारिदानातिरेकः,
शब्दब्रह्मैकरत्नाकरहिमकिरणः कारणं मंगलाना।
देयाद्वः शुद्धबुद्धि निरवधिमहिमांभोनिधिः,
सत्रसिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनभिदधदं वकं धीमदाराधनीयः॥१॥

प्रशस्ति—

भोजे प्रबन्धराजेऽस्मिन् रत्नमंदिरलेखिते।
कवीश्वरकृतानंदोऽधिकारः सप्तमोऽभवत्॥ १॥
ज्ञातः श्री गुरुसोमसुन्दरगुरुश्रीमत्तपागच्छप,
स्तत्पादांबुजषट्पदो विजयते श्रीनंदिरत्नगणी।
तत् शिष्योस्ति च रत्नमंदिरगणी भोजप्रबंधोद्भुत,
स्तेनासौ मुनिर्भूमिभूतशशिभृत् १५१७ संवत्सरे निर्मितः॥ २॥

संवत् १८०५ वर्षे मिती चैत सुदी ११ तिथौ लिखितं जती प्रयागदासेन।

३४. महावीर पुराण।

रचयिता महापंडित श्री आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३० अक्षर।

मंगलाचर—

वीरं नत्वेंद्रभूतिं च त्रिपष्टिश्रेष्ठपुंश्रितं।
इति वृत्तं ब्रुवे स्मृत्यै समासेन यथागमं ॥ १ ॥

प्रशस्ति —

सोहमाशाधरः कंठमलं कर्त्तुं सधर्म्मणां।
पंजिकालं कृतं ग्रथमिमं पुण्यमरीरचं॥ १ ॥
× × × × × ×
संक्षिप्यतां पुराणान् नित्यस्वाध्यायसिद्धये।
इति पंडितजाजाख्याद्विज्ञप्ति प्रेरिकात्र ये॥
× × × × × ×
प्रमारवशंवादींदु देवपालनृपात्मजे।
श्रीम ······· देव सिस्थाम्नावंतीमवत्पलं॥
नलकच्छपुरे श्रीमान्नेमिचैत्यालयेसिधत्।
प्रथो संक्षिनवद्येक विक्रमार्क समात्यये॥
खण्डिलां वंशे महनकमलश्रीसुतः सुहृक्।
धीनाको वर्द्धतां येन लिखिता स्वाद्य पुरितका॥

३५. महीपालचरित्र।

रचयिता श्री चारित्रसुन्दरगणि। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३३. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४५–५० अक्षर। रचना संवत् १५२५ के आप पास। लिपि संवत् १८२५. ग्रन्थ जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

प्रारम्भिक पाठ—

यस्यांशदेशे शतकुंतलाली, दूर्वांकुरालीव विभाति नीला।
कल्याणलक्ष्मी वसतिः सदिश्यादादीश्वरो मंगलेमालिकां वः॥
यस्यांक्रमोपास्तिवशाज्जडोपि, विना श्रमं वाङ्मयपारमेति।
सदा चिदानंदमयस्वरूपा सा सारदा पातु रतिपरां मे॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

महीपालस्यैवं चरितमिदमुद्यद्रसमयं,
मया प्रोचे पुण्यातिशयविशदं शश्वदधिया।
प्रसादेन श्रीमज्जिनवरपतेश्चापि सुगुरोश्च,
नद्यादे तद् भुवि कविजनानंदजनकं॥ १ ॥

नित्य सच्छुक्लपक्षस्थितिरिति विशदो नाशितो स्यामपक्षो,
विध्वस्ताशेषदोषो बहुमुनिसहितो भूरिशोभाभिरामः ।
विश्वाल्हादं ददानो हतनिखिलतमाः शश्वदाप्तोदयोत्र,
श्रीमच्छोपरविधुवदयं राजते शुद्धवृत्तः ॥
कल्याणवलिशालिनोत्रसुमनः श्रेणीश्रितो विश्रुतः,
श्रीमान् वृद्धतपोगणो विजयतेऽयंमेरूवलिश्चलः ।
विश्वालंकरणस्य विस्तृतजुषः सन्नंदनस्यान्वहं,
भां विस्फाति युतस्य यस्य पुरतः पादा इवान्ये गणाः ॥ ३ ॥
तस्मिन् विस्मयकारि चारुचरितं चारित्रचूडामणिः,
श्रीमान् श्रीविजयेन्द्रसूरिरभवद्भव्यांगचिंतामणिः ।
तत्पट्टे समभून्महींद्रमहितः श्रीक्षेमकीर्त्तिगुरुः,
कारज्ञान्नोविबुधान् धिनोर्ति नितरां यत्कालवृत्तिस्तथा ॥ ४ ॥
श्री रत्नाकरसूरय समभवन् ज्ञानांबुरत्नाकरा,
कीर्त्तिस्फीतिमनोहराशुभगुणश्रेणीलतांभोधर ।
यन्नाम्नात्र तयो गणो यमभजद्रत्नाकराख्यांपरां,
ख्यातेन क्षिति मंडलेऽपिसकले सत्यां तमो हारिणः ॥ ५ ॥
तस्यानुक्रमपूर्वशैलतरणिः कामद्विपोघत्सृणिः,
सूरीशोभयसिंह इत्यजनिसद्योगींद्रचूडामणिः ।
तत्पट्टे प्रकटप्रभाव विदितो विध्वस्तवादिघृणिः,
जज्ञे श्री जयपुंढ्सूरिरसमो भव्यात्मचिंतामणिः ॥ ६ ॥
कीर्त्तिर्यस्य निरस्तापनिवहासच्छीलदंडस्थिता,
चंचच्चंद्रकलोज्वलादशदिशां श्वेतात्पत्रापते ।
तत्पट्टे स्फुटवादिकुंजरघटा सिंहो हृदंहोव्रजः,
सूरींद्रो जयताच्चिरं गणधरः श्री रत्नसिंहाभिधः ॥ ७ ॥
तस्यानेकविनेयसेवितपदांभोजभव्यावली,
चंचन्नेत्रचकोरचंद्रसदृशास्यान्नभूमीपतेः ।
शिष्याणूरचयांचकार चतुरश्चारित्रस्याभिधो,
विश्वाश्चर्यकरं महीपचरितं नानाविचारोद्धरं ॥ ८ ॥
श्री रत्नसिंहगुरुपादशिरोरुहालि-
श्चारित्रसुंदरकवि यदिदं ततान ।

तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाख्य,
सर्गः समाप्तिमगमत् किल पंचमोयं ॥ ६ ॥

इति भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि शिष्यमहोपाध्याय श्री चारित्रसुंदरगणिविरचिते श्री महीपालचरिते चा काव्ये पंचमः सर्गः। संवत् १८२५ तपसि मासे कृष्णपक्षे कर्म्मवाट्यां जयादे मध्ये पूर्णी कृतम्। टोंकनगर-मध्ये लिखिता जती पूरणचन्द्रेण लिखापिता विद्वत् सुखरामजी पठनार्थे।

३६. मुनिसुव्रतपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्रीकृष्णदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११६. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४३-४७ अक्षर। रचना सवत् १६८१. लिपि संवत् १८५०. पुराण अभी तक अप्रकाशित है।

मंगलाचरण—

देवेन्द्रार्चितसत्पादपंकजं प्रणमाम्यहं।
आदीश्वरजगन्नाथं सृष्टिधर्म्मकरं भुवि ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ प्रशस्ति—

काष्ठासंघे वरिष्टेऽजनिमुनिपतुतो रामसेनोभदंत,
स्तत्पादांभोजसेवाकृतविमलमतिः श्रीभीमसेनः क्रमेण।
तत्पट्टे सोमकीर्त्तिर्यवनपतिकरांभोजसपूजितांह्रि,
रेतत्पट्टोदयाद्रौ जिनचरणलयीश्रीयशः कीर्त्तिरेनः॥ १ ॥
कमलपतिरिवाभूच्छ्रयुदयाद्यतंसेन,
उदितविशदपट्टे सूर्यशैलेन तुल्ये।
त्रिभुवनपतिनाथांह्रिद्वयाशक्तचेत,
स्त्रिभुवनजनकीर्त्तिर्नमितत्पट्टधारी ॥ २ ॥
रत्नभूषणभदंत······न्यायनाटकपुराणसुविधः।
वादिकुंजरघटाकटसिंहस्तत्पट्टेऽजनिरंजनभक्तः ॥ ३ ॥
देवतानिकरसेवितपाद श्रीवृषेशविभुपादप्रसात्।
कोमलेन मनसा कृत एष ग्रंथ एव विदुषां हृदिहारः ॥ ४ ॥
सोधयंतु विबुधाविविरोधामत्पुराणमदएवमनोज्ञं।
संभवंति सुजनाः खलु भूमौ ते सदा हितकराहृतपापाः ॥ ५ ॥
·········ऽथ वर्षे १६८१ श्री कीर्त्तिकारव्ये।
धवले च पक्षे जीवे त्रयोदश्यपराह्नयामे कृष्णेन सौख्याय विनिर्मितोऽयं ॥ ६ ॥

लोहपत्तननिवासमहेभ्यो हर्ष एव वणिजामिव हर्षः ।
तत्सुतः कविविधः कमनीयो भातिमगलसहोदरकृष्णः ॥ ७ ॥
श्रीकल्पवल्लीनगरे गरिष्ठे श्रीब्रह्मचारीश्वर एव कृष्णः ।
कठावलं व्यूर्ज्जितपूरमल्लः प्रवर्द्धमानोहितमाततान ॥ ८ ॥
पंचविंशतिसंयुक्तं सहस्त्रत्रपमुत्तम ।
श्लोकसस्येतिनिर्दिष्टः कृष्णेन कविवेधसा ॥ ९ ॥

इति श्रीपुण्यचंद्रोदयमुनिसुव्रतपुराणे श्रीपूरमल्लांके हर्षवीरिकादेहज ब्रह्मश्री मंगलदासाग्रज ब्रह्मचारीश्वरकृष्णदासविरचिते रामदेवशिवगमन त्रयोविंशतितमः सर्गः समाप्तः । संवत् १८५० का पोषमासे शुक्लपक्षे तिथौ १ गुरुवासरे लिखित महात्मा संभूराम ॥

सवत्सरे शून्यशराष्टेंदु १८५० मिते पोषमासे शुक्लपक्षे पंचम्यांतिथौ चन्द्रवासरे ढूंढाहडदेशे सवाईजयपुरनगरे श्री वृषभदेवचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अंबावती-पट्टे भट्टारकशिरोरत्न श्रीमहेन्द्रकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक पट्टोदयाद्रिदिनमणिनभश्रीमत्क्षेमेन्द्रकीर्त्तिदेवस्त-त्पट्टांभोजमार्त्तण्डचण्डोद्योतितपरवादिभपंचानभट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे-पीवृन्द्योंकशिरोमणि साहश्रीसतोपरामः तद्भार्या संतोपसुखदे तत्पुत्रचिरंजीव श्रीधर्मधुरंधर वधूरामजी तद्भार्या वधूदे तत्पुत्र चिरंजीविश्रीमोहनलाल एतेषा मध्ये दानपूजाव्रतशीलप्रभावक श्रावकधर्मक्रियापरायण-चिरजीविश्रीवधूरामेणेद मुनिसुव्रत पुराणं लिखाप्य निजज्ञानवरणीकर्मक्षयार्थं भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्तये घटापितं ॥

३७. मेघदूतावचूरि ।

टीकाकार श्री सुमतिविजय । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०. साइज ६॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६-४८ अक्षर । लिपि संवत् १७५१.

टीकाकार का मंगलाचरण—

शारदां च गुरु नत्वा मेघदूतावचूरिका ।
सुमतिविजयनेयं क्रियते सुगमत्वया ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

राजरंजनरत्नाश्च पाठकाः मुनिमंडले ।
जीयाः सुधीः घनाः शाश्वन् श्रीमद्विनयमे रवः ॥ १ ॥
सुमतिविजयेनेयं विहता सुगमत्वया—
वचूरिः शिशुबोधार्थं तेषां शिष्येण धीमता ॥ २ ॥
विक्रमाख्ये पुरे रम्येऽभीष्ट देव प्रसादतः ।
मेघाव्हताभिघानस्य पूर्णकाव्यस्य सौख्यदा ॥ ३ ॥

३८. मेघदूत टीका।

टीकाकार श्रीमेघराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४४. साइज १०x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४५ अक्षर।

टीकाकार का मंगलाचरण—

नत्वार्हं परमात्मानं सर्वातिशयसंयुतं।
मेघदूतस्य काव्यस्य कुर्वे टीकां सुबोधिकां ॥ १ ॥

अन्तिम समाप्ति—

इति श्री कालिदासकृतं मेघदूतकाव्यं तस्य सुबोधिका नाम्नी टीका वृत्ति समाप्त।

संवत् द्विवसुमुनीन्दुवत्सरे वैशाखकृष्णनवम्यां तिथौ कविवासरे श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिगच्छे महोपाध्याय श्री १०८ श्री हीरानन्द चन्द्रस्तेषां शिष्यमहोपाध्यायाः श्रीरामचन्द्रस्तच्छिष्य श्रीधनराजजी तच्छिष्य श्रीलालचन्द्रजी तच्छिष्य मुनिरत्नचंद्रेणाय लिखित ॥

३९. यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री ज्ञानकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६८. साइज १२x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३७ अक्षर। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नाभिसुतो जीयाज्जिनो निर्जितदुर्नयः।
मंगलार्थं नतो यस्तु सर्वदा मंगलप्रदः ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

चंपावतीपुर्याः सन्निधे सुदेशे यशाभवा सुन्दरतां दधाने।
रम्ये पुरेऽकब्बरनामके च चैत्यालये श्री पुरुतीर्थ यस्य ॥
श्री मूलसंघे च सरस्वतीति गच्छे वलात्कारगणे प्रसिद्धे।
श्री कुन्दकुन्दान्वयके यतीशः श्री वादिभूषो जयतीह लोके ॥ २ ॥
तद्गुरुवंधुर्मुनमनमच्चः पंकयकीर्ति परमपवित्रः।
सूरिपदासौ मदनविमुक्तः सद्गुणराशि जयतु चिरं सः ॥ ३ ॥
शिष्यस्तयोर्ज्ञानसुकीर्तिनामा श्री सूरिरत्नाल्पसुशास्त्रवेत्ता।
चरित्रमेतद्रचितं च तेनाचन्द्रार्ककतां रंजयताद्धरित्र्यां ॥ ४ ॥
शते षोडशएकोन षष्टिवत्सरके शुभे।
माघे शुक्ले प पंचम्यां रचितं भृगुवासरे ॥ ५ ॥
राजाधिराजोऽत्र तदा विभाति श्री मानसिंहोजित वैरिवर्गः।

अनेकगजेन्द्रदिनस्यमादः स्वदानसंतर्पितविश्वलोकः ॥ ६ ॥
प्रतापसर्वस्तपतीह यस्य हिमा शिरस्सु प्रविधायपाद।
अन्याय दुर्ध्वांत मरस्यदूर पद्माकर यः प्रतिशापेच्च ॥ ७ ॥
तस्यैव गत्वाऽस्ति महानमात्यो नानू सुनामा विदितो धरित्र्यां।
समेदशृंगे च जिनेन्द्रगेहमष्टापदे वादिमचक्रधारी ॥ ८ ॥
चाक्रयच्चत्र च तीर्थनाथाः सिद्धिंगता विंशतिमानयुक्ताः।
य कारयेन्नित्यमनेक संख्यायात्राधनाद्यैः परमां च तस्या ॥ ९ ॥
तत्प्रार्थना च संप्राप्य जयवर्तंबुधस्य च।
आरचन्द्रचितं चैतच्चरित्रं जयतां चिरं ॥ १० ॥
श्री व रदेवोम्गु शिरायते हि श्री पद्मकीर्त्तिष्ट विधायशो यः।
श्री ज्ञानकीर्त्ति प्रविनत पादौ नानू स्ववर्मेणयुतस्य नित्य ॥ ११ ॥

इति श्री यशोधरमहाराज चरिते भट्टारक श्री वादिभूषण शिष्याचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति विरचिते राजाधिराज महाराजमानसिंह प्रधान साह श्री नानूनामांकिते भट्टारक श्री अभयरुच्यादि दीक्षाग्रहण स्वर्गादिप्राप्तिवर्णनो नाम नवमः सर्ग ॥

संवत् १६६१ श्रावणमासे कृष्णपक्षे द्वितीयातिथौ कुजवासरे वंगदेशे अकबरनगरे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे साह श्री याचकजनमनोह कल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्तः साह श्री चाचा तस्य भार्या चौसरदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह नेता तस्य भार्या निमलदे तस्य पुत्र साह वल्लू तस्य भार्या वालहदे द्वितीय पुत्र साह खेमा तस्य भार्या खेमश्रदे तस्य पुत्र चि० कल्लू तस्य भार्या नौतूकदे तस्य पुत्र चि० दुर्गा तस्य भार्या दुर्गादे तृतीय पुत्र साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वे प्रथमभार्या पाटमदे द्वितीय भार्या भावलदे। प्रथम भार्या स्वपतिचित्तानुगामिनी शीलालंकृतगात्रा. स श्री पाटमदे तयो पुत्र प्रथम दानगुणश्रेयास सकलजन नमस्कारस्ववचनप्रतिपालन समर्थसर्वोपकारक साह श्री नाथू तद्भार्या नारंगदे तयो पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र चि० दूगरसी तस्य भार्या कोटमदे द्वि० पुत्र चि० मोहनदास तृतीय पुत्र चि० नारायणदास चतुर्थ पुत्र चि० रूपचन्द न। साह श्री पंचाईण तस्य भार्या द्वितीय भावलदे तयो पुत्रास्त्रयः देवशास्त्रगुरुभक्तितत्परान् नयविनयविवेकविचारचातुरीचमत्कृतजननिकरान् श्री जिनपूजापुरंदरान् राजासभाशृंगारहार न प्रथमपुत्रसाप श्री हरषा तद्भार्ये द्वे प्रथमभार्या हरषमदे तस्य पुत्र चि० प्रयागदास तद्भार्या दाडिमदे साह श्री हरषा तस्य द्वितीय भार्या प्रतापदे साह श्री पंचाइण तस्य तृतीय पुत्र साह श्री हीरा तस्य भार्या हमीरदे। साह

श्री पंचाइण तस्य चतुर्थपुत्र मानू तस्य भार्या महिमादे। तस्य पंचम पुत्र चि० केसोदास तस्य भार्या कस्मीरदे एतेषां मध्ये स्वकुलाकाशप्रकाशनचंद्र सज्जमजनचकोरचक्षु चंद्रमंडल श्रीभगवान् मुखोद्गत प्रवचन श्रद्धामृत पानसंछर्दितानादिकालानमिथ्यात्वमहागरल साह श्री नाथू तेनेदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति तस्य शिष्य आचार्य श्री शुभचंद्राय दत्तं कर्मक्षयनिमित्तं।

४०. यशोधर चरित्र।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८६. साइज ६x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३४ अक्षर। लिपि संवत् १७६६. यशोधर चरित्र अभी तक प्रकाशित नही हुआ है।

मंगलाचरण—

परमानंद जननी भवसागर तारिणी।
सतां वितनुतां ज्ञानलक्ष्मीचन्द्रप्रभप्रभुः॥ १॥

अन्तिम पाठ—

उपदेशेन ग्रन्थोऽयं गुणकीर्त्तिमहामुनेः।
कायस्थ पद्मनाभेन रचितः पूर्व सूत्रतः।
सतोष जैसवालेन संतुष्टेन प्रमोदिना।
अतिश्लाघितो ग्रंथो यमर्थ संग्रहकारिणा॥ २॥
साधोर्विजयसिंहस्य जैसवालान्वयस्य च।
सुतेन पृथ्वीराजेन ग्रन्थोऽयमनुमोदितः॥ ३॥

इति श्री यशोधरचरित्रे दयासुंदराभिधाने महाकाव्ये साधु श्री कुशराजकारापिते कायस्थ श्री पद्मनाभविरचिते अभयरुचिप्रभृति सर्वेषां स्वर्गगमनो नाम नवमः सर्गः॥

प्रशस्ति—

जातः श्री वीरसिंहः सकलरिपुकुलव्रातनिर्घातपातो,
वंशे श्री तोमराणां निजविमलयशो व्याप्तदिक्चक्रवालः।
दानैर्मानैर्विवेकै न भवति समता येन सार्कं नृपाणा।
केषामेषा कवीणां प्रभवति धिषणां वर्णने तद्गुणानां॥ १॥
ईश्वरचूडारत्नं विनिहत करवातवृत्तसंहातः।
चंद्र इव दुग्ध सिंधोस्तस्मादुद्धरणभूपशुचीयते तिमिरं॥ २॥
यस्य हि नृपते यशसा सहसाशुभ्रीकृत त्रिभुवनेऽस्मिन्।

श्रोतृणां लेखकानां बहुविमलधियां द्रव्यलिख्यापकानां।
तद्वत्श्रद्धापराणां विविधबहुमतै भोत्रकानां तथैव ॥ ११ ॥
कायस्थपद्मनाभेन बुधपादाब्जरेणुना।
कृतिरेपा विजयतां स्थेय दाचंद्रतारकं ॥ १२ ॥

४१. यशोधर चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७४ साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४२ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। लेकिन दीमक लग जाने से फट गया है। उक्त चरित्र प्रकाशित नहीं हुआ है।

प्रशस्ति—

संवत् १६३० वर्षे आषाढ सुदी २ सोमवासरे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुन्दकुन्दाचार्यः। तदन्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रः। तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रः। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति। तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्तिः। तदाम्नाये खंडेलवाल पाटणी गोत्रे संगही दूलहा भार्या दूलहदे। तयो पुत्र सं० हारा द्वितीय पुत्र सं० ठकुरसी तत् भार्या लखणा। तयो पुत्र सं० ईसर भार्या ईसरदे तयोः पुत्र सं० रूपसी देवसी सं० सेवा भार्या साहिबदे तयोः पुत्र मानसिंह सं० गुणदत्त भार्या गोयादे तयोः पुत्र सं० गेगा स० प्रमत् सं० रेखा स० ठकुरसी भार्या लखणा शास्त्र यशोधर चरित्र ब्रह्मरायमल्ल जोग्य दद्यात्।

४२. योगचिंतामणि।

रचयिता श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर। विषय-वैद्यक। ग्रन्थ का दूसरा नाम वैद्यक सार संग्रह भी है।

मंगलाचरण—

यत्र त्रिासमयांति तेजांसि च तमांसि च।
महीयस्तदहं वंदे चिदानंदमयं महं॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

न रोगणां क्रमः कोऽपि निदाननिरूपणं।
केवलं बालबोधाय योगाः केऽपि निरूपिताः॥
स्तरीश्वरप्रव...सर्वशिरावतंस,
श्री चन्द्रकीर्त्तिगुरुपादयुगप्रसादात्।
गभीरचारुतरवैद्यकशास्त्रसारं,
श्री हर्षकीर्त्तिवरपाठक उद्धारः॥ २॥

प्रचार्य्यपूर्वशास्त्राणि हर्षकीर्त्यादिसूरिभिः ।
कि विदुः क्रिया तस्मै तद्र.स्य विद्यकार्णवात् ॥ ३ ।

× × × × ×

यथा जनानामिह वांछितार्थान् चिंतामणि पूरयंतु समर्थः ।
तथैव सप्तपञ्चसूरियोगान् श्री योगचिंतामणि रापिपर्ति ॥ ४ ॥

श्रीमन्नागपुरीय तपोगच्छीय श्री हर्षकीर्त्तिसूरि संकलित श्री योगचिंतामणौ वैद्यकसारसंग्रहे सप्तमको मिश्राध्यायः ।

४३. राजवार्त्तिक ।

रचयिता श्री भट्टाकलंकदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५५४, साइज १२×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४२ अक्षर । प्रति सुन्दर है ।

संवत् १५८२ वर्षे आषाढवुदि १३ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवालगोत्रे चंपावतीवास्तव्ये रावश्रीरामचन्द्रराज्ये संघभारधुरंधर संघपति सं० तोको तद्भार्या पूनी तयोः पुत्रौ सा० चाया द्वितीय ताल्हू । सा० चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र रामा द्वितीय छीला । सं० ताल्हू भार्या नौलादे तयोः पुत्र सद्गुरुपदेशनिर्वाहकौ चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षौ जिनपूजापुरंदरौ सं० लाल्हू द्वितीय सं० वाल्हू भार्या ललतादे । सं० वाल्हू भार्या बहूसिरि एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं कर्मक्षयार्थं लिखाप्य भक्त्या ब्रह्मलालाय दत्तं ।

४४. वरांगचरित्र ।

रचयिता परवादिदंतिपंचानन भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२, साइज ११×५ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३८३, लिपि संवत् १५६५.

मंगलाचरण—

जिनस्य सज्ज्ञानमयं स्वदर्पणे जगत्समस्तं प्रतिबिंबतां गतं ।
स यस्य समारविमोहितात्मनः पुनातु चेतांसि सतां निरंतरं ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य तथा प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री मूलसंघे भुविविदितगणे श्री बलात्कारसंज्ञे,
श्रीभारत्यादिगच्छे सकलगुणनिधिर्वर्द्धमानाभिधानः ।
आसीद्भट्टारकोऽसौ सुचरितमकरोच्छ्रीवरांगस्य राज्ञो,
भव्यश्रेयांसि तन्वद्भुवि चरितमिदं वर्त्ततामाकेतारं ॥ १ ॥

प्रमाणमस्य काव्यस्य श्लोका ज्ञेया विशारदैः।
अनुष्टुप् संख्यया सर्व्वे गुणो भाग्नींदुसम्मिताः॥ २॥

संवत १५६५ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे षष्टी दिवसे शनैश्चरवारे उत्तरानक्षत्रे रावश्री मालदे राज्य-प्रवर्त्तमाने रावत श्री खेतसीप्रतापे सांखोणनामनगरे श्री शांतिनाथजिनचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा० चोखा तद्भार्या वीरणि तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम सा चेला द्वितीया सा० खेमा। सा० चेला भार्ये द्वे प्रथम हरख् द्वितीय नाल्ही तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा श्रीपाल द्वितीय सा० पोल्हण तृतीय सा० भांकू। सा० श्रीपाल भार्या सूवट तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम सा जिनदास द्वितीय सा० कर्मदास। सा० पोल्हण तद्भार्या होली। सा० भांकू भार्या टोमा तयोः पुत्र चिरंजी नानिग। सा० खेमा भार्या रोहिणी तयोः पुत्र सा० हालू तद्भार्या हल्लसिरि एतेषां मध्ये जिनपूजापुरंदर चतुर्विध दानवितरण कल्पवृक्ष सद्गुरूपदेशनिर्वाहक सा० श्रीपालेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं।

प्रति नं० ५, पत्र सख्या ६०, साइज १२×५ इञ्च। प्रति प्राचीन है। लिपि संवत् १६६०.

प्रशस्ति—

संवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १४ तिथौ भृगुवासरे श्री राजमहलनगरे महाराजाधिराजराजा श्री मानसिंहजी राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवालगोत्रे याचकजनसंदोह-कल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्तसाह सोढा तद्भार्या सीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी सोहिलादे तयो पुत्राश्चत्वार। प्रथम पुत्र धर्म्मधुराधरणधीर साह श्री छाजू तद्भार्या दानशीलगुणभूषणा भूषितगात्रा नाम्ना छायलदे तयो पुत्रौ द्वौ। राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापादनकर मुकुलिकृत शत्रुमुख कुमुदाकर स्वजसनिशाकर आल्हादित कुवलयदानगुण अल्पांकृतकल्पपादपश्री पंचपरमेष्ठिचिंतनपवित्रितचित्तसकलगुणीजन-विश्रामस्थान प्रथम साह जेहा तद्भार्या जेहलदे तयोः पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र देवा तद्भार्या देवलदे द्वितीय पुत्र साह ईसर तृतीया पुत्र कुता चतुर्थ पुत्र भगवान। द्वितीय पुत्र करमसी तद्भार्या करणादे तयोः पुत्र साह नेमा तद्भार्या नेमलदे तयोः पुत्रास्त्रयः। प्रथमपुत्र दानगुणश्रेयांस सकलजनानंद कारक स्ववचन प्रतिपालनसमर्थ सर्व्वोपकारक साह हरपा तद्भार्या स्वपतिछंदानुगामिनी शीलालंकृतगात्राः साध्वी हरपदे द्वितीय पुत्र साह चेणा तद्भार्या वहुरंगदे तृतीय पुत्र फलह। पुत्र साह खेम तद्भार्या खेमलदे तयोः पुत्राः द्वे प्रथमपुत्र साह जेसा द्वितीय हर्ष तृतीय पुत्र साह धर्मा तद्भार्या धारादे तयोः पुत्र वीरु द्वितीय पुत्र राइमल तस्य भार्या रयणादे तृ० पुत्र दुर्गा तस्य भार्या दुर्गमदे चतुर्थ पुत्र साह टीला तस्य भार्या टीलमदे

तयो पुत्र साह अगलाम तस्य भार्या हमीरदे तयो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र साह फागू तृतीय पुत्र वल्याण तस्य भार्या कउणादे एतेषां मध्ये साह हरपा तस्य भार्या हरषमदे लिख.प्य शास्त्रवरांगचरित्र जेठजिणवरजात प्रद्योतनार्थं भार्या श्री शुभचन्द्राय दत्तं ।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ७३. साइज १३×५ इञ्च । लिपि संवत १८७३

संवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् ग्वालेरमुत्सललसश्कर महाराजि दौलतरावसिंध्या राज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये धर्मोल्लसन्मानसचतुसघ युते वाद्यगीत मंगल प्रवर्द्धित नित्योत्सवे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये अ'बावती सुपट्ट मालभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सहस्ररश्मिसन्निभ भट्टारक श्री श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिजिस्तविभोमाना पट्टलंकारलज्ञायमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये टोग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदासजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्रास्त्रयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचंदजी मध्यपुत्रः फतेचन्दजी तस्य पुत्रौ द्वौ ज्येष्ठ पुत्र रामलालजी लघु पुत्र केवलरामजी तस्य पितृव्य वशांद्री सहस्ररश्मि सदृश धर्मभारधुरधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पत्नि कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचंद्र एतेषां मध्ये ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं वरांगचरित्र ग्रंथ घटापित ।

४५. वर्द्धमानपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ८०. साइज ११×५। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ५२-५६ अक्षर। प्रति नवीन तथा सुन्दर है । लिपि संवत् १८०४.

मंगलाचरण—

जिनेशे विश्वनाथाय अनंतगुणसिद्धये ।
धर्मचक्रभृते मूर्द्धना श्री वीरस्वामिने नमः ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य—

जल्पितेन बहुना किमाश्रयेद्वीरनाथं इह यो मया स्तुतः ।
मे ददातु कृपया श्रमोद्भुतान्, मुक्तये निजगुणान् स्वशर्मणे ॥ १ ॥
त्रिसहस्राधिकापञ्चत्रिंशच्छ्लोकाः भवन्ति वै ।
यत्नेन गुणिताः सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मते. ॥ २ ॥

इति श्री भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिविरचिते श्री वर्द्धमानपुराणे श्रेणिकाभयकुमारभवावली भगवन्निर्वाणनामैकोनविंशतिमोऽधिकारः ।

संवत १८०४ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ बृहस्पतिवासरे श्री सवाईजयपुरनगरे महाराजाधिराज राजा श्री प्रतापसिंहराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये गंगवाल-गोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साहजी श्री मूलकचंदजी तद्भार्या शीलतोय-तरंगिणी विनयवागेश्वरी मल्लूकदे तयोः पुत्र धर्मधुरधर चतुर्विधदानेषु सदा वितरणसमर्थ साहजी श्री दौलतरामजी तद्भार्या दानशीलगुणभूषण भूपितगात्रा नाम्ना दोलतादे तयोः पुत्रास्त्रयः। प्रथम पुत्र साह सभाराम सभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकरमुकलितशत्रुमुख कुमुदाकर स्वजसनिशाकर अह्लदितकुवलयदानगुण-अल्पं कृतकल्पपादप श्री पंचपरमेष्ठीचिंतन पवित्रितचित्त सकलगुनीजनविश्रामस्थान साह श्री हाथीराम तद्भार्या शीलदान गुणदेव विनयभक्तपूजाभूपितवपुपा स्वपतिछंदानुगामिनी नाम छाजी द्वितीय पुत्र नाम साहिसाहिबराम तद्भार्या साहिबदे तयोः पुत्र नाम साह सहजराम तद्भार्या नाम सहुतादे एतेषां मध्ये स्वकुलाकाशप्रकाशनचंद्रसज्जनजनचकोरचक्षु श्री सर्वज्ञवदनोद्गतस्वद्धासुधापान स वर्द्धितानादि-कालीन मिथ्यात्वमहागरल साह श्री हाथीराम तेनेदं पट्चत्वारिंशतगुणविराजमान श्री वर्द्धमानपुराणं लिखाप्य परवादीभकुंभस्थलविदारनैकमृगेंद्र स्ववचनचातुरी निरस्कृतमिथ्यात्वादयः तस्य पंडितजी श्री चोखचंदजी तत् शिष्य पं० कृष्णदासाय दत्त कर्मक्षयनिमित्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६८. प्रति पूर्ण तथा सुंदर है।

सम्वत् १६६८ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां रविवासरे श्रीमद्वागड महादेशे श्री सागपत्तने श्री मूलसंघे आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ज्ञानकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री सकलचन्द्रदेवोपदेशात् हुंवड़ जातीय वजीयाण गोत्रे पासडोत साह जोगा भार्या जोमादे सुत साह नाका भार्या बाई श्री तद्दनायके तया इदं शास्त्र स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयाय सत्पात्राय पं० श्री सकलचंद्राय तदोचिता बाई हीरा लिखाप्य दत्तं।

४६. श्रावकाचार सार।

रचयिता श्री पद्मनन्दि मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साईज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५२ अक्षर। रचना सवत् १५८० लिपि संवत् १५६४.

मंगलाचरण—

स्वसंवेदनसुव्यक्त महिमानमनस्वरं।
परमात्मानमाद्यंतं विमुक्त चिन्मयं नमः ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति श्रावकाचारसारोद्धारे श्री पद्मनन्दिमुनि विरचिते द्वादशव्रतवर्णनं नाम तृतीयः परिच्छेदः।

प्रशस्ति—

यस्य तीर्थकरस्येव महिमा भुवनातिगः ।
रत्नकीर्तिर्यतिस्तुत्यः स न केषामशेषवित् ॥ १ ॥
अहंकारस्फारी भवदमितवेदान्तविबुधो,
उल्लसद्ध्यानश्रेणी क्षपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।
अधीती जैनेन्द्रे जगति रजनीनाथप्रतिनिधिः,
प्रभाचन्द्रः सान्द्रोदयशमिततापव्यतिकरः ॥ २ ॥
महाव्रतिपुरंदरः प्रशमदग्धरागांकुरः स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशास्त्रार्थवित् ।
यशोभरमनोहारी कृतसमस्तविश्वंभरः परोपकृतितत्परो जयति पद्मनंदीश्वरः ॥
श्रीमत्प्रभेन्दु प्रभुपादसेवा हेवाकिचेताऽगसरत्प्रभावः ।
सच्छ्रावकाचारमुदारमेनं गोपद्मनन्दी रचयांचकार ॥
शालं करूचु च्छुले विततांतरिक्षे, कुर्वन्नमाधवसरो जविकाशलक्ष्मीः ॥
कुंदेन्दु विशदकुमुदत्रजभूरिकान्ति, गोकर्णइत्युदियायपलसत्प्रभावः ॥ ४ ॥
शुचि सूपकारसारं पुण्यवता येन निर्ममे कर्म ।
भीम इव सोमदेवो गोकर्णात्सोभवत् पुत्रः ।
सती मतल्लिका तस्य यशःकुसुमवल्लिका पत्नी,
श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥
विशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलक्ष्मीजिनेंद्रयोः ।
नया इवा भवन् सप्तगभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥
वासाधरहरिराजौ प्रह्लादः शुद्धधीश्चमहाराजः ।
भवराजो रत्नस्य. स तनयाख्यश्चेत्यमीसप्त ॥ ७ ॥
वासाधरस्याद्भुतभाग्यराशेर्मिषात्तयोर्वेश्मनि कल्पवृक्षः ।
अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो वितीर्णचेतोऽभिमतार्थसार्थः ॥ ८ ॥
वासाधरेण सुधिया गांभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाब्धिः ।
कथमन्यथा स वडवाज्वलनसूत्रस्थितोज्वलति ॥ १० ॥
× × × × ×
द्वितीयोऽप्यद्वितीयो भूद्धैर्यौदार्यादिभिर्गुणैः ।
पुत्रः श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिधः सुधीः ॥ १० ॥
गुणैः मदास्मप्रतिपक्षभूतैः सगीकरोत्येष विवेकचक्षुः ।
इतीव शिष्यैः हरिराजसाधु र्दर्पेरवालोकि न शीलसिंधुः ॥ ११ ॥

संप्राप्य रत्नतृतीयैकपात्रं रत्नं सुतं मंडनमुर्वरायाः ।
श्री सोमदेवः स्वकुटुंबभारनिर्वाहचितार्ताहतो बभूव ॥ १२ ॥
दृष्टं शिष्टजनैः सपल्लकमलैः कुत्रापिलीनं जवा-
दर्थिप्रोद्धतनीलकंठनिवहे नृत्तं प्रमोदोद्गमान् ।
तृष्णाधूलिकणोत्करैर्विगलितं स्थाने मुनींद्रः स्थितं,
वृष्टि दानमयीं वितन्वति वरां रत्नाकरांभोधरे ॥ १३ ॥
सांतो नाम्न्यां पत्न्यां जिनराजध्यानकृत्सहरिराजः ।
पुत्रं मनः सुखाख्य घर्म्माद्दुत्पादयामस ॥ १४ ॥
× × × × ×
संघभारधरोधीरः साधुर्वासाधरः सुधीः ।
सिद्धये श्रावकाचारमचीकरदमुंमुदा ॥ १५ ॥
यावत्सागरमेखला वसुमती यावत्सुवर्णाचलः,
स्वर्णारी कुल संकु ······· गमितं ····· ।
विंतास्क ······ ····· दपितो लोकप्रकाशोद्यती,
तावन्नंदतु पुत्रपौत्रसहिता वासाधारः श्रावकः ॥

संवत् १५६४ वर्षे वैशाख सुदी ७ तिथौ सोमवासरे श्रीमेवातदेशे बहादुरपुर नगरे श्री हुमायूं पातिसाहि मुगलराज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे ··········· ।

४७ श्रीपालचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११३. साइज ६×३ इञ्च । रचना संवत् १५८५. लिपि संवत १७१४. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है।

मंगलाचरण—

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं सुराधीशार्चितक्रमं ।
श्रीपालचरितं वक्ष्य सिद्धचक्रार्चनोत्तमं ॥ १ ॥

अन्तिमपद्य तथा प्रशस्ति—

गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वतीये शुभे,
श्रीभट्टारकपद्मनन्दिमुनयो देवेन्द्रकीर्त्तिस्ततः ।
विद्यानन्दिगुरुस्ततो गुणनिधिः पट्टे तदीये सुधीः,
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरु सद्बोधसिंधुर्महान् ॥ १ ॥

तत् शिष्यो गुणरत्नराजितमतिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
भट्टारकयमंडितोऽभिनिलत्तरां भव्यौघघनिस्तारकः ।
तेषां पादपद्मो स सुधर्ममधुपः श्री नेमिदत्तायतिः,
नन्दे आदनविक्रमेतगुचित श्रीपादब्ज संक्रियात ॥ २ ॥
प्रोतोत्सव भट्टारकमणिः स ब्रह्मचारीगुरुः
श्री मल्लिभूषणगुरोः पादाब्जसंवारतः ।
जीयादत्र महोदर सुमती,ब्रह्म नर्मात्निर्मलः
सूरि श्री श्रुतसागरादियतिन सेवा परः सन्मतिः ॥ ३ ॥

ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे नरे
श्री सर्वार्थजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदंशुभं ॥ ४ ॥
सवत् नाढ सहस्त्रे च पञ्चाशीति समुत्तरे ।
आषाढशुक्ला पचम्यां संपूर्णं रविवासरे ॥ ५ ॥

इति श्री सिद्धचक्रपूजातिशय प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्म नेमिदत्तविरचिते श्रीपालमहामुनींद्र निर्वाणगमनोनाम नवमोऽधिकारः समाप्तः ।

श्रीमद्गोलान्वये यो गोत्रेगोयलमंडितः ।
स श्री रामदासन्यो तत्तनूजो गुणाग्रणी ॥ १ ॥
गुरुपदादितार्थेषु स्नानेषु यः सदानत. ।
सः श्रीमान् क्षेमदासोभूत क्षमादिगुणसागरः ॥ २ ॥
हरेरर्चा गुरोर्भक्तिः दानतत्परमानसः ।
नृणानां इत्यविद्यात्तो सौधीयया सुखावहः ॥ ३ ॥
महागुणगनीरम्या सुचरित्रापतिव्रता ।
क्षेमश्री नाम तस्यासीद्भार्या लावन्यसुन्दरी ॥ ४ ॥
तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमा ।
निजवृत्तेषु ये लीनाः भूपैः सन्मानिताः सदा ॥ ५ ॥
ज्येष्ठोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
निजाचारेषु यो लीनो सः श्रीकेशवनामभाक् ॥ ६ ॥
मृगांगी कोमल धीमानसे करुणान्विता ।

दानेन कल्पवल्ली यातद्भामाराजमत्यपि ॥ ७ ॥
तयोः पुत्रश्च्यसुंदरः गुणज्ञो गुणसागरः ।
तद्भार्या गुणग्रामा नाम्ना परिमलदेमती ॥ ८ ॥
शीलवर्त्तिः तपः स्नेहवांकुलेद्योतिदीपिका ।
विल्लुनामः द्वितीयः स्यात् ········मंक्तितत्परः ॥ ९ ॥
तत् भामात् रमार्याल्यः शीला द्विगुणमंडिताः ।
तयोः पुत्रौ बभूवासौ श्रीमच हूरनामभाक् ॥ १० ॥
कुंजांगणी महागीर्णः पयः पार्थश्च वर्द्धितं ।
तृतीयस्तु महाचन्द्रो गुणज्ञो गुणभूषणः ॥ ११ ॥
श्रीमनमोहनदासाख्यो विनयादिगुणालंकृतः ।
तन्नामा गुणधामश्च सुंदरी शुभलक्षणः ॥ १२ ॥
तयो सूनुः बभूवासौ देवीदास गुणाधिकः ।
तद् भार्या च भवेत्सोध्वी नाम्ना भोगमती मता ॥ १३ ॥
तयोः पुत्रौ समुत्पन्नौ बाललीलाविराजितौ ॥
प्रथमः सुत आनंदी द्वितीयः हेमराज भाक् ।
शुभपुण्यफलंपुत्राः पुण्यात्तं किं किं न जायते ॥
चक्रे महोत्सवं रम्यं जगज्जनमनः प्रियं ।
सत्यं सत्पुत्रसंप्राप्ता किल कुर्वन्ति साधवः ॥

एतेषां मध्ये शीलतोयतरंगिनी दानगुणचेलना कल्पवल्ली बनूरमती इदं पुस्तक श्रीपालनाम चरितं संपूर्ण ॥ संवत १७१४ वर्षे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे पार्वणी द्वितियादि वसे भृगुवासरे श्रीमत्काष्ठासंघे माथुर गच्छे आचार्य श्री श्री श्री १०८ केसवसेनजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेंद्रकीर्तिजी आचार्य श्री १०८ यशकीर्ति जी ब्रह्म पं श्री पद्मसागरजी ब्र. श्री दयासागरजी ब्र. कल्याणसागरमिदं पुस्तकं लिखितं ।

४८. श्रेणिकचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०८; साइज ६॥x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । लिपि संवत् १७६६.

मंगलाचरण—

श्री वर्द्धमानमानंदं नौमि नाना गुणाकरं ।
विशुद्धध्यानदीप्त चिहुतकर्मसमुच्चयं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

जयतु जित विपक्षो मूलसंघः सुपक्षो
हरतु तिमिर भारभारती गच्छ धारः
जयतु सुगतिमार्गा शासनं शुद्धवर्गं
जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दोमुनीन्द्रः ॥ १ ॥

पुराणशास्त्रार्थ विशेषवक्तं विकासयन् मुक्तिविलासवक्तं ।
विभातु वीरः सकलादकीर्तिः कृताय केनोतो सकलादकीर्तिः ॥ २ ॥
भुवन कीर्तियति जयताघनी, भुवनपूरित कीर्तिचयः सदा ।
भवनविव जिनागमसारणो, भवन आतुद्रवातभरः परः ॥ ३ ॥
तत्पट्टोदय पर्वते रविरभूद् भव्यांबुजं भासयन्,
सन्तेजास्तहर तमो विघटयज्ञानाकरै र्भासुरः ।
भव्यानंतगतत्र विग्रहमत श्री ज्ञानभूप, सदा,
चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वर्द्धमानोदयः ॥ ४ ॥
जयति विजयकीर्तिः पुण्यमूर्तिः सुकीर्ति,—
जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः ।
नयनलिनहिमांशु ज्ञानभूषस्यपट्टे,
विविध पर विवादिक्ष्माधरे वज्रपातः ॥ ५ ॥
तत्पट्ठिष्येण शुभेन्दुना शुभमतः श्री ज्ञान भावेन वै,
पूत पुण्यपुराण मानुषभवं संसारविध्वंसकं ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैनेमते केवल,
नाहंकारवशात्कविरवमतः श्री पद्मनाभेहितं ॥ ६ ॥
इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्रवद्धं श्रवणपवित्रं ।
भविष्णुसमारसुखं नृ देवं समुच्य सम्यक्त्वफलप्रदीपं ॥ ७ ॥
चन्द्रार्कहेमगिरिसागरभूविमानं,
गगानदीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यसेवा,
तिष्ठंतु कोविद मनोवुजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

संवत् १७३६ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा शनिवासरे लिपिकृत विंदरावति नगरे पं० विहादारीसेन ।

प्रति नं० ८, पत्र संख्या ६६, साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७३०.

संवत् १७३० माघ सुदी ४ बृहस्पति वासरे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा स्तच्छिष्य मुनि जयकीत्ति स्तच्छिष्य माघनंदेन वर्णिना लिखितं ।

४६. सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत (गद्य) पत्र संख्या ८०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५८२.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानमानम्य जिनदेवं जगत्प्रभुं ।
वक्ष्येऽहं कौमुदी नृणां सम्यक्त्वगुणहेतवे ॥ १ ॥

समाप्ति—

इति कौमुदी कथा समाप्ता ।

प्रशस्ति—

संवत् १५८२ वर्षे फाल्गुन सुदी १४ शुभदिने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकजिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारकप्रभाचंद्रदेवास्तदाम्नाये चपावतीनामनगरे महारावश्रीरामचन्द्रराज्ये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे संघभारधुरंधर सा० काधिल भार्य्या फावलदे । तस्य पुत्र जिनपूजापुरंदर सा० गूजर भार्य्या प्रथम लाछि द्वितीया सरो । प्रथमपुत्रनिजकुलगगनद्योतनदिवाकरान् व्रतनीभरत्नत्रयरत्नाकरान् कल्पावली प्रसरंत-मूलखंडणान् देवगुरुशास्त्रभगतउज्जयत गरितीर्थायोपर्ज्जितागण्यपुण्यान्, जिनचरणकमलप्रधूतप्रभरित-गंधोदकपवित्रतांगान् जिननाथकथितआगमध्यातमरसकरदचचरीकान् पंथिकसुजनजनकलापकल्पनापूरणकल्प-वृक्षान् सम्यक्त्वादिगुणरत्नमालाविभूषितचित्तकंठस्थलान् एतान् साह नेमा भार्य्या द्वौ प्रथमभार्य्या नारंगदे द्वितीय लाडी तस्य पुत्र चिरंजीवि सा० रत्नपाल संघभारधुरधर स.० गूजर तस्य द्वितीय पुत्र सा० लालू तस्य भार्य्या दमयंती तृतीय पुत्र सा० कमा तस्य भार्य्या करणादे तस्य पुत्र चारि प्रथम उदा सा० माघउ, सा० साधउ, चन्द्रसेन एतान् इदं शास्त्रं कौमुदी लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं ब्रह्मबूचाय दत्तं ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज १०×४ इञ्च । प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है ।

संवत् १५६० वर्षे माहसुदी १३ सोमे श्री पद्मुरदुर्गे हाडान्वये रावश्री अपयराजदेव कंवरनरबद राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमत् अचलगच्छे पंडित मिश्र, पं० लाभमेर गणीनां श्रीकौमुदी ग्रंथं । श्री वोसवंशे साह-श्रीवत विख्यातयशस्वी गोइद तत्पुत्रकुलमध्ये श्रेष्ठयशस्वी राज्यमान्य साहश्रीवंत साह सीहा । साह श्रीवंत-कील्हा तत्पुत्र चिरंजीवि साह पारस चिरंजीवि साह चपा सकुटम्बेन इदं पुस्तकं कौमुदीग्रंथ लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्तं दत्तं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३३. साइज १३×४॥ इञ्च। प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है। लिपि संवत् १६२५.

संवत् १६२५ वर्षे शाके १४९० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायेन मार्गशीर्षशुक्लपक्षे अष्टम्यां दिवसे श्री शुभमेरुदुर्गे श्री जयसिंहराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्री गुणलाभमहोपाध्यायैः स्ववाचनार्थं लिखापितासौ वाच्यमाना चिरं नन्दतात्।

५०. सम्यक्त्व कौमुदी।

रचयिता श्री गुणाकर सूरि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १५०४ लिपि संवत् १६११.

मंगलाचरण—

तस्मै नित्य चिदानंद स्वरूपायार्हते नमः।
यदागमरसास्वाद तत्त्वं विज्ञायते नरः॥ १॥
दुनादौ जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करान् नृणां।
स भूयाद्भविना भूत्यैनाभिजन्मा जिनेश्वरः॥ २॥

अन्तिम—

पूर्वपिभि र्या रचिता कथयसमेऽपि काव्ये गुम्फितेव।
श्लोके मया सा ग्रथिता प्रमोदाद्बोधाय बोधुमितेन सर्वे॥ १॥
इति चैत्रगच्छीयैः श्री गुणाकरसूरिभिः।
चक्रे श्लोके नवारम्भा कथा सम्यक्त्वकौमुदी॥ २॥
पुष्पदंतौ स्थिरौ यावद्यावच्च ध्रुव मंडल।
वाच्यमाना बुधैः स्तावज्जीयात् सम्यक्त्व कौमुदी॥ ३॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता।

संवत् १६११ वर्षे भादवा सुदी ४ दिने मेडता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तत् शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिखापितं सम्यक्त्व कौमुदी आत्मार्थे।

५१. सारस्वत चन्द्रिका सटीक।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६६. साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४२ अक्षर। लिपि संवत् १७४६.

मंगलाचरण—

नमोऽस्तु सर्वकल्याणपद्मकाननभास्वते।
जगत्त्रितमसाधाय पराय परमात्मने।

प्रशस्ति—

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकोटिकाख्ये गणे,
श्रीमच्चांद्रकुले वटोद्भववृहद्गच्छे गरीमान्विते।
श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतया प्राप्तावदाते भूना,
स्फूर्ज्जद्भूरि गुणान्विता गणधरश्रेणि सदा राजते ॥ १ ॥
वर्षे वेदमुनींद्रशींकर ११७४ मिते श्री देवसूरिप्रभुः,
जज्ञेऽभूत्तदनु प्रसिद्धमहिमा पद्मप्रभः सूरिराट्
तत्पट्टे प्रथितप्रसन्न शशभृत सूरिसनादिनःसूरींद्रा-
स्तदनंतरं गुणसमुद्राह्वात्रभूवु बुधाः ॥ २ ॥
तत्पट्टे जयशेखराख्यसुगुरुः श्री वज्रसेनस्ततः,
तत्पट्टे गुरुर्हेमपूर्वतिलकः शुद्धः क्रियाद्योतिकः।
तत्पट्टे प्रभूरत्नशेखरगुरुः सूरीश्वराणां वरः,
तत्पट्टांबुधिपूर्णचन्द्रसदृशः श्रीपूर्णचन्द्रप्रभुर्गणेशं ॥
तत्पट्टे जनि हेमहस सुगुरुः सर्व्वप्रजाप्रयशाः
आचार्या अपिरत्नसागरवरास्तत्पट्टपद्मार्यमा।
श्रीमान् हेमसमुद्रसूरिरभवच्छ्री हेमरत्नस्ततः
तत्पट्टे प्रभूसोमरत्नगुरवः सूरीश्वराः सद्गुणाः ॥ ४ ॥
तत्पट्टोदय शैलहेलिरमल श्री जैसवालान्वये-
लंकारः कलिकालदर्पदमनः श्री राजरत्नप्रभुः।
तत्पट्टे जितविश्ववादिनिवहागच्छाधिपः संप्रतिः,
सूरी श्री प्रभुचन्द्रकीर्ति गुरवो गांभीर्यधैर्याश्रयाः ॥ ५ ॥
तैरियं पद्मचन्द्राख्योपाध्याय याभ्यर्थनाकृता।
शुभा सुबोधिकानाम्नी श्रीसारस्वतदीपिका ॥ ६ ॥
श्रीचंद्रकीर्तिसूरींद्रपादांभोजमधुव्रतः।
हर्षकीर्तिसूरिरिमाम दशकेऽलिखत् ॥ ७ ॥
अज्ञानध्वांतविध्वंसविधानेदीपिकानिका।
दीपिकेयं विजयतां वाच्यमाना बुधैश्चिरं ॥ ८ ॥
स्वल्पस्य सिद्धस्य सुबोधकस्य सारस्वतव्याकरणस्य टीका।
सुबोधिकाख्यां रचयांचकार सूरीश्वर श्री प्रभु चन्द्रकीर्त्तिः ॥ ६ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपोगच्छाधिराज भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिसूरि विरचिता श्री सारस्वतव्याकरणस्य दीपिका संपूर्णाः ॥

५२. सिद्धान्तसार संग्रह।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १८०३. लिपि स्थान जयपुर। प्रति जीर्ण शीर्ण हो चुकी है।

प्रारंभ—

गुरुं च. स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मनयात्मकं।
त्रिगि. प्रासपदंधाम वंदे निध्वस्तकल्मषं ॥ १ ॥

अन्तिम—

श्रीवीरसेनस्य गुणादिसेनो जातः सुशिष्यो गुणिनां विशेष्यः।
सिद्धान्तवीयोऽस्ति चारुचित्तः सद्दृष्टिचित्तोऽत्र नरेंद्रसेनः ॥ १ ॥
गुणसेनोदयसेनाऽजयसेना संयगूवुरतिवर्याः।
तेषां श्री गुणसेनः सूरिर्जातः कलाभूरिः ॥ २ ॥
श्रातिष्ठःस्याम्निकटवर्तिनिकातयोगे,
नष्टे जिनेंद्र शिव पत्मनि यो बभूव।
आचार्य नाम विदितोऽत्र नरेंद्रसेन—
स्तेनेदमागमवचो विशदं निबद्धं ॥ ३ ॥

इति सिद्धांतसारसंग्रहे आचार्यश्रीनरेंद्रसेन विरचिते द्वादशमः परिच्छेदः समाप्तः।

५३. सिन्दूर प्रकरण।

रचयिता श्री सोमप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १२x५ इञ्च। पद्य संख्या ९६. लिपि संवत १८८६

प्रारंभ—

सिन्दूरप्रकरस्तपःकरिशिरः क्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिर्निचयः प्रबोध दिवस प्रारंभसूर्योदयः।
मुक्तिस्त्रीकुचकुंभकुंकुमरसः श्रेयस्तरोपल्लव:,
प्रोल्लास: क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातु वः ॥

अन्तिम—

सोमप्रभाचार्यमभा च यत्र पुंसां तमः पंकमपाकरोति।
तदप्यमुष्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति नाशं ॥ १ ॥

अभयपदर्जितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि,
　　द्युमणिविजयसिंहाचार्यपदारविंदे।
मधुकरसमतां य सतां यस्तेन सोमप्रभेण,
　　व्यरचि मुनिपरज्ञ सूक्तमुक्तावलीय ॥ २ ॥

इति सोमप्रभसूरि विरचितं सिंदूरप्रकराख्यं सुभाषित शास्त्रं शतकं।

संवत् १८८६ भादवा सुदी २ बृहस्पतिवासरे मालपुरानगरे भट्टारकजी श्री १०८ देवेंद्रकीर्त्तिजी तस्य शिष्य पं० मेहरचंद्र स्वहस्तेन लिखितं।

५४. सुदर्शनचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७५ साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर। प्रति नवीन है।

मंगलाचरण—

नत्वा पंचगुरून् भक्त्या पंचमी गुरुनायकान्।
सुदर्शनमुनेश्चारु चरित्रं रचयाम्यहं ॥ १ ॥
येषां स्मरमात्रेण सर्व्वे विघ्ना घना यथा।
वायुना प्रलय यान्ति तान् स्तुवे परमेष्ठिनः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री शारदासार जिनेंद्रवक्त्रात् समुद्भवासारजनैक चक्षुः।
कृत्वा क्षमामत्र कवित्वलेशो मातेव बालस्य सुखं करोतु ॥ १ ॥
श्री मूलसंघेवरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेतिरम्ये।
श्री कुन्दकुंदाख्य मुनेंद्रवंशे जातः प्रभाचन्द्रमहामुनींद्रः ॥ २ ॥
पट्टे तदीये मुनि पद्मनन्दी भट्टारको भव्य सरोजभानुः।
जातो जगत्त्रयहितो गुणरत्नसिंधुः, कुर्यात् सतां सारसुखं यतीशः ॥ ३ ॥
तत्पट्टपद्माकर भास्करोऽत्र देवेंद्रकीर्त्तिमुनिचक्रवर्त्ति।
तत्पादपंकेज सुभक्तियुक्तो विद्यादनंदी चरितं चकार ॥ ४ ॥
तत्पट्टे जनि मल्लिभूषणगुरू चारित्रचूडामणिः,
　　संसारांबुधि तारणैकचतुरश्चिंतामणिः प्राणिनां।
सूरी श्री श्रुतसागरो गुणनिधिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
　　सर्वे ते यतिसत्तमाः शुभतरा कुर्वंतु वो मंगलं ॥ ५ ॥

गुरुणामुपदेशेन सच्चरित्रमिदं शुभं ।
नेमिदत्तो व्रती भक्त्या भावयामास शर्मदं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनमस्कारमहात्म्यप्रदर्शके मुमुक्षु श्री नेमिदत्तविरचिते सुदर्शनमहामुनि मोक्षगमन संप्राप्ति व्यावर्णनो नाम द्वादशमोऽधिकारः ॥ इति सुदर्शन चरित्रं संपूर्णं ॥

५५. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक ।

मूलकर्त्ता स्वामी कार्त्तिकेय । टीकाकार आचार्य शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत् १६०१ लिपि संवत् १७२२ प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेऽजनि नंदिसंघः, वरबलात्कारगणः प्रसिद्धः ।
श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिवर्यः, विभातिभाभूषणभूषितांग. ॥ १ ॥
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनंदी, ततोऽभवच्छ्रीसकलादिकीर्त्तिः ।
तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः श्रीज्ञानभूषोवरवित्तिभूप. ॥ २ ॥
तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टधारी शुभचंद्रदेवः ।
तेनेयमाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तेः ॥ ३ ॥
सूरिश्रीशुभचन्द्रेण वादिपर्वतवज्रिणा ।
त्रिविद्येनाऽनुप्रेक्षाया वृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥
श्रीमत विक्रमभूपतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,
माघे मासिदशाग्रवह्निमहिते ख्याते दशम्यां तिथौ ।
श्रीमच्छ्रीमहीसार सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरोः,
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र देवविहिता टीका सदा नन्दतु ॥ ५ ॥
वर्णी श्रीक्षेमचन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।
शुभचंद्र-गुरो स्वामिन कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥
तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैविद्येन गणेशिना ।
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥
तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।
साध्वीकृतीसार्थेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥
लक्ष्मीचन्द्रगुरु स्वामीशिष्यस्तस्यसुधीयशा ।
वृत्तिर्विस्तारितातेन श्री शुभेंदुप्रसादतः ॥ ९ ॥

५६. सम्यक्त्व कौमुदी।

रचयिता श्री खेता। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज ६।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७६३.

प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमानमानम्य त्रैलोक्यनभो मणिं।
ब्रुवेऽहं कौमुदीं नृणां सम्यक्त्वस्थितिहेतवे ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

खे ताराधिपतिप्रकाशविमलस्वांतप्रकाशात्मनां,
ब्रह्मज्ञानविदां महोपशमिनां दिग्वाससां योगिनां।
चारित्रेण जिनोदिते नहि पुनर्विभ्राजितानां भुवि,
शिष्येणात्मविशुद्धये विरचिता पुण्या कथा कौमुदी।
गणभृन्मुखशीतांशु प्रभवातत्वकौमुदी।
भूयादुपासकानां हि कथा संबोधलब्धये ॥ २ ॥
वैदुष्यदृष्टये नैव कवित्वयशसे न च।
श्लोकै व्यंरचि किन्वेषा धर्म्मार्थं कौमुदी परं ॥ ३ ॥

इति श्री कौमुदी कथायां पंडिता खेता विरचितायां अष्टमी कथा समाप्ता। इति कौमुदी ग्रन्थ सपूर्ण।

संवत् १७६३ वर्षे कार्त्तिक मासे शुक्लपक्षे ८ शनौ दिने लिपिकृतं परमपूज्यजी श्री ५ उत्तम जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री राघव जी तच्छिष्यस्थविरजी श्री सोहाजी तत शिष्यस्थवरजी श्री चेतराम जी तत्पट्टधारी पूज्य श्री लच्छीरामजी तदंतेवासी शिष्य केसर ऋषिणा लिपी कृत फलकनगरे।

५७. हनुमच्चरित्र।

रचयिता श्री ब्रह्मजित। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या १२२. साइज ११।।×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-४० अक्षर। लिपि सवत् १६८०.

मगलाचरण—

सद्बोधसिंधुचन्द्राय सुव्रताय जिनेशिने।
सुव्रताय नमो नित्यं धर्म्मशर्म्मार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

जैनेंद्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेन्द्रकीर्त्तियतिनायकनैष्टिकात्मा।
तत्च्छिष्यसयमधरेण चरित्रमेतत्, सृष्टं समीरण सुतस्य महर्द्धिकस्य ॥ १ ॥
यः पठेच्चरितमेतदुत्तम पाठयत्यपि परान् शिष्यान्।
यः श्रणोति खलु भावयेच्चयः सोश्नुते सुखमनुत्तरं दिवि ॥

विशदशीलस्वधुं नीसिलातलैकराजहंसोत्सवायकीडनः प्रियः,
स्वमतसिंधुवर्द्धनप्रकृष्टयामिनी न पोनतेजसोद्भुत प्रभामितः ।
सुरेंद्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनचनंगमदनैकपंडितः कलाधर
स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥
गोलशृंगारवंशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चित्,
भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत ।
तेनोच्चैरेव ग्रंथ कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरेः,
श्री विद्यानंदिदेशात्सुकृतविधिवशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धचै ॥
इद श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।
रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं ॥
बम्योर्थी लभते भूपं धनुयुतो वृद्धिं च निःस्वाधनं,
पुत्रार्थी सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत् ।
मोक्षार्थी वरमोक्तम श्चलभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,
ह्येतत् शैलमुनींद्रराजचरितं सर्वार्थसिद्धिप्रदं ॥
पठकः पाठकश्चैव वक्ता श्रोता च भावकः ।
चिरं नधादयं प्रंथस्तेन साद्धं युगावधि ॥
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।
श्लोकानामिह मंतव्यं हनूमच्चरिते शुभे ॥

इति श्री हनूच्चरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः ॥
सवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी पचमी दीतवार पुस्तक लिखापितं जैसी श्रीपति ।

५८. हरिवंशपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२३. साइज १२॥×५। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४६–५० अक्षर । प्रति लिपि संवत १८०३. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमं ।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनं ॥ १ ॥
सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशरं ।
प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमगलं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री वर्द्धमानेन जिनेश्वरेण त्रैलोक्य वंद्येन यदुक्तमादौ।
ततः परं गौतमसंज्ञकेन गणेश्वरेण प्रथितं जनानां ॥ १ ॥
ततः क्रमाच्छ्री जिनसेनाम्नाचार्येण जैनागमकोविदेन।
सत्काव्यकेलिसदने पृथिव्यां नीतं प्रसिद्धं चरितं हरेश्च ॥ २ ॥
श्री कुन्दकुन्दान्वय भूषणोऽथ बभूव विद्वान् किल पद्मनन्दी।
मुनीश्वरो वादि गजेन्द्रसिंहः प्रतापवान् भूवलये प्रसिद्धः ॥ ३ ॥
तत्पट्टपंकेजविकासभास्वान् बभूव निर्ग्रंथवरः प्रतापी।
महाकवित्वादि कलाप्रवीणः तपोनिधिः श्री सकलादिकीर्त्तिः ॥ ४ ॥
पट्टे तदीये गुणवान् मनीषी क्षमानिधानो भुवनादिकीर्त्तिः।
जीयाच्चिरं भव्यसमूहवंद्यो नाना यतिव्रातनिषेवणीयः ॥ ५ ॥
जगति भुवनकीर्त्तिर्भूतले ख्यातकीर्त्तिः,
श्रुतजलनिधिवेत्तानंगमानप्रभेत्ता।
विमलगुणनिवासश्छिन्नसंसारपाशः,
स जयति जिनराजः साधुराजी समाजः ॥ ६ ॥
सद्ब्रह्मचारी गुरुपूर्वकोऽस्य भ्राता गुणज्ञोऽस्ति विशुद्धचित्तः।
जिनस्य दासो जिनदासनामा कामारिजेता विदितो धरित्र्यां ॥ ७ ॥
श्री नेमिनाथस्य चरित्रमेतद्,
अनेन नीत्वा रविषेणसूरेः।
समुद्धृतं स्वान्यसुखप्रबोध-
हेतोश्चिरं नंदतु भूमिपीठे ॥ ८ ॥
श्रीमज्जिनेश्वरपदांबुजचंचरीक-
स्तच्छात्रसद्गुरुषु भक्तिविधानदक्षः।
स्वार्थाभिधोऽसौ जिनदासनामा,
दयानिवासौ भुवि राजतेऽत्र ॥ ९ ॥
न ख्याति पूजाद्यभिमानलोभाद्ग्रंथः कृतोऽयं प्रतिबोधहेतौ।
निजान्ययोः किंतु हिताय चापि परोपकाराय जिनागमोक्तः ॥ १० ॥
जिनप्रसादादिदमेवयाचे,
दुःखक्षयं शाश्वतसौख्यहेतोः।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६७. साइज १२॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण स्वगुरुभगिनी बाइ गौतमश्रिया लेखयित्वा ब्र० नरसिंहस्य पठनार्थं इदं शास्त्रं दत्त।

संवत् १५५५ वर्षे मार्गसिर वदि १३ रवौ मुनि श्री संघनंदिना ग्रंथोऽयं ब्रह्म गुणसागराय दत्तः।

संवत् १६४५ वर्षे कार्त्तिकमासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे श्रीमालपुरे राजाधिराज श्री भगवंतदास जुगराज्य श्री मानसिंह राज्ये प्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा स्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये कासलीवालगोत्र सा० सोढा तद्भार्या कल्ही तत्पुत्रा चत्वार प्र० सा० छाजू द्वि० सा० करमसी तृतीय धर्मसी चतुर्थ सा० ठीला। प्रथम सा० छाजू भार्या नापु तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० जेणा भार्या जेणादे तत्पुत्र चत्वारः। प्रथम देवा द्वि० इसर तृतीय कुंता चतुर्थ भगवान। द्वितीय कर्मसी भार्या करमाइ तत्पुत्र चत्वार प्रथम सा० सांगा भार्या सिंगारदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम कला द्वि० माला। द्वि० सा० गंगा तद्भार्या गौरादे तृ० सा० नेमा तद्भार्या नायकदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० हरिषा तद्भार्या हरषमदे द्वि० सा० वेणा तद्भार्या बहुरंगदे। चतुथ सा० खेमा तद्भार्या खेमलदे तत्पुत्र चि० सांवलदास। तृतीय सा० धर्मसी तद्भार्या नाल्ही तत्पुत्र सा० वीरु तद्भार्या विरादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० राइमल द्वि० चि० डूंगर। चतुर्थ सा० टीला तद्भार्या दामु तत्पुत्र सा० हेमा तद्भार्या हेमलदे तत्पुत्र चि० जगमाल एतेषां मध्ये सा० हेमा आचार्य सिंहनन्दये घटापित।

५६. हरिवंशपुराण।

रचयिता आचार्य जिनसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२०. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। रचना काल-शक संवत् ७०५. लिपि संवत् १६४०.

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षणं द्रव्यसाधनं।
जैनं द्रव्याद्यपेक्षातः साधनाद्यथ शासनं॥ १॥
शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे।
नमः श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमानांजनरिने॥ २॥

अन्तिम पीठ तथा प्रशस्ति—

ततस्त्रिलोक. प्रतिवपप्रादरात् प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते ।
समुद्यतः पूर्वयत्तु जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥ १ ॥
त्रयः क्रमात्केवलिनो जिनात्परे द्विषष्टिवर्षान्तरभाविनोऽभवत् ।
ततः परे पंचसमस्तपूर्विणस्तपोधना वर्षशतान्तरे गताः ॥ २ ॥
त्र्यशीतिके वर्षशते तु रूप्युक् दशैव गीता दशपूर्विणः शते ।
द्वये च विंशेऽगभृतोऽपि पंच ते शते च साष्टादशके चतुर्मुनिः ॥ ३ ॥
गुरुः सुभद्रो जय भद्रनामा परो यशो बाहुरनन्तरस्ततः ।
महार्हलोहार्य गुरुश्च ये दधुः प्रसिद्धमाचारमहागमत्र ते ॥ ४ ॥
महानरो धूर्विनयधरश्रुतामृषिश्रुतिं गुप्तपदादि कांदधत् ।
मुनीश्वरोऽन्य. शिवगुप्त सञ्ज्ञको गुणैः स्वमर्हद्बलिरप्यधात्पदं ॥ ५ ॥
समद्रराजोऽपि च मित्रवीरविगुरू तथान्यौ बलदेव मित्रकौ ।
विवर्द्धमानाय त्रिरत्न संयुतः श्रियान्वितः सिंहबलश्च वीरवित् ॥ ६ ॥
सपद्मसेनो गुणपद्मखंडभृत् गुणाग्रणीव्याघ्रपदादिहस्तकः ।
स नागहस्तोजित दण्डनामभृत्सनन्दिषेणः प्रभुदीपसेनकः ॥ ७ ॥
तपोधन श्रीधरसेननामकः सुधर्मसेनोऽपि च सिंहसेनकः ।
सुनन्दिषेणेश्वरसेनकौ प्रभु सुनंदिषेणाभयसेन नामकौ ॥ ८ ॥
स सिद्धसेनोऽभयभीमसेनको गुरुपरौ तौ जिनशांतिषेणकौ ।
अखंड पट्खंड मखंडितस्थितिः समस्तसिद्धांतमधत्तयोऽर्थतः ॥ ९ ॥
दधार कर्म्मप्रकृतिश्रुतिं च यो जिताक्षवृत्तिर्जयसेनसद्गुरुः ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेषराद्धान्तसमुद्रपारगः ॥ १० ॥
तदीयशिष्यो मितसेनसद्गुरुः पवित्रपुन्नाटगणाग्रणी गुणी ।
जिनेंद्र सच्छासनवत्सलात्मना तपोभृता वर्ष शताधिक त्रिना ॥ ११ ॥
सुशास्त्रदानेन वदान्यता मुना वदान्यमुख्येन भुवि प्रकाशिता ।
तदग्रजो धर्म्मसहोदरः समी समग्रधीर्द्धर्म्म इवात्तविग्रहः ॥ १२ ॥
तपोमयी कांति मशेषदिक्षु यः क्षिपन्बभौ कीर्त्तितकीर्त्तिषेणमाः ।
तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरिष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥
स्वशक्तिभाजा जिनसेन सूरिणा धिय ल्पयोक्ता हरिवंशपद्धतिः ।
यदत्र किंचिद्रचितं प्रमादतः परस्परव्याहतिदोषदूषितं ॥ १४ ॥
तदप्रमादास्तु पुराणकोविदाः सृजंतु जंतुस्थितिशक्तिवेदिनः ।
प्रशस्तवंशो हरिवंशपर्व्वत. क्व मे मति क्वाल्पतराल्पशक्तिका ॥ १५ ॥

अनेन पुण्यप्रभवस्तु केवलं जिनेन्द्रवंशस्तवनेन वाञ्छितः।
न काव्यगर्वर्यसनानुबंधतो न कीर्त्तिसंतानमहामनीषया ॥ १६ ॥
न काव्यगर्वेण नचान्यचोदया जिनस्य भक्त्यैव कृतः कृतिर्मया।
जिनाश्चतुर्विंशतिरत्रकीर्त्तिताः सुकीर्त्तयो द्वादश चक्रवर्तिनः ॥ १७ ॥
नवत्रिधासीरिहरिप्रतिद्विषस्त्रिषष्टिरित्थं पुरुषाः पुराणगाः।
अथांतरेनेक शतानि पार्थिवा महीचराः व्योमचराश्च भूरिशः ॥ १८ ॥
क्षितौ चतुर्वर्गफलोपभोगिनः पुराणमुख्यैत्रयशश्विनस्तुताः।
अगण्यपुण्यं हरिवंशकीर्त्तना यदत्र गण्यं गुणं संचितं मया ॥ १६ ॥
फलादमुष्यास्तु मनुष्यलोकजा भवंतु भव्या जिनशासनस्थिताः।
जिनस्य नेमेश्चरितं चराचरं प्रसिद्धजीवादि पदार्थभासिनं ॥ २० ॥
प्रवाच्यतां वाचकमुख्यसज्जनैः सभागतैः श्रोत्रपुटैः प्रपीयतां।
जिनेंद्रनामग्रहणं भवत्यलं ग्रहादिपीडा पगमस्यकारणं ॥ २१ ॥
प्रवाच्यमानं दुरितस्य दारणं सतां समस्तं चरितं किमुच्यते।
कुर्वन्तु व्याख्यानमनन्यचेतसः परोपकाराय स्वमुक्तिहेतवे ॥ २२ ॥
सुमंगलं मंगलकारिणामिदं निमित्तमप्युत्तममर्थिनां सतां।
महोपसर्गे शरणं सुशांतिकृत् सुशाकुनं शाकुनमिदं जिनाश्रयं ॥ २३ ॥
प्रशामनाशासनदेवताश्चया जिनांश्चतुर्विंशतिमाश्रिताः सदा।
हिताः सतामप्रतिचक्रयान्विताः प्रयाचिताः सन्निहिता भवंतुताः। २४ ॥
गृहितचक्राप्रतिचक्रदेवता तथोर्ज्जयंतालयसिंहवाहिनी।
शिवाय यस्मिन्निह सन्निधीयते क्व तत्र विघ्नाः प्रभवन्ति शासने ॥ २५ ॥
ग्रहोरगाभूतपिशाचराक्षसा हितप्रवृत्तौ जिनविघ्नकारिणः।
जिनेशिनां शासनदेवतागणा प्रभाव शक्त्याथ समंश्रयति ते ॥ २६ ॥
प्रकाममाकांक्षित कामसिद्धयः प्रसिद्ध धर्मार्थ विमोक्षलब्धयः।
भवन्ति तेषां स्फुट मल्प यत्नतः पठंति भक्त्या हरिवंश मत्र ये ॥ २७ ॥
निरीय मात्सर्यमवार्य वीर्ययाधियासुधैर्योज्जितया जनादराः।
अनार्यवर्या सहिता सपर्यया पुराणमार्याः प्रथयंतु विष्टपे ॥ २८ ॥
किमर्थवा प्रार्थनयायतस्ततः स्वभावतो विश्वभरत्वभाविदः।
पयोधरोन्मुक्त मिवाम्भ भूधरा विधाय मूर्ध्नि प्रथयंति भूतले ॥ २६ ॥
सुपुष्टमुत्सृष्ट मुदात्तशब्दके नवं पुराणं च पुराण वारिसिन्।
महाभ्रकूल जनिता शरत्कुले श्रतुःसमुद्रान्त मिदं प्रतन्यते ॥ ३० ॥

संवत् १६१६ वर्षे आश्विनमासे शुक्लपक्षे प्रतिपत्तिथौ शुक्रवासरे शतभिखानक्षत्रे धृतिनामयोगे आंवेरिमहादुर्गे श्री नेमिनाथचैत्यालये श्रीराजाधिराजभारमलराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवा········ ······ मुनी ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे सा० लाहुड तद्भार्या हेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सोढा द्वि० सा० जसपाल। सा० सोढा भार्या खेमी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० पीथा द्वि० सा० परवत। सा० पीथा भार्या पिथसिर तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० योगा तद्भार्या युगसिरी द्वितीय सा० वोहिथ तद्भार्या बहुरंगदे तत्पुत्र चि० धीनड। सा० परवत भार्या पौसिरी। सा० जसपाल भार्ये द्वे प्रथम जसमादे द्वितीय लक्ष्मी तत्पुत्र सा० धरमा तद्भार्या धारादे एतेषां मध्ये सा० सोढा भार्या खेमी षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं इदं शास्त्रं मंडलाचार्यश्रीललितकीर्त्तये घटापितं।

संवत्सरे बाणवसुमुनींदुमिते १७८५ पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ सोमवासरे झिलायनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये गीतवादित्रप्रवर्द्धितनित्योत्सवे चतुःसघशोभिते कछाहावंशोद्भवप्रतापाग्निविध्यापित शत्रुमंडलशरणागतवज्रपंजरकल्पनिजदानसतर्पितावनीपकलोकराजर्षिमहाराजि श्री कुशलसिंहजी राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजगत्कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदया द्रदिनमाण निबंधसद्योगद्यपद्यविद्याधरीपरीरंभसंतर्जित मूर्खिप्रतापबलः निजक्षमासलिलनिर्द्धूतपापपंकः भट्टारकेंद्रभट्टारकश्रीदेवेंद्रकीर्त्ति स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे साहजी श्रीरेखराज तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र साह गिरधरदास तत्पुत्रौ द्वौ। साह बिहारीदास तत्पुत्र सा० सुखराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० बालचंद सा० जादुंदास। तत्पुत्र चि० चैनराम गिरधरदास द्वितीयपुत्र सा० कृष्णदास तत्पुत्र सा० धनराज तत्पुत्रौ द्वौ चि० भूधरदास चि० मनीरामरेपराज। द्वितीय पुत्र सा० नरहरदास तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र सा० पीताम्बरदास तत्पुत्र बिसनदास तत्पुत्र सा० सदाराम तत्पुत्रौ द्वौ सा० नाथूराम ····। नरहरदास द्वितीय पुत्र सा० कल्याणदास तत्पुत्र रूपचद तत्पुत्राः पंच। सा० किशोरदास सा० श्रीचंद सा० सोनपाल सा० कंवरपाल सा० कुसलराम। सा० नरहरदासस्य तृतीया पुत्र गंगारामः तत्पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्र सा० गोरधनदास तत्पुत्रास्त्रयः चि० मोजीराम चि० मयाराम। सा० गंगराम द्वितीय पुत्र साह भेलीदास तत्पुत्र चि० टेकचद तत्पुत्रौ द्वौ चि० नान्हूराम चि० जयचद सा० गंगाराम तृतीयपुत्र सा० चतुर्भुज। नरहरदास चतुर्थपुत्र श्रीमज्जिनराजचरणकमलसमवलोकनपरायणः साहजी श्री हरीकेशजी तद्भार्या हीरादे तत्पुत्राः चत्वारः प्रथम पुत्र साह दयाराम द्वितीयपुत्र सा० उदैराम तद्भार्या उत्तमेद द्वि० लाडी तृतीय गुजरि तत्पुत्रौ द्वौ साह रत्नचंद तद्भार्या रातसुखदे तत्पुत्र चि० सेवाराम। सा० उदैराम द्वितीय पुत्र अनूपचद तद्भार्या अनोपदे। साह हरीकेश तृतीय पुत्र साह रामजीदास तद्भार्या रायबदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चिरंजीव अजबराम तद्भार्या अजायबदे। साह रामजीदास द्वितीय पुत्र चि० मनसाराम तद्भार्या मनसुखदे। सा० हरीकेश चतुर्थपुत्र सा० दीपचद तद्भार्या दाडिमदे एतेषां मध्ये चि० श्री मनसारामेन स्वहस्तेन लिपिकृतः।

अपभ्रंश और प्राकृत भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां

१. अमरसेन चरित्र।

रचयिता श्री माणिक्कराज। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६. साइज १०॥ × ४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में लगभग ३२-३५ अक्षर। लिपि संवत् १५७७. प्रथम पृष्ठ नहीं है।

कृति के प्रारंभ में कवि ने आश्रयदाता का परिचय इस प्रकार दिया है:—

घत्ता

ए सयलवितित्थंकर कुवहोसहिधरं, ते सहपणाविवि पुहमिवर।
पुणु अरुहहवाणी तिजयपहाणी, विग्रमणिधारिविकुगइहर॥ १॥

पुणु गोयमु गणहरु णामवखाणि, जें अखिउ सम्मइ जिणहवाणि।
पुणु जेणपयत्थइं भासियइं, तत्रउवहितरणपोयणासुहाइं।
पुणु तासु अणुक्कमिमुणिपहाणु, णियचेयणत्थतंम्मउ सुजाणु।
हुयवहुमदत्थह सुहणिहाणु, जिहंदुद्धर णिज्जिउ पंचवाणु।
विणणाणकलाजयपारुपत्त, उद्धरियभव्वजेसमविसत्त।
सतइयलाह मुणिगच्छणाहु, गयरायदोससंजइयसाहु।
जें ईरियगंत्थहकहपवीण, णियज्झाणें परमप्पयहलीणु।
तवतेयणियत्तणु कियउरवीणु, सिरिखेमकित्ति पट्टिहिपवीणु।
सिरिहेमकित्ति जिहयउधासु, तहु पट्टविकुम रवि्सेणुणासु।
णिग्गंथु दयालउ जइ वरिवरिट्ठु, जि कहिउ जिणागमभेव सुट्ठु।
तहु पट्टिणिविट्ठउ वुहपहाणु, सिरिहेगचंदुमयतिमिरभाणु।
तं पट्टिधुरंधरु वयपवीणु, वरपोमणंदि जोतवहंखीणु।
तं पणविवि णियगुरसीलखाणि, णिग्गंथु दयालउ अमियवाणि।
पुणु पतणमिकह सवणाहिराम, आयणहु जासदत्थराम।

घत्ता

गोयमएवंजाकहिए, सेणियस्ससुह दायणि।
जावुहयणचिंतामणिय, धम्मारसहुतरंगिणि॥ २॥

महिवीढिपहाणउ गुणवरिट्ठु सुरहविमणविंभउजणइसुट्ठु ।
वरतिगिणसालमंडिउपवित्तु णं इह पंडिउ सुरपारपत्तु ।
कहियासुवियाणे चणिवइट्टु , अरियणजणाह हियसल्लुकट्ठु ।
जहिं सहहिंणिरतर जणणिकेय , पंडुरसुवरणधयसुहसमे ••• ।
मट्टालसतोरणजत्थहम्म, , मणसुहसंदायण णं सुकम्म ।
चउहट्टयचच्चरदामजत्थ , वणिवर ववहरहिविजहिं पयत्थ ।
मग्गणगणकोलाहलसमत्थ , जहिजणणिवसहि संपुरण छात्थ ।
जहिं श्रावणम्मिथियविविहभंड , कसवट्टिहिं कसियहिं भम्मखंड ।
जहिं विसहि महायणसुद्धवोह , णिच्चंचियपूयादाणसोह ।
जहिं वियरहिंवरचउ वरणलोय , पुरणणपयासियदिव्वभोय ।
ववहारवार सपुरणसव्व , जहिंसत्तवसणमयहणीभव्व ।
सोहग्गणिलयजिणधम्मसील , जहिं णाणिणिमाण महग्घलील ।
जहिं चोरचाडकुसुमालदुट्ठ दुज्जणसखुद्दखलपिंसुणधिट्ठ ।
णविहीमहिकहिमहिदुहियदीण , पेम्माणुरत्तसव्वजिपवीण ।
जहिं गेहहिहयपयदलिजमग्गु , त वोलरंगरगियधरग्गु ।

घत्ता

सुहलच्छिश्रजसायरु णं रयणायरु, वुहयणजुवणंइंदउरु ।
मत्थरत्थहिमोहिउ जणमणमोहिउ, णं वरणयरहएहुगुरु ।

तहि साहिमिच्छदरुम्मामिसालु , णियपइपालइ श्ररियणभयालु ।
त रज्जिवसइ वणिवरपहाणु , दुत्थियजणपोसणु गुणणिहाणु ।
जो श्रइरवालु कुलकमलभाणु , सिघलकुलणयहुविसेयभाणु ।
मिच्छत्तवसणवासणविरत्तु , जिणसासणिगंथहपायभत्तु ।
चउवरियणामचीमासतोसु , जो वंसहमडणु सुयणपोसु ।
त भामिणि गुणगणसीलखाणि , माल्हाहीणामे महुरवाणि ।
तं णदणुणिम्मलगुणणिवासु , चउधरिय करमचदु श्ररुहदासु ।
जिणधम्मोवरिजिंवद्धगाहु , णिवहियइइहु पुरयणाहणाहु ।
जिणचरणोवएणविजोपवित्तु , श्रायमरसरत्तउजासुचित्तु ।
उद्धरिउ चउव्विहसंघभारु , श्रायरिउविसावयचरिउचारु ।
चउदाणवंतु णं गयहत्थि , वियरइणिच्चजोधम्मपंथि ।

सम्मत्तरयणालंकियसरीरु कणयायलुव्वणिकपुणीरु ।
गुहिणग्गियणिकइव विणहिंतु जिणवरमहमज्झे लद्धसंतु ।
तं भ भणिा दिउचंदहीणियाच्छि जिणसुयगुरुभत्तिय सीलगुच्छि ।
तं जायउ णंदणु मीलखाणि चउमहणाणामे अमियवाणि ।
धणकणकंचणसंपुण्णगत्तु पंडियहं विपंडिउगुणमहंतु ।

घत्ता

दुहियणदुहणासं बुहकुलसामणु जिणसासणरहधुरधवलु ।
विज्जालच्छीधरु रवंमायरु अहणिसुकियविहउद्धरणु ॥४॥

तं पणइणि पणइणि चन्ददेह णामे खेमाही पियसणेह ।
सुरसिंधुरगइसइ यहविलीण परिवारहु पोसणसुद्धसील ।
णरयणाहणं उप्पत्तिखाणि जा वीणा इव कलयंठिवाणि ।
सोहग्गसच्चे नणियदिट्ठ सिरि णमहुसीयाजिहवरिट्ठ ।
तहिंउ वीरउ वणणारयणाचारि णं णंत चउक्कसुरुवधारि ।
तं मज्झिपढमुवियसियसुवत्तु लक्खण लक्खं किउव सणचत्तु ।
अतुरियसाहसु महंसकगेहु चाणाकरणु संपइहिंगेहु ।
धीरे गिरिंभारे सायरु णं धरणीधरु ण रविससिसुरु ।
णं सुरतरु पइपोसणगुणहरु णं जिणधम्मुपयडुथिउवसुवरु ।
जिं णियजसिपूरियदाणिमहिं जोणिवसुहपालउ सुयणसुहि ।
दिउराजुणामु चउधरिय सुहिं जिणधम्मधुरंधरुधम्मणिहिं ।
विणणाणकुमलु बीयउसुपुत्तु जो सुणइजिणेसरधम्मसुत्तु ।
सुपवीणरायवावारकज्जि गंभीरुजसायरु बहुगुणज्जि ।
झाकू चउधरिय विसुद्धभाइ जे णिवमणरंजइविविहभाइ ।
अण्णुवि तीयउ रिसिदेवभत्तू णिहभारधुरंधरु कमलवत्तू ।
चुगनाणामें चउधरियउत्तु जो करइ णिच्चउवयारुतत्तु ।
पुणु चउथउ णंदणु कुलपयासु अवगमिय सयलविज्जाविलासु ।
जिणसमयामयरसतित्तचित्तु छुट्टाणामें चउधरिय उत्तु ।

घत्ता

ए चउभाइय जिणमइराइय दिउराजुणामु णरुवउसुमई ।
णाणासुहविलसइ कइयणपोसइ णियकुलकमलज्जुपुहई ॥

अन्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

णंदउ जिणवरसासणसारउ जिणवाणीविक्कमग्गवियारउ ।
णंदउ बुहयणसमयपरिट्ठिय णंदउ सज्जणजेविसविट्ठिय ।
णंदउ णरवइपयरक्खतउ णायमग्गुमोयह दरिसंतउ ।
संतिवियंभउ पुट्ठिवियंभउ तुट्ठिवियभउ दुरिउणिसुंभउ ।
मेणिउणिग्गउ णरयणिवासह जिणधम्मुविपयडउ भववासह ।
जिं मच्छरु मोहविपरिहरियउ सुहयज्झाणेजं णिय मणुधरियउ
हेमचदु आयरिउ वरिट्ठउ तहु सीसु वितवतेयगरिट्ठउ ।
पोमणाधर णंदउ मुणिवरु देवणंदि तहु सीसु महीवरु ।
एयारह पडिमउ धारतउ णयरीसमयमोहहणतउ ।
सुहज्झाणें उवसमुभावतउ णंदउ वमलोलु समवंतउ ।
तहं पासजिणेंदहगेिहर वरणा वेपडियणिवसमिह ण्णायवरणा ।
गलवउ जसमलु गुणगणणिहाणु बंधियउ जहु वंधउ भव्वजाणु ।
सिरि सतिदास गंथत्यजाणु चव्वउ सिरि पारसुविणयभाणु ।
णंदउ पुणु दिवराउ जसाहिउ पुत्तकलत्तपउत्तविमाहिउ ।

घत्ता

रोहियासिपुरिवासि सयलुलोउमहणंदउ ।
पासजिणहुपयभत्त णाणाथोत्तहिंवंदिउ ।

पुणु णामावलि भणउ विसारी डायहु केरी वरणविसारी
अइरवालु सुपसिद्ध विभासिउ सिंघल गोत्तिउ सुपणासमासिउ ।
वुल्हाणिवि अहिहाणं भणिउ जं णियतेय कुलु सनाणिउ ।
करमचन्दु चउवरिय गुणावरु दिवचंदही भज्जहि विमणहरु ।
तन्न तणूरुह तिण्णिविजाया णं पंडवरणा तिणिणसमाया ।
पटमउ सत्थअत्थरमभायणु महणाचदुणाइयउधरणु ।
तहवणियापेमाहीमारी पुत्तच्चउ तिजुवमणाणारी ।
अग्गिमुत्तणेमियमिउ उज्जलजसचग्गिओ विजयएिउ ।
अणुवयपहरनियहिचित्तउ जं असुत्तुकउयाणउ उत्तउ ।
तिउराजुजिणमहहिमल्लउ णोणाहीनियरमणुविमल्लउ ।
तहुत्तंदिपिविमुत्ताहणाहनाट रूपणाउवेसुपरिउमलाउ ।
पहिलारउणियकुलहंचिंटीउ हरिवमुणामु गुणगणचिंटीउ ।

घत्ता

तहुभज्जा गुणहिमणुज्जा मेल्हाहीपभणिज्जए।
णवरिंगणंउवहिसुया तहुकसउप्पमदिज्जइ ॥ १२ ॥

पुव्वहि अभयदाणु असुदिणिणउं तह सुउ अभयचंदु सुणिसणिणउ।
अवरु विणुणरयणहि रयणायरु देवराजसुउ मयलनिवायरु।
रतणपालु णामेंपभणिज्जइ तहुभूराहीजणणवि णिज्जइ।
देवराय पुणु वीयउभायउ झांभूणामें जगविक्खायउ।
तहचोवाहीभज्जकहिज्जइ तोतयहुणाहंजोविज्जइ।
पढमउ णायराउ तहु कामिणी सूवटहीणामें जणणाविणी।
वीयउगेल्हुवि अवरुपयासिउ झांभूं तीयउ पुत्तु पयासिउ।
चाओणामें जणविक्खायउ महणासुउ चुणणाणिमभासउ।
डूंगरही तहु भामिणिमारी खेतसिंघ णंदणजुयहारी।
सिरियपालु पुणु रायमल्लु पुणु कुवरपालु भासिउ जडिल्लु।
महणाअवरू चउत्थउ णंदणु छुटमल्लुवि जोधम्मु मंदणु।
फेराही अणणामणाहाणउ दरगहमल्लुवि णंदणु रहमारउ।

घत्ता

करमचंद पुणु पत्तु चीयउजोजुविभणिउं।
साहाहियपियउत्त गुरपयरत्त विणाणिउं ॥ १३ ॥

तहो अतहोअंगो भवतिणिण माय विसुसुयपवणंजउअज्जुणोय।
पहिलारउ रावण तस्सणारि रामाहीजाया अहि वियारि।
तहुसरीरिसुवचारिउवरणा पुहईमल्लुविपढमुसुवणा।
तस्स भज्जवहुणेहालंकिय कुलिचंदही जायावहुवसंकिय।
कित्तिसिंघु तहु कुक्खिवउपणाउ णणिर णिरुणावंकचणावणाउ।
पुणु जसचंदुव चंदु भणिज्जइ लूणाही पियणअणुरंजइ।
तह वित्तणंधउलक्खणालंकिउ मदणसिंघ जो पावहसंकिउ।
अवरुवि वीणाकंठुवीणावरु पोमाही तहु कामिणीमणहरु।
णारसिंघुवि तउ सुउविणरिट्ठउ लच्छिपिल्लुणापियणइट्ठउ।
पुणु लाडणु रूवेंमयरद्धउ तहुवीचोकंताविजसद्धउ।
पुणु जोजावीयउ पुत्तुसारु णियरूवजित्तउ जेणमारु।

होदाहीकामिणी अगुरजइ   ज सुहिमरणो सग्गिगमिज्जइ।
जोजाअवरु वि णंदणुसारउ   लखमणुणामें पंडिय हारउ।
मल्हाहीकामिणी तहु णंदणु   हीरुणामें जणमणणंदणु।

घत्ता

अवरु वि णंदणुतीयउ, ताल्हूणामें भसिउ।
वाल्हाही मणहारु वेसुयतहंसमासिउ।

पढमउ पोमकंतिदामूसुहो   इच्छाही भामिणी दिण्णउसुहो।
महद्दासुवि तहु पुत्तपियारउ   पुणु दिवदासु वीरमणहारउ।
माधारणही भज्जमणोहरु   घणमलु णंदणु तहुपुणुसुहयरु।
जगमलही कामिणी तहुसारी   चायमल्लु सुयपोसणयारी।
इय दिवराजहं वंसुपयासिउ   काराविउ सत्तुजि रससारउ।
कोहमोहमय माणवियारउ   ज अक्खरुणा किंपि विणासिउ।
सुपसाए विविरुद्ध उभासिउ   त मरसइ महु खमउभडारी।
वीरजिणहो मुह णिग्गयमारी   ....   ।
हेम पोमआयरियवसम्मि   वभज्जुणगुणगणियाणिहीसे।
मइकमवट्टियवरणवंगणिण   कव्वसुवणहु लोहविदेप्पिणु।
मत्त अत्थ सोहगुणिनेविणु   अत्थविरुद्धकिट्टिकट्टेविणु।
सोहिउ एहु विमणुगुणएविणु   होउ चिराउ सुकव्वुरसायणु।
विक्कमरायहु ववगयकालइ   लेसुमुणीविसरअंकालइ।
धरणि अकमहुचइभविमासे   सणिवारे सुयपचामिदिवस।
कित्तियणारकत्तसुहजोय   हुउ पुण्णउसुविसुत्तहजोय।

घत्ता

हो वीरजिणमर जगपरमेसर एत्तिउ लहुमहुदिज्जउ।
जहिं कोकुगामाणु आवणाजाणु सासयपउमहुदिज्जइ।

इय महाकव्व सिरि अमरसेण चरिए चउवग्ग सुकहकहामयरसेणसभरिए सिरि पंडिय मणि माणिक्कविरइए साधु महणासु चउधरी देवराज णामंकिए सिरि अमरसेण...... .. .. गमणवरणं णाम सत्तमःसपरिच्छेय सम्मत्तं।

प्रतिलिपि कार की प्रशस्तिश्रथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिः विक्रमादित्यगताब्दः सवत् १५७७

कार्तिक वदि ४ रवि दिने कुरु जंगलदेशे श्री सुवर्णपथसुभस्थाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोइलगोत्रे सुवर्णपथिवास्तव्य जिनपूजापुरंदर कृतवान साधु छल्हू तस्य भार्या सीलतोयतरंगिणी साध्वी करमचदही तयो: चहुप्रकारदान दाइक साधु वाट्टू तेन इदं अमरसेन शास्त्रं लिखापितं ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं।

२. आचारांग सटीक

टीकाकार श्री शीलांकाचार्य। भाषा प्राकृत सस्कृत। पत्र संख्या १४३. साइज १२×४½ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति में ८०–८४ अक्षर। विषय आचार धर्म का वर्णन।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६०४ वर्षे मार्गशीर्षे वदि ३ मृगसोमामृतसिद्धियोगे श्री कुंभमेरुमहादुर्गाधिराजशिरोमणौ श्री वृहद्खरतरगच्छे श्री श्री श्री जिनकुशलसूरिपट्टानुक्रमे श्री जिनराजसूरिपट्टपूर्वाचलमार्त्तण्डमंडलावतारहार श्री पूज्यराज्य श्री जिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्री जिनचंद्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिपट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिपट्टे श्रीजिन-हर्षसूरिपट्टमौलिमंडनश्री जिनशासनशृंगार कालिकाल श्री गौतमावतार श्री जिनचंद्रसूरिपट्टावतंश सांमत-विजयमान श्री पूज्य श्री श्री जिन शीलसूरिविजयराज्ये आ० श्रीविवेकरत्नसूरिपुंगवानां शिष्य श्री जयकीर्ति-महोपाध्यानां शिष्य श्री हर्षकुञ्जरोपाध्याय पं० रत्नशेखरगणि वा ज्ञानकुञ्जरगणि पं० हरिकुञ्जरगणि पं० सत्य-सुंदरगण्यादय स्तेषां शिष्याः पं० परमपूज्य श्री नयसमुद्रगणीनां शिष्येण वा गुणलाभगणिना निजपुस्तके स्वशिष्यचरणोदय मुनिसाहाय्याल्लिखितेयं वृत्ति।

३. आत्मसंबोध काव्य।

रचियता कवि रइधू। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या ३२. साइज ६½×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २८–३६ अक्षर। विषय—अध्यात्म।

मंगलाचरण—

जयमंगलगारउ वीरुभडारउ भुवणसरणु केवलणयणु।
लोगोत्तमु गोत्तमु संजयसोत्तमु आराहमि तहं जिणवयणु॥

अन्तिम पाठ

सम्मत्तु वलेणाणु गुणहे विचरेविचरणु।
साहिज्जइ मोक्खु भविहि भव्वहु दुहहरणु॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १५३४ वर्षे श्रावण सुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारक श्री सिंहकीर्ति

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्त्ति देवा।तस्य शिष्यमंडलाचार्य श्री सिंहनन्दि इदं आत्मसंबोधग्रन्थं लिख्यते कर्मक्षयनिमित्तं। प्रति नं० २। पत्र संख्या ४०. साइज ६½×४½ इञ्च। लिपि संवत् १६०७।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६०७ वर्षे अषाढ बुदि ८ शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहराज्ये, रावणपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवाइसपूरि श्रावक, गोधा गोत्रे संगही भीम अर्जुन। सज्जनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु, पूरू, राउ। भतिजा बहुड जिणदास श्रावका. ··· ·· ····· वाइसपूर निमित्यर्थ घटापित:।

४. आदि पुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २१८। साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५६ अक्षर। लिपि संवत् १६६२। विषय—पुराण।

मंगलाचरण—

सिद्धि वहूमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु।
पणवेवि विग्घविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु।

अन्तिम पाठ—

गइभरहु वि मोक्खवि सुद्धमई विविहकम्मबंधेहि चुओ।
फणिखेयरकिन्नरपवरनर पुप्फदंतं गणसंथओ॥

इय महापुराणेति सट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंत विरइए महाभव्वभरहाणुमंणिए महाकव्वे मगणाहरिसहनाहभरह णिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमोपरिच्छेउ सम्मत्तो।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये·· ·· ···· ···· ····· ····· ···· सा नरसिंह तद्भार्या धाउ द्वितीया भाउ। नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्रभक्त सा० नरपति भार्या ठकुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द। गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोल्हू भार्या चदणी। तृतीय पुत्र सा० डिडचन्द। चतुर्थ पुत्र सा० दुल्हू। सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० ताल्हू भार्या जिणो। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण तद्भार्या वीवो तत्पुत्र सा० विमल्हू। तील्हा द्वितीय पुत्र स० भोला तद्भार्या दीवो तत्पुत्र सा० दोचा। सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भार्या दलो। सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा० निहुण तद्भार्या जीवो तत्पुत्र सा० उदा सा० नरसिंह पंचमपुत्र तेजू भार्या सोभी। सा० नरसिंह षष्ठम पुत्र सा० वस्तु भार्या रूपुरी। सा० नीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० छाजू सा० पन्हो। सा० नीधर तृतीय पुत्र सा० लोल्ह तद्भार्या जल्पही तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० डूंडा द्वितीय गूजर

भार्या दोदाही। एतेषां मध्ये साह गुणिया पंचमोऽद्धरणधीर दीवानदीपक परोपकारकः साह गुणिया तत्पुत्र नरपति केन इदमादिपुराणग्रंथं आत्मकर्मक्षयनिमित्तं लिखापितं।

उक्त प्रशस्ति को काटकर निम्न प्रशस्ति फिर से जोडी गयी है।

प्रशस्ति—

श्रीमंतं जिनं नत्वा केवलज्ञानलोचनं।
लिखामि प्रशस्तिकेयं वशसिद्धिप्रदायक॥ १॥
त्रिनवत्यधिके वर्षे मासे श्रावणपंजिके।
सवतेषोडशाख्यांते पचम्या भौमवासरे॥ २॥
संवत् १६६३ वर्षे श्रावण सुद ५ भौमवासरे नगरे षोग्रदुर्गाख्ये
साहिजिहा दिलीपतेः राज्यं सवकोग्र सिहे धर्मपूर्वं कुर्वति॥ ३॥
कुन्दकुन्दान्वये श्रीमान् वलात्कारगणे शुभे।
श्रीमूलसंघे भूद्धीमान् मुनिराजप्रभेदुकः॥ ४॥
तत्पट्टे मुनियोः धोरः चंद्रकीर्त्याभिधोयतिः।
तत्पट्टे शक्रकीर्त्याख्यो भूपसेवितपंकजः॥ ५॥
तत्पट्टे राजते श्राशो नरेशो मुनियोः वशी।
रूपानिर्जितदेवेशो भट्टारक गणाधिपः॥ ६॥
तदाम्नाये च विख्याते श्री खंडेलवालान्वये।
लुहाड्यागोत्रे बुद्धिमान् संघेशो विष्णुनामकः॥ ७॥
तद्वंशो रत्नसो नामा प्रियत्रिवलवान्वभो।
तत्पुत्राः पट् च विज्ञेया. हरूराद्याः संघधारकाः॥ ८॥
हरू च गढमल्लश्च पद्मसी च जट्टुस्तथा।
पचमः साहिमल्लाख्यः वल्लू नामा च षष्टमः॥ ६॥
हरूः प्रतापदे भार्या द्वितीया च सुजाणदे।
तेषां पुत्रा च विख्याता पदार्था त्रा नत्राश्रिता॥ १०॥
पेमराजो गूजरश्च हेमराजेन्द्रराजको।
दयाजयापैकल्याणमनो राजांतरा भुव॥ ११॥
पेमराजः धारमदेपु धारदे प्रभुरः।
रेजे सुमतिदासस्य सुमतादे प्रभोः पिता॥ १२॥
गौतदे गूजरो जज्ञे चंद्रभाणतयोः सुतः।
तृतीयो हेमराजाख्यो लाडी हमीरदेषत्र॥ १३॥

तत्पुत्रौ सुविजज्ञाते नाथू काल्हू च धीधनौ।
लाडी धवेंद्र राउयाख्यो धणराजपिताग्रमौ ॥ १४ ॥
पचमोऽभयराजाह्वो भाया दुरगादे पतिः ।
चूहड कुमलाभिख्यौ तत्पुत्रौ च बभूवतुः ॥ १५ ॥
अज्ञो गाजो राउसिंहपिताऽजाडवदेप्रभु ।
धीनह पिता अखेराजः प्रियाऽहींकारदेधवः ॥ १६ ॥
छीतर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः ।
कल्याणाहवोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥
नाथ प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मन सौख्यदे।
जिनवेश्म कृत येन सूमदुर्गे मनोरम ॥ १८ ॥
द्वितीयो गढमल्लाख्य स्त्रिभार्यस्त्रिपुत्रकः ।
दयालरूपभाह्व सुंदरश्च विराजते ॥ १९ ॥
तृतीय पद्मसी नामा ज्यागदे पारदे पतिः ।
टोडरस्यापतरिजे जगरूपपितामहः ॥ २० ॥
तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भर्तृकः पर. ।
पचम माहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधीः ॥ २१ ॥
वल्हू विराजते षष्ठः भर्त्ता वहुरगदे स्त्रियः।
मत्रीशः पेमराजस्यः उग्रसिंहमहीपतेः ॥ २२ ॥
सघेश पेमराजस्य चोग्रसिंह महीपतेः ।
मत्रीशस्य वभौ काता सुघारदे च नामतः ॥ २३ ॥
सीतेव रामराजस्य पाडो. कुंतीव सुंदरी ।
दानत कल्याणवल्लीव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥
तेनेदं शास्त्रं लिखाप्य नरेशाय मुनये च दत्त ।
कर्म्मक्षयार्थं वै चिर नन्दतुः भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० ७. पत्र सख्या २७१. साइज ११×५ इञ्च। प्रति मे तीन प्रतियों के पत्र मिलाये गये हैं। लिपि सवत १७६४।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत १७६४ वर्षे श्रावण सुदी ३ मंगलवारे राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे . . . ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २५७. साइज १०x४½ इञ्च। प्रति प्राचीन है । पृष्ठों के बीच २ में खाली जगह छूटी हुई है।

संवत् १४६१ वर्षे भाद्रवा सुदी ६ बुधवासरे अद्येह श्री महयोगिनीपुरे समसूराजावली विराजमानं सुरत्राण श्री महम्मूद साह राज्यप्रवर्त्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये बलात्कारगणे श्री सरस्वतीगच्छे मूलसंघे भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री रायराजगुरु मंडलाचार्य वादीन्द्र त्रैविद्यापरमपूजाचनीय भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे तपोधन श्री अभयकीर्तिदेवाः। अर्जिका बाई खेमसिरी तस्याः अर्जिका अध्यात्मशास्त्ररसिरसिका भेदाभेदरत्नत्रयआराधकचारित्रपवित्रा भव्यजनप्रबोधका दीनदुःखसंतापनिवर्त्तिका चतुरासीजीवदयापर आत्मब्रह्मपरिपूर्णा अर्जिका धर्म्मसिरि · · खंडेलवालान्वये परमगुणसंपूर्णा जीवदयातत्पर कुलमंडणोपकारक धर्म्मकार्यविषयतत्परा सा० जोल्हा तस्य भ्राता भार्या सहोदरान्। सा० सूढा तस्य भ्राता गुणोपकारक सा माल्हा सा० थिरदेवा। सा जोल्हा तस्य भार्या अनेकदानविषयान्तत्परा गुणसंपूर्णा जैनधर्म्मविषयतत्परान गुणप्रियंवदा हरो तस्य प्रथम पुत्र जिनपूजापुरन्दर सा० मतना भ्राता परोपकारको सा० वाल्हिराज तस्य भ्राता जीवदयापरो सा पदम भ्राता अनेकगुणसंपूर्णा विद्याविषय तत्परान् सा नल्हा एतैः जैनधर्म्मो · · · · ०।

प्रति नं० ४। पत्र संख्या २१८. साइज ११x४½ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। प्रति प्राचीन है प्रतिलिपि संवत् नहीं दे रखा है।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीमदभिनवप्रभाचन्द्रदेवः तैर्निजनिजमताखर्वगवर्पवैतारुढसर्वचार्वाकादिपरवादि मदांधसिंधुरसिंहायमानै विहिताचार्यपदस्थापनाय सकल भव्यचेतश्चमत्कारि सर्वजीवोपकारिचारुचरित्रचारि यथोक्तनग्नमुद्राधारी समस्तविद्वज्जनमनोहारि श्रीमन्निर्ग्रथाचार्यवर्यं निःशेषमिथ्यात्वतमस्कांड खंडनोच्चंडचंडिमप्रकांडमार्त्तंडमंडलायमान खंडेलवालविशदवंशे श्रीमन्नायकगोत्रे सं० भोजा भार्या भीवणि तत्पुत्रा स० लोहट द्वितीय पुत्र स० गोरा। लोहट भार्या धर्म्मिणी। तत्पुत्रा खेमा, द्वितीय पुत्र दूदा तृतीयं पुत्र सेवा। गोरा भार्या केलू एतेषां मध्ये संघपति लोहटाख्येन निजज्ञानावरणीय कर्म्मक्षयार्थं इदं पुष्पदंतकविकृत आदिपुराण शास्त्रं दत्तम्।

संवत् १६६४ वर्षे कार्तिक सुदी ६ शुक्रवारे पूर्वाषाढनक्षत्रे तक्षकपुरके श्री आदिनाथ चैत्यालये महाराजा श्री जगन्नाथजी राज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तितदाम्नाये खंडेलवालान्वये काला गोत्रे साह नानू तद्भार्या नाइकदे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम साह चेला तद्भार्या लाडमदे तत्पुत्र चिरंजीव कल्याण द्वितीयं चिरजीव मनरुप तृतीय साह मोहन तद्भार्या महिमादे एतेषां मध्ये साह श्री नानू तद्भार्या नायकदे इदं शास्त्रं अष्टाहिका व्रतोद्यापनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तयेदत्तं ।

भावमित्तमित्ताइयवीरें । जमदुइगा' वि सुट्ठ गभीरें ॥
धम्मदाग वीरहिं पवत्ते । जुज्झवीरणरणाहें सत्तें ।
भीमधरगणेगा तिविट्ठ ॥ अरुहवयगु आयरिगाउं इट्ठ ।
पुगु सयभु पुरिसोत्तिम गामें । पुरिसपुंडरीयं जयकामें ।
पुरिसदत्तणामेगा कुणालें । गोविंदेण गाद गोवालें ।
उग्गसेगा महसेगा हियत्थें । गिच्चलमायामेहिं पुगु पत्थें ।
एवं रायपरिवाडिए गासुगिाउं । धम्मु महामुगिगाहहिंपिसुगिाउ ।
सेगियराउ धम्मसा आरहं । पच्छिल्लउ वज्जियभवभारहं ॥
ताह वि पच्छए बहुरसगाडियए । भरहें कारांविपु पद्धडियए ।
पढेवि सुणेवि आयगिणवि णिम्मले । पयडिउ सम्मइए इय महियले ॥
कम्मक्खयकारगु गणिदिट्ठउ । एवं महापुराणु मइ सिट्ठउ ।
एत्थु जिणिंदागमि ऊणाहिउ । बुद्धिविहूणें जं मइ साहिउ ॥
त महु खमउ तिलोयसारी । अरुहंगय सुअ देवि भडारी ।
चउवीस वि महु कलुसुखयंकर । देंतु समाहि बोहि तित्थंकर ॥

घत्ता

दुहु छिंदउ गंदउ सुअगायले गिरुवमु करणारसायगु । आयरगाउ मगाउ ताम जगु, जाम चंदु तारायगु ॥

विरसउ मेहजालु वसुहारहिं । महि पिच्छउ वहुवगणपयारहिं ।
गंदगु सासगु वीरजिगोसहो । सेगिउ गिग्गउ गायगिवासहो ॥
लग्गउ गहवगारंभहो सुरवइ । गादउ पयसुहु गादउ गारवइ ।
गादउ देसु सुहिक्खु विर्यभउ । जगुमिच्छत्तु दुचित्त गिसुभउ ।
पडिवणगायपरिपालगसूरहो । होउ संति भरहहो गिरिधीरहो ।
होउ संति गुगाहिंमहल्लहो । तासु जि पुत्तहो सिरिदेवल्लहो ।
एउ महापुराणु रयगुज्जले । जं पापडियउ सधरधरायले ॥
चउ वियदागुज्जयकयचित्त हो । भरह परमसब्भवसुमित्तहो ।
भोगल्लहो जयजसवित्थरहो । होउ संति गिरु गिरुवमचरियहो ।
होउ संति गागणंवहो गुणवंतहो । कुल बलवच्छल सामत्थमहत हो ।
गिच्चमेव पालिय जिणधम्महं । होउ संति सोहगा गुण धम्महं ।
होउ संति संतहो दंगइयहो । होउ संतिसुअगहो संतइयहो ।

जिणवयणामयविचप्पियभव्वहं । होउ संति णीसेसहं भव्वहं ॥

घत्ता

इय दिव्वहो कव्वहो तणउ फलु, लहु जिणणाहु पयच्छउ ।
सिरि भरहहो अरुहहो जहिं गमणु, पुप्फयंतु तहिं गच्छउ ॥

सिद्धिविलासिणिमणहरदूवें । मुद्धाएवीतणुसंभूवें ॥
णिद्धणसधणलोयसमचित्तें । सव्वजीवणिक्कारणमित्तें ॥
सद्दसलिल परिवड्ढियसोत्तें । केसवपुत्तें कासवगोत्तें ॥
विमलसरासइजणियविलासें । सुण्णभवणदेवउलणिवासें ॥
कलिमलपबलपडलपरिचत्तें । णिग्घरेण णिप्पुत्तकलत्तें ॥
णइवावीतलायसरण्हाणें । जरचीवरवक्कलपरिहाणें ॥
धीरें धूलीधूसरियंगें । दूरयरुज्झियदुज्जणसंगें ॥
महिसयणयलें करपंगुरणें । मग्गिय पंडियप डिय मरणें ॥
मण्णखेडपुरवरें णिवसंतें । मणे अरहंतधम्मु झायंतें ॥
भरहमणिज्जें णयणिलएं । कव्वपबंधजणियजणपुलएं ।
कोहणसंवच्छरे आसाढए । दहमइ दियहे चंद रुइरूढइ ।

घत्ता

सिरि णिरुवहो भरहहो बहु गुणहो कइकुलतिलएं भासिउं ।
सुपहाणु पुराणु तिसट्ठिहिं मि पुरिसहं चरिउ समासिउं ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरणाह णिव्वाणगमणं भाविनिर्गच्छिपुरिस वण्णणं णाम दुउत्तरसय संधी समत्तो ।

संवत्सरेऽस्मिन श्री विक्रमादित्यगताब्दाः संवत १३९१ वर्षे ज्येष्ठ वुदि ९ गुरुवासरे अद्येह श्री योगिनीपुरे समस्तराजावलि शिरोमुकुटमाणिक्यखचित नखरश्मौ सुरत्राण श्री महम्मदसाहि नाम्नि महीं विभ्रति सति अस्मिन राज्ये योगिनीपुरस्थिता अग्रोतकान्वय नभः शशांक सा० महिपाल पुत्रः जिनचरणकमलचंचरीकः सा खेत फेरा माढा महाराजा तृथा एतेः सा० खेत पुत्र गल्हा आजा एतौ सा० फेरा पुत्र बीधा हेमराज एतेः धर्म कर्मणि सदोद्यतैः ज्ञानावरणीयकर्मक्षयाय भव्यजनानां पठनाय उत्तरपुराण पुस्तकं लिखापितं । लिखितं गौडान्वय कायस्थ पंडित गंधर्व पुत्र बाहड राजदेवेन ।

६. उपदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगणि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १८ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४५-५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । जीर्ण अवस्था में है ।

मंगलाचरण—

नमिऊण जिणवरिंदं इंदनरिंदचिणतल्लोय गुरु ।
उवएसमालमिणमो वुच्छामि गुरुवएसेण ॥ १ ॥
जगचूडामणिभूओ उसभोवीरातिलोय सिरि तिलउ ।
एगोलागाइच्चोए गोचक्कू तिहुयणस्स ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

इय धम्मदासगणिणा जिणवयणुवएकज्जमालाए ।
मालुव्वविविहकुसुमा कहियाउ सुसीसवग्गस्स ॥ १ ॥
सुतिकरी बुद्धिकरी कल्लाणकरी सुमंगलकरीय ।
होउ कहगस्सपरिसाए लहय णिव्वाणफलदाई- ॥ २ ॥
इत्थ समप्पइ णमो माला उपएस पगरणपगयं ।
गाहाणं सव्वगां पंचसयाचेवचालीसा ॥ ३ ॥
जावइ लवणसमुद्दो जावइ नरकत्तमंडिउ मेरु ।
तावइ रईयामाला जयंयिमियरथावराहो. ॥ ४ ॥
अक्खरमात्राहीणं जंभियपढियंअयाणमाणेण ।
तं खमहु मद्यमत्र जिणवयणविणगोणंवणी ॥ ५ ॥

इति उपदेशमाला प्रकरणं समाप्तं ।

७. उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य श्री वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५-४० अक्षर ।

मंगलाचरण—

सुरवइतिरीडमणिकिरणवारिधाराहिसित्तपयकमलं ।
वरसयलविमलकेवल पयासियासे सतच्चत्थं ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

छत्तसयापयणासुत्ताराणि एयस्स गथं परिमाणं ।
वसुणादि णाणिवद्धं वत्थरियव्वं वियदेहिं ॥ १ ॥

संवत् १६२३ वर्षे पोष बुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचंपावतीमध्ये महाराजाधिराज श्री भारमलकछवाहा राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य धर्मचन्द्रः तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललित कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह चापा तद् भार्या सोना तत् पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सवभारधुरंधर जिनपूजापुरंदर साह जाटा द्वितीय साह दासा। सा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू सा० खेता भार्या खेतलदे। तत्पुत्र २ चि० देवा गोगाजसाह। चैंथ भार्या चांदणदे तत्पुत्र धर्मदास। साह दासा भार्या दौडदे तत्पुत्र चि० पदारथ भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथाप्रिया द्वुतिय पुत्र वरहथ भार्या सरदे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापित शील शालिनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी। अर्जिका श्री मुक्ति दत्तं।

प्रति नं० २। पत्र संख्या २६। साइज १०३/४×४३/४ इञ्च।

संवत् १५१२ वर्षे भाद्रपदमासे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीतयोगे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा। तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीजा तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइंद द्वितीय सा० दाना तृतीय सा० गोकल। सा० गोइंद भार्या सोडी तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम सा० पासा द्वि० सा० आसा तृ० सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण। सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रास्त्रयः। प्रथम सा० कवरा भार्या रुक्मणी द्वि० विगोह तृ० विरंजी हरा। सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या सियादे द्वि० वाह्या तृतीय सा० आल्हा भार्या सुहागदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृंगारदे. द्वि० चि० हेमा। चतुर्थ सा० पचाइण भार्या पोसीर तत्पुत्रौ द्वौ। प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड। द्वि० सा० भार्या चांदी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० बोहिथ. द्वि० सा० वाजा सा० बोहिथ भार्या बालादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह सुरताण द्वि० साह साधु। सुरताण भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरताणदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल द्वि० सा० साधु भार्या साहिबदे। द्वि० सा० वाजा भार्या बहुरंगदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० सारंग द्वि० माधो। तृतीय सा० गोकल भार्ये द्वे प्रथम हरी द्वि० नोजादे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुंभा द्वि० सहमा। प्रथम सा० कुंभा भार्या कुंभलदे तत्पुत्रौ द्वौ० प्रथम चित्राण द्वि० चि० पदमा। द्वि० सा० सहमल भार्या सिंगारदे एतेषां मध्ये साह बोहिथ भार्या वालहदे इदं शास्त्रं कल्याणकव्रतउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय दत्तं।

८. करकण्डुचरित्र।

रचयिता श्री मुनि कनकामर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६२। साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४५ अक्षर। प्रति स्पष्ट तथा सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्डु का जीवन।

प्रारम्भिक पाठ—

मणभारविणासहो सिवपुरवासहो पावतिमिरहरदिणयरहो ।
परमप्पयलीणहो विलयविहीणहो सम्मिचरणसिरि जिणवरहो ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

घत्ता

णियरूउ लहेविणु सो णियइं फेडे वि कम्मणिवधणाइं ।
सव्वत्थसिद्धिसंपत्तुरवणे, कणयामरमुणिवरवयहलइ ॥
चिरुदियवरवंसुप्पराणएण, चंदारिसिगोत्तें विमल एण ।
वइरायइं हुयइं दियंवरेण, सुपसिद्धणामकणयामरेण ।
वुह मंगल एवहो सीसएण उप्पाइय जणमणतोसएण ।
आसइयणयरि संपत्तएण, जिणचरणसरोरुह भत्तएण ।
अछतइ तहिं मइ चरिउ एहु, धर पयडिउ भवियण विणउणेहु ।
मइं सत्थविहीणइं भणिउं किंपि, सोहेविणु पयडउ विवुहु तपि ।
परकज्जकरण उज्जुय मणाहं, अप्पाणउं पयडिउ सज्जणाहं ।
करजोडिवि मग्गिउ इउ करतु, महुदीणहो ते सयलुवि खमंतु ।

घत्ता

जो पढइ सुणइं मणे चिंतवइ जणवएं पयडइ एउ चरिउ ।
सो णरु भुवणहो मंडणउ लहइ सकित्तणु गुणभरिउ ॥
जो णवजोव्वणदिवसहिं चडियउ अमर विमाणहो ण सुरुपडियउ ।
कणयवरणु अइमणहरगत्तउ जसुविजवालु णाहिउ रत्तउ ।
धम्मसहातरुसिंचियअप्पणु जो विजवालहो णं मुहदप्पणु ।
जो अरिणिहणइ दुस्सहलीलइ जसुमणुरंजिउ कुजरकीलइं ।
वंधवइट्ठमित्तजणरोहणु णिवभूवालहो जो मणमोहणु ।
दीणाणाहहो जो दुहभंजणु करुणाणरिंदहो आसयरजणु ।
जो वोल्लतउ णिवसहखोहई जो ववहारइ णरवइमोहइ ।
जो गुरु संगरे अइसय धीरउ जो जण पयहुण कायर हीरउ ।
जो चामीयरकंकणवरिसणु जो वंदीयण सहलउ करिसणु ।
जोजिणपाय सरोयहंमहुयरु जो सव्वगु विणयणाह सुदरु, ।
जो कमिणिहिं मणम्मिणम्मुच्चइ जोजण सीलतरंगिणि वुलइ ।

१० कर्मकांड सटीक।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार श्री सुमतिकीर्तिसूरि। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ७५। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५४ अक्षर। विषय-सिद्धान्त। लिपि संवत् १६२२।

ग्रन्थ समाप्ति—

इति श्री सिद्धांतज्ञानचक्रवर्ति श्री नेमिचन्द्रविरचिते कर्मकाण्डस्य टीका समाप्ता।

लिपिकार की प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यराज्यात् संवत् १६२२ वर्षे भाद्रपद सुदी १५ दिने आगरा-न मनगरे पातिसाह श्री सुदूगल अकबरजलालदीन राज्ये श्रीमत्काष्ठसंघे माथुरगच्छे पुष्करान्वये भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीवादीभकुंभस्थलविदारणैकसिंह श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीसर्व्वगुणगरिष्ट भानुकीर्तिदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये वांसलगोत्रे साधु श्री गिणा तद्भार्या खिमाई तत्पुत्रश्चत्वारः। प्रथम पुत्र चाऊ तस्य भार्ये द्वे प्रथम भार्या ....तत्पुत्र चिरजीव रिखभदास। द्वितीय भार्या मांडणदे। साह ग्यान द्वितीय पुत्र राऊ तृतीय पुत्र पदार्थ चतुर्थ पुत्र देऊ एतेषां मध्ये साधु श्री रिखभदासेन पुष्पांजलिव्रतोद्याप-नार्थं एतद् ग्रंथं लिखापितं।

११ क्रियाकलाप।

रचयिता अज्ञात भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ८६ साइज ६॥×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। प्रति प्राचीन है। मूल पाठ प्राकृत में है। संस्कृत में उसकी टीका है। ग्रन्थ ३६ दंडकों मे विभक्त है। विषय-क्रियाकाण्ड।

लिपिकार की प्रशस्ति—

संवत् १३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवासरे श्री योगिनीपुरे सुरत्राण श्रीमन्महंमदसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने काष्ठासंघे त्रयोदशविधवादित्रभट्टारकनयसेन• तस्य शिष्यः भट्टारक दुर्लभसेनः तस्याध्ययनाय पुरतः सिद्ध प्रतिक्र.. वृत्ते लिखपायित्वा दरबार चैत्यालयसमीपस्थित अग्रोतकान्वय परमश्रावक साणिया इति पूर्वपुरुषसंज्ञकन पाटणा-वास्तव्य सा० पाणा भार्या हलो अनयो पुत्रौ दिउप सा० पूना नामानौ। सा० पूना भार्या वीसो अनयोः पुत्रेण दरबारचैत्यालये पंचम्युद्यापनाय सकलसंघमाकार्य देवशास्त्रगुरुणामहामहं विधाय संघपूजावस्त्राहारादिभिः कृत्वा शास्त्रदानप्रस्तावे पंचपुस्तकानिदत्तानि सा० छाजू तस्य भार्या माल्हो प्रिथतमेन....... ऽपुत्रेण भीमनाम्ना पंचम्युद्यापनेकृतं देवगुरुणां प्रसादात् शतायुर्भूयात् पंडित गंधर्वपुत्रेण वाहडदेवेन लिखितमिति शुभं।

१२ क्रियाकलाप स्तुति।

रचयिता आचार्य समन्त भद्र। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या २०७। साइज १०॥×४॥ इञ्च

प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर। टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र। प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है।

संवत १५७७ वर्षे वैशाख सुदी ४ शुक्रवासरे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खटकीडपुरे राव श्री राव नरवददेवराज्ये बघेरवालान्वये कोटवागोत्रे सा० गणा तद भार्या वाल्हू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू भार्या शीलरत्नसंयमगुणादिसंयुक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह वोहिथ साह खेता नामानस्त्रयः। भोलू भार्या मदना वोहिथ भार्या राजी प्रथमा स्यामंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा, लाखा,। लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र उधरण। जीणा भार्या देउ तत्पुत्र नरसिंह। खेता भार्या करमैती एतैः शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय मुनि माघन दिन दत्तं।

१३ चन्द्रप्रभचरित्र।

रचयिता महाकवि यशःकीर्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२०। साइज़ १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। विषय--चरित्र।

मंगलाचरण—

नमिऊण विमलकेवललच्छी सव्वंगदिण्णपरिरंभं।
लोयालोयपयासं चंदप्पसामियं सिरसा ॥ १ ॥
तिक्कालवट्टमाणे पंचवि परमेट्ठिए ति सुद्धीहं।
तह नमिऊण भणिस्सं चंदप्पह सामिणो चरियं॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय सयलवि सुरवइ जिणसंथुइ परभत्तिभयभरसत्ता।
पंचमकल्लाणहो सुअरु णिहाणहो करिवि ठाणिसंपत्ता॥
जं सुद्धु असुद्धउ गंथवारु जं सारु असारउ बहुपयारु।
न जिणवाणी खमउ सव्वु महं कविणिहिलहो विमलमउ अणव्वु।
जे परमसर जाणहिं अपारु ते मोहंचि सोहिचि कुणहुं सारु।
मुणिजंगपंडिय मेल्लिवि कमाउ सोहतु मुणि व इह सुहपसाउ।
गुरुजणदसहं उमसगासु तहिं छडाणुउहूउ दोणगासु।
मिट्ठउ तहो गंदगु भव्वबंधु जिणधम्मु भारि जं दिगणु खंधु।
महुं सुउ जिट्ठउ वहु-गुणसव्वु जिं धम्मकजि विवकलिउ दव्वु।
महुं नहू जायउ सिरि[?]मरसिंहु कलिकाल करिंदहो हरिणासीहु।

तहो सुउ सजायउ सिद्धपालु, जिणपुज्जदाणु गुणगणरमालु ।
तहो उवरोहें इह कियउ गंथु, हउं ण मुणमि किं पिवि सत्थ गंथु ।

घत्ता

जा चंद दिवायर सव्वविसायर जा कुल पव्वय भू वलउ ।
ता एहु पवट्टउ हियइं चहुट्टउ सरसइं देविहिं मुहि तिलउ ।

इय सिरिचंदप्पह महाकइजसकित्तिविरइए महाभव्वसिद्धपालमवणाभूसणे चंदप्पह सामि णिव्वाणगमणो णाम एयारहमो सधी परिछेउ सम्मत्तो ।

संवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ पव्वव्दयो मध्ये प्रमाथिनाम संवत्सरे दक्षणायने भासनौ वपरितौ महामांगल्य श्रावण मासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ शनिवारे घटी ८ परंतपे का ११ दशम्यांतिथौ मूलनक्षत्रे घटी ३६ विकुंभनामयोगे घटी ६ परतप्रीत्यनामयोगे मध्याह्न वेलायां वंदावतीस्थानात हाडाचौहाणान्वये राव श्री सूर्यमल तत्पुत्र रावश्री सुरमीताण राज्यप्रवर्त्तते जंबूद्वीपे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तदूगच्छे तदाम्नाये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये जीवदयाव्रतपालण साह श्री चोहीथा न्याती गंगवाल साह चोहिथ भार्या डोडी तयोपुत्र प्रथम जिनदास भार्या नेमी द्वितीय भार्या लाडी तृतीय भार्या गुजरी । द्वितीय साह भेला भार्या स्लौकिन तयोः पुत्रः प्रथम वश द्वितीय भोव्या । गगपाल साह चोहिथ तस्य गृहे भार्या गेडी तयोः पुत्रः साह जिनदाम भार्या गुजरी तयोः पुत्र प्रथम नानीगा भार्या नारगदे द्वितीय जालप कर्मक्षयार्थं जलापितं बहु गुजरी ।

प्रति नं० २ । पत्र मख्या ११७ । साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक प्रृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३२-३६ अक्षर । अन्तिम प्रृष्ठ नहीं है ।

संवत १५८३ वर्षे आपाढ सुदी ३ बुधवासरे पुष्य नक्षत्रे राणा श्री संग्रामराज्ये चपावतीनगरे रावश्री रामचंद्रप्रतापे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र स्तदुपदेशात खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सा० काधिल भार्या क वलदे तत्पुत्रा सा० गूजर द्वितीय सा०-राघौ तृतीय सा०-चाक्षा । साह गधौ भार्या खणादे तत्पुत्रा चत्वारः प्रथम साह रामदास तदूभार्या रावणादे द्वि० साह श्रू भार्या हरिषमदे तत्पुत्रौ द्वौ सा० पासा भार्या पाटमदे द्वितीय गूजरि तत्पुत्र हरराज सा० आमा भार्या छहकारदे । तृतीय साह दासा तदूभार्या ऋाडमदे तत्पुत्रौ प्रथम भीवसी तदूभार्या भावलदे तत्पुत्रौ नानू फाडू । द्वितीय श्रमेसी तदूभार्या धारादे । चतुर्थ सा० धाटम तदूभार्या घाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० देवसी तन्भार्या देवलदे ·· ·· ·· ।

१४ जम्बूस्वामि चरित्र।

रचयिता श्री वीर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७६। साइज ११x४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६-३६ अक्षर। ६२ वां पृष्ठ नहीं है। रचना संवत् १०७६ लिपि संवत् १५१६। विषय—अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन।

मंगलाचरण—

विजयतु वीरचरणाणि चंपि मदिरंसि थरहरिए।
कमसु कुसलतलो ए सुनरांणि जगंत विंदु छंकारा॥ १॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जंबूसामिचरिए सिंगारवीरे महाकव्वे महाकइदेवयत्तसुय वीर विरइय बारहअणुपेहाउ भावणाए रिसनुचरस्स सव्वह सिद्धिगमणं नाम एयारसमोसंधी परिछेउ सम्मतो।

प्रशस्ति—

वीरस्साणणयचउक्कं मत्तरिजुत्तं जिणइवीरस्स।
णिव्वाणा उववणो विक्कमकालस्स उप्पत्ती॥ १॥
विक्कमणिवकालाउ छाहत्तरदससए सु वरिसाण।
माहम्मि सुद्धपक्खे दसम्मी दिवसम्मी संतम्मि॥ २॥
सुणियं आयरियपरं पराए वीरेण वीरणिदिट्ठं।
बहुलत्थपसत्थपयं पवरमिणं चरियं मुद्धरियं॥ ३॥
इत्थेवदिणेमेहवणपट्टणे वड्डमाणजिण पडिमा।
तेणावि महाकइणा वीरेण पयट्ठिया पवरा॥ ४॥
बहुराय कज्जधम्मत्थ कामगोट्ठीविहत्तसमयस्स।
वीरस्स चरियकरणे इक्को संवच्छरो लग्गो॥ ५॥
जस्स कयदेवयत्तो जणणोसच्चरियलद्धमाहप्पो।
सुहसीलसुद्धवंसो जणणी सिरिसंतुआभणिया॥ ६॥
जस्सय पसण्णवयणा लहुणो सुमइस्ससहोयरातिण्णि।
सीहल्ल लक्खणंका जसइणामेत्तिविक्खाया॥ ७॥
जाया जस्स मणिट्ठा जिणवइ पोमावइ पुणोबीया।
लीलावइ तिनईया पच्छिमभज्जा जयादेवी॥ ८॥
पढमकलत्त गरूहो संताण कयत्तविडविपारो हो।
विणयगुणमणिणिहाणो तणउ तह णेमिचंदोत्ति॥ ९॥
सो जयउ कयवीरो, वीरजिणिंदस्स कारियं जेण।
पाहाणमयं भवणं पियरुद्देसेण मेहवणे॥ १०॥

अह जयउ जसणिवासो जसणाउ पंडिठत्ति विक्खाउ ।
वीरजिणालयसरिसं चरियमि णं कारिय जेण ॥ ११ ॥

लिपिकार की प्रशस्ति—

मन्ये वयं पुण्यपुरीव भाति सांडु झुणोति प्रकटी बभूव ।
प्रोत्तुं गतन्मंडनचैत्यगेहाः सोपानवद्दृश्यति नाकलोके ॥ १ ॥
पुरस्सरा रामजलवकूप हर्म्याणि तत्रास्ति अतीवरम्याः ।
दृश्यंति लोकार्धनपुण्यभाजा ददाति दानस्य विशालशाला ॥ २ ॥
श्रीविक्रमार्क्केन गते शताव्दे षडक पंचक सुमार्गशीर्षे ।
त्रयोदशीया तिथि सर्वशुद्धा श्री जम्बु स्वामीति च पुस्तकोऽयं ॥ ३ ॥

१५. जिनदत्त चरित्र ।

रचयिता पंडित लाखु । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या १५७ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । रचना सवत् १२७५ लिपि संवत् १६११ ।

मगलाचरण—

सप्पयसरकलहंसहो हियकलहंसहो—
कलहंसहो सेयंसवहा ।
भणमि भुअणकलहंसहो रयकलहंसहो—
णवेवि जिणहो जिणयत्तकहा ॥ १ ॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जिणयत्तचरित्ति धम्मत्थकाममोक्खचवणाणु प्मावसुपविति सगुणसिरिसाहुलसुवलक्खण विरइए भव्वसिरि सिरिहरस्सणामंकिए जिणयत्तजइवरस्स सग्गिगमणो णाम एयारहमो परिच्छेव सम्मत्तो ।

प्रशस्ति—

इह होंतउ आसिविसालबुद्धि—
पुज्जिय जिणवरु तिरयण विसुद्धि ।
जायसहो वंसउ वयरणसिंधु गुणगरुवा मलमाणिक्कसिंधु ।
लायव णरणाहहो कोसवालु जसरससमुछिय दिचक्कवालु ।
जसवालु तासु सुउ मइपवालु लाहड्ड लडहउ लहक्खणालु ।
जण जाणिय जिणमइ दुवहतासु ताह गय सरापमुक्कतासु ।
पढमउ अल्हणु सुहि सरयसूरु, परिवारणारहपरमासपूरु ॥

पवयणाभयणामय पाणपोट्ठ, अवमयमहामइदलियदुट्ठ ।
जिणगइत्रणाच्चण पूयणमयत्तु, अहिणाणियणिहि लविरणायवित्तु ।
मेच्छणछणछेयणछइल्लु गंभोरपरमणिमयमइल्लु ।
जिणपरिभावणउच्छल्लमल्लु सम्मत्त हरणामलमहल्लु ॥
किल्लिल्लवेल्लिणिल्लूरणिल्लु, भायरसुवलक्खणरोह गिल्लु ।
परिवारभारवद्धगधोरु, जिणगन्थवारिपावणसरीरु ॥
पविहियतियालवंदणविसुद्धि, सुवमत्थभावभावणअसुद्धू ।
बहुसेवयणरसिग्घट्ठपाय, वंदीणहदीणहदिण्णचाय ॥
भोयणिहियपोसियसूरिविंदु, सउलाम्मवहक्कयचंदुवदु ।

घत्ता

तहो सोहणहो रसालहो भोयपरालहो—
कलकणिट्ठुच्छसहोयर ।
च्छहविमहामउ सोहणरिउवल सोहण—
गुणरोहणविहियायर ॥ १ ॥

गाहुलु साहुलु सोहणमइल्लु, तह रयणु मयणु संतणु जिच्छइल्लु ।
च्छहमहिभायर अल्हणहोभत्त, च्छहमविहो माणासत्तचित्त ।
च्छहमवितहो पयपयरुहदुरेह, च्छहमयणोवयवामदेह ।
साहु तहु सुपियपिययममणुज्ज, णामे जयताकयणिलयकज्ज ।
ताह जिणदणु लक्खणु सलक्खु, लक्खणा लक्खिउ सयदलदलक्खु ।
विलसियविलासरसगलियगव्व, ते तिहुअणगिरि णिवसंतिसव्व ।
सो तिहुवणगिरिभग्गउ जवेण, घित्तउ वलेण मिच्छाहि वेण ।
लक्खणु सव्वाउसमाणुसार, विच्छोयउ विहिणा जणियराउ ।
सोइत्थ तत्थहिंडतु पत्तु, पुरे विल्लराम्मि लक्खणु सुपत्तु ।
लोसवाणहो समउ सो करइ पणाउ, विरदा णादणु सम्माणणणाउ ।
दिणि दिणि त अइसय वुव्झिजंतु, तहि जिसणेहु णिब्भरुमहंतु ।
असराउवारिपोसियसरीरु, भद्दवए पवुट्ठए मेहुणोरु ।
तइ णाहाउ णिब्भरु तुसारु, जं एयारहमए मासिफारु ।
जं जिट्ठइ णिट्ठुरु तवइ सूरु, खर कर पयंडवंम्हडपूरु ।
चिरु वट्टइ भोकइ चित्तु त जि, सुवयणहो सुवणोसहु णेहुजंजि ।

घत्ता

जह अहिणवघणदंसणो तावविहसणो चंद कवउगहुल्लियइ ।
सिरिहरु सिरिसाहारउ रयपरिहारउ लक्खण णंहरसुल्लियइ ॥२॥
णवरेक्क दिणम्मि महाणुभाउ, आभत्थिविसल्लहोधत्थपाउ ।
पभणिउ भो बंधव अइपवित्तु, विरइज्जउ जिणयत्तहो चरित्तु ।
तहो वयणें मइ विरइउ सवोज्ज, वणिणाहो ववसायउ मणोज्ज ।
पद्धडिया बंधे णायहत्थु, अइहि जाणिज्जसु सुप्पसत्थु ।
सयलइ पद्धडियइ एइहुंति, सत्तणिणउइ दुसयइ दुणिण संति ।
एयइ गंथइ सहसइ वयारि, परिमाणु मुणिहु अक्खर वियारि ।
हउ मुक्खु णिरक्खरु खत्तियलज्ज, ण वि याणमिहे याहेउकज्ज ।
पय बंधणि बधुणा मुणमिकिंपि, मइ विरइउ संपइ चरिउ तंपि ।
परजिण णाहहो भत्तीकएण, अवियलचलकलणालाएण ।
इहु जइविच्छंदवइ हीणुतोवि, महु मुक्खहु दोसु मगहउ कोवि ।
करमउ लिविपयडिवि णेइ जोउ, अब्भत्थितुसिमइ णिहिलुलोउ ।
पवयण गुणागरु अउ गलियपाउ, चउवण्णसघु जगि बुद्धिजाउ ।
अहिणंदउ जिणणाहहु पयाइ, सासर सरणि संपय गयाइ ।
जिण समइ अगव्वह भव्वयाह, दुक्खक्खउ होउजि सव्वयाह ।
धिय धम्महो कलिमलणासणासु, कल्लाणु हुंउ जिण सासणासु ।
परिधविय चराचर जियहदेहु, असराल वारि वुट्ठउ सुमेहु ।
णिस्सेस सेस्स सपत्ति होउ, णिरुवहउ सुहु अणु हवउ लोउ ।
परि पसरउ मंगलुमोयपूरु, धरि धरि वज्जउ आणंद तूरु ।
णडुल्लिय मणाडुवइणविंदु, णच्चउ णिहलिय दुहाणकंदु ।
चिरु अहिणंदउ विरदा तणुउ, सिरिहरु सिरि विसइणि गव्वभूउ ।
कुल गिरि गिरि वइ गहचंदसूर सुरसरि सिरि सायरवारिपूर ।
जिणधम्म पयट्टइ धरणिजाम, परिवड्ढउ 'सरि हरवसुंताव ।
इणहं चरित्तु जो कोवि भव्वु, परिपढइ पढावइ गलिय गव्वु ।
जो लिहइ लिहावइ परमु मुणइ, संभावइ, दावइ, कहइ सुणइ ।
जो देइ दिवावइ मुणिवराह, जह तह सम्मइ पंडियपराह ।
सो चक्क वट्टिपउ आइकरिवि, पालिवि सक्कत्तणि लछि धरिवि ।

अगुह जिवि संसारिय सुहाइ, सव्वइ दिव्वइ पयलिय दुहाइ ।
उव्वहि याहिज्ज सुह रम पयासि, पत्थइ गत्थइ गिव्वुइ गिवासि ।

घत्ता

वाग्हमय सत्तरय पचोयत्तं, चित्कम काणि विइत्ताइ ।
पढम पाक्खि गवि वारइच्छुद्धि महाइइ, पुसमासें सम्मत्तिउ ॥ ३ ॥

जो भुवणमरणा समसरणासामिणि, सामि मालसुविमाल ।
मिविहरहोतेमहंता अरहंतादि तु कुल्लाण ॥ १ ॥
जे गुपसिद्ध सुद्धरिद्धि था वुद्धिश्वइणद्धारा ।
धर वीरधम्मधरथाने गिद्धा सिद्धिनहोंतु ॥ २ ॥
अमरममेउकीविडदंडउच्छडकंडरंडया ।
णिव्वइ गुणरूरहातिसूरिरिंतुम्मसुहं ॥ ३ ॥
णिम्मास्मारमंमारसायंनरणानाणातरंडा ।
ते तस्स महियमोहायोहर्ठीदितुउज्झाया ॥ ४ ॥
णाइठ्ठठुठ्ठमयकट्टमहायातिट्ठगंठिणिट्ठवणा ।
णिट्टाणरिट्ठियंगा ते साहू दिंतु मगलयं ॥ ५ ॥
उद्धमिंदियकम्मद्वियसम्ममामयमयणिम्महणहरिणाराडसिवमग्गदावतु ।
मंसारगइणिविडविडवियडतोडणसपावउ ।
सम्मद्दंसणणाणणिक सम्मत्तचरित्तविसालु ।
तंम्यणत्तउ सिरिहरहो अहिरक्खउ चिरुकालु ॥ ६ ॥

इति पडित जाखु विरचित जिनदत्तशास्त्रं समाप्तं ।

संवत १६११ चैत्र सुदि ११ सोमवासरे श्रवणनक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्रगढमहादुर्गे श्री नेमीश्वर चैत्यालये राज श्री भागमत राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये ....शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत शिष्य मल चेगो इद शास्त्रं भीनीदाय पठनार्थं दत्तं ।

१६. धनकुमारचरित्र ।

रचिता श्री पं० रइधू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५१. साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में २८-३२ अक्षर । प्रति अस्पष्ट है । लिपि संवत् १६३६, ग्रन्थ कर्त्ता ने प्रारम्भ और अन्त दोनों स्थान पर प्रशस्ति लिखी है ।

मंगलाचरण—

पणविवि सिरिवीरहो णाणसीररहो कमजुउ धणकुमारचरिउ।
अक्खमि सुपसिधउ गुणगणरिद्धउ धम्मरसायणरसभरिउ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

× × × × ×

तहं सुधम्मपमुहाइ जईसर, पणविवि भत्तिएवय भारधर।
ताहं अणुक्कमि सूरि पहाणउ, सहसकित्ति तववयगुणठाणउं।
तास पट्टिणि रुद्दगुणभायणु, जो भाविउ मणिणाणरसायणु।
सिरि गुणकित्ति विबुहचिंतामणि, पणविवि तिरयण सुद्धिए बहुगुणि

घत्ता

इय जिणमुणिवरविंदु माइविमणवयकाएं।
पुणु पयडमि जिणसथु गुरगुणकित्ति पसाएं॥ १॥

अणहिदिणजिणगुणसुविसालें, विहसि विजंपिउ बुद्धि विसालें।
भोसइत्थ रयणरयणायर, मित्थामयतमणाणदिवायर।
रइधू पंडिय सुणिणिम्मलयर, बुहयण जणमण रंजण कोत्थर।
जहं पइं पास जिणंदह केरउ, चरिउ रइउ बहुसुखजणेरउ।
पुणु बलहद्द पुराणु सुहंकरु, णेमि जिणद चरिउ विरयउ वरु।
माट्टलसाहु णिमित्तें सुन्दरु, जह पयं वद्दमाण भासिउ वरु।
तहिं सिरि धणकुमार पुण्णहफलु, महुवयणेंपयडहिपणुगयमलु।
ता गुरु भणियालावसु णेप्पिणु, रयधू बहु जंपइ पणवेप्पिणु।

घत्ता

तुम्हहं आएसें कव्वु विसेसें करमिण संसउ धरमि मणि।
परकारण वट्टइ चित्तिपवट्टइ सोयोरुणकुत्तिणियमिजिणि॥ २॥

तं सुणि विभणइ गुणकित्ति एम, भो पंडिय तुहंणउं मुणहिं केम।
गोवागिरि णियडपएसि धम्मु, पुरुपाल संडुणेमेंणमणु।
इक्खाइ वंसि तहि चिरुवणेंदु, अगणिय जायापणवियजिणेंदु।
जसुवालु जसायरु गुणमहंतु, करमू पटवारि जणि महंतु।
तहु णंदणु णिरुवमगुणणिवासु, अहणिसु जो अच्चइ जिणवरासु।
चउविहसघविणयाणुरत्तु, सिरि पूनउ साहु सधम्मिवत्तु।

तहु भज्जा सील गुणरम खाणि, मणवहियणाइ तित्थयरवाणि ।
तिहुवण सिरि सुणियण पयवि णीय, सिरि इरसिरि जिमराहवहु सीय ।
एयहं सजणिय चारिपुत्त, लक्खण लक्खंकिय विणयजुत्त ।
णियकुलमयंकु पुणु पढमु ताहं, भुल्लणु जिमाहु पयडउ जणाहं ।
वीयउ पुणु कुढयणजणणिव सुं, सिरि सूले णामे जसपयासु ।
तइयउ णंदणु मयणावयं रु, सिरि कामराजु णामेण साहु ।
चउथउ णंदणु आनंदणिवासु, आसलु णामें सो कुल पयासु ।
पयहिं जो पढमउ गुणगरिट्ठु, सिरि भुल्लणु णामें साहु सिट्ठु ।

घत्ता।

आरउणपुरवरे सुहलच्छीघरे, तहि पहुवइ रिणिकंदणु ।
तोमर कुलमंडणु अरिसिरिखंडणु, सिरि गणेस णिवणंदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

णंदउ जिणसासणु दुरियविणासणु सुहमयसासणु गुणभरिउ ।
अरु सत्थसमिद्धउ वरणाहिसुघरु णंदउ महियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥

णंदउ महिवइ णयपवीणु, णंदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।
णंदउ सुधम्मु सिवमोक्खयारि, णंदहु जइवरवयभारधारि ।
इक्खाकवंसमउणमयंकु, सिरि पुण्णपालसुउ विगयसंकु ।
णंदउ भुल्लणु णामेण साहु, णिउणदेवल्लहु दीहबाहु ।
महुहोज्जउ विमलसमाहिबोहि, जादुगइ गमणहु पाहिणिरोहि ।
णियकालें वरसउ मेहमाल, विहरिहि ससुहु मंगल धमाल ।
बहु अत्थसमिद्धउ चरिउ एहु, परिपुरणकरि-विसवेयगेहु ।
पडिगणसमाप्पेउ पावणासु, भुल्लणहु हथिपयडियपयासु ।
तेण लिहिय मीसिचंदाविरेण, पुणु पेंडिव पुज्जिउ पणमिऊण ॥
लेहाविविविहट्ठपुयंयलितेण, महिविथारिउ पुणेरे सुवेण ।

घत्ता

गुणगुणिहु पसाएं पयडियगाएं सिद्धउ कव्वर सायणु ।
सोमाढ जंतउ अथ सयंतर, वट्टउ सुदसणभायणु ॥ ४ ॥

जिणगुणगणराएं वज्जियमाएं, चरिउ रयाविउ एहुवरु।
तहु वंसपसिद्धउ सुहजिणरिद्धउ, पयडमि जणमणसुक्खकरु ॥ ६ ॥
धणकणजणपुण्णउ सुहणिवासु, पुरुपालिसंडु अरिविहियतासु।
तहिं वणिवरु जिणपयचंचरीउ, भवभमणहु जा मुणि णन्त भीउ।
कम्मू पटवारि उ गुणगरिट्ठ, सो यंमुणाइं मुणि दाण इट्ठ।
तहु भज्जारुवा रूव सार, ...
तुह नंदणाहु णवणं णवपयत्थ, गेवद्धनाड मणि मुणियसत्थ।
उद्धरणु पढमु उद्धरियदीणु, साधारणु सावयधम्मिलीणु।
तीयउ खम्हुउ खमगुण महंतु, तुर यउ पुण्ण उ पुण्णमहतु।
मलमुक्क मल्हि पचम उवुत्त, जो परियणाइं अणुपवित्त।
रयणत्तय भत्तउ रयणु साहु, हरिमुत्ति हरु पुणु दीहवाहु।
अट्ठमउ धिरराजु गुणोहट्ठाणु, घूवलि नवमउ बुज्झिय पमाणु।
एयह जिमज्झि चउथउ जिवुत्त, सिरि पुण्णपालु मुणिमणिय सुत्त।

घत्ता

तहु पढमी भामिणि कुलगिह सामिणि, तिहुवण सिरि णामे भणिया।
बीई पुणु मणसिरि णं पीयहसिरि, अहपवित्ति रूवहु भणिया ॥ २ ॥
णदण वयाणि तहु विणयवंत, ण णंतचउक्कजिजणिसहंत।
ताह जिगुरुमनंतणिअमुल्लु, सिरिभुल्लणु णामा सोजि अतुल्लु।
तहु भ आचउ विहंपत्त भत्त, णिउर दे न माणिह महत।
बीयउ णंदणु सूनेसुवाणि, तहु भज्जमहासिरि सोह खाणि।
तहु तिण्णि पुत्तकुल भवणदीव, णरयण डह वणणोय कामदिउ।
अमरंदिउ लाडमखु, णारयणत्तउ जायउ पवखु।
तीयउ णंदणु पुणु कामराउ, कल्लाण सिरी भज्जासराउ।
चंदत्थउसुउ आमलु विणयपाउ, परिवारु पहु णदउ सराउ।

घत्ता

एयहं सव्वहं पुणु पयडिवं बेहुगुणु णंदउ भुल्लणु गुणभरिउ।
धणयत्तकुमारहु संयफलमारहु कारिवे उवहहु चरिउ।

इय सिरिधणकुमारचरिए कयसुअभावणं फलेण विप्फुरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि पुन्नपाल सुत साधु श्री भुल्लण णामकिंय भव्वजीवाणमणिणं धणकुमार णिव्वाणगमणवण्णणो णाम चउथी संधी परिछेउ सम्मत्तो। इति श्री धन्कुमार चरित्रं समाप्त। मुनि श्री भारमल्ल लिखतं।

संवत् १६३६ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ अर्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी विराजमाने मारुवाड देशे श्री मेदनीपुरवरे अज्ञानांतमरदिनकर विधुरिजिन-शरणमज्जनानंद नृपवर लक्ष्मीवल्लभे राज श्री पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीमहंमदराज्ये। पार्यदामहं-मदखानराज्ये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकाशनमार्त्तण्ड भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोद्वहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभकुंभविदारणैक केशरी भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत् द्वितीय शिष्य दुद्धरपचमहाव्रतधारणैकप्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्ति तत् शिष्य पंचाचारचरणचतुरान् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारंगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमत् भुवनकीर्त्ति तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति भव्यकुमुदविकाशनैक निशाकर द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री विशालकीर्तिः तस्य शिष्य दुर्द्धरपंचमहाव्रतधारणैक प्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र तदाम्नाये खंडेलवालवंशे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह काल्हा भार्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह चोहट द्वितीय पुत्र साह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्रः सीलव्रतावगाढ परिचालान श्रीमत् सुदर्शनावतार साह श्री लूंणा तस्य भार्या लूणादे तस्य पुत्र संघ श्रीवंत भार्या सुहलालदे तस्य पुत्र द्वितीय साह चि० वीरा द्वितीयपुत्र चिरंजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री लूंणाकेन पुण्यार्थेन पुस्तकं लिखापितं भार्यित बाई श्री करमाई केन घटापित।

१७. धर्मपरीक्षा।

रचयिता प० हरिषेण। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ८८. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३५ अक्षर। विषय–धार्मिक। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धि पुरंधिहिं कंतु, सुद्धें तणु मणवयणें।
भत्तिए जिणु पणवेवि, चिंतिउ बुहहरिसेणें॥ १॥
मणुअ जम्मि बुद्धिए किं किज्जइ, मणहरजाइ कव्वुणरइज्जइ।
१
तं करंत अवियाणिय आरिस, होसुलहहिं भडरणि गय पोरिस।
चउमुह कव्वु विरयणि सयंभुवि, पुप्फयंतु अण्णाणु णिसुंभिवि।
तिण्णिवि जोय जेण त सीसइ, चउमुह मुहथियतावसरासइ।
जे सयंभु विहहउ अहयाणउ, तह च्छंदालकार विहीणउ।
कव्वुकरंतु केमणविलज्जमि, तह विसेस पियजणकिह रंजामि।
तो वि जिणिंद धम्मअणुरायइ, बुहसिरिसिद्धसेणसुपसाइ।
२ ३
करमि सइं णिमलिणिदलसियजलु, अणुहरेइ णिरुवसु मुत्ताहलु।

१ चुम्मदहिं २ सर्व ३ जैन

घत्ता

जा जय रामें आसि, विरइय गाहपबंधि ।
साहम्मि धम्मपरिक्ख, सा पद्धडियां बंधि ।। १ ।।

अन्तिम भाग तथा प्रशस्ति—

घत्ता

सिद्धसेणपयवंदहि दुक्किउ णिंदहि हरिसेणु णवंता ।
तहिंथियतेखगसहयर कयधम्मायर विविह सुहइं पावंता ।
इय मेवाडदेसि जणसंकुल, सिरिउजपुर णिग्गयधक्कडकुलि ।
[१]
पावकरिंदकुंभदारणहरि, जाउ कलाहि कुसलु णामेंहरि ।
तासु पुत्त परणारिसहोयरु, गुणगणणिहि कुलगयणदिवायरु ।
गोवड्ढणु णामे उप्पणउ, जो सम्मत्तरयणसपुण्णउ ।
[२]
तहो गोवड्ढणासु पियगुणवइ, जो जिणवरमुणिवरपियगुणवइ ।
ताइ जणिउ हरिसेण णामें सुउ, जो संजाउ विवुह कइ विस्सुउ ।
सिरि चित्तउडु चएवि अचलउरहो, गउणियकज्जें जिणहर पउरहो ।
तहि छंदालंकारपसाहिय, धम्मपरिक्ख एहतें साहिय ।
जेमज्झत्थमणुय आयण्णहि, ते मिच्छत्तभाउ अवगण्णहि ।
[३]
ते सम्मत्त जेणमलु खिज्जइ केवलणाणु ताणु उप्पज्जइ ।

घत्ता

तहो पुण केवलणाणहो णेयपमाणहो, जीवपएसहिं सुहहिउ ।
[४]
वाहाहिउ अणंतउ अइसयवंतउ मोक्खुसोक्खु फलु पयडिउ ।
[५] [६]
विक्कम णिवपरिवत्तियकालइ, ववगयंवरिससउसचउतालइ ।
इय उप्पण्णु भवियजण सहयरु, डंभरहियधम्मासयसायरु ।

१ कुलीहि २ गुणवइ ३ तेण ४ वाहारहिउ ५ परिवत्तिए ६ गयाए वरिसए सहिं सचतालए ।

ते णंदहु जे भत्तियभावहिं,[1] तेणंदहु जे लहहि लहावहि।
ते णिय परदुह दूरि लुढावाहि,[2] जो पुणु केविहु पढहि पढावहि।
ताण णिरंतर सोक्खइ सुहडहि, एयहु अत्थुकेविजे पयडहि।
जे णिसुणेविपरिक्खहि भत्तिए, ते हुं[3] जहि णिम्मल मइ सत्तिए।
सयल पाणि वग्गहो दुहुहिल्लउ, सोसमिट्ठिए महिसोहिल्लउ।
परहिय करणि णिहहिय अहहो, होउ जिणत्तणु चउविह संघहो।
पयडिय पहुपयावआरिवारि,[4] णंदउ भुवइ सहो परिवारि।
धम्मपयत्तणेणणंदुहहारें, णंदहु पयवहु अइववहारें।

घत्ता

संखदुसहसुसयाहिउ संदरसयाहिव,[5] इउकहरयणु अग्गव्वहं।
जाहरिसेणधराधर दवहि गयणुधर, तामजणउं सुहु भव्वहं॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए वुह हरिसेण कयाए एयारसमो संधि परिच्छेद सम्मत्तो।

१८. नागकुमार चरित्र।

रचयिता श्री महाकवि पुष्पदन्त। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७०. साइज ११x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३७ अक्षर। लिपि सवत् १६१२.

मंगलाचरण—

पणवेंप्पिणु भावें पंचगुरु, कलिमलवज्जिउ गुणभरिउ।
आहासमि सुयपंचमिहि फलु, णायकुमारचारुचरिउ॥ ध्रुवक॥

महाकवि ने प्रारम्भ मे अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

घत्ता

सिरिकन्हरायकरयलि णिहियां, असिजलवाहिणि दुग्गयरे।
धवलहरसिहरहयमेहउले, पविउल मण्णखेडणयरे॥ १॥

१ णंदहि २ हरे ३ जे हुं ४ आरिवारें ५ संवत्त दुसहसुसीहिउ इय कयरयणु अगव्वह। जो हरिसेण-दराप्परउ यदिगयणिवर तामनणहु सुहु भव्वहं।

मुद्धाईकेसवभट्टपुत्त, कासवरिसिगोत्ति विसालचित्त।
गएणहु मंदिरि गिवसतु सतु, अहिमाणमेरु गुणगणमहंतु।
पत्थिउ महिपविियसोसएण, विणएण महोवहिसीसएण।
दूरुज्झियदुक्कियमोहणेण, गुणधम्में अवरु वि सोहणेण।
भो पुप्फयंत पडिवण्णपणय, मुद्धाई केसवभट्टतणय।
तुहुं वाएसरिदेवीणिकेउ, तुहं अम्हहं पुण्णणिबंधहेउ।
तुहुं भव्वजीवपंकरुहभाणु, पइंधणु मणिमण्णिउ तिणसमाणु।
गुणवंतभत्त तुहु विणयगम्मु, उब्भायपयासहि परमधम्मु।

घत्ता

ओलग्गिउ भावें दिणि जि दिणे, णियभयपंकय थिरु थविउ।
कइ कव्वपिसल्लउ जसधवलु, सिसुजुयलेण पविण्णविउ॥ २॥
भणु भणु सिरिपंचमि फलु गहीरु, आयण्णमि णायकुमारवीरु।
ता वल्लहरायमहंतएण, कलिविलसिय दुरियकयंतएण।
कुंडिल्ल गोत्तण हसमहरेण, दालिद्दकंदकंदलहरेण।
वरसच्चरयणरयणायरेण, लच्छीपोमिणिमणिसमहरेण।
पसरंत कित्ति बहुकुलहरेण, विच्छिण्णसरासइबंधवेण।
बहुदीणलोयपूरियधणेण, भई पसरपरिज्जयपरबलेण।
णियपइपविइण्णचिंतियफलेण, छणइंदबिंबसण्णिहमुहेण।
कुंदव्व भरहदियतणुरुहेण, ...।
णण्णेण पउत्त महाणुभाव, भो कुसुमदसणहयवसणताव।
करिकव्वु मणोहरु मुयहि तदु, जिणधम्मकज्जिमाहोहि मंदु।
आयण्णमिहउ भणु णिम्मलाइं, सियपंचमि उव वासहु फलाइ।
णण्णेण पवोल्लिउ एम जाम, णाइल्लइ सीलइं एम ताम।

घत्ता

कइ भणिउ समंजसु जसविमलु, णण्णु जि अण्णु ण घरसिरिहे।
तहुं केरउ णामु महग्घयरु, देविहि गायउ सुरगिरिहिं।
तं तुहुं मि चडावहि णियकव्वि, दिहि होउ णायिण आसण्णभव्वि।
बुद्धीए णण्णु सुरगुरु ण भंति, पर णण्णहु णउ वइरिय जिणंति।

पहु भत्तिए हंसु वसुमाणु दिट्ठु, पर णाणणु ण वाणह णारु विसिट्ठु ।
गंगेइ सच्चें जणियतुट्ठि, पर णाणणु ण वइरिहिं देइ पुट्ठि ।
धम्मेण जु हिट्ठिलु धम्मचित्तु, पर णाणणु पत्रासमुहिंण चत्तु ।
चाएण कण्णु जणदिण्णचाउ, पर णाणणु न बंधुहु देइ घाउ ।
कंतीए मणोहरु छणससंकु, पर णाणहु णाउ दीसइ कलंकु ।
गरुयत्ति मांइलु अंबुहुयरिउ, पर णाणणु ण किंडेणाढइं धरिउ ।
सुंथरत्तें मेरु भणंति जोइ, पर णाणणु पुरिसु पत्थरु ण होइ ।
मायरु व गहीरु रयायरेहिं, पर णाणणु ण मथिउ सुरवरेहिं ।

घत्ता

जो वणिणउ वणिणउं सक्कइहिं, भावें णियमणि भावहिं ।
सहु णाणणहु केरउ णामु तुहु, सुललिय कव्वि चडावहिं ॥ ४ ॥
णिच्चेवलत्तणु केवलु वयणु, णिच्चंणिमेल्लादेहावंचयणु ।
ण्हाणविवज्जणु दंताधावणु, कलइ णोस्सु परवसु भोयणु ॥
परणिमयणु रइरससकोयणु, दुमहइसमपयमुहविघणु ।
पिसुणाक्कोसणु ताडणु बंधणु, चंडयायववहजकंपवणाइं ॥
धणाहरजलवाहसमवणाइ, सिसिरोसाकणहरसमवेयइ ।
डिमरवहणइं चिट्ठनणु तेयइं, इन्हइ सोसियगरसभेयइं ॥
वणतरणिइमण सिहिसिंदवजणइं, गुरुगयमसोयरसहवसणइं ।
कठोलविंयभिमहरचरणाइ, सीहावग्घजीहाललघुलणइं ॥
कोतघोरघोणागिल्लुणणइं, सवरगयगइयकंडयकंडुयणइं ।
पर माइदुक्खाइ सहेप्पिणु, रएणवसप्पणु भिक्खचरेप्पिणु ।
सत्तुवि मित्तु वि सरिसु गणेप्पिणु, मिउं सुंजेप्पिणु णिदांजणेप्पिणु ।
भोरसुयंगविव सुमरेप्पिणु, मणिजगमगुरुत्त भावेप्पिणु ।
सुक्कज्झाणु मणि आऊरेप्पिणु, मोहमहारि राउ मिल्लेप्पिणु ॥
कम्मजमायराय तडेप्पिणु, दढकम्मट्ठगंठि मिल्लेप्पिणु ।
गुत्तायार तिगुत्तिहिं गुत्तउ, चउहु मि तहिं रिसिहिं संजुत्तउ ॥

घत्ता

सव्व अगंगु अगंगु हुउ, पत्तउ मोक्खु अणंगवियारेउ ।
पुप्फयतसुरणमियपहु, पसियउ णायकुमारु भडारेउ ॥

इय णायकुमारचारुचरिए णएणणामंकिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे सिरिणायकुमार-वालमहावाल छेयाभेयमोक्खगमणं णाम णवमो संधी परिछेउ समत्तो ।

स्वस्ति संवत् १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ शनिवारे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महा-राजाधिराज राउश्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये स.घहा गोत्रे सा० चीहा तद्भार्या विजयश्री तत्पुत्राः पंचः । प्र० सा० सोढा द्वि० सा० गाल्हाद्, सा० रतन, चतुर्थ सा० माल्हा । सा० सोढा भार्या भोली तत्पुत्र चत्वारः । प्र० सा० चाहड, द्वि० सा० खीवा, तृ० सा० दूलह, चतुर्थ सा० देवा, प० सा० पूना । साह चाहड भार्या मदना । सा० दूहल भार्या करमा तत्पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० पोपा, द्वि० सा० थेल्हा, तृ० सा० श्रीपाल । साह पोपा भार्या पोसिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० साह सुरत्राण द्वितीय चि० पचाइण । सुरत्राण भार्या सुहागदे । सा० थेल्हा भार्ये द्वे प्रथम सरस्वति, द्वितीय लाडा तत्पुत्रौ द्वौ, प्र० डूंगरसी तद्भार्या नाथी, द्वितीय भेला । सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्रथम सरूपदे द्वितीय लहुडी तत्पुत्र सा० रूपा । सा० देवा भार्ये द्वे । प्र० सोभा द्वितीय सरूपदे तत्पुत्रास्त्रयः । प्र० सा० सरवण भार्या होली तत्पुत्र हेमा सा० ठीहा भार्या चन्द्रा । सा० ईसर भार्ये द्वे प्रथम ईसरदे द्वि० चारु । सा० रतन भार्या सिरमा तत्पुत्र स्त्रयः प्र० सा० छीतर भार्या छायलदे तत्पुत्र चि० कौजू । सा० चौहथ भार्या चतुरंगदे । तृ० सा० राणा भार्या राणादे । भेला भार्या भावलदे । सा० माल्हा भार्या द्वे । नाल्हा द्वि० मेहा तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० टेहू द्वितीय सा० नोता । सा० टेहू भार्यास्त्रयः प्रथम तहुणश्री द्वितीय सुहागदे तृतीय गूजरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० पदमसी भार्ये द्वे प्रथम पतायदे द्वितीय पाटमदे तत्पुत्र चिरंजी रामदास । सा० नोता भार्ये द्वे द्वितीय कोडमदे तत्पुत्र चि० आखा भार्या अहकारदे द्वितीय सागा एतेषां मध्ये सा० टेहू सा० नोता इदं शास्त्रं नागकुमार पंचमी लिखाप्य पंचमी व्रत उद्योतनार्थं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिये दत्तं ।

१६. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री पं० माणिक्यराज । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२४. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५–४० अक्षर । प्रति प्राचीन तथा सुन्दर है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ नहीं है । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में भी अपना विस्तृत परिचय दिया है । भाषा बहुत सरल और मधुर है ।

प्रारम्भिक कवि परिचय—

तहि जिणवरमंदिरु धवलु मव्वु । सिरिआइणाह जिणबिंबु दिव्वु ॥
तहि णिवसइ पंडिय सहखणि । सिरि जइसवाल कुल कमल तरणि ॥
इक्खाकुवंससमहियलिवरिट्ठु । वुह सूराणंदणु सुहमरिट्ठु ॥

दुक्खदलिद्द दहिक्खु व णिरसउ। कालि कालि धाराहलु वरिसउ॥
घरि घरि मंगलु गीउ पदरिसउ। घरि घरि णारि उरहंसें णच्चउ।
घरि घरि लोउ सुहेहें रंजउ। घरि घरि सखुसुमदलु वज्जउ।
जिणवरिंदसुयगुरुपयअंचणु। चउविहसंघहदाणहपोसणु।
पुत्तकलत्तसुयणपइ पालउ। णंदउ टोडरमल्लु दयालउ।
णंदउ एहु गत्थुं ता महियलि। जा वहि मेरु चंदु रविणिहयलि।
संघह चिरु दुकिउ विहु णंतउ। भवियण लोयह पाढि जंतउ।
लेस मुणीस विहर अंपाले। विक्कमरायहववगयकाले।
फागुण चंदिण पंख समि वालें। पणरहसइगुणासियउर वालें।
सिरि पिरथी चंदुपसायं सुंदरु। णवमी सुहणक्खित्तु सुहवाले।
सज्जणलोयह विणउ करेप्पिणु। हुउ परिपुण्णु कव्वु रसमंदिरु।
विरयउ एहु चरित्तु सुवुद्धिए। पिसुणवयणकद्दमेण भरेप्पिणु।
ता महु दोसु भव्वु मगहउ कोइं। जइयहु अत्थमत्तहीणउ हुए।
मज्झु खमंतु ववुहसव्वाचित्तिम। विणवेइ मणिक्कु कई इम।
मइ जलेण ज वायमि साहिउ। अण्णुवि अमुणत्ते हीणाहिउ।
कइयण जण तिलोयहु सारी। त जि खमउ सुय देवि भडारी।
अइरो सेसो हि जहु गथु वरि। वुहयणरोसुण करहु महु उप्परि।
णच्चउ कामिणि होउ सुमंगलु। विसमउ गमिणि वज्जउ मदलु।
माणिक्कराज वज्जिय मएण। गुरुपण वछले पढिएण।
टोडरमल्लहत्थें दिण्णु सत्थु। तं पुण्णु करेप्पिणु एहु गंथु।
दाणेसेयं सहकरण्णु तणि। णिय सिरह चडाविउ तेण गथु।
पुणु समाणिउ वहु उत्थवेंण। पढिउ वर पट्टहि थविऊतेण।
अंगुलियहि मुद्दिय णिय करेंहि। वर वत्थइ कण्ण कुंडलेहिं।
पुज्जिउ आहरणहि पुणु पुणु तुरंतु। हरिरोवि वि सज्जिउ विणयं विरुत्त॥
गउ णिय घरपंडिउ गंथि तेण। जिण गेहि णियउ वहु उत्थवेण।
तहि मुणिवर विंदहि सुत्थ गंथु। दिण्णउ गुरु हत्थें सिवह पंथु।
वित्थारिउ अत्थु वियारि तेण। भव्वयणह सुह गइ दावणेण।

घत्ता

पुणु टोडरमल्लहं णिवसरि पुण्णहं, लिहियइ गंथ वहुसुत्थणिरू
जिणि गिहि मुणि संघहं तववयवंतहं, णाणदाणु तं दिण्णुवरु॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५६२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ भौमवासरे श्री ग्वालियर शुभस्थाने श्री पातसाहि हूमायू राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर-गणे श्र भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि श्रीमकर्त्तिदेवान् तदाम्नाये मुनि श्री धर्मभूषणदेवान् तदाम्नाये ब्रह्मचारी मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पल्हा एतत् इक्ष्वाकुवंशे श्री गोत्रे भडारी श्री जयसवाल वंशाम्नाये श्री पंचरशुलाक्षणीकव्रतपालकान् पचमी उद्धरण धीर साधुरमथवसे तस्य भार्या शीलतोयतरंगिनी विनय वागेश्वरी तस्य नाम सुनखो। तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासु——।

२०. पद्मपुराण।

रचयिता श्री प० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५४ अक्षर। विषय—पुराण। प्रति जीर्ण अवस्था में है। लिपि संवत् १५५१ ग्रन्थ का दूसरा नाम बलभद्र पुराण भी है।

मंगलाचरण —

परणयविंद्धं सणु मुणिसुव्वयजिणु, पणविवि बहुगुणगण भरिउ।
सिरि रामहु केरउ सुक्खजणेरउ, मइ लक्खण पयडमि चरिउ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

सिरिआइणाहु भव्वयणइट्ठु, पणवेप्पिणु लोयत्तयवरिट्ठु।
पुणु सम्मिपहु धम्मामयसवतु, भव्वयणहु भवतरहासमतु।
तहि संति वि जीवदयापहाणु, जि भासिउ महियलि विमलणाणु।
पुणु वद्धमाणु चरमल्लुदेउ, सो सव्वह जीवहं वेरउ सेउ।
पुणु ताह वाणिज्झाए विचित्ति, लोयत्तमगामिणि वण्णदित्ति।
पुणु इन्दभूति गणहरु णवेवि, सो धम्मु वि जंबूसामि तेव।
पुणु ताह अणुक्कमि देवसेणु, इंदियभुयंगणिद्दलणवेणु।
पुणु विमलसेणु तह धम्मसेणु, सिरि भावसेणु गय गारवेणु।
तह सहसकित्ति आगमपहाणु, तह पट्टिणि भव्वउ गुणनिहाणु।
गच्छह णाइकु सिहि गुण मुणिंदु, महतवपयासणु विगयनंदु।

घत्ता

तहु पट्टि जईसरु णिहयर ईसरु, जसकित्ति वि मुणियणतिलउ।
तहु सिस्सु पहाणउ तवथयठाणउ, खेमचंदु आयमणिलउ॥ १॥

गोव्वगिरि णामें गढु पहाणु, णं विहिणाणिम्मिउ रयणठाणु ।
अइउच्चु धवलु णं हिमगिरिंदु, जहि अम्मु समिच्छइ मणिसुरेंदु ।
तहिं डुंगरेंदु णामेण राउ, अरिगणसिरिगिरि संदिण्णघाउ ।
तु वर वर वसह जो दिणिंदु, जिं पवलहं मिच्छइ खणिउ कंदु ।
तहो पट्टवरणि ण रूवलत्थि, णामें चादा देई सुयित्थ ।
तहु पुत्तु कित्तिसिंघु जि गुणिल्लु, जो राइ णोइ वनसणइ छल्लु ।
पियपायभत्तु पवक्खमारु, पज्जुण्णवमहियलि कुमरु मारु ।
तहु रज्जिवणीसरु शुद्ध चित्तु, संचायिउ जेण जिणधम्मवित्त ।
जसु चित्तु सुपत्तहं दाणिरत्तु, जिणणाहपूयजोणिच्चभत्त ।
झाणमरण अहिणिसहि लीणु, काउसग्गैतणु कियउ खीणु ।
आयमपुराणपढणहसमत्थु, णियमणुयजम्मु जि कियउ कयत्थु ।
जो आइरवालवंसह मंयकु, निहु पक्खसुद्ध सो णोयरंकु ।
वाढू साहु णंदणु पवीणु, णियजणणिहल्लोपयविणयलीणु ।
जिणसासणि भत्त कसायखीणु, हरसीहु साहु उद्धरिय दीणु ।

घत्ता

तहु भज्जा गुणगणसज्जा, सोचंदही णामें भणिया ।
सुणिदाणपियंकर वयणियमायर, णं पविक्तिरु वहुत्तणिया ॥ २ ॥
वोई तिय वोल्हाही गुणग, अइसीलविशुद्धिजणाइ गग ।
जेठिहि णंदणु सिरिक मरमसीहु, गिहभारधुरंधरु वाहुदीहु ।
सुणिसहणिवसइ जसु पढमलीह, जाचयजणणापूरियसमीह ।
तहु भज्जा जौणाही पवीण, गुरुदेव सथयपयभत्तिलीणु ।
तहु वहिणीणंतमई पहाण, महसीललीणगिहलद्धमाण ।
चउविहदाणे पोसियसुपत्त, अहणिसु जिणवरपयकमलभत्त ।
लुहु ईहिं पुत्ति रूवें सुतार, णामेण णणो णेहें सुसार ।
जिणचरणकमलणमीयसरीरु, वयभरणिव्वाहरणभीरु भीरु ।
अण्णहि वासरि चिंतियउ तेण, हरसीहएण म इंच्छियसिवेण ।

घत्ता

किं किज्जइ वित्तें विहियममत्तें, जेण णदीणु भरिज्जइ ।
किं तेण जिकाए पयडयिराय, वयभरु जिणधरिज्जइ ॥

णरभउ पाविवि करणीउ एम — भवदहिणिवडणु णो होइजेम।
चिंतिव्वउ दसणु णाणु इट्ठु, — चरणु वि पुणु लोयत्तय वरिट्ठु।
धम्मु जि दहलक्खणलोयसारु, — सेविव्वउ एवु भवण्णसारु।
विणु धम्मे जीउ ण सुहिउ थाई, — ति विणु करचडिउ विसयलु जाइ।
इह चिंतवि पुणु गउ साहु तत्थ, — अच्छइ पिडिउ जिणगेहि तत्थ।
वहु विणए पुणु विण्णतु तेण, — कर आरोप्पेविणु णियसरेण।
भो रइधू पंडिव गुणणिहाण, — पोमावइ वरवसह पहाण।
सिरिपाल्ह वम्ह आयरियसीस, — महुवयणु सुणहि भावुह गरीस।
सोढल णिमित्ति णेमिहि पुराणु, — विरयउ जहपइ जण विहियमाणु।
तह रामचरित्तु विमहु भणेहि, — लक्खण समेउ इउमाण मुणेहि।
मुहु साणुराउ कहमित्तजेण, — विण्णतिमज्भु अवहारि तेण।
मुहु णामु लिहहि चंदहु विमाणि, — इय वयणु सुह णियचित्तिठाणु।

घत्ता

इय णिसुणिवि झपियसवणइ, — पडियण ताउत्तउ।
हो हो किं वुतउ एहु अजुत्तउ, — इउ गह कम्मे गुत्तउ ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

भव्वह गुणणंदउ कियसु कम्मु, — अरु णंदउ जिणवर भणिउ धम्मु।
राउवि णंदउ सुह पयसमाणु, — णंदउ गोवगिरि अचलठाणु।
णंदउ पुणु हरसीहसाहु एत्थु, — जिं भाविउ चेयण गुण पयत्थु।
सह अगिगतु जसु फुरइ चित्ति, — कलिकालधरियजित्ताणि सत्ति।
सिरि रामु चरित्तु विजेणएहु, — कराविउ सव्वहं जणिय णेहु।
तहु णंदणु णामें करमसीहु, — मिच्छतमहाउयदलणसीहु।
सो पुणु णंदउ जिणचलणभत्तु, — जो रायमहायणि माणु पुत्त।
सिरि पोमावइ परवालवंसु, — णंदउ हरसी संघवी जससु।

घत्ता

थालोहमहणसिह चिरुणंदउ इह, — रइधू कइतोयउविधरा।
मोहिक्क सम्माणउ कलगुणजाणउ, — णंदउ सहियलि सोवियरा।

इय वलहद्द पुराणे वुहयणविंदेहि लद्धसम्माणे सिरि पंडिय रइधू विरइय पाइयवधेण अथ विहिसहिए

सिरि हरमीहुस हु कंठिकठाहरणे महयलीयमुहमिद्धिकरणे सिरिरामगिरिवाणगमरणे एकादशमो सवी परिच्छेउ सम्मत्तो।

लेखक प्रशस्ति—

संवत १५५१ वर्षे फाल्गुण सुदी ६ सोमवासरे श्री काष्ठासंघे पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री कुवरसेण-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचन्द्रदेवास्तस्याम्नाये अग्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु सा हींगा भार्या खिमा पुत्र ५। सा. चोरू, सा. नानू, सा. रूपा, सा. धन्ना, सा. जगा। चोरू भार्या भजो पुत्र पोपा ''''''द्वितीये पुत्र कुलिया भार्या धरमिणी '' '''। सा. नानू भार्या प्यारी। सा. हींगा तृतीय पुत्र रूपा भार्या २ न्योरा पुत्र बोहिथ, द्वितीया भार्या राजी पुत्र तिहुणा। सा. हींगा चतुर्थ पुत्र धन्ना भार्या प्यारी पुत्र छाजू। सा. हींगा पंचम पुत्र सा. जगा भार्या डलो पुत्र बाघू एतेषां मध्ये सा. जगा तेन इदं बलभद्रचरित्रं लिखाप्य पं० हीगाय समर्पितं।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १७२ साइज १ ×४½ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर २६, ३० अक्षर। लिपि संवत् १६५६ प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६५६ वर्षे मार्गसिर सुदि त्रयोदशी चंद्रवासरे चित्रा नक्षत्रे श्री रुहितगढवास्तव्यदुर्गमकोटे तत्र अनेक शोभाशोभितजिनविहारे पातिसाह अकबर राज्य-प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे अनेकवादीभकुंभस्थलविदारणैकमदोन्मत्तकेसरीनं भव्यां-बुजविकासनैकभास्करोदयान अबोधजीवप्रतिबोधकान् भट्टारकश्रीहेमचंद्रदेवा तत्पट्टोदयकरणैकसूर्योदयान भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यासमुद्रान पंचरसत्यागीभट्टारक श्री जसकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे अनेकगुण-समुद्रान् अनेकघोरवीरतपसंयुक्तान् पंचमहाव्रतधारकान भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिदेवाः स्तत्पट्टोदयकरणैक-सूर्योदयान् भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्ति तथा भट्टारक श्री जसकीर्त्ति शिष्यपंचमहाव्रतधारकान तप-संयुक्तान् आचार्यश्रीगुणचन्द्रः। तस्यशिष्याणि पंच श्रुतव्रतधारक तु एकादशप्रतिमाप्रपालक स्वदेशपरदेशविख्यातमान् बाई जिदो तस्य शिष्या बाई सुहागो एतेषां गुरु-आम्नाये विजायिये सीतलगोत्रे रुहितगढवास्तव्य तन्मध्ये साहु लोला तयोः पुत्र नाथू तस्य भार्या मागो तयाः पुत्र ३ जिल्हा द्वितीयपुत्र स्वामिदास तृतीय भैरो; साह स्वामीदास तया पुत्र ३ प्रथम पुत्र साह खिउपाल द्वितीय डीगो तृतीय लालचंद; साहु भैरो तयो पुत्र ३ प्रथम-पुत्र राजपाल द्वितीय सूरपाल तृतीय पुत्र नौनू एतेषां मध्ये साह स्वामीदास तयो पुत्र प्रजापुरंदरदान सिरिय-सावतार नु विवेकसुंदर साह खिउपाल तस्य भार्या शालतोयतरंगणी चतुर्विधदानदायकी स्वधिपसो तयो पुत्र ३ प्रथम पंचमीव्रतोद्धरणधुरंधरा त्रिपंचाशक्रियाप्रतिपालका राजसभाश्रृंगारहारपंडितशिरोमणि साह पदारथ तस्य भार्या भामिणी पियक्षंदागुनमिणी वसुसभो तयो पुत्र कनकसिंह तस्य भार्या जीवा साहु खिउपाल पूजापुरंदर विवेकसुन्दर दीवानदीनशुजैनमभाष्रंग गवाह साह अग्रमल्ल तस्य भार्या भामिणी

प्रियछंदाणुगामिनी वधू जटो तयो पुत्र द्वइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितीय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुन्दरी। साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकारी जिनप्रतिष्ठाकरण इंद्रस्वरावतारान् भूपति नमा शृंगारहार चंद्रमा इव द्योतकारी विवेकसुन्दर साधुमनोहर तस्य भार्या मणा प्रियछंदाणुगामिणी भार्या नगीना तयो पुत्र चतुर्भुज तस्य भार्या भागऊंतो एतेषां मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विधदान-दायक साह अगरसइ तेनेदं शास्त्र वज्रभद्रपुराण लिखापित। लिखाय कारि वाई जिंदो नैदत्तं पठनार्थं। लिखतं पाडे केना। शुभ भवतु।

२१. परमेष्ठि प्रकाशसार।

अपभ्रंश। पत्र संख्या १८८. साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३ ३६ अक्षर। प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है। विषय धर्म। प्रति प्राचीन है।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

घत्ता

गयमासयठ ठाइ सिद्धपइठाणइ, कम्मरहिय गुणअट्ठजुवा।
इय पणपरमिट्ठिहिं केवलदिट्ठिहिं, रयणत्तयलहिकम्मचुवा॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय सिट्ठिमहन्तइ सिवसुहदुवइ, णिसुणि वि जे णिच्छउ करहें।
सुयणाणणिरिक्खिवि, सुमणिहरि वि धम्मु अहिंसाते धरहें॥ १॥
इय परमिट्ठि पचजगसारइं। भवियह जे भवदुत्तरतारइं॥
तह गुणरयणइ जिणवरवाणी। जा तयलोयपवित्तपहाणी॥
गणहरदेवपमुहमुणिणायइ॥ पयडहि ते चहुरिद्धिविरायइं॥
इन्दमुह जे सुरवरवगाइं। मुणिहिणो तह गुणगणइरिण सगाइं॥
तह पडिविवतिजयजहजत्थइ॥ सुरणरअक्चहि ते सुपसत्थइ॥
तह अप्पु मग्गमुणिविंदइ। पुन्नणिल्ल ते तिहुयण चंदइ॥
तह गुणपूयरयहि जे भव्वइ। पूयहिं ते हि ण रामरमव्वइं॥
जे तहि सुत्त पढहि तयकलइं। तह थुइ करहिं अमरअसरालइं॥
तें तह णाम जवहि एक्कमाइं। जे तह धम्मचित्त अणुरायइं॥
दो हि ऩमरणएर सुक्खविरायइ। जे तह धम्मु पसंमहिं चिराइं॥

पावहिं ते कमउत्तमगुत्तइं । जे तह णामु सुणहिं मरणंतइं ॥
कयणुमोयसुरालयपत्तइं । ....

घत्ता

जह सयलतियालइं, धम्मुधरालइ. णरसुरकरहिं महंतइं ।
जे भावणभावहि ते सुइ पावहि, सासयकालअणंतइं ॥ २ ॥

एहउ जहतयलोयपहुत्तणु । तह अम्हारि सकहसुकयत्तणु ॥
अप्पबुद्धि अमुणियवरगंथइं । आयमपमुहअणावमअत्थइं ॥
तक्कछंदलंकारविहीणउ । ण विवायरणु मुणमि अपवीणउ ॥
अक्खरमत्तययत्थहवज्जिउ । त जि कव्वु बुहयणहअवज्जिउ ॥
पुव्वसूरि जं कियसु कयत्तइ । तह जसपसरियभुवणमहंतइं ॥
जिणकमगोयमसामिणमंसिय । धम्मायरियसुगुणसुपसंसिय ।
जंबूसामितिकेवलिजुत्तइ । विण्हु दत्त पयु .... ।

× × × × × × ×

२८८ के पृष्ठ का अंश—

घत्ता

दहपणमयतेवणगयवासइं पुण.
विक्कमणिवसंवच्छरहे ।
तह सावणमासहु गुरपंचमिसहुं,
गथु पुण्णु तयसहसतहें ॥

मालवदेसदुगासे उवचलु । वट्टइ साहिगयासु महाचलु ॥
साहिणसीरुणामतह णंदणु । रायधम्म अणुरावउ बहुगुणु ॥
पुज्जराजुव णिमति पहाणइं । इसरदासु गन्धदइ अ णइ ॥
पत्थाहरणदेसु बहुपावइ । अहणिसि धम्महुभावणभावइ ।
तह जे रटणयसुपसिद्धइं । जिणवेइहरमुणिसुपबुद्धइं ।
णेमीसरजिणहरणिवसंतइं । विरयउ एहु गथु हरि सतइ ।
जइ तिंधु तह संभवइ पसत्थइं । संकरु णे मदासु बुहनत्थइं ।
तह गथत्थ भेउ परियाणिउं । एउ पसत्थु गथु सुहु माणिउ ।
अवर सघनइं मणिअणुराइय । गथ अत्थ सुणि भावणभावइ ॥

तेहिं लिहाइ णाणगथइं। इय हरिवंसपमुहसुपसत्थइं।
विरइय पढमंतमहि वित्थारिय। धम्मपरिक्खपमुहमणहारिय।
पढहिं भव्वजह पडिय लोइयइं। सांतहोइ सुणि अत्थमणोयइं।

घत्ता

पुरणयरणरेसह गोमह देसह—
मुणिगणसावयलोयमहँ।
घणुकणु मणिमारइं धम्मद्धारइं
करहि संति परमिट्ठिपहो॥

इय परमिट्ठिपयासमसारे अरुहादिगुणेहिं वरणणालंकारो अप्पसुद सुदकित्ति जहासत्ति महाकव्वु विरयतो णाम सप्तमो परिछेउ संमत्तो इति परमेष्ठिप्रकाशसार ग्रंथ समाप्तः।

२१. पाण्डवपुराण।

रचयिता मुनि श्री यश कीर्ति। भ पा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३४७. साइज १०॥x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३८। ४२ अक्षर। लिपि संवत् १६३६ रचना संवत्।

प्रारम्भिक भाग—

वोयसु सरधयरट्ठहो गयधयरट्ठहो सिरिलालसु सोरट्ठहो।
पणवेवि कहमि जिणिट्ठहो णयबलविट्ठहो कह पडवधयरट्ठहो।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे दी हुई प्रशस्ति—

× × × × × × ×

सिरिसरवण उववणगिरि विसालु, गंभीरपरिहउत्तगसालु।
तहिं निवसइ जालपु साहु भव्वु, णिउजी भज्जाले किउ अगव्वु।
सिरिअयरवाल वसह पहाणु, जो सपहं वच्छलु विणयमाणु।
तहो णंदणु वाल्हागयपसाउ, नवगावनयरे सो सइ जिआउ।
आवंदिणु हितमरुखानु दिट्ठु, तेणवी सम्माणिउ किउ विसिट्ठु।
घेनाही तहो पियणाम सिट्ठ, गुरुदेवभत्तपरियणहं इट्ठ।
तहो णंदणु णंदणु हेमराउ, जिणधम्मो वरि जसु णिच्चभाउ।
सुरतानसमारखतणइरज्जे, मनित्तणे थिउ पियभारकज्जे।

घत्ता

जें अरहंतु देउ मणिभाविउ, जासु पहुत्ते को वि ण ताविउ।

जेण कराविउ जिणचेयालउ, पुण्णहेउ चिररयपक्खालउ ॥ १ ॥

धयतोरणकलसहिं अलंकिउ, जसु गुरुत्तिहरिजणु वि संकिउ ।
परतियवधउ परउवयारिउ, जेणि सव्वु जणु धम्महपेरिउ ।
संघधुरधरु पयडु मुणिज्जइ, सावयधम्मेणिच्चमणु रज्जइ ।
सत्तवसण जें धुरें वज्जिय, सीलसयणवित्तिवि आवज्जिय ।
सत्तगुणहं दायारहं जुत्तउ, नवविहदाणविहिए णउचत्तउ ।
पणए पणयगुणें मउ भंजिउ, रयणत्तयभावणअणुरंजिउ ।
विणयंदाणु देइ जो पत्तहं, जिणु तिकालु पुज्जइ समचित्तहं ।
तासु भज्ज गुणरयणवसुंधरि, गयणाणामणेयगय जियसुरमरि ।
त्तवें चेलणदेविपहाणिय, जिणवरभत्तिहें णं इंदाणिय ।
अमियसरसवयणहिं सविहिंठिय, णउ तं वोलराय अणुरंजिय ।
उवरिकाहल्लुसीलजें धारिउ, रयणत्तइ हारें मणु पेरिउ ।
धम्मसवणकुंडलजें धारिउ, जिणमुद्दामुद्दिय संचारय ।
जिणगेहम्मिगमणणेउरसरु, तहो चंदणकंकणसोहिट करु ।
जिणवरमतसरणु कचुउ धरि, णाणुचरणहवणु तिलउ किउ णियसिरि ।
एयहं आहरणह जा सोहिय, भारु सुवेणवि कच्चणहि तमोहिय ।
तासु पुत्तु पल्हणु जाणिज्जइ, चाए तक्कुयगणहिं थुणिज्जइ ।
चीयउ सरणु वि जिणपयभत्तउ, कउलु तइउणदुवमणु चत्तउ ।

घत्ता

पल्हणणंदणु गुणणिलउ, मोल्हणमायपियरमणरंजणु ।
वोल्हा माहुहें अवरु सुउ, लक्खणणामु जणमण आणंदणु ॥ २ ॥

हिउराजहीयभज्जहिं समेउ, कीलम्ह हुउसंताणजोउ ।
णंदणु डूंगरु तह उधरणक्खु, हसराउ तइउ सुउ कमलचक्खु ।
एक्कहिं दिणि चिंतउ हेमराउ, जिणधम्महीणु दिणु अहलुजाइ ।
णिसुणिज्जइ चिरपुरिसह चरित्तु, हरिनेमिनाहपडवंह वित्तु ।
ता होइ मज्झ जम्मुवि सलग्घु, नासइ चिर संचिउ पाउ विग्घु ।
इय चिंतिवि जिणमंदिरहे पत्तु, जसमुणिपणविवि आक्खउ सचित्तु ।
सोउं इच्छमि पढवचरित्तु, पयडहि सामिय ज जेम वित्तु ।
विवरीउ संव्वुजणु वज्जरेइ, णरयावणि दुक्खहो णउ डरेइ ।

तं णिसुणिवि जंपिउ सुणिवरिंदु, चंगउ पुच्छिउ चुरयणहं चंदु।
पंडव चरित्तु अइगहणु जइवि, तुव उवरोहें हउं कहमि तइवि।
तं तहो वयणें गुणगणमहंतु, पारंभिउ सद्दत्थह फुरंतु।
सज्जणदुज्जणभउ परिहरेवि णियणियसहावरत्त विदोवि।

घत्ता

सज्जणु ण सहावु अकुडिलभावु, ससिमेहु व उवयारमइ।
परदोस पयासिरु अवगुणभासिरु, दुज्जणुसाघु व कुडिलगइ।

अन्तिम भाग—

पढमहिं वीरजिणिंदें अक्खिउ, पढ़इ गोयमेण णउ रक्खिउ।
सोहम्में पुणु जंबूसामें, विण्हुकुमारें णिग्गयणामें।
णंदिमित्त अवराजिय णाहें, गोवद्धणेण सुभद्धसहावें।
एमपरंपराइं अणुलग्गउ, अयरियाहं मुहाउ अवगउ।
सुणेसंन्तिवसुत्तु अवहारिउ, मुणिजसकित्तिमहिहिं वित्थारिउ,
पद्धडिया छंदो सुमणोहरु, भवियणजणमणसवणसुहंकरु।
करेवि पुण्णु भव्वहं वक्खाणिउं, दिढुमिच्छत्तु मोहु अवमाणिउं।
जं हीणाहीउ किंपि वि साहिउं, तं सुयदेवि खमउ अवराहउं।
जो इहु चरिउ वि पढइ पढावइ, वक्खाणेप्पिणु भवियणदावइ।
जो पुणु सद्दहेइ समभावें, सो मुच्चइ पुव्वकियपावें।
जो अ यरइ ति सुद्धि करेप्पिणु, सो सिउ लहइ कम्मच्छिंदेप्पिणु।
जो पुणु णय चित्तु णिसुणेसइ, सगु मोक्खु सोसिग्घु लहेसइ।
एउ पुराणु भवियह आसासइ, अयुविद्धि जसुरिद्धि पयासइ।
वइरिउ सित्तत्तणु णासावइ, रज्जत्थिउ विरज्जु संपावइ।
पियसल्लत्त पुत्तत्थिउ त पुणु, रज्जभट्ठु पुणु रज्जु चउगुणु।
इट्ठ समागमु घरु सपावइ, गउ परएसु सिग्घु घरु आवइ।
जाह सुहत्थिउ लाह सुहाउवि, देव देहिवरु मच्छरु मुंचिवि।
माणुसाहइगहसयलपयट्टहिं, मिच्छा भावसएहिं तुट्टहिं।

घत्ता

आवइं सव्वइं जाहि सउ संपइ सुहयरि पइसहिं।
पंडवचरिउ सुणंताहं विवाहविलासइं विक्रमहि॥

अवरु वि सिउ कल्लाणु पयासइ, पुव्वकियइं दुरियाणि णासइं।
संसारो वहितारि विसुलीलइ, अरुहवे विमुत्ति संहुकीलइ।
एउ चरिउ पविसे सिद्धक्खरू, पुणु पुण पुरिमावण्णिउ चिरू।
सुसमाहिय चित्तिहे जो भविइं, णउ संदेहु सो जि सुहु पावेइ।
भ वयणसंबोहणहो णामते, एउ गंथु किउ णिम्मलचित्ते।
णउ कवित्त चित्तिहिं धणलीहें, णउ कासुवरि वड्ढिय मोहें।
छंदु तक्कलक्खणु णउ जाणिउ; कम्मखयणिमित्तु वक्खाणिउ।
णंदउ सासणु सम्मइणाहें, णंदउ भ वयणु कयउच्छाहें।
णंदउ णरवइ पयपालंतउ, णंदउ दयधम्मु वरिसंहु कउ।
णंदउ मुणिगणु तउ पालंतउ, दुविहुधम्मु भवियणह कहतउ।
दाणु पूयवयं विहिपालतउ, णंदउ सावय गणुरयचत्तउ।
काल विणयणिच्चपरिसिक्कउ, कासविधण कणु दे तिन थक्कउ।
वज्जउ मंगलु गिज्जउ मंगलु, णच्चउ णारायणु रहसंकलु।
णंदउ वीलह पुत्तु गुणवंतउ, हेमराउ णिय पुत्त सहराउ।
अत्थणिरुद्धु वुहहिसो हव्वउ, धम्मत्थे आलसुणउ किव्वउ।
विक्कमराय हो ववगयकालए, महिसायरगह रस अ कालइ।
कत्तियसिय अट्ठमि वुहवासरे, हुउ परिपुण्णु पढमणंदीसरे।
णहु महिचन्दु सूरू तारे यणु, सुरगिरि उवहितारु सुहभायणु।
जांता णंदउ कालंतु हरंतउ, भवियजणहि वित्थारिउ जंतउ।

घत्ता

इय चउविहसंघह विहुणियविग्घहं णिण्णासियभवजरमरणु।
जय कित्तिपयासणु अखलियसासणु, पयडउ संति सयंभुजिणु॥

इय पांडुपुराणे सयलजणमणसवणसुहयरे सिरि गुणकित्ति सीसमुणि जसकित्ति विरइए साधु वीलहा पुत्त हेमराजणामकिए णेमिणाहजुधिट्ठरभीमाज्जुणणिव्वाणगमणं णकुलसहदेवसव्वट्ठसिद्धि गमणहलहद्दपंचमसग्गगमणपयासणो णाम चउतीसमो सग्गो समत्तो। इति पांडवपुराणं समाप्तं।

संवत १६३६ वर्षे भादवा सुदी १ प्रतिपत्तिथौ आदित्यवारे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदीदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत शिष्य पं० श्री ललितकीर्तिदेवा-तत् शिष्य पं० श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तस्याम्नाये खंडेलवालान्वयेश्री नेमिनाथचैत्यालये निवाई वास्तव्ये राइ श्री

दास, द्वि० नौलादे। तत्पुत्री द्वौ प्रथम चिरंजीव छीतर द्वि० चि० छजू। साह हेम भार्या हेमसिरि तत्पुत्रा-श्चत्वारः प्रथम फलहू भार्या फूलमदे। साह डालू भार्या डाहीदिव। तृतीय नाथू भार्या नायकदे तत्पुत्री द्वौ प्रथम चि० हट्ट द्वि० चि० रूपा। चतुर्थ साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम साह नेमा द्वि० खेमा तृतीय साह पचायण। साह नेमा भार्या निर्मासिरि तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह नानू द्वि० वाला। नानू भार्या नैणादे साह खेमा भार्या खेमलदे तत्पुत्र मोकल तृ० साह पचायण भार्या दाटमदे एतेषां मध्ये साह लेखाना मध्ये येन इदं शास्त्रं पाण्डवपुराणनामानं मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तये घटापितं दशलक्षणव्रतोद्योतनाथ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४३४. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०। ३०. अक्षर। प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है।

संवत १६०२ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशीतिथौ डावडूंबाशुभस्थाने श्रीहितहारकेशरप्रतापे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे, श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा-स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्त-च्छिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तस्याम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा साहगोत्रे साह सकतू भार्या नाऊ तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम साह धरणा द्वि० साह धर्मसी साह कमसी चतुर्थ साह आसा। साह धरणा भार्या हरखू तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह कील्हा, द्वि० संघभारधुरंधर जिणपूजापुरंदर साह कौल्हा, प्रथम भार्या पूरा द्वि० भार्या लाडी। साह हट भार्या चत्वार प्रथम शीता द्वि० लक्ष्मी तृतीय तोल्ही, चतुर्थ सोल्ही पुत्र चत्वारः साह बोहिथ, रामादास, महेश, दामोदर, एतेषां मध्ये सा० कौल्हाख्येन इदं पाण्डवपुराणाख्यं शास्त्रं लिखाप्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रशिष्यकमलकीर्तये दत्तम्।

२२. पार्श्वनाथपुराण।

रचयिता श्रीपद्मकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १७४ साइज ११×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२। ३६ अक्षर। प्रति शुद्ध है।

मंगलाचरण —

चउवीस वि जिणवरसामिय सिवसुहगामिय पणविवि अणुदिणु भावें।
पुणु कहमि भुवणपयासहो पयडिमपासहो जगहमक्तिमसमावें॥ १॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

सुपसिद्ध महामुणिणियमधरु, थिरु संगमयु इह सिद्धवरु।
तहिं चंदसेणणामेण रिसि, वयसंजमणियमह जासुकिसि।
तसु सीसु महामइ णियमधारि, णायवंत गुणायरु बंभयारि।

1. णगहो भत्तिसमावें 2. पाडकिमि 3. तहो

सिरि भाइवमेंगु महाणुभाउ, जिगुमेगुसीगु पुगु तसु जाउ ।
तसु पुव्वसिरोहिं पउमकित्ति, उप्पगु सीसु जगु जासुचित्ति ।
ते जिणवरसासगाविएग, कह विरइय जिणसेणहोमएण ।
गा खमयदोमविवज्जिएग, अक्खरपयजोडियलज्जिएग ।
त्तकइत्तु विजणेसुकइत्तहोइ, जइ सुरगाहि भावइंथु लोइ ।
जइ अम्हिहि चुक्किकवि किंपि कुत्तु, खःमयव्वउ सुयगाहि तगिरुत्तु ।

घत्ता

रिसिगुरुदेवपसाए कहिउ असेसुविचरिउ मइ ।
पउमकित्तिमुणिसुणिपुगवहो देउ जिणेसरू विमलमइ ॥

इति पार्श्वनाथचरित्तं समाप्त ।

जयवविरुद्धं एयं णियाणवय जिणिंदतुहसमंए ।
तह वितहयचलणकित्तिएं जउ पोमकित्तिरस ॥ १ ॥
इय पामपुराण भामयापुहवीजिणालयादिट्ठ ।
एवहि जीवियमरणे हरिसविसाउणपउमस्स ॥ २ ॥
सावयकुलंमिजम्मो जिण चरणाराहणं कइ कइत्तं च ।
एय इ तिणिजिणवरभवे भवें होतु पउमस्स ॥ ३ ॥
[1] एयसयइ वाणऊश र्त्तियमासे अमावसीदिवसे ।
लिहियं पासपुराण कइणा इह पउम[2] णामेण ॥ ४ ॥

संवत् १६११ वर्षे अषाढ वुदि ६ दिने शुक्रवासरे आल्हणपुरस्थाने श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्यं वसुधराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चौधरी गोत्रे साह गोगा तद्भार्या गारवंदे तत्पुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज । साह भादा भार्या भावलदे तयोः पुत्र चिरंजीव वूचा तद्भार्या वहुरंगदे । सा० महाराज तद्भार्या मैणा तयो पुत्र सद्गुरूपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान कल्पवृक्ष साह वेल्हा भार्या हरपसदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राण द्वि० भीमसी एतेषां मध्ये साह महाराज तेनेदं पार्श्वनाथचरित्र पोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्राय दत्तं ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या १०८ संवत् १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति

१ णवसयणउदश्रागुदए २ णाम पउमस्स

मे ४१×४४ अक्षर। इसमे १८ वीं संधि मे प्रथम प्रति से एक कडवक कम हैं।

संवत १४६४ वर्षे भादवसुदी २ शनौदिने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे श्री सहसकीर्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री नेमीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री गुणकीर्तिदेवा। श्री मदनचन्द्रदेवेन लिखितं पुस्तकं ज्ञान वरणक्षयार्थे पठनार्थं च। इद पार्श्वनाथग्रथं पडित रूपचन्द्रेन छुडायितं ५० सांतू पासि।

२३. पार्श्वनाथचरित्र।

रचियता महाकवि श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५×४० अक्षर। लिपि संवत १५७७. प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

पणविवि जिणईसहो णावपणासहो णिरूवमगुणमणिगणभरिउ।
तो इयभवणामहो पणविवि णामहो पुणु पयडमि तासु जि चरिउ॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

× × × × × × ×

विक्कमणरिंद सुपसिद्धकालि ढिल्ली पट्टणि धणकणविसालि।
सणवासी एयारहसएहि, परिवाडिए वरिसहं परिगएहि।
कसणट्ठमीहि आगहणमासि, रविवारि समाणिउ सिसिरभासि।
सिरिपासणाहु णिम्मलु चरित्त, सयलामलगुण रयणोह दित्तु।
पणवीससयाइं गंथहो पमाणु, जाणिज्जहि पणवीसहि समाणु।

घत्ता

जा चन्ददिवायर महिहरसायर ता बुहयणहि पढिज्जउ।
भवियहिं भाविज्जउ गुणिहि थुणिज्जउ. वरलेहयहि लिहिज्जउ॥

इय सिरिपासचरित्तं रइयं बुहसिरिहरेण गुणभरियं अणुमण्णियमणुज्जं णट्टलनामेण भव्वेण पुव्वभवंतरकहणो पासजिणिंदस्स चरू निव्वाणो जिणपियरदिक्खगमणो बारहमो संधी परिसम्मतो।

आसीदत्र पुरा प्रसन्नवदनो व्याख्याप्रदत्तश्रुतः।
सुश्रूषादगुणैरलंकृतमना देवे गुरौ भक्तिकः।
सर्वज्ञक्रमकंजयुग्मनिरतो न्यायान्वतो नित्यसो।
जेजाख्यो खिलचन्द्ररोचिरमलस्फूर्जद्यशो भूपतः॥ १॥

यस्यागजो जनि सुधीरिहराघवाख्यो व्याख्यानमंदमतिरुज्झितसर्वदोषः
अप्रीतकान्वयनभोगणपाव्वणेंदु श्रीमाननेकगुणरंजितचारुचेतः ॥ २ ॥
ततोभवत्सोढलनामधेयः सुतो द्वितीयो नृपतमजेयः।
धर्म्मार्थ सततयेविदग्धो जिनाधिपप्रोक्तवृषेन मुग्धः॥ ३ ॥
पश्चाद्वभूव शशिमडलभ समानः ख्यातः क्षितौ यस्वरजनादपिलब्धमानः।
सद्दर्शनामृतरसायनपानपुष्टः श्री नट्टलः शुभमनाक्षपितारिदुष्ट ॥ ४ ॥
तेनेदमुक्तमधिया प्रविचिन्त्या चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसारभूतं।
श्री पार्श्वनाथचरितं दुरितपनोदि मोक्षायकारितमितेनमुदं व्यलेखि ॥ ५ ॥

अहो जगाग्गुरु्लु चित्त करेवि.
स्वाणिकरु पयपिउ मज्झु सुणेहु,
इत्थि पसिद्धउ ढिल्लिहि इक्कु,
ममञ्क्खामि तुम्हह तासु गुणाइ,
ससंकसुहासमकित्तिहे धामु,
मणोहर माणि णिरंजणकामु,
जिणेसरपायसरोयदुरेहु,
सयागुरुभत्त गिरिंदुवधीरू,
अदुज्जणु सज्जणसुक्खपयासु,
असेसहंसज्जणमज्झि मणुज्ज,
महामत्थतह भावइ तेम,
सवंसणह गणभामणसूरू,
सुहोह पयासणु धम्मुरमुत्तु,
दयालयवट्टणजीवणवाहु,
पिया अइनल्लहयालिहेणाहु.

भिस ि सए सुभमंतुधरेवि।
कुभावइं सव्वइं हो तह खोहु।
णाह्सगु ण अवहएणाउं सक्कु।
सुरासुररायमणोहरणाइं।
सुरायले किएणरगाइयणासु।
महामहिमालउ लोयहं वासु।
विसुद्धमणोगइ णित्तइ सुरेहु।
सुह सुह ओजलहिव्वगहीरू।
वियाणियमागहलोयपयासु।
णरिन्दह चित्तपयासिय चोज्जु।
मरोयणराहं रसायणु जेम।
सवधव वग्गमणिच्छियपूरू।
वियाणियजिणवर आयमसुत्तु।
खलाणणचन्दपयामणराहु।

घत्ता

बहुगुणगणजुत्तहो जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनट्टलहो।
सो पयहिं णहगणु रमियवरगणु, लघइ सिरिहरहयखलहो।
पंचाणुव्वयधरणुससयल सुअणह सुहकारणु।
जिणमयपहसचरणु विममविसयासावारणु॥
मुढभावपरिहरणु मोहमहिहरणिद्दारणु।

पाचविल्लणिहलणु असममल्लहं उमारणु ॥
विच्छलविहाणपविहाणपवित्थरणु जिणमुणिपयपुज्जाकरणु ।
अहिं णदउ णट्टलसाहुचिरु, विवुहयणह मणधणहरणु ॥ १ ॥
दाणवंतुतक्किंदतिवरियतिरयणतक्किमेणिउ ।
मववंतुतक्किमयणु तिजयतावणु रइ माणिउ ॥
थइगहीरूत्तक्कि .लिं गरूयलहरिहिं हयसुक्खहु ।
अइथिरयरू तक्किमेरूवणचय रहियवतक्किनहु ॥
णउदतिनसेणिउं नउमयणु, ण जलहिमेरूपुणुननहु ।
सिंरवतु माहु जेजातणउं, जगिनट्टलु सुपसिद्ध इहु ॥ २ ॥
अगवगकलिंगगउडकेरलकण्णाडहं ।
चाडदिविहपंचालसिंधुखसमालवलाडहं ॥
जट्टभोट्टणेवालट्टक्ककुंकणमरहट्टहं ।
भायाणयहरियाणमगहगुज्जरसोरट्टहं ॥
इय एवमाइदेसेसु णिरु, जो जाणियइ नरिंदहिं ।
सो नट्टलसाहु न वण्णियइ कह सिरिहरकइविंदहिं ॥ ३ ॥
दहलक्खणजिणभासियधम्मु धुरधरणु वियक्खणु ।
लक्खणउवलक्खियमरउ परचित्तवल्लक्खणु ।
सुहिपज्जणावुहयणणिवणीउ सामालकरियउ ॥
क हलोहमयाहिमाणभयमयपरिहरियउ ।
गुरूदेवपियरपियभत्तियरू अयरवालकुलसिरितिलउ ।
णंदउ सिरिनट्टणु साहु चिरू, कइ सिरिहरगुणगणनिलउ ॥ ४ ॥
गहिरघोसु नवजलहरूव्वसुरसेलुवधीरउ ।
मलभररहियउनहयलुव्वजलणिहिवगंहीरउ ॥
चिंतियपरू चिंतामणिव्व तरणिवतेउल्लउ ।
माणिणिमणहररइवरूव्व भव्वयणपियल्लउ ॥
गंहीउवगुणगणमंडियउ पारनिम्महिय अक्खणु ।
जो स्रोवण्णियइं न केउणभणु, णट्टलुसाहु सलक्खणु ॥

इति श्री पार्श्वनाथचरित्रं परिसमाप्त ।

संवत १५७७ वर्षे आपाढ सुदी ३ श्री मूलसंघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्

शिष्य मुनि धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पहाड्यागोत्रे साह ऊधा तद्भार्या लाडा तत्पुत्र साह फलहू द्वि० गूजर । फलहू भार्या सफलादे साह गूजर भार्या गुणसरी तत्पुत्र पंचाइण इद शास्त्र नागपुर मध्ये लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्राय दत्तं ।

२४, पंचास्तिकायप्राभृत ।

मूलकर्त्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १४८, साइज ६॥×४ इञ्च प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है । विषय-सिद्धांत ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत १६३७ वर्षे आषाढ सुदि १४ दिवसे शनिवासरे मृगसिर नक्षत्रे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत शिष्यमंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पाढमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम जिनपूजापुरंदर संघभार-धुरंधर चतुर्विध दानवितरण कल्पवृक्ष सा० श्री नूना तद्भार्या नुनसिरि तयोः पुत्राः चत्वार प्रथम सा० वीरु तद्भार्या ल्हौकन, द्वितीय जिणदास तद्भार्ये द्वे प्रथम मरुवदे द्वि० लहुडा। तृतीय सा० चिमला तद्भार्या चहुरंगदे तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः पुत्र चि० दुरगा । द्वि० सा० हीरा तद्भार्या हिदिसिरि; तृतीय चि० किसनदास चतुर्थ सा० चौख्य तद्भार्ये द्वे प्रथम चादणदे द्वि० लहुडा तयो. पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० कांजू द्वि० चि० दशरथ। द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम सा० जाटू तद्भार्या जौणादे, द्वि० सा० नेता तद्भार्या नेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० करु तद्भार्या कौतिगदे एतेषा मध्ये सा० जिणदास तद्भार्या स्वरूपदे इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ।

२५, प्रद्युम्नचरित्र ।

रचियता महाकवि श्री सिंह सिद्ध । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७५, साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । पत्रों का रंग बदल गया है । अक्षर मोटे हैं ।

मंगलाचरण ।

समदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलियकम्मकलंकहो ।
घुइ करमि समत्तिए, अइणिरुभत्तिए हरिकुलगयणससंकहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय पज्जुण्णकहाए पयडियधम्मत्थकाममोक्खाए बुहरल्हणसुव कइसीह विरइयाए पज्जुण्ण संबु भाणु अणिरुद्धणिव्वाणगमन णाम पण्णारहमो संधी परिच्छेउ सम्मत्तो ।

आरम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

[1] हयदुरियरिणं,	तइलोयहरण।
भवभयहरणं,	णिज्जियकरण।
सुहफलकुरुह,	वंदिवि अरुहं।
पुणु सत्थमई,	फणहयगई [2]
वरवयणपया,	मणिधरिवि सया।
पयपाणसुहा,	तोसिय विवुहा।
[3] सव्वंगणिया,	बहुभंगणिया।
पुव्वाहरणा	सुविसुद्धमणा।
सुयपरवयणे,	णयगुणणयणी।
	[4]
कइयणजणणी,	तं दुविहहणणी।
मेहाजणणी,	सुहसयकरणी।
वरपुरपवरे,	गामे णयरे।
णिउ विउसमहे,	सुयमाणवहे।
सरसइसुसरा,	महु हो उवरा।
	[5]
इमवज्जरइ,	फुडु सिद्धकइ।
हयचोरभए,	णिसिभरि विगए।
पहरद्धट्ठिए,	चितवु हिए।

घत्ता

जा सुतउ अच्छइ तातहि पच्छइ णारिइक्कमणहारिणिया।
सियवत्थणियत्थिय कंमयहत्थिय अकयसुत्तसुयधारिणिया ॥ १ ॥

सा चवेइ सिविणंति तक्खणे,	कइ सिद्धचितवहि णियमणे।
तं सुणेवि कवि सिद्ध जंपिए,	मइ मज्झुणिरू हियकपए।
कव्व वुद्धि चितवु लज्जिउ,	तक्कछंद लक्खण विवज्जिउ।
णवि समासु ण विहित्त कारउ,	संधिसुत्तगथहं असारउ।
कव्वु कोइ ण कयावि दिट्ठउ,	महु णिघटु केणवि ण सिट्ठउ।

१गय २ घरेवि ३ भंग ४ दुविहणणी ५ल्हुडु।

तेण विहिणि चिंततु अच्छमि, खुज्जु होवि तालहलु वंछमि।
अ धुहोवि णवणट्टविच्छिरो, गेय सुणणि वहिरोवि इच्छरो।
त सुणेवि जाजयचमहासुई, णिसुणि सिद्ध जंपइ सरासई।

घत्ता

आलसु संनिल्लहिं हियउ म मेल्लहि, मज्झु वयणु एउ दिढुकरहि।
इउ मुणिवरवसे कहमिविसेसे, कव्वु किपि त तुहु करहिं॥ २॥

१
ता मलधारिदेव मुणिपुगमु, णं पच्चक्खु धम्मु उवसमु दमु।
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ, जो खमदमजमणियमसमिद्धउ।
तासु सीसु तवतेयदिवायरु, वयतवणियमसीज रयणायरु।
तक्कलहरि झंकोलियपरमउ, वरवायरणपवरपसरियपउ।
जासु भुवणी दूर तरु वकिवि, न ठिउ पच्छण्णु मयणु आसंकिवि।
अमयचन्दु णामेण भडारउ, सो विहरंतु पत्तु वुहसारउ।
सगिसरणंदण वणसंछण्णउ, मठविहारजिणभवणरवण्णउ।
वंभणवाडउ णामे पट्टणु, अरिणरणाहसेणदलवट्टणु।
जो भुंजइ अरिणरखयकालहो, रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो।
जासु भिच्चु दुज्जणमणसल्लणु, खत्तिउ गुहिलपुत्त गहि भुल्लणु।
तहिं सपत्त मुणीसरु जावहि, भव्वलोउ आणंदिउ तावहिं।

घत्ता

णियगुणअपसंसेवि मुणिहि णमंसवि, जो लोएहिं अदुगुंच्छियउ।
णायविणयमिद्धें पुणु कइसिद्धे, सो जइवरु आउच्छियउ॥ ३॥

× × × × ×

इय देवय णंदणु अवियण जणमणणयणाणंदणु।
वुहयणजणपयपत्य छप्पउ भणइं सिद्ध परमप्पउ॥

अन्तिम प्रशस्ति—

कृत कल्मषवृत्तस्य शास्त्रं शास्त्र सुधीमता।
सिद्धेन सिद्धभूतेन पापमामजभंजनम्॥ १॥
श्रामस्य शान्त्यं कमनीयवृत्तेः वृत्तं कृत्तं कीर्तिमता[२] कवीनां।

१ पिट २ कृतः

[१]भव्येन सिंहेन कवित्वभाजी, लाभाय तस्याश्च सदैव कीर्त्ति ॥ २ ॥

सव्वण्हू सव्वदसी [२]भववणदहणो, सव्वमारस्स मारो।
सव्वाणं भव्वयाणं समणमगहो सव्वलायाण सामी ॥ ३ ॥
सव्वेसु वत्थुरूवं, पयडणकुसलो सव्वणाणा व लोई।
[३]सव्वेहिं भूयथाणं करूण विरयणो सव्वयाल जयो सो ॥ ४ ॥
जं देवं देवदेव अइसय सहिदं अगंदारोणिहंतं।
सुंद्ध सिद्धोहरत्थं कलिमलरहिदं भाव भावाणु मुक्कं ॥
णाणायारं अणंतं वसुगणगणिणं[४] असहीणं मुणिच्चं।
अम्हाण त अणिद पविमलसुहिद देउ ससारपारं ॥ ५ ॥
जाहं मोहाणु बंध सररूहणिलए कि तवत्थं अणत्थ।
[५]संतं देहत्थपारं विवुहविरमण खिज्ज देदीयमाणं ॥
[६]वाए सोए पवित्त विजयदु भुवणे कव्वचित्तं विचित्तं।
दिज्जं त ज अणंत विरयदि सुइरं णाणलाहं विदितं ॥ ६ ॥

घत्ता

जं इह हीणादिउ कइमि साहिउ, अमुणिय सत्थपरंपरइं।[७]
तं खमउ भडारी विहुवणसारी वाए सरिसच्चायरइं ॥ ७ ॥

जा [८]णिरूसत्त[९]हंगि जिणवयणविणिग्गय दुहविणासणी।
होउ पसण्ण मज्झु सा तुहयरि इयरणकुमइ णासणी ॥ ८ ॥
परवाइयवायाहरू अच्छम्मु, सुअकेवलि जो पच्चक्खु धम्मु।
सो जयउ महामुणि अमियचन्दु, जो भव्वणिवह कइरवहिं[१०] चन्दु ॥
मलधारिदेव पयपोमभसलु, जगम सरसइ सच्छत्थ कुसलु।
तह पयरउ णिरू उवण्णइ[११] मयाणु, गुज्जरकुलणह उज्जोय भाणु ॥
जो उहय पवरवाणीविलासु, एवं विह विउसहो रल्हणासु।
तहो पणइणि जिणमइ सुहयसील, सम्मत वा र णं धम्मलील।
कइ सीहु ताहिं गब्भत्तरंम्मि, सभविउ कम्मलु जह [१२]सुरसरंमि ॥

१ भवेन २ सव्वदशी ३ सव्वेसि ४ गणित ५ सदेहयार ६ वीए ७ सव्वापरई ८ चिरू ९ भंगि १० कइरिविघ ११ उग्गायमाणु १२ जि णररूद्दसरम्मि।

जण वच्छलु मज्जणजाणि हरिसु, सुइ सत्थविविह वइराय सारसु[1]।
उप्पणु सहोयरू तासु अवरू, णामेण सुहंकरू गुणहं पवरू ॥
साहारणु लहु वउ तासु जाउ, धम्माणरत्तु अइ दिव्वभाउ।
तहा अणुवउ[2] मह एउवि सु सारू, सविणोउ विणसिरू कुसुमसारू ॥
जावच्छहि भत्तारि सुभाय, पर-उवयारिय जणजणियराय।
एक्कहिं दिणि गुरूणा भणिउ वच्छ, णिसुणहि चल्लप्पय कइराय दच्छ ॥
भोवाल! सरासइ गुणसमीह, किं अविणोवइ दिणगमहिं मीह।
घउविह पुमित्थर सोहभरिउ, णिव्वाहइहि एउ पज्जुण्ण चरिउ ॥
कइ सिद्धहो विरयतहो विणासु, सप्पणउ कम्म वसेण तासु।
महु वयणु करेहि किं तुव गुणेण, संतेण कूव छाया समेण ॥

घत्ता

किं तेण पहूवइ बहुधणइं, जं विहडियहण उद्धरइ[3]।
कव्वेण तेण किं कइयणेण, ज गछइल्लहं मणुहरइ ॥

गुरूणो पुणो पवत्त पवियप्प पुत्त[4] माधरहिंचित्ते।
गुणिणा गुण लहे विणु जइ लोओ दूसण थवइ ॥
को वारइ सविसेस खुद्दो खुद्दत्तणं प वियरंतो।
सुवणो छुड्डु मग्गत्थो अमुणं तोणियसहावच ॥
सभवइ वहुयविग्घ मणुयाण समय मग्गलग्गाणं।
मा होहि कज्जसिढलो विरयहि कव्वं वर तोवि ॥
सुह असुह ण वियाणवि चित्तं धीरेवि तेजए वएणा।
परकज्ज परकव्वा विहडत जेहिं उद्धरिय ॥
अमियमइदगुरूणं आएस लहेवि भत्ति इय कव्व।
णियमइणा णिम्मविय णंदउ ससिदिवायमणी जाम ॥
को लेक्खइ सत्थम्मे दुज्जणं विअ सुहयर।
सुयण सुद्ध सहाव करमउ लिरए वि पत्थामि ॥
जं किंपि हीण अहियं विउसा सोहतु त पि इह कव्वे।
विट्टत्तणेण रइय खमंतु मव्वेवि मुह गुरूणो ॥

१ सुइवंतु २ अणुधउ ३ उवयरइ।

अथ संवत्सरोऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५८७ वर्षे माघबुदि ५ सूर्यवासरे कुरुजांगलदेसे श्री सुलतान बब्बरसाहिविजयराज्यप्रवर्त्तमाने श्री सहारणपुर महादुर्गे निजर्द्धिवृद्धिप्रहसितस्वर्गे तत्र श्री सर्वज्ञ विहारो जिनोपदिष्टतत्त्वकथाकथनसारे श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये उभयभाषाप्रवीण-तपोनिधि श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकासनैकादिणमणिः भट्टारक श्री देवसेनदेवास्तत्पट्टे कविविद्याप्रधानचरित्रचूडामणि भट्टारक श्री विमलमति विमलदेवास्तत्पट्टे अनेकविद्यानिधान यमनियमस्वाध्यायध्याननिरतः भट्टारक श्री धर्मसेनदेवस्तत्पट्टे छत्तीसगुणनिलय पंचमहाव्रतधरणधौरेयान् भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे काममातंगे मृगेन्द्रान् भट्टारक श्री सहस्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे सिद्धांत अध्यात्म भावसद्मान् निहतछद्मान् भट्टारकहीनदीनउद्धरणसमर्थान् कलितानेकशास्त्रार्थान् भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे संयमविवेकनिलयान् विवुधकुलतिलकान् भट्टारकलघु भ्राता तथा श्री यशकीर्तिदेवास्तत्पट्टे वाचा शीतलान् भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैकपंचमुखान् लब्धानेकसुखान् त्रयोदश-विधचारित्राचरित्रनिर्जितकरण भट्टारकश्री गुणभद्रसूरिदेवः एतेषां आचार्याम्नाये अग्रोतकान्वये भूषणे गर्गगोत्रे जाल्हयहाडिये कलसौरिवालविहटवास्तव्य तथा मणि उद्योतकारीपदसमाश्रितशीलगांगेव परोपकारी साधु लाधा तस्य भार्या शीलशालिनी गुणमालिनी साध्वी साहणही। तस्य पुत्र २ प्रथम पुत्र पचमी उद्धरण धीरू सप्तक्षेत्रकृतनितविभवभारान् साधू मल्लू तस्य भार्या शीतलवचनश्रवणसमर्थ मुनिगणआहारदान दाइकी साध्वी करमचन्दही तस्य पुत्र विज्ञानकलासंयुक्तान् मातृपितृपदभक्तान् साह वसावणु तस्य भार्यो साध्वी धन्नेही पुत्र २। प्रथम पुत्र साधु गढमलु, द्वितीय कटारू, साधु लाधा द्वितीय पुत्र जिनप्रतिष्ठाजिनमहोत्सव करणकारणभर्त्तेश्वरावभारान् देवलोकातः चौधरी बलिया तस्य भार्या पुण्यपावनी साध्वीमायरही तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र जिनशासनप्रभावकान् जिनपूजा श्रयनादिकरणकारण भर्तेश्वरावतारान आश्रितजन कल्प पादान्, पंचाइतसभाश्रृंगारहारान् चौधरी भेजू तस्य भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वी कमेही। तस्य पुत्र ३ प्रथम पुत्र सदा सदाचारविचारसारपारगतान् साधु रावणु तस्य भार्या साध्वी इच्छाही द्वितीय पुत्र साधु तेजू। चिरंजीवि उगरदासु तृतीय पुत्र। चतुर्थ पुत्र चि० वेगराग। साधु बलिया द्वितीय पुत्र सुजनजनमनरंजन निजसरोवरमंडल कुमदिनीविकासनैकर्मणि उद्योतकान् चतुर्विधदानवितरण श्री यांसावतारान् भूपतिसभाश्रृंगारहारान चौधरी आसू तस्य भामिनी रूपेण निर्जितकामकामिनी गृहभारधरा-धारकी जिणचरणकमलसंसेवन चचरीवन कारणी दानशीलप्रियवदा साधू जिणदासही तस्य पुत्र विज्ञानकला सयुक्तम् चिरंजीवि कालदासु भार्या मोल्हही। साधु बालिया तृतीय पुत्र रत्नत्तकु डिडीरे पिंडपाण्डुरजसः पुण्डरीकखंडमंडितब्राह्माण्डभांडमाण्डयान निखिलगुणालंकृतशरीरान सः चौधरी चूहडु। तस्य वनिता शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वीरणमलही इदं प्रद्युम्नचरित्रं बाई तोलही उपदेशेन साधू चौधरी आसू तस्य भार्या साध्वी जिणदासही लिखापित।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७१. साइज ११×४½ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। प्रति प्राचीन है अक्षरों का रंग घिलमिल होने लग गया है।

संवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अजमेर वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा काला तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन तृतीय साह ईसर । साह पट्टिराज भार्या पउसिरी तत्पुत्र साह घणराज साह सुरजिन भार्या दानशीलवंती सुलखनी । साह घणराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषा मध्ये साह सुरजन भार्या पतिवृता त्रिगुणयुक्ता सुलखत इद शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्र लिखाप्य दशलाक्षणिक व्रतोद्यापनार्थे अर्जिका विनयश्रीवै दत्तं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६५. साइज ११।।x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४०x४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है तथा पूर्ण है ।

संवत्सरे १५१८ वर्षे शाके १३८३ प्रवर्त्तमाने सर्व्वधारिनाम्नि संवत्सरे उत्तरायने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे ६ षष्ठम्या तिथौ शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धिनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावदीन राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकीर्त्तिदेवास्तत शिष्य मुनि नेत्रानंदिदेवा । तत शिष्य ब्रह्म गाल्हा खण्डेलवालान्वये साह राऊ तद भार्या साध्वी राउश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्म्मसी धर्मसी । साह छाजू तद् भार्या साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषा मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थं पुत्रपौत्रकल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इद प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाप्य ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्तं ।

२६. बाहुबलिचरित्र ।

रचयिता महाकवि धनपाल । भाषा अपभ्रंश । पृष्ठ संख्या २७२. साइज ६।।x३।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया और प्रति पंक्ति में ३३x३८ अक्षर । रचना संवत १४५४ लिपि संवत् १५८६ ।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिसहणाह जिणपयजुयलु पणविवि णासियकलिमलु ।
पुणु पढमकामए वहो चरिउ, आहासमि रु यमंगलु ।।

प्रारम्भ में दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदेसमज्झि णयवट्टणु, वसइ विउलु पल्हेहणु पुरु पट्टणु ।
वीसलएउ राउ पयपालउ, कुवलयमहलु सयलु व मालउ ।
तहि पुरवाडवसजायामल, अगणियपुव्वपुरिसणिम्मलकुल ।
पुणु हुडराय सेट्ठि जिणभत्तउ, भोवई णामे वयगुणजुत्तउ ।

सुहडउ तहो णंदणु जायउ, गुरू सज्जणहं भुअणि विक्खायउ।
तहो सुउ हुउ धणवालु धरायले, परमप्पय पयपंकयरउ अलि।
एतहिं तहि जिण तित्थणमंतउ, महि भमंतु पल्हणपुरे पत्तउ।
सिरिपहचन्दु महागणिपावणु, वहु सीसहि सहि उणविरावणु।
ण वाएसरि सरिरयणायरू, सुमयफणयसुपरिक्ख णणायरू।
दिट्ठु गणीसें पयपणवंतउ, वुहु धणवालु विवुह जणभत्तउ।
मुणिणा दिट्ठउ हत्थु विणीए, हो सिवियक्खणु मज्झुपसाएं।
मं नुदेमि तुहकयमच्छयकरू, महु मुह णिग्गउ घोसहिं अक्खरू।
सूरि वयणु सुणि मणु आणंदिउ, विणएं चरणजु अलुमइं वंदिउ।
पढिए सत्थगुरू पुरउ अणालस, हुअजससिद्धि सुकइ आणावस।

घत्ता

पट्टणे खंभायच्चे, धारणयरि देवगिरि।
मिच्छामयविहुणतु गणि पत्तउ जोडणिपुरि ॥१॥

तहि भव्वहिं सुमोच्छउ वि हियउ, सिरिरयणकित्तिपट्टे णि हियउ।
महमंदसाहि मणुरंजियउ, विज्जहिं वाइय मउ भंजियउ।
गुरू आयसें मइं किउ गमणु, सूरिपुरि वंदिउ णेमिजिणु।
पुणु दिट्ठउ चन्दवाडु णयरू, णररयणायरू णं मयरहरू।
णं णाय कणयकसवट्टयउ, णं पुहइ रमणि सिरि सेहरउ।
उत्तंगु धवल सिरिकयकलसु, तहिं जिणहरू णं वासहरजसु।
मइंगंपिय लोयउ जिणभवणु, वहु समणालउणं समसरणु।
सिरि अरुहविंवु पुणु वंदियउ, अप्पाणउं गरहिउ णंदियउ।
हो किंणेहेंसि विणं गयइं, विहडंगइ किंसु हिं सगयइं।
भो भो परमप्पय तुहुं सरणु, महु णासउ जम्मजरामरणु।

घत्ता

पुणु मुणिवरचरणणमसियइं, अच्छमि जा तहि एक्कखणु।
ता पत्तउ सिरिसंघाहिवइ, दिट्ठउ वासद्धरू सुअणु ॥ २ ॥

आयववंस पउणिहिउडुपहु, आसि पुरिसु सुपसिद्धउ जसहरू।
तहो णंदणु गोकणु संजायउ, संभरिराय मंति विक्खायउ।

तहो सुउ सोमएउ सोमाणणु, कुणयगइदविंदपंचायणु।
तहो पेमसिरिभज्ज विक्खाइय, पियथमसीलगुणेहि विराइय।
एयहि सत्त पुत्त सजाया, णंजिणगिरए तव्व विक्खाया।
पढमु ताहृदय वल्ली सुरतरु, सघाहिउ णामे वासद्धरू।
जो दिव्वहाडिय चाउ पसिद्धउ, णट्टभजु णिवमतसमिद्धउ।
पुणु वीयउ परवारि सहोयरू, विणयकिउ हरिराउ मणोहरू।
तइवउ सुउ पल्हाउ सलक्खणु, मजायउ आणंदिय सज्जणु।
पुणु तुरियउ महराउ विसुद्धउ, गुणमडिय तणु हुव जसलुद्धउ।
पंचमु भामराउ मोहायरु, छट्ठउ तणउ णाम रयणायरू।
सत्तमु सयल वधुजण वल्लहु, सतणु णाम जाउ अइ दुल्लहु।
एयहिं सत्तहिं सुर्णहिं पसाहिउ, सोमएउ ण णयहिं जिणाहिउ।
जो पढमउ णंदणु वासाहरु, सयलकलाभउ ण छणससहँरू।
पेक्खेविणु सारग णरिंदे, वाहुवाणकुल कइरवचन्दे।
रज्जधुराधरू णियमणिजाणिवि, मतिपयम्मिठावउ सम्माणिवि।
अप्पि विदेसु कोसुवणु परियणु, भुजइ रज्जु सोक्खु णिच्चलमणु।

घत्ता

सो सुअणु गुणायरू वुहविहियायरू, दुत्थियजणणवकप्पतरू।
जिणपयपकयमहुयरू सिरिवासद्धरू, जा अच्छइ तहिं दुरिय हरू॥ ३॥

ता पेक्खिवि पडिय धणवालें, विहसि वि भणिउ बुद्धिविसालें।
भो सम्मत्त रयणरयणायर, वासद्धर हरिरायसहोयरू।
विणयगुणालकिय णिम्मच्छर, पडियजणमण रजणकोछर।
करि वि पइट्ट भव्वजणु रंजिउ, जे तित्थयरगोत्त आविज्जउ।
धण्णउं तुहु गुरुभत्तिकयायर, मइसुरकित्ति तरंगिणि सायर।
जिणवरपायपउमछमहुयर, सयल जीव रक्खणसुदयायर।
दुस्समकालपहावगुरुक्कउ, जिणवरधम्ममग्गिजणुवंकउ।
दुज्जणपउरुलोउ अकयायरु, विरलउ सज्जणु गुणिविहियायरू।
असहायहो जणिक्कोविणमण्णइं, धम्मपहावे लब्भइ उण्णइ।
धम्महीणु जणु जहि जहि गच्छइ, तहिं तहिं सम्मुहू को विण पच्छइ।
ते कज्जें धम्मायरू किज्जइ, धम्महीणु ण कयाविहुविज्जइ।
इय धम्महो पहाउ इउ घुट्टउ, णिसुणिवि वासाधर सतुट्टउ।

अंतरवेइमज्झि धणरिद्धउ, तहिँ काविट्ठविसउ सुपसिद्धउ।
वीरखाणिउप्पत्ति पवित्तउ, सूरीपुरू जणपरिपालतउ।
सूरसेणु णरवइ तहो णंदणु, अंधयवहिराउ रिउमद्दणु।
तहो पइवयपियपाणपियारी, णाम सुहद्दा देवि भडारी।
दसदसारतहिँ णंदणजाया, वीरांत्तिं तहु अणविक्खाया।
सायरविजउ पढमुउ विणीयउ, पुणअक्खोहुणाम हुउ वीयउ।
तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु, पुणु हिमवंतु तुरिउ जणदुल्लहु।
विजउणामु पंचमु सुह वद्धणु, छट्ठउ अचलुरिद्धि संकदणु।
सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु, पुणु अट्ठमउ तणुब्भउ पूरणु।
सुउ अहिचंदुणवमु पुणु जाणहु, दहमउ सुउ वसुए उपमाणहु।
एयह लहुअ कौंतिमदीवर, लावण्णें णिज्जिय अमरच्छर,
समुदविजउ सूरी पुरि थप्पिउ, चदवाडु वसुदेवहो अप्पिउ
तहो सुउ रोहिणीउ अगिंजणु, देवइणंदणु अणु जणद्दणु।
तहो संताण कोडिकुल लक्खइं, सजाया केवलि पच्चक्खइं।
पुणु संभरि णरिंद महिभुंजिय, जायववं सुब्भव ते रजिय।
आसवंभु चहुवाणु पुहइपहु, तहु मंतिउ जदुवणिउ जसरहु।
पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि, आसाउरि सुरिपय पकय अलि।
साहुणाम गोकणुमंती तहु, जिणवरचरणं भोरूह महुलिहु।
हुउ संभरि णरिंदु महिवालउ, वरहदेउ णाम पयपालउ।
सोमदेउ तहो मंति मणोहरू, सयलकला लंछिउ णं ससहरू।

घत्ता

पुणु सारंगु णरिंदु अभयचन्दु तहो णंदणु।
तहोसुउ हुउ जयचंदु रामचंदु णामें पुणु॥ १॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ, वासाहरूमंतिउ णीसंकिउ।
णियपहुरज्ज भारांदढकंधरू, विवुहविंदतरु पोमणकधरु।
एक्कुजि परमप्पउ जो झावइ, वे ववहार सुद्धणयभावइ।
जो तिकाल रयणत्तउ अंचइ, च णिउयरूइ कहवि ण मुच्चइ।
जो परमेट्ठि पच आराहइ, जो पंचगमतमहि साहइ।

णिवु को वि जइ खावहि सिचइ,
उच्छु को पिजइ सत्थे अखडइ,
दुज्जण सुअण महावे तारू,
अहतिट्ठइ दुज्जणु माविहडउं,
जह णो मीरू अवरिमल ढ रे,
जह रामउ पडु वत्थु णिरक्खउ,
अहसो दोसु लेउ जो पेछइ,

तो विणमो कहु वत्तणु मुंचइ।
तो विणसोमहु रत्तणु छडइ।
सूरू तवइ ससहरू सायरकरू।
जे हो तें सज्जणगुण पयडउ।
रत्तिए हुंगए दिणु सुलमउ कतारे।
तह खल सगें सु अणु परिरिक्खउ।
णिव्वाणतणि महु अरि कहिं अच्छइ।

घत्ता

गुरू लहुवण्ण सवित्थारय, सवण्णदिहियर विमलपह।
वर पयत्थ अत्थगालिय, पुण्ण लक्खिणासु कइ कह ॥ ७ ॥

अन्तिम पाठ—

चउविहसघसमुद्धरणु, वयणामय पीणिय विउसु।
पहचन्दु सुकइवु घणाहिवहो वासद्धरविवरतु जसु ॥

इय णिरिव हुवालदेवचरिए सुहडपव तणाय बुहधणवाल विरइए सिरि वासद्धरणामकिए वाहुवलि-देव णिव्वाण गमणो णाम अट्ठरमो परिच्छेउ समत्तो।

दिग्नाथोद्गारदारस्तुतवितंतयशो मडलस्याभयं।
राज्य लक्ष्मीनिराप्य गुणमणि निधये रामचन्द्राय दत्ता ॥
मारगचोणिपानार्पितमविवपदश्रीपतेन्योससिधो।
स्याज्ञावासाधरस्यस्थिरमकृतगुरू स्वर्गतोभ्येत्य पुण्यात ॥ १ ॥
यावत्नाग मेखलावसुमती यावत्सुवर्णाचलः,
यन्नारीकुचसकुजः क्रममित यावच्चतत्वाचित।
सूर्याचन्द्रमसौ च या ल्लभितो लोकप्रकाशोद्यतौ,
तावन्नन्दनु पुत्रपौत्रसहितो वासाधरः शुद्धधीः ॥ २ ॥

आदि भाग—

सिरिणेमिणहजिणपयजुयलु भत्तिए णविवि जगुत्तमु।
तच्च सुहभवमिघा हवहो भामम किंपि कुलक्कमु ॥

जम्बूदीवभरहाधामतरि,
गिरिसरिसीमारामणिरतरि।

सिरि वज्जसूरि गणिगुणणिहाणु, विरइउ महछद्दंसणपमाणु ।
महसेण महामइ विउसमहिउ, घणणाय सुलोयण चरिउ कहिउ ।
रविसेणें पउमचरित्त वुत्तु, जिणसेणें हरिवंसु वि पवित्तु ।
मुणि जडिल जडत्तणिवारणत्थु, णवरंग चरिउ खंडणु पयत्थु ।
दिणयरसेणें कंदप्पचरिउ, वित्थरिउ महिहिं णवरसहं भरिउ ।
जिणपासचरिउ अइसयवसेण, विरइउ मुणि पुंगव पउमसेण ।
अमियाराहण विरइय विचित्त, गणि अंबसेण भवदोसचत्त ।
चंदप्पह चरिउ मणोहिरामु, मुणि विण्हुसेण किउ धम्मु धामु ।
धणयत्तचरिउ चउवग्गसारू, अवरेहिं विहिउ णाणापयारू ।
मुणि सीहणंदि सद्दत्थवासु, अणुपेहा कह संपयासु ।
णवयारणेहु णरदेववुत्त, कइ असगविहिउ वीरहोचरित्त ।
सिरिसिद्धसेण पवयणविणोउ, जिणसेणें विरइउ आरिसेउ ।
गोविंदु कइ सणकुमारू, वह रयण सुमुद्दहो लद्धपारू ।
जयधवल सिद्धगुणमुणिउं भेउ, सुयसालिहत्थ कइजीव देउ ।
वर पउमचरिउ किउ सुकइ सेढि, इय अवर जाय धरवलय वीढ ।

घत्ता

चउमुहुं दोणु सयंभुकइ, पुप्फयंतु पुणु वीरू भणु ।
ते णाणदुमणिउज्जोयकर, हउ दीवोवमुहीणु गुणु ॥ ६ ॥

त णिसुणिवि वासाहरू जंपइ, किं तुहं बुहचित्तावलु संपइ ।
जइ मयंकु किरणहिं धवलइ भुवि, तोखज्जोउ ण छडइ णियछवि ।
जइ खयराउ गयणे गमु सज्जइ तोसिहंडि कि णियकमु वज्जइ ।
जइ कप्पयरू अमियफलकप्पइ, तो किं तरू लज्जइ णिय संपइ ।
जसु जे त्तिउ मइ पसरू पवट्टइ, सो तेत्तिउ धरणिय ले पयट्टइ ।
इय णिसुणिवि संघाहिव वुत्तउ, कइणाधणवालेण पउत्तउ ।
तुम्ह भत्ति भारेण दायवर, विरयमि कामचरिउ गुणसायर ।
पर दुज्जण भई मणुथिउ कायरू, खलहु ण छुट्टइ गयणिणि सायरू ।
कुडिलु गमणु परछिद्द णिहालउ, णयणायणु दुज्जोहु विसालउ ।
अह वह गामिउ परदुह दरिसउ, णिद्ध रू पिसुणु भुअंगम सरिसउ ।
णयरसु जडवाईव दुरासउ, दोसायरू रक्खसु चपलासउ ।

जो मिछत्त पंच अवगएणइं, छक्कम्महिं जो दिणिदिणिगम्मइं ।
जो सत्तंगु रज्जु सुणि हालइ, सत्तनच्च सद्दइ रसालइ ।
दायारहु गुणसहुं रत्तउ, सत्तवसणे जो कहिवि ण रत्तउ ।
अट्ठमूलगुणपालणतप्परु, सद्दसणअट्ठंगग्यणधरु ।
अट्ठसिद्धगुणगणसंभरणइं, अट्ठदव्व पुज्जइ जिणवरणइं ।
णवविहपुण्णपत्तदाणायरु, णवपयत्थ सुपरिक्खणणायरु ।
णवरसचरिउ सुणइं वरकाणइं, दहलक्खणधम्महिं रइ मणइं ।
एयारह अंगइं मणि इछइ, एयारह पडिमाउ णियच्छइ ।
वारहसावय वय परिपालइ, तेरहविहिचरित्त सुणिहालइ ।
चउदह कुलपक्खसु उवएसइ, चउदहविह पुव्वहि मणु वासइ ।
चउदह मगगण वित्थरु जोवइ, चउदह पुरि सगण उज्जोवइ ।

घत्ता

तहो वधउ रयणमीहु भणिउ, मज्जायमेरु सुपसिद्धउ।
जिणविंवपइट्ठु रएवि पुणु, जिणवरगोत्तु णिवद्धउ ॥ २ ॥

वासद्धर पियम वे घरिणिउ, परियण पोसण ण कुरु धरणिउ ।
वे पक्खुज्वल पर ण मरालिय, सीलतरुहि ण वेल्लि रसालिय ।
पोमकिय कुलसरणं पोमिणि, सुयणसिहंडिणि णं जलहर झुणि ।
पढवय सोल सलिल मंदाइणि, दुत्थिय जण जणणव सुहदाइणि ।
उदयसिरी होमाविणयजुय, चउविह सघहो कप्पमहीइय ।
उअरसिप्पि सुयरयण समुब्भव, संजायाकुलहरणं थुब्भव ।
पढमपुत्तु जसपालु गुणंगउ, रूवेण पच्चक्ख अणगउ ।
हुउ जयपालु वियक्खणुवीयउ, पुणु रउंपालु पसिद्धउ तीयउ ।
तुरियउ चदपालु सिरिमंदरु, पंचमु सुउ विहराज सुहंयरु ।
छट्ठउ पुणपालु पुणायरु, सत्तमु वाहडु णाम गुणायरु ।
अट्ठमु रूवएउ रूवट्ठउ, एयहिं अट्ठसु अहिं चिरु चट्ठउ ।
भाइय भत्तिज्जय संजुत्तउ, णंदउ वासाधरु गुण जुत्तउ ।
जं हउं पत्थिउ पसमियगव्वें, वासाहरसवाहिचभव्वें ।
सिरि वाहुवलि चरिउ जं जाणिउं, लक्खणछंदुतक्कुणचियाणिउं ।

घत्ता।

लक्खणमत्ता छंदगणहीणाहिउ ज भणिउ मइं।
त खमउ सयलु अवराहु वाएसरि सिवहंसगई॥ ३॥

विक्कमणरिंद अंकिय समए, चउदहसय-सवच्छरहं गए।
पंचास वरिस चउअहियगणि, वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि।
साईणक्खत्ते परिट्ठियइ, वरसिद्धि जोगणामे विग्रइ।
ससिवासरे रासिमयकतुले, गोलग्गे मुत्ति सुक्केसवले।
चउवग्गसहिउ णवरसभरिउ, वाहुवलिदेव सिद्धउ चरिउ।
गुज्जरपुर वाडवसतिलउ, सिरि सुहडु सेठि गुण गणणिलउ।
तहो मणहर छाया गेहिणिया, सुहडाएवी णामें भणिया।
तहो उवरि जाउ वहुविणयजुई, वणवालु विक्खु णामेण हुई।
तहो विणिण तणुब्भव विउलगुण, सतोसुतहयहरिराउपुण।
थहअरइ भम्मु जा महिवलए, सायरजलु जा सुरसरिभिलिए।
कणयहि जाम वसुहा अचलु, वासर होउहुव तोम कुलु।
जो पठइ पठावइ गुण भरिउ, जो लिहइ लिहावइ वर चरिउ।
सताणसिद्धि वित्थरइतहो, मणवछिउ पूरइ सयलु सुहो।
वाहुवलि सामिगुरुगण संभरणु, महुणासउ जम्म जरामरणु।

घत्ता

जो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ।
सो रिद्धिविद्धि संपय लहिवि, पच्छइ सिवपउ पावइ॥ ४॥
श्रीमत्प्रभाचन्द्रपदप्रसादादवाप्त बुद्ध्या धनपालदृक्तः।
श्रीसाधु वासाधरनामधेयं स्वकाव्यसौधेयकलसीकरोति।

इति वाहुवलि चरित्रं समाप्तं। शुभं भूयात्। सवत १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने वुधवासरे श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नन्द्याम्नाये श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा ....। श्री रतनकीर्त्तिशिष्येण ब्रह्मरतनेन लिखापितम्।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. साइज १०x४॥ इञ्च। प्रारम्भ के १३७. पृष्ठ नहीं है। शेष के पृष्ठ

शुद्ध और सुन्दर है।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५८४ वर्षे अश्विनवदि ६ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंन्द्रदेवास्तदाम्नाये व्याघ्रेरवालान्वये ठोला गोत्रे सा नाथू भार्या सुनखत तत्पुत्राः सा. सहजा सा. देडा सा. राणा सा. माधौ, माधो भार्या निपुरु तयोः पुत्राः सांगठा ऊदा, वीरसिंह, तेजा, राजा; डीडा भार्या मदना तयोः पुत्राः पारस ऊदा भार्या अमरी वीरसिंह भार्या राजा एतेषां मध्ये सा. माधौ इद पुराणं लिखाप्य ब्र. रत्नाय स्तदत्तं।

२७. भविष्यदत्तचरित्र।

रचयिता कविवर धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या १६७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३। ३७ अक्षर।

प्रारम्भिक पाठ—

जिणसासणसारु, णिद्धुअ[१] पावकलंकमलु।
समत्त विसेसु णिसुणहु सुय[२]पंचमिय फलु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

धक्कडवणिवंसे, माए-सरहो समुब्भवहो[३]।
धणसिरिदेविसुएण विरइउ सरसइ संभवेण॥ १॥

अहो लोयहो सुयपंचमिविहाणु, इउ जंतं चिंतिय सुहणिहाणु॥
दूरयरपणासिय पावरेणु, इह जा सा वुच्चइ कामधेणु॥
फलु देइ जहिच्छिउ मल्लोइ, चिंतामणि वुच्चइ तेण लोइ॥
इह जा जा वुच्चइ भुवण संति, अहमोक्खहो सुह सोगण पंति।
णरणारिहो विग्घइं[४] अवहरेइ, जो ज मग्गइ तहो तंजि देइ।
णिव्वाहइ जोणियसिवि भरेयो, सो पुण्णवंतु किं वित्थरेण।
उववास करइ जो सत्त सट्ठि उज्जमणंतहो सुहि तुट्ठि पुट्ठि।
जइ भज्जइ अंतरि विग्घु होइ तहो सद्दहाणे[५] फलु तंजि तोइ।

घत्ता

अहो किं बहु वायावित्थरेण एक्कवि चित्त महंतरेण।

१ णिद्धुव २ सुव ३ समुब्भवेण ४ दुक्खंइ ५ सद्दहाणि।

अणुमोएं ताहें तिहुं संपण्णगुणंतरेण ॥

अरि हरि अइरावइ दीवरहि — धणयत्तहो गेहिणि धणयलच्छि ।
उज्जमिय ताए चिरु सज्जुएणं, — भा वेय धणमित्तें तहिं सुएण ।
तहिं किंचिसेस णामुल्लयाइं, — अणुमोइय वल्लो अरसुआएं ।
तहो फलेण ताइ तिण्णिविलणाइं. — चउथइ भविसिवलोगहो गयाइं ।
पहिलउ धणयत्तहो घणयदित्ति, — इयरउ विण्णिवि धणमित्तु कित्ति ।
दिल्लउ भवि पंकय सिरि सरुव, — सुउ भविसयत्तु भविमा७रुव ।
तियलिंगुहणेवि विण्णिविसुतेय, — पहचूल रयण चूलाइं देव ।
नइयएभविमत्तु वि कणय तेउ, — हुउ दहमइं तेहें जि वि माणे देउ ।
चोत्थएभवि सुवपचमि फलेण, — णिदहु कम्मु झाणाणलेण ।

घत्ता

णिसुणत पढतह परिचितंतहं अप्पाहिया ।
धणवालें तेण, पचमि पंचपयार किया ॥

इय धनपालकृतं पंचमी भविष्यदत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति —

संवत १५६५ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेखा राजाधिराज कछवाहा करमचंद मोजाबाद मध्ये लिख्यतं रामदास । श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेव स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पटणी गोत्रे सागानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केल्ह पुत्रास्त्रयः प्रथम साह सलण भार्या लाडो तयोः पुत्रा सह डालू भार्या करी तयोः पुत्रौ राणौ द्वितीय रामदास । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय टेहू भार्या टिहुसिर । द्वितीय साह हीरा भार्या सरूप तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम डुग द्वितीय पवत तृतीय गोना डूगर भार्या धरमा पुत्रौ द्वौ प्र० मा० चाचा द्वि० घोराज पवत भार्या पूना तयो. पुत्रौ द्वौ प्रथम सोढा द्वि० छाजू । गोना भार्या गगा तयो. पुत्र माधव । तृतीय सा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इदं शास्त्र लिखाप्य ज्ञानपालाय ब्रह्म कोल्हाय दत्तं ।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १९ । साइज १० × ४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६।४० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

६ निगिरुन ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत १५८६ वर्षे मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे दोज बृहस्पतिवासरे। अजमेरमह गढवास्तव्ये राव श्री जगमलराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये गोधा गोत्रे संघभारधुरंधर स० पारस तद्भार्या पौमिणि तयो पुत्राः प्रथम जिनपूजा पुरंदर सं० फाल्हा द्वि० सा० स धू तृतीय जिनपूजापुरंदर स० हामा चतुर्थ सं० काल्हा भार्या पल्हासिरि......

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४०. साइज ११×५ इञ्च। प्रति प्राचीन तथा जीर्ण है। लिपि सं० १५८७.

लेखक प्रशस्ति—

संवत १५८२ वर्षे श्रावणसुदी ११ रविवासरे कुरुजांगलदेशे श्रीपालवशुभस्थाने श्री इब्राहिमसाहि-राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभाषाप्रवीणतपोनिधिः श्री माहवसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धांतजलसमुद्रः भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवास्तत्पट्टे विवेककलाकमलिनीविकासनैकदिनमणिः भट्टारक श्री देवसेन-देवास्तत्पट्टे कवित्वविद्याप्रधान भट्टारक श्री विमलसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेनदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टालंकार श्री यशः कीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिचूडामणि भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादीभकुंभस्थलविदारणैककेसरि भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिस्तस्य शिष्य चरित्रचूडामणिमंडलाचार्य मुनिक्षेमकीर्त्तिस्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे ववेईवास्तव्य पंचमीउद्धरणधीरश्रावकाचाररत साधुछाजू तद्भार्या साध्वी तस्य पुत्रास्त्रयः। प्रथमपुत्र साधु घी द्वितीय पुत्र साधु पाल्हा, तृतीय पुत्र साधु लाडमु तद्भार्या साध्वीकल्हो तस्य पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साधुगेल्हे तद्भार्या साध्वी धारी तस्य पुत्र चारि प्रथमपुत्र देवगुरुशास्त्रभक्त शास्त्रदानदायक साधु पचाइण। साधु गेल्हे द्वितीय पुत्र साधु रणमलु। तृतीय पुत्र साधु राजा। चतुर्थ पुत्र साधु भोजराजु। साधु लाडम दुतिय पुत्र पंडितगुणविराजमान पंडित हरियालु तद्भार्या शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साध्वीसरो। तस्य पुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र साधु जीवदु दुतियपुत्र साधु देईसुदा। तृतीय पुत्र साधु माणिकचदु। साधु लाडम तृतीय पुत्रसाधु सिंहराजु। तद्भार्या साध्वी सुनपा। पंचमी उद्धरणधीर साधुगेल्हे सुतु साधु पचाइणु तेन इदं श्रुत-पंचमीभविष्यदत्तशास्त्रं लिखापितं। पंचमीउद्धरणधीर श्रावकाचाररत चतुर्विधदानकल्पवृक्ष साधु जगमल उपकारेण।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११५. साइज ११।×४।। इञ्च। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत १५४०।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५४० वर्षे आसोज सुदी १२ शनिवासरे धनिष्ठा नक्षत्रे लिखितं हेमा। शुभं भवतु। श्री

मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरूपदेशात् मुनि श्री रत्नकीर्त्ति पठनार्थं खंडेलवालजातीय सा; लाला भार्या ललतादे सुत साह वीरम भार्या वील्हणदे भातृ परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रवनराजेन ज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं लेखयित्वा दत्त ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचियता पं० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा तथा प्रति पंक्ति में ३०×३७ अक्षर। रचना संवत १२३०

मंगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइ सिवसुहकरणइ पणविवि णिम्मलगुणभरिउ ।
आहासमि पविमलु सुअपंचमिफलु भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ में दी हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणयर ट्ठिएण, जिणधम्मकरण उक्कंठिएण ।
माहुरकुल गयण तमीहरेण, विवुहयण सुयण मणधणहरेण ।
णारायण देह समुब्भवेण, मणवयणकायणिंदियभवेण ।
सिरिवासुएव गुरुभायरेण, भवजलणिहि णिवडणकायरेण ।
णीसेसवलक्खगुणालयएण, मइवर सुपट्टा णामालएण ।
विणएण भणिउं जोडेवि पाणी, भासिए कइसिरिहरु भव्वप्पाणि ।
इह दुलहु होइ जीवहं णरत्तु, णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।
जइ कहव लहइ दइयहो वसेण, चउगइ भमंतु जिउ सहसरेण ।
तो विलउ जाइ गब्भेवि तेम, वायाहउ णहे सरयब्भु जेम ।
अहलहइ जम्मु ता वहु विहेहिं. रोयहिं पीडिज्जइ दुहगिहेहिं ।

घत्ता

जइ णिहय मायरि अय सामोयरि अवहरेउ णियमणि अणिसु ।
पयराण विहोणउ जायउ दीणउं ता सो णवि जीवेइ सिसु ॥ २ ॥

हउं आयउ मायउ महमइएपइं, सइं परिपालिउ मंथरगइए ।
कमयक्ख वरलासए सयावि, दुल्लहु रयणु व पुण्णेण पावि ।
जइ एवहि विरयमि णोवयारु, इयाडिय सिवसउ हलयवारु ।

ता कि भणु कइ मइ जायएण, जम्मण मह पीडा कारएण।
एउ जाणिवि सुललिय पयहिं सत्थु, विरयहिं वुहयण मणहरू पसत्थु।
महु तणिय माय णामेण जुत्तु, पायडिय जिणेसर भणिय सुत्तु।
वणिवइ भविसयत्तहो चरित्तु, पंचमि उववासहो फलु पवित्तु।
महुपुरउ समक्खहिं वप्पतेम, पुव्वायरियहिं भासीयउ जेम।
तं णिसुणेविणु कइणा पउत्तु, भो सुप्पट पइं वज्जरिउ जुत्तु।
जइ मुज्झ समच्छिउ णउ करेमि, हउं अज्जु कहव णिरू परिहरेमि।
ता किं आयइ महु बुद्धि थाइ, कीरइ विउलाएं ससुद्धियाइ।

घत्ता

कि वहुणा पुणु भणिएं लइ सुणु सावहाणु विरएवि मणु।
भो सुप्पट महामइ जाणिय भवगइ ण गणमि हउ मणे पिसुणयणु॥ २॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

णरणाह विक्कम इच्चकाले, पवहंतए सुहयारए विसाले।
वारहसय वरिसहिं परिगएहिं, दुगुणिय पणरह वच्छर जु एहिं।
फग्गुणमासम्मि वलक्खपक्खे, दसमिहि दिणे तिमिरूक्करविवक्खे।
रविवारि समाणिउ एउ सत्थु, जिह मइं परियाणिउ सुप्प सत्थु।
भासिउ भविसयत्तहो चरित्तु, पंचमि उववासहो फलु पवित्तु।
इह साहु पुरा सुपसिद्धु आसि, महियलु णामें गुणरयणरासि।
जिणपायपऊरुह दुयदुरेहु, अइ मंथरगइ णिज्जियसुरेहु।
वछल्लवयण विरयण छइल्लु, दिढयरकुसग्गतिक्खणमइल्लु।
ववहारभारपविइण्णवंधु, पियवयणहिं सम्माणिय सुबंधु।
तहो तणिय घरिणि सियणाम हूअ, विणयाइं गुणामल रयणभूअ।
तहें हाले णाम तणूउ जाउ, सम्मत्त विहूसण कलिय काउ।
णिंदिय असार ससारू साहु, सुहि सुहयरू लोहव धरिणि णाहु।

घत्ता

तहुं सुउ संजायउ जगि विक्खायउ साहु देवचन्दुक्खुवाणि।
जिण धम्मासत्तउ गुरूयणभत्तउ णिम्मलपर गुणरयणखणि॥ १॥

माहुर कुल णहयलछणससंकु, जिण भासिय धम्मे विमुक्कसंकु।
वुहणियर दाणविहि करणधुत्तु, णयमागणिरउ वज्जिय अजुत्तु।

तहो माढी णामें घरिणि जाय, णावइ लच्छी सयमेव आय।
कोयल इव सुहयर ललियवाणि, पविरइय कव्व जाणे वि जाणि।
तहो गब्भे समुप्पण्णउ रवण्णु, साहारणु सुउ णवकणयवण्णु।
पढमउ परियाणिय णाय मग्गु, जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु।
बीयउ णारायणु णयणिउत्तु, मणे परियाणिय जिणभणिय सुत्तु।
णिम्मलयर जसलच्छी णिहणु, माहुरगयणहयलसेय भाणु।
मइवंतु सत्तु पाविय पसंसु, जिणवर कह कय कण्णावतंसु।
कल्लाणलउ किरियाचतु साहु, सुद्धासउ मयरहरुव्व अगाहु।
तह रूप्पिणि णामे जाय भज्ज, सिरिहरहो सिरिवजाणियसकज्ज।

घत्ता

सज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविमलसीलालंकारिया।
बधवहं पियारी बीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया॥ २॥

तहो पढमु सुउ पटुणामे, हुउ णं अप्पउ दरसिउ कामे।
माणवरूउ लएप्पिणु लोयहो, धम्मपह वें माणिय भोयहो।
बीयउ वासुएउ सजायउ, वासुएउ जिह तिह विक्खायउ।
तज्जउ पुणु जसएव पवुच्चइ, जो णीमेसह बंधुहु रूच्चइ।
तोहडु तुरिउ समासहि पियरहिं, आवज्जिय णिम्मलगुण णियरहि।
पचमु लक्खण कलिउ सलक्खयणु, कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु।
पंचवि णं मणासय हो सिलीमुह, पचवि चंघवयण विरइयसुह।
पंचवि मय मयगण पंचाणण, पंचवि पिसुण जणोह भयाणण।
ताहं मज्झे जो सुप्पडु भायरू, वर वच्छल्ला णंदिय णहयरू।
जिणपय पुज्जकरण उच्छल्लउ, परियाणिय सत्थत्थर सुल्लउ।
जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ, लीलागइ जिय पोढल पिल्लउ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरू तिमिरतमोहरू णियजणणी णामंकियउ।
अब्भत्थेवि सिरिहरू कइगुणसिरिहरू पंचमि सत्थुकराविउ॥ ३॥

सुण्णट तणंय जाणणि जासुहमइ, तियरण विणिवारंय कुसमयरइ।
धम्मपसत्त हें मज्झखामहो, गुरुयण भत्तहें रुप्पिणि णामहो।
होउ मनाहि वोहि रयहारिणी, अट्टम महि लच्छी सुहकारिणी।

सुप्पट साहुहं वसु कम्मखउ, होउ तहय अवरूवि दुक्खक्खउ।
मज्झुएउ णउ अण्णु समीहमि, भवजलणिहि णिवडण णिरू वीहमि।
णंदउ संघु चउव्विहु सुंदरू, णियजसपूरिश्र गिरिवर कंदरू।
विलउ जंतु घणपहलुव्व दुज्जण, चिरू णंदंतु महीयले भज्जण।
१५३०
एयहो भरथहो संख पसाहिय, पंचदहजिसयफुड्डुनीसाहिय।
जामं जउण अमरसरि सुरालय, कुलगिरि तारा भयणधराचलन।
विजयायलगिरि ता स रसायर, सिसिर किरण दिणणायरय णायर।
ताम मुणिंदहिं एहु पढिज्जउ, भवियणु लोउ सयलु नोहिज्जउ।
सुन्दरयरभायरहं विराइउ, कामकोहमच्छर अवराइउ।
णियजणणीए समाणउं सुन्दरू, पुज्जाविहि विभविय पुल्लदरू।

घत्ता

सम्मत्ता लंकिउ धम्मिअसंकिउ दाणविहाण विसत्तउ।
सुप्पटु अहिणंदउ जिणपयवंदउ तवसिरिहर मुणिभत्तउ॥ ४॥

इय सिरिभविसयत्तचरिउ विवुहसिरिसुकइसिरिहर विरइए साहु णारायणभज्जा रूप्पिणिणामंकिए भविसयत्तणिवाणगमण भवतर कित्तणो णाम छट्ठोपरिछेउ सम्मत्तो।

२८. मदनपराजय।

रचयिता प० हरिदेव। भाषा प्राकृत। पृष्ट संख्या २३. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येकपृष्ट पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३५ अक्षर। प्रारम्भ के आठ पृष्ट नहीं है।

अन्तिम पाठ—

× × × × ×

विसहसेणु मुणिवरु अच्छेसइ, त चारित्त नयरु रक्खेसइ।
इय भणेवि गउ मोक्खहो जिणवरु, विसहसेणु पालइ संजमभरु।
अमुणन्तहं काइंवि साहिउ, मुणिवर तं खमतु ऊणाहिउ।
जिणवरिंद पयपंकयभसलिं, नरविज्जाहर गणहरकुसलिं।
मयणपराजए ण विरइय कह, हरएविरंति विवुहयणसह।

घत्ता।

गुणदोसपयाउ अक्खिउ भाउ महुल्लेण विरइय कह।

...उच्चयणियारी हरिसजणेरी नंदउ चउविहसंघहं ॥

इय मयणपराजयचरिए हरिएवकइ विरइए मयणपरायपराजय नामहु दुज्जउ परिच्छेउ सम्मत्तो।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७६ वर्षे कार्तिक सुदी १३ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये कुदंकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गगवाल गोत्रे सा डावर तस्य भार्या माल्ही तयोः पुत्रा त्रयः सा दूदा सा ... सा डुंगर। सा दूदा भार्या चाहू तयोः पुत्रौ सा० रणमल द्वितीय सा० चोखा सा० रणमल भार्या जिणमो। सा चोखा भार्या ...। सा दूदास्येन लिखापितं कर्मक्षयार्थनिमित्तं ।

२६. मृगांकलेखाचरित्र ।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७४. साइज १०॥ × ५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३६ अक्षर। प्रति स्पष्ट है। मंगलाचरण करने के पहिले लिपिकार ने भट्टारक महेन्द्रसेन को नमस्कार किया है। बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये हैं। रचना संवत् एवं लिपि संवत् १७०० ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है।

प्रारम्भिक पाठ—

पणविवि जिणवीरं णाणगहीरं तिहुयणवइसिरिसिगइजइं।
णिहयमविमयत्थं मीलपसत्थं भणमिकहाससिलेहसई ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

दोहा

ससिलेहा णियमत्त सम बारह संसमु सार।
जम्मणमरणु जलंजली दाण सुयणुं भवतार ॥१॥
करिनिणि तंपु सिवपुर गयउ, सोवणि सागर चन्द।
ससिलेहा सुरगेह भई तजि तिय तणु आनंणिदु ॥२॥
तहि गयभउ सिरवाण पद, पावसि सुदर सोइ।
इति सु भगौतीदास कहि पुणु भव भमणु ण होइ ॥३॥
... समार महि सोलि सरहिं सब काज।
... पर्माव सुर लहइं आमि भणहि मुणिराज ॥४॥

कट्टासंघहु माहुरगच्छए,	पुष्करगणि णिम्मल वयसच्छए।
जिणवाणी पुनंग मयाघरु,	अवइएणउ णावइ जणिगणहरू।

भविय कमल दिणयर णाणदिवायरु, जिणि जसकित्ति गुरु तवसायरु।
तासु सीस गुणचंद जसोहियउ, परवाइय मयजूहमि गाहियउ।
पउमणंदिसंघ महाधुर धारणु, दुसह तवयरण सु णिधारणु।
धम्मसरिसु सगुणि गमरूयउ, गुणभद्दसिपट्टि सीसु संभूयउ।
णाणि सयल ससि सत्थणालालउ, जिण दरिसावइ सदसु गगलउ।
भव्वासिय धरि सत्थ पयोहरो, तासु पट्ट गरु भार धुराधरो।
धर जस पसर पसाहिय महियलु, णियम महत्थ पराजिय णहयलु।
? टारउ महियलि जाणिजइ, साहिद्दंसणु जिहाणी णिजइ।
तासु सीसि यह चरिउ पयासिउ, भगवइदासे णाणिरूद भासइ।
अलि पढाउ अप्पाणु जम णिसुणु, ससिलेहा चरिय सरसणु।
लिहइ लिहावइ आइण्णइ जो, सो सुरणरपउ लहइ मणोहरो।
अमुणंतें णिरू जुंप अजुत्तउ, लक्खण छंदु हीणु जं वुत्तउ।
तं खमकरउ सहेविया, इयं अहिय गाहि सुसेविया।
सील चरित्त विचित्त पियारउ, पणु वुहसोहं करहुं गुण सार।
हीणु अहिउ किरयणु वियारण, ठाणि ठविजइ पवउ वयारण।

घत्ता

सगरहसय संवतीतदां, विक्कमराए महप्पए।
अगहण सिय पंचमी सोमदिणे, पुण्ण ठियउ अवियप्पए॥

दोहा

चरिउ ससि लेहपिहइ सुंदरु, जाम गगणि रवि ससि हरो।
मंगलयारु हवइ जणि से हीण, धम्मयसगाहिद करो॥

घत्ता

रहउ कोटि हिसारे, जिणहरि वर वीर वड्ढमाणस्स।
तत्थ विउ वगधारो, जोई दासो विवंभयारीउ॥
भागवई महुरीआ वत्तिगवर विचित्तमाहणाविएण।
णिवुहसु गंगारामो तत्थठिउ जिणहरसु मझयंतो॥

दोहा

ससिलेहा सुयवधुजे अहिउ कहियउ गोआसि।

णंदहु वुहयण जे सुयसायर सत्थ अत्थ पवियारण णायर।
णंदउ जो सो लिहइ लिहावइ णंदउ जो सो पढइ पढावइ।
णंदउ मो यारउ सपत्तीणउ, विज्जाकव्वरमायणलीणउ।
णंदउ सिरिहरि सिघु संघाहिउ, देवराज सुउ पवरगुणाहिउ।
जसु सताणि फई सु अमच्छरू, रइधू सजापउ गुण कोच्छरू।
जेण चरिउ मेहेसर केरउ, विरयउ वुहमण सुक्खजणेरउ।

घत्ता

जं मइ हीणाहिउ किं पि विसाहिउ, तं वुहं सुय सोहंतु णिरू।
कुपयं फेडेप्पिणु भव्वु ठवेप्पिणु, महिवित्थारहु सत्थचिरू॥ १॥

जयचद्धसमु, दयारवंसु।
अहुणा भणेमि पायडु कुणेमि।
इह अइरवालि, अण्णइ गुणालि।
एडिलहि गोत्ति, पयडियसु जुत्ति।
देदाहि दाणु, हुउ चिरूपहाणु।
तहु सुउ णिरुत्तु महिया पवित्तु।
तहु अंगजाउ, जायउ अपाउ।
पउतू पवित्तु, जिण धम्मतित्तु।
तणुरुहु विनासु कुलहर पयासु।
सइ पुण्णपालु, णामे गुणालु।
चाहडिय पत्ति, तहु सील थत्ति।
तहि गब्भिजाय, सुयविणिणभाय।
चदक्कतेय, वड्ढिय विवेय।
छा जागरिट्ठ, वुहयणमणिट्ठ।
तहु सुउ अवाहु, नाथू जि साहु।

घत्ता

णाथू माहहु सुयाविणिणव ललिय भुया, भाभणु-बीधा णामहुय।
ते णंदहु भूयलि णिण्णासियकलि, धणकणपुत्त पउत्तजुया॥ २॥

पुण्णपालमाहहु सुउ वीयउ, परउवयार विहाण विणीयउ।

देवसत्थगुरुभत्तिकयायरु, पउणसाहु णामें णियमायरू।
वील्हाही पिय यम तहु सारी, सीलाहरण विहूसणधारी।
ताहि तणुब्भउ बुहमणरंजणु, जाचय जण दालिद् विहंजणु।
जिण समयाणु भत्ति अणुरायउ, खेऊसाहु णाम विक्खायउ।
तहु भज्जा धणसिरि गुणवती, चन्दहु रोहिणी विपढवती।
णंदण चारि ताहि उरि जाया, चरिपाण ण जीव सहाय।
चारि दाण ण पायउ भूयलि, चारि वि दिग्गय णं जस णिम्मलि।
ताह पढमु गुणमाणरयणायरु, सहसराजु कुलकमल दिवायरु।
रतणपाल ही तासु जि भामिणि, णियभत्तारचित्त अणुगामिणि।
दद्धरणाहि हासु हुउ णंदणु, परियणजण चित्तह आणंदणु।
तहु पह जिणि जिणिउ मयको, बीयउ पहराजे गय सको।
सुरतरु णं दुत्थियजणपोसणु, परउवयारसारसुपयासणु।
मपणपालही तासु जि भज्जा, दाणपूजविहि करणमणोज्जा।
सोणपालु तहि णंदणु णंदउ, णिच्च जिणिंदसूरपिय वंदउ।

घत्ता

पुणु सुउ तहु तीयउ अइव विणीयउ जिणसासणरहधुरधणु।
रइपतिरंयणोवमु पालियकुलक्कमु दुत्थिय जणदुहभरहरणु॥

रइपति भामिणि, कुलगिहसामिणि।
कोढे णामा, पूरियकामा।
सुउ खेमकरु, सुक्खरियवक्खरू।
तुरिउ वि पुत्तो, गुणगणजुत्तो।
साहु हु भामिउ, पवरजसासिउ।
विज्जामदरु, वंसहु चंदरु।
बुह चूडामणि, णिम्मच्छरू गुणि।
होलू पायडु, सयलकलापडू।
तासु कलत्ता, सररुहवत्ता।
भणिय सरासइ, विणइं पयासइ।
मसि व फलासइ, चदपालु हुउ।
इहु परियण घुउ, ।

णंदउ सुक्खें,	मयलु पयक्खें ।
जा ससिदिणयरू	जा म धराधरू ।
जा दिवि इंदो,	जा म अहिंदो ।
ता खेमक्खो,	णंदउ दक्खो ।
मज्झु सहाई,	गुण अणुराई ।
जासु णिमित्तें,	णेहा सत्तें ।
विरइउ कव्वो।	इहु भइ भव्वो ।

घत्ता

तं सुइरू पड्ढवउ एहु महि पाढि जंतउ वुहयणहि ।
सिरि मेहेसर गणहर चरिउ णिब्भरू पूरिउ वहु गुणहि ॥

इय मेहेसरचरिए आइपुराणस्स अणुसरिए सिरिपंडियरइधू विरइए सिरि महाभव्व खेमसीहसाहु णामंकिए रिसहेसर णिव्वाणगमणं भरहचक्काहिवइ मेहेसरणिव्वाणगमणो वण्णणं अण्णोविसगगमणं णामतेरहमोसंधीपरिछेउ सम्मत्तो ।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १६१६ वर्षे माघ वुदि ११ बुधवारे कुरूजांगलदेश श्री रूहितगगढदुर्गे पातिसाहि हकब्बरराज्यप्रर्वतमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे उभयभापा प्रवीण तपोर्निधः भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगकीर्त्तिदेवा।तत्पट्टे सरस्वतीश्रगारहार तेरहविधिचारित्रचूडामणि गुणभद्रसूरिदेवास्तत्पट्टे अनेकतर्कव्याकरणछंदमाहि.यनाटकलहरीतरगान् अनेकआगमाध्यात्मरसखतारविराजामानान् परमपूज्य भट्टारक श्री भानकीर्त्तिसूरयः—।

प्रति न० २. पत्र सख्या १७३. साइज ६॥x४ इञ्च। प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं है। शेप पत्र सुन्दर और स्पष्ट है। लिपि सवत् १५६६।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत १५६६ वर्षे ज्येष्ठ वुदि ५ भौम दिने उत्तरापाढ नक्षत्रे श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे वादाकुंभविदारणैककेसरी भट्टारक श्री गुणभद्रदेवाः तेपाम्नाये अग्रोतकान्वये ··· · ···· ।

२१. यशोधरचरित्र ।

रचयिता महाकवि पुष्पदत । भापा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६५. साइज ११॥x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६। ४० अक्षर। प्रति प्राचीन तथा शुद्ध है।

आरम्भिक पाठ—

णिहुअणसिरिकन्तहो अइसयवन्तहो अरहन्तहो हयवम्महहो।
पणवेवि परमेट्ठिहो पविमलदिट्ठिहो चरणजुअल णयसयमहहो॥

कोंडिलगोत्तणहदिणयरासु, वल्लहणरिंदघरमहयरासु।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु, अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु।
चिंतइ इहु धणणारीकहए, पज्जुत्तइ कयदुक्कियपहाए।
कइ धम्मं णवल्ली का वि कहमि, कहियाइ जाइ सिवसोक्खु लहमि।
पचल्लु पवल्लु पंचल्लु महीसु, उप्पज्जइ धम्मु दया महीसु।
धुइ पवसु दमय छिरा मु जाइ, धम्मंधिवसइ पुणु पुणु वि होइ।
जाल वि अवर पडिमिल्लु देइ, इय धम्मसाइ मियवम्मकेउ।
पुच्छंदइ मासिगयाहि राउ, आणंदिय चइ सुवर णिकाउ।

घत्ता

घन गुट्ठ णँ जसु घणराणें, पइ पोमिउ तुहु खत्तधरू।
तवचरणविहाणें केवलणाणें, तुहु परमप्पउ परमपरु।

अन्तिम पाठ—

किउ उवराहि जम्म कडमउ एउ संवेगर।
तहा भव्वहु णासु पायडमि पयडउ वर॥ २६॥
जिणपयपणय छले साहु साहु, तहो सुउ देवा गुणवंतु साहु।
तहो तणुरुहु थीमलु णाम साहु, थीरो साहुणियहि सुलहु णाहु॥
सोयारु सुयणगुणगणसणाहु, इक्कइय चितइ चित्ति ताहु।
हो पंडियठक्कुर करहपुत्त, उवयारियवल्लहपरममित्त॥
कइ पुप्फयंत जसहरचरित्तु, किउ सुट्ठु सहलक्खणविचित्तु।
पेम्महि तहि राउलु कउलु अज्जु, जसहरविवाहु तह जणियचोज्जु॥
सयलहं भवभमणभवंतराइ, महु वड्ढिउ करहि णिरंतराइं।
ता साहु सम हिउ जिवड सव्वु, गंधव्वियवाहु भवभमण भव्वु॥
कन्नाणिउं पुरउ हवेइ जाम, संतुट्ठउ थीसलु साहु ताम।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु, साहहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठ॥
१३६८
पणसट्ठि सहिय तेरहसयाइं, णिवविक्कम संवच्छर गयाइ।

१ यह मूल ग्रन्थ कार का पाठ नहीं है। ग्रन्थ रचना के पश्चात् जोड़ा हुआ है।

वइसाहपहिल्लइ पक्खि बीय, रविवारि समित्थिउ मिस्सतीय ॥
चिरुवत्थुबंधि कइ कियउ जं जि, पद्धडियबंधि मइ रइउ तं जि ।
गंधव्वें कण्हयणंदणेण, आयइं भवाइं किय थिरमणेण ॥
महु दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कइउ, कइ वच्छराइं त सुत्तु लइउ ।

घत्ता

जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु, वंभयारि हय-जर-मरणु ।
सो माण णिसुंभणु धम्मणिरंजणु, पुप्फयंतु जिणु महु सरणु ॥

पाविणि सुभणि मुद्धवभाण, उवरूवएणें सामलवएणें ।
कासवगोत्तें केसवपुत्तें, जिणपयभत्तें धम्मासत्तें ।

वयसजुत्तें, उत्तमसत्तें ।
वियलियसंकें, अहिमाणंकें ।
पहसियतुंडि, कइणा खंडें ।
रंजियवुहसह, कयजसहरकय ।
जो आयरणइं, चंगउमणइं ।
लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ ।
जो मणि भावइ, सो णरु पावइ ।
विहुणिय घणरय, सासयसपय ।
जण वयणीरसि, दुरीयमलीमसि ।
कइणिदायरि, दूसहदुहपरि ।
पडिय कवालइं, णरकंकालइं ।
बहुरंकालइं, अइदुक्कालइं ।
पवरागारि, सरसाहारि ।
सुरहि चेलि, वरतंबोलि ।
महु उवयारिउ, पुण्णिण प्रेरिउ ।
गुण भत्तिल्लउ, णएणु महल्लउ ।
होउ चिराउसु, वरिसउ पाउसु ।
तिप्पइ मेइणि, धणकणदाइणि ।

१ यहाँ से मूलग्रन्थकार की प्रति का पाठ प्रारम्भ होता है।

विलसइ गोमिणि, णच्चउ कामिणि।
घुम्मउ मद्दलु, पसरउ मंगलु।
सति विग्रभउ, दुक्ख णिसुंभउ।
धम्मच्छाहें, सहु णरणाहें।
सुहु णंदउ पय, जय परमप्पय।
जय जय जिणवर, जय भवभयहर
विमलसु केवलु, णाणु समुज्जलु।
महु उप्पज्जउ, एत्तिउ दिज्जउ।
मइं अमुणाति, कव्वु करंति।
जं हीणाहिउ, काइं मि साहिउ।

घत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, णिहयसयल संदेहदुह।
महु खमउ भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवरणयरुह॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमारि देवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अग्गिविसगागमणं णाम चउत्थो परिच्छेउ सम्मत्तो।

संवत् १६१२ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे शुक्रवारे अश्लेखानक्षत्रे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्र आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीललितकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये छावडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना। प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि० दूलह भार्या दूलहदे तत्पुत्रास्त्रय.। प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० श्रीपाल। प्रथम सा० पोय भार्या पांसरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण। प्र० सा० सुरत्राण भार्या सुरत्राणदे। द्वि० सा थेल्हा भार्ये द्वे प्रथम थेल्हश्री द्वितीय कौतिगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डूंगरसी द्वि० चि० भेला, तृतीय सा० तोल्हा। प्र० सा० डूंगर भार्या दाड्यौंदे। तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास। तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम घोसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० सरवण द्वि० सा० ईसर। प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या वाली एतेषा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य सोलहकारणव्रतोद्यापनार्थं मंडलाचार्य श्रीललितकीर्तये दत्तं।

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ८६. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६ । ३२ अक्षर ।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७५ वर्षे मार्गसिर सुदी ४ शुक्रवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे सघभारधुरधर सघइ वीढा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र सं० तेजा तस्य भार्या लोचमदे तत्पुत्र दूलह । द्वितीय पुत्र श्रीपाल । साह दूलह तस्य भार्या दूलहदे तत्पुत्र चोखा द्वितीय आखा । चोखा भार्या चादखोद । साह श्रीपाल तस्य भार्या सरसति तत्पुत्र होला द्वितीय लाला तृतीय पुत्र वाला एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं यशोधरचरित्रं बाई पार्वती लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं श्री प्रभाचन्द्र योग्य दातव्यं ।

प्रति नं० ३ । पृष्ठ संख्या ७३. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३२ । ३६ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

संवत् १६१० वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पष्ठयांतिथौ सोमवारे स्वाति नक्षत्रेतक्षकगढमहादुर्गे श्री आदिनाथचैत्यालये पातिसाह श्रीसलेमसाहराज्यप्रवर्त्तमाने रावश्रीरामचन्द्र प्रतापे श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति-देवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा लोहर तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइंदं द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० मोकल । सा० गोइदं भार्या सोठी तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० पासा द्वितीय सा० आसा तृतीय सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण । सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० नेमा, द्वि० चि० खेमा । सा० आल्हा भार्ये द्वे प्रथमा नौजू द्वितीया सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम मीहातत् भार्या सफलादे द्वितीय चि० हेमा तृतीय चि० धोनह । सा० पचाइण भार्या गूजरि तत्पुत्रौ द्वौ प्र० वीरदास द्वि चि० गणा । द्वि० सा० दामा तद् भार्या चांदो तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम वोहिथ द्वितीय सा० वाला । सा० वोहिथ भार्या वालादे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सुरत्राण द्वि० सा० साधू । सा० सुरत्राण भार्ये सुरत्राणदे द्वि० सोभागदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० सारंग द्वि० चि० माधव तृतीय सा० मोकल भार्ये द्वे प्रथम भार्या मुक्तादे द्वि० लाडी तत्पुत्र सा० कुंभा तद्भार्या कौतिगदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० त्राणा द्वि० चि० पदमसी एतेषां मध्ये इदं शास्त्र श्री ललित-कीर्त्तये घटापितं ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या ६४ साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३० । ३४ अक्षर । प्रति शुद्ध और सुन्दर है ।

संवत १५८० वर्षे आसोज सुदी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री श्रथानासनगरे तत्पार्श्वे सिकराव द शुभस्थाने सुलितान साहि इब्राहिमराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे पूर्वाचलदिनमणि पट्तर्कतार्किकचूडामणि वादिमदद्विपसिंह विबुधवादिमददलनवादिकंदकुद्दाल सकलजीव संबुधर्मनियोजक भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत शिष्य तर्क व्यकरणछंदोलंकारसाहित्यसिद्धांतज्योतिषवैदक संगीत शास्त्रपारगत जिनकथित सूक्ष्म सप्ततत्व नवपदार्थ षट्द्रव्यपंचास्तिकाय अध्यात्मग्रंथसमुद्रमध्यमहारत्नसंदोहनिदान श्रीरत्नाकर संपूर्णकादशप्रतिमापालक श्री प्रभाचन्द्र गुरुस्वामिचरणस्मरणेण हर्षितचित्तनिरंतर निजालीभूत अग्र गीहा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये परमश्रावक सा० किता तस्य भार्या मीता तयोः पुत्रास्त्रय.। प्रथम सा० देवू तस्य भार्या राणी। द्वितीय पुत्र सा० नरसिंघु भार्या धामणि। तृतीय पुत्र सा० धनसी भार्या राणा। देवू पुत्र सा दोदू तस्य भार्या क्त्रोगी तयोरपुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र सा. धरमू भार्या देवल। द्वितीय पुत्र सा० दामा तस्य भाया सूहो। तृतीय साह विमलु चतुर्थ पुत्र गजपालु एतेषां मध्ये साह दोदू इदं यशोधरशास्त्र लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्त ब्रह्मचीदाय दत्त।

२७ रत्नकरण्ड शास्त्र।

रचयिता श्री पण्डिताचार्य श्रीचंद। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १४७. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०। ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है। रचना संवत ११०० लिपि संवत १६४०।

मंगलाचरण—

> सो जयउ उसहसिं जाणो, पढमो पढमं पयासिउ जेण।
> धुराईमु पवंतारणु दिग कालवसा धम्मो॥ १॥
> सो जयउ संतिणाहो, जियसहम्माइ णाम मिस्तेण।
> जम्माहउत्थिउणा, पाविल्लइ ईहिया सिद्धी॥ २॥
>
> जयउ विरिणीयउदो, धम्मको अक्खउ णिरवारणो।
> गिम्मलकेवलजोएहा उज्जोइय सयल भुवण यत्नो॥ ३॥
> सिद्धिविद्धि सयबुद्धि, तुट्ठि पुट्ठि पीयकर।
> सिद्ध सम्ब जयतु, चउवीसयि तित्थकर॥ ४॥

प्रारम्भ में कवि ने आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

> पणवेविणु जिणवयणुगयाइं, विमलइं पयाइं सुयदेवयाइं।

१ अणावरणो।

दंसणकहरयणु करंडणामु, आहासमि कव्वु मणोहिरामु।
एक्केक्करूपहाणु महामइल्ल, इत्थत्थि अणेयकई छइल्ल।
हरिणंदि मुणिंदु समंतभद्दु, अकलंकुपउ परमयविमद्दु।
मुणिवइ कुलभूसणु पायपुज्ज, तह विज्जाणंदि अणंतविज्जु।
वरसेणु महामइ वीरसेणु, जिणसेणु कुवोहि विहंगु सेणु।
गुणभद्द गणंकुर रुच्छमल्लु, सिरिसोमएउ परसमयमल्लु।
चउमुहु चउमुहु वपसिद्धभाइ, कइराय सयंभु सयंभु णाइ।
तह पुप्फयंतु णिम्मुक्कदोसु, वण्णिज्जइ किं सुयएवकोसु।
सिरिहरिसेकालिया माइसारि, अवर वि को गणेइ कइसंकारि।
हीणाहिं मइ संपय आरिसेहिं, किं कीरइ तहिं अम्हारिसेहिं।
तेह विहु जिणिंदे पयभत्तिआए, लइ करमि किं पि णियसत्तिआए।

अन्तिम पाठ--

सम्मत्तसीलसंजमतवेण छिण्णविणारिलिंगु अणुह।
सग्गग्गु गयउ सिरिचंदुरवि, तं चवि जत्थ महंत सुहं॥

इय सिरिचंदमुणिंद कए पयडियकोऊहलसए सोहणभव्ववित्तए परिओसियबुहचित्तए। दसणकह रय-णकरंडए सिद्धंतपओहितरंडए कोहाइ कसायविहंडए सत्थम्मिमहागुणसंडए गयणगई तुरय रूहाणय उदितो-दयराया दाणपवयणी सग्गगमणं णाम एकवीसिमो संधि परिच्छेउ समत्तो।

प्रशस्ति--

परमारद्धतमहत्त गुणड्ढणाई। कुंदाकुंदाइरियहो अण्णुइं॥
देसीगणु पहाणु गुणगणहरू। अवइण्णउं ण ं इ मइं मणहरू।
तत्र पहाव विभाविय वासउ। धम्मज्झाणं व णिहय पावासउ॥
भव्वमणो णलिणाणदिणेसरू। सिरिकित्तिसुविसिसुमुणीसरू॥
तासु सासु पंडिय चूडामणि। सिरिगंगेय पमुहं पउरावणि॥
पोलतमिये सुह पायसरोरुहु। मुणिउदुलिण मय णयण सुहारुहु॥
वरजस पसर पसाहिय महियलु। णियमहत्तपरिणिज्जियपण्णयलु॥
चउविहसंघमहाधुरधारणु। दुसहकाम संघोर णिवारणु॥
धम्मुव्वरिसि रूवें जसरूवउ। सिरिसुय कित्ति णामसंभूयउ॥
तासु वि परवाइय मय भंजणु। णाणावुहयणणिरवीरंजणु॥

---

१ सिरिचन्दकए २ अएणई।

नाण गुणोह रयणायरणायरु । चाउरंग गण वच्छल्लायरु ॥
दंदिय चवल मयण पयाहिउ । चउकसाय सारंग मिगाहिउ ॥
सिरि स्यचुन्त तसु सजायउ । णामें सहमकित्ति विक्खयउ ॥

घत्ता

तहो देवकित्ति पुणु सीसु हुउ, वीयउ अहो वासिणि मुणि ।
णारिंदु उदयकित्ति वि तहासुदइदु वि पचमउ भणि ॥

सो चरणपमलआयसपुराणु । णायत इ बहु सायमसमाणु ॥
आउरिय महागुणगणसिद्धु । वच्छल्लमहोवहि जय पसिद्धु ॥
तहो वीर इदुमुणि पदसासु । दूरुज्झिय दुम्मइ गुणणिवासु ॥
मरउएण महामागिनरखाणि । वयसालालकिउ दिव्ववाणि ॥
सिरिचदुणाम मोहण मुणीसु । सजायउ पंडिउ पढम सीसु ॥
तेणेइ अणेयछरियधासु । दंमणकह रयणकरंडु णामु ॥
किउ कव्वु सिद्धिय रयणोहधामु । ललियरक्खरु सुयणमणोहिरामु ॥
जो पढइ वहावइ एय चित्त । मई लिहइ लिहावइ जो णिरुत्तु ॥
आयरणाइं मण्णइ जो पमत्थु । परिभावइ अहिणिसु एउ सत्थु ॥
जिय ण णमायहि इ हि णहिं । तो लियइ ण सो पासंडिएहिं ॥
तहो दुग्किय कम्मु असेसु जाइ । सो लहइ मोक्ख सुक्खुब्भावइ ॥
इणारणाउ चरणाजुय भत्तएण । अमुणंते रुत्थु करंत एण ॥
ण हाउ वि लक्खण छंदहीणु । मई वुत्त इत्थ अह अहिउ हीणु ॥

घत्ता

तं खमउ मज्झु महु जणणिमिय, सुयदेवय अण्णाणमइ ।
जगपुज्जणिज्ज सिरिचदमइ, तहय भडारी विउस सइ ॥ १ ॥
एयारह ते णीमा वासमयाविक्कमस्स णरवइणो ।
जइय गयाहु तइया समणियं सुंदरं एय ॥ २ ॥
कण्णणरिंदहो रज्जसुहि सिरिसिरिवालपुरम्मि ।
बुहसिरि चंदें एउ किउ णंदउ कव्वु जयम्मि ॥
जयउ जिणवरु जयउ जिणधम्मु, जिणवयणुवि जयउ जइ ।
जयउ माहु सतउ सुहकर पणवंतहो भव्वयण कुणउ जयहो सासुहपरंपर ।

दाणपुज्जदयधम्मरय सच्चमउच्चपवित्त ।
भव्व जयंतु सया सुयण वहु गुण परिट्ठियचित्त ॥ ३ ॥
जयउ णरवइ णायणयणेत्त पय पालउ धम्मरउ ।
सयणवधु परिवारमंडियउ णिएणासियविउएणु जणु ॥
जेण णियय णिय कम्मि णिट्ठियउ, पिच्चइ मेहणिसइंहुत्तउ वरिसउ देउ सयावि ।
कित्तिधम्मु णरवइ लयउ जणु ग्वहणु ण कयावि ॥ ४ ॥
जाम मेंडणि जाम महणाइउ, कुलपव्वय जाम तहिं ।
जाम दीवगय सम्ब णरवइ, पायालु आयासलु ।
जाम मग्गु सुरणियरु सुरवइ, जा तारायणु चदुरवि जा जिण धम्मु पसत्थु ।
त म जणउ सुहु भव्वयणि, जयउ एहु जइ सत्थु ॥ ५ ॥
जो सव्वण्हु[१] तिलोयवइ सिद्धसाहु वभंडु ।
ताम जणउ सुहु भव्वयणि दंसण कह रयणकरंडु ॥

इति पंडित श्रीचंद्रविरचिते रत्नकरंडनाम शास्त्रं समाप्तं ।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १५६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर । प्रति पूर्ण हैं ।

संवत् १५८२ वर्षे शाके १४४७ प्रवर्त्तमाने द्वितीयायां तिथौ गुरुवारे घटी ५४ पुष्यनक्षत्रे घटी ४६ हर्षणनामजोग घटी ३ घटियालीपुरात् श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्न ये खंडेलवालान्वये साह गोत्रे चतुर्विधदानपूजासमुद्यतान् परोपकार निरतान् प्रस्वस्तचित्तानुमम्यक्त्वप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्मान रंजितचेतसान कुटुंबसाधारकान् रत्नभूपालंकृतदिविदेहान् आहारशास्त्रदानसमान्वितान् साह अवण तस्य भार्या साइति तस्य पुत्र साह सक्करू तस्य भार्या सुहडादे तस्य पुत्र साह गवरण भार्या पवयणी तस्य पुत्र साह वल्हू भार्या लच्मी पुत्र चेला द्वि० साह जालय भार्या जवणादे । तृतीय साह ईसर भार्या ईसरदे चतुर्थ पुत्र साह अर्जुन एतान् वाई भोली इदं शास्त्रं मुनिहेमकीर्त्तिये दत्तं ।

३३. वद्ध मान चरित्र ।

रचयिता श्री जयमित्रहल । भाषा अपभ्रंश, पत्र संख्या ५१ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६ । ४० अक्षर । लिपि संवत् १६८७ ।

---

१ सव्वण्हु

प्रारम्भिक पाठ—

पणवेवि जिणिंदहो चरमजिणिंदहो वीरहो हंसणणाणवहो।
सोणायहो णरिंदहु कुवलयचंदहो, णिसुणहो भवियहो पवरकहो।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जयदेवाहिदेव तिलोयगुरु, वड्ढमाणजिण भव्वसुहंकरु।
णिहयमयणरसोयणु घणणाणउं, कव्वु रयणु कुंडल भव पुण्णउ।
सो णंदउ जो णियमणि भावइ, वीर चरित्त विमलु आलावइ।
सो णंदउ जो लिहइ लिहावइ, रसे रंसेइ जो पढइ पढावइ।
जो पयत्थु पयडेइ सुभव्वह, माणुसहहंगु करेइ सुकव्वह।
णंदउ देवरामणंदणुधर, होलिवम्मु कण्णुवइ णायकर।
एहु चरित्त जेण वित्थारिउ, लेहाविवि गुणियणउवयारिउ।
होउ संति णिसेसह भव्वहं, जिणपयभत्तहं वियलियगव्वहं।
वरिसउ सयल पुहमि धरंधारेहिं, मेहजालु पावसवसु धारहं।
घरि घरि मंगलु होउ सउणाउ, दिणि दिणि धणघण्णह संपुण्णउ।
होउ संति चउविहजिणसंघह, देस वास णरणाह दुलंघह।
णंदउ सासणु वीर जिणेसहो, णिग्गउ सेणिउ णरयणि वासहो।
मंदर सिहरि होउ ज मुछ्छउ, घरि घरि दुंदुहि सद्दु अतुच्छउ।
होउ सयल पूरंत मणोरह, परमाणंदु पवड्ढउ ईह सह।
अमियविहउ सहएवह णंदणु, जंगि जगमित्त वि दुरियणि कंदणु।
विणएवंड सम्मय दय किज्जउ, सासय सुहु णिवासु महुदिज्जउ।
अल्हसाहु माइ सुमइ णंदणु, सज्जणजणमणणयणाणंदणु।
होहु चिराउ सणियकुलमंडण, मंगणजणदुहरोरविहंडण।
होउ संति सयलहं परिवारह, भत्तिय वड्ढउ गुरुवय धारहं।
पउमणंदि मुणिणाह गणिंदहु, चरण सरणु गुरु कइ हरि इंदहु।
ज हीणाहिउ कव्वु रसढउ, पउ विरइउ सम्मइ अवियढइं।
त सुयणाण देवि जगसारी, महु अवराहु खमउ भडारी।

घत्ता

दयधम्मु पवत्तणु विमलु सुकित्तणु णिसुणंतहो जिण इंदहो।

१ मणण्ह २ आयणगर्हं ३ पयडे ४ धणघणह।

जं होइ सुधरणउ हउमणिमरणउ, त सुहु जगिहरि इंदहो ॥

इय सिरी मडूहमाणकव्वे पयडिय चउवग्गगरमभव्वे सेणियअभयचरित्ते विरइय जयमित्त हल्लसुकइत्तो भवियणजणमणहरणो, सयहि वहोलिसम्मकणहरणे सम्मइजिण णिव्वाण गमणो णाम एयारहमो सधि परिछेउ सम्मत्तो।

संवत १६२७ वर्षे अषाढ़ सुदी ५ श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रस्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तत् शिष्यमंडलाचाय श्री ललितकीर्तिदेवस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पांड्या गोत्रे साह पीथा तस्य भार्या पिउसिरी तस्य पुत्र साह चाचा तस्य भार्या चउंसिरी तयोः पुत्रास्त्रयः प्रथम पुत्र वाला तस्य भार्या बलालदे तस्य पुत्र छोठा इत्यादि। साह चाचा द्वितीय पुत्र स. माधव तस्य भार्या माणिकदे। तस्य तृतीय पुत्र सा. नेता तस्य भार्या नारंगदे। सा. पीथा तस्य द्वीतीये पुत्र साह धमा तस्य भार्या करणादे इत्यादि। साह पीथा तस्य तृतीय पुत्र साह रतनपाल तस्य भार्या ·रणादे तस्य त्रयः पुत्राः प्रथम पुत्र साह गोदा तस्य भार्या कोडमदे तस्य पुत्र ५ प्रथम पुत्र ईसर तस्य भार्या अह-कारदे तस्य पुत्र भोजराज। साह गोदा द्वि० पुत्र णोता तस्य भार्या नयणादे। तृतीय पुत्र गठमल चतुथ साह कल्याणमल पंचम पुत्र चिर कान्हड। साह रतनपाल तस्य द्वि० पुत्र साह धामा तस्य भार्या साध्वी धारादे द्वि० भार्या लाडी तयो पुत्र चि० श्रीपाल द्वि० पुत्र पासा इत्यादि। साह रतनपाल तस्य तृतीय पुत्र सा० तेजातस्य भार्या तेजलदे द्वि० भार्या त्रिभुवनदे तस्य पुत्र चि० सांगा इत्यादि। साह पीथा तस्य चतुर्थ पुत्र साह वाजू तस्य भार्या लक्ष्मी तयो पुत्र चि० नानू द्वि० पुत्र चि० हेमराज इत्यादि। साह पीथे तस्य पचम पुत्र साह वाजू तस्य भार्या बहुरगदे द्वि० भार्या साध्वी लाछि तस्य पुत्र साह छीजू तस्य प्रथम भार्या छीतरदे द्वि० भार्या लध्वी साध्वी स्वरूपदे इत्यादि। साह पीथा तस्य षष्टम पुत्र साह दासा तस्य भार्या दाडमदे तयोः पुत्राः सप्त प्रथम पुत्र साह पदारथ तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र महेश तस्य भार्या महिमदे तस्य द्वि० पुत्र साह हीरा तस्य भार्या हरषमदे तस्य पुत्र तोल्ह तस्य भार्या तुल्हसिरि तस्य साह दासा तस्य तृतीय पुत्र साह आंवा तस्य भार्या अंबसिरि तस्य पुत्र चि० सांगा तस्य भार्या सिंगारदे द्वि० पुत्र कान्हा .... साह दासा तस्य चतुर्थ पुत्र साह खीवा तस्य भार्या खिवसिरी, साह दासा पंचमं पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या कुंभसिरि। साह दासा तस्य षष्टम पुत्र साह टेह भार्या टेहसिरि तस्य पुत्र .... । साह दासा तस्य सप्तम पुत्र साह दुरगा तस्य भार्या दुर्गादे इत्यादि एतेषां मध्ये साह वाजू तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्र निजभुजोपार्जितवित्तेन आहाराभयभैषजशास्त्रदानवितरणतत्परेण साह नानू तेनेदं श्रेणिकचरित्र निजज्ञानावरणीय कर्मक्षय निमित्तं लिखाप्य ब्रह्म सोम य घटापितं।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५४. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२×४६ अक्षर। प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है।

संवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बृहस्पतिवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह नाथू तस्य भार्या तोला तत्पुत्र निहुण तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस। धाना भार्या नेमी तत्पुत्र कनमल, हेमराज, बोल्ह, भरथा, श्रीवत। रचा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या करमा, द्वि. भार्या गागी एतेषां मध्ये इदं शास्त्र लिखाप्य नेमी आर्यका विनयसिरी जोग्यदत्त।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६२ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति नवीन है तथा पूर्ण है।

संवत् १६३१ वर्षे माहवुदि ११ शुक्रवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रांवका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र तृतीय साह खेम तस्य पुत्र चाटमल्ल द्वि० पुत्र साह बील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेल्हा भार्या तिहणश्री तस्य पुत्र नानग। तृतीय पुत्र साह सांना तस्य भार्ये द्वे० प्रथम महरखु द्वि० मानं तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र नानू द्वि० पुत्र हीरा तृतीय पुत्र डिडरा चतुर्थ पुत्र पाला। हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल। पाला भार्या प्रतापदे तत्पुत्रा पुत्र द्वौ प्रथम हेमराज द्वतीक नेमदास। एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं घटापितं साह हीरा दशलाक्षणीक व्रतनिमित्य मुनिश्रीरत्नानि ? मालपुरा मध्ये साह धान, चपा, हेमा, हीरा, के देहुरा (मंदिर) श्री भगवान्दास राज्ये।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ५६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति सुन्दर और स्पष्ट है।

संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाडणूपुरवरे आदिनाथचैत्यालये पेरोजखान राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत शिष्य मुनि जयनंदि तत् शिष्य ब्रह्म अचलू लिखित कर्मक्षयार्थं ब्रह्म श्रीराय दत्तं।

२३. वर्द्धमान कथा।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १७ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ३२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७×३८ अक्षर। लिपि सुन्दर है। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

तयसिरिभसारहो णिज्जियमारहो पणविवि अम्मइं जिणवरहो।

वयजिणगत्तिहेफलु अक्खमि णिम्मलु भवसयसंचयदुहहरहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय जिणरत्ति विहाणु पयासिउ, जह जिणसासणे गणहर भासिउ।
जं हीणाहिउ काईमि वुत्तउ, तं बुहयण महु खमहु णिरुत्तउ।
एहु सत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ।
जो णरु णारि एहु मणिभावइ, पुण्णंह अहिउ पुण्णफलु पावइ।

घत्ता

सिरि णरसेणहो सामिउ सिवपुरगामिउ वड्ढमाणुतित्थंकरु।
जइ मग्गिउदेइ करुणुकरेउ, देउ सुबोहिउ लाहु परमेसरु।।

इय सिरिवड्ढमाणकहापुर णे सिघादिभवभाववण्णाणो जिणराइविहाणफलसंपत्ती सिरिणरसेण विरइए सुभव्वयणणिमित्तो णाम पढमो परिछेउ सम्मत्तो।

३४. षट् कर्मोपदेश रत्नमाला।

रचयिता श्री महाकवि अमरकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या १०४ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर दस पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। अपभ्रंश भाषा का बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है। कर्म सिद्धांत का सविस्तृत वर्णन किया गया है। रचना संवत् १२७४ लिपि संवत् १५६६।

मंगलाचरण—

परमप्पयभावणु सुहगुणपावणु, णिहणिय जम्मजरामरणु।
सासयसिरिसुन्दरु पयणपुंरदरु[१], रिसहु णविवि तिहुवणसरणु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

छक्कम्मिहिं सावउ जाणिज्जइ, छक्कम्मिहिं दिणदुरिउ विलिज्जइ।
छक्कम्मिहिं सम्मत्तु[२] वि सुज्झइ, छक्कम्मिहिं घरकम्मि ण मुज्झइ॥
छक्कम्मिहिं जिणधम्मु मुणिज्जइ, छक्कम्मिहिं णरजम्मु[३] गणिज्जइ।
छक्कम्मिहिं उवसग्गु ण ढुक्कइ, छक्कम्मिहिं रिद्धिहिं णवि चुक्कइ॥
छक्कम्मिहिं दुक्कम्मइ तुट्टहिं, छक्कम्मिहिं पमायञ[४] हट्टहिं।

---

१ पणय २ सुद्धइ ३ कम्मु ४ पमादइउपट्टइ।

घत्ता

णंदउ णिरू ता महि सत्थु इहु, अमरकीत्तिगणि विहिउ पयत्तें।
जा महि महिमारुयमेरुगिरि णहयलु, अंवपमाए णिमित्तें॥

इय छक्कम्मोवएसे महाकइसिरिअमरकीत्तिविरइए महाकव्वे महाभव्व अंवपमाएणु मण्णिए तनदाण-फल वण्णणो णाम चउदहमो संधी सम्मत्तो।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३ साइज ६×५॥ इञ्च। प्रति की स्थिति अच्छी नहीं है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरे नृपविक्रमादित्यराज्ये सवत् १५६२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ५ शनिवासरे पतिसाहि हुमायु राज्यप्रवर्तमाने सिहनदस्थाने ग० श्री विनयसुन्दर शिष्य मुनि धर्मसुन्दरेण पुस्तकं लिखित।

प्रति नं० ३ पत्र सख्या ७५ साइज १०×५ इञ्च। ५४ से ६४ तक के पृष्ठ नहीं है। साधारणतः ग्रन्थ की हालत अच्छी है।

लेखक प्रशस्ति—

अथ नृपतिविक्रमादित्य सवत १५५८ वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अश्लेखा नक्षत्रे गोपाचल-महादुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहराज्ये प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे नंदिगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री सोमकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म काला इद पट्कर्मोपदेशशास्त्रं लिखाप्य आत्मपठनार्थे।

सवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ५ भौमवारे श्री मूलसघे श्रीमत्त्रैविद्यभट्टारक श्री पभ चन्द्रदेवास्त-त्पट्टालकार गुज्जरलाडमालवकलिंगमहाराष्ट्रकर्णाटअंगवंगमगध ··· ।

प्रति न० ४ पृष्ठ सख्या ६५ साइज ११×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में ४०×४४ अक्षर है। प्रति प्राचीन, शुद्ध तथा सुन्दर है।

प्रशस्ति—

संवत्सरेस्मिन् १४७६ वर्षे अषाढ सुदी ५ बुधदिने श्री गोपाचलदुर्गे राजा श्री वीरम्मदेव राज्य प्रवर्तमाने गढोत्परे श्री नेमिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे श्री सहस्त्रकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे श्री प्रतिष्ठाचार्य श्री गुणकीर्त्तिदेवा तथा श्री विशालकीर्त्तिदेवा राम कीर्त्तिदेवाः खेमचन्द्रदेवाः। श्री गुणकीर्त्तिदेवनां शिष्याः श्री यशःकीर्त्तिदेवा कुमारकीर्त्तिदेवा हरिभूषण देवाः धर्म श्री संजम श्री शील श्री चारित्र श्री धर्ममतिविमल श्री सुमति एतेषामाम्नाये अग्रोतकान्वये चतुर्मुख

जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवाला-न्वये ··· ····· ······· ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४४ साइज ११×४॥ इञ्च ।

संवत १५६४ वर्षे महासुदी २ बुधवारे श्रवणनक्षत्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेव स्तत शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चंपावतीनगरे राठौडवंशे रायश्रीवीरमघराज्ये बाकलीवालगोत्रे सं० तीकी भार्या पूनी। प्रथम पुत्र साह चाया भार्या गूजरि तत्पुत्र साह होला भार्या हुलसिरि। द्वि० पुत्र सं० तोल्हू भार्या नौलादे। प्रथम पुत्र सं० लाल्हू भार्या ललितादे द्वि० भार्या रूपा। द्वि० पुत्र स० वाल्हू भार्या वेलसिरि द्वि० भार्या बहुरंगदे पुत्र नथमल इदं शास्त्रं लिखापितं।

३६. श्रावकाचार ।

रचयिता श्री लक्ष्मीचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २० साइज ६×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ट पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४२ अक्षर। विषय श्रावक धर्म।

मंगलाचरण—

णवकोरप्पिणु पंचगुरू दूरदलियदुहकम्मु।
संखेवें पयडक्खरहिं अक्खमिसावयधम्मु॥

अन्तिम पाठ—

दंसणु णाणु चरित्तु तउरिसि गुरू जिणवरूदेउ।
बोहि समाहिएं सहुं मरणु भवे भवे दिज्जउ एउ॥

संवच्छरेचंद्रन्युगमेवसिद्धिमिते फाल्गुणमासे कृष्णाख्ये पक्षे पंचम्यां तिथौ रविवासरे सवाई जयपुरे महाराजाधिराज श्री सवाई माधवसिंहजी प्रवर्त्तमाने राज्ये ऋषभदेव चैत्यालये साह श्री जोधराजपाटोदी कारापिते श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्री नरेंद्रकीर्त्तिस्तत शिष्य ब्रह्म श्री अमरचन्दतत् शिष्यः पंडितः श्री जयमल्ल तत् शिष्य पंडित श्री मनोहरदास तत शिष्य पं० श्री छीतरमलस्तत् शिष्यास्त्रयः प्रथम हीरानंदः द्वि० ब्रह्म टेकचन्दस्तृतीयश्चतुर्भुज। हीरानंदस्य शिष्यौ द्वौ० प्रथम चोखचन्द द्वि० ऋषभदास। चोखचन्दस्य त्रयः शिष्याः प्रथम सुखराम द्वि० किसनदासस्तृतीय नानिगदासः। सुखरामस्यचत्वार शिष्याः प्रथम कल्याणदास द्वि० केसरीसिंह तृतीय मोहनदास चतुर्थ नेमिदास एतेषां मध्ये विनयवतः सुशिष्यस्य केसरीसिंहकस्य पठनार्थं लिखितं नैणसागर संवत १८२१ मिती फाल्गुन वुदी · ··· ।

३७. श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री पं० नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या ७६ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८×५८ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

सिद्धचक्कविहिरिद्धिय गुणहसमिद्धय पणवेप्पिणु सिद्धमुणीसरहो।
पुणु अक्खमि णिम्मलु भवियहमंगलु सिद्धमहापुरसामियहो॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय रज्जु करंतउ पुणु वि विरत्तउ देक्खिसयलु णियपुत्त हो।
ससारहो संकिउ पुणु णिक्कंखिउ मतिपुरोहियजुत्तहो॥

पुहवीपालुहु रज्जु समप्पिउ, अप्पउणाय महव्वउ थप्पिउ।
मयणासुंदरिपमुहते उर, हरडोरहत्तारिय णेउर।
सयल विसंजइ यउ मनायउ, दुविहि तवयरणेहि विरायउ।
महासुक्क सुरउहुह सोप्पिणु, गइय देव तियलिंगुहु णोप्पिणु।
अंगरक्खजहिं इहिं पउ भावउ, तहिं तहिं देवत्तणुसुहु पावउ।
सयल वि णरणाहउ समहप्पिणु, घोर वीरु तवयरणु चरेप्पिणु।
गउ सिरिपाल परमंगलणाणहो, सिद्धचक्कफलु भवियहु जाण हो।
अवरु वि नरनारिउ जु करेसउ, एव माइ सो फलु पावेसइ।
सग्गि सुराहिव सुहु भु जेसइ, सुम्भरणह सिहु कील करेसइ।
कत्तिय आसाढहि फग्गुणमासहि, ते णंदीसर दीउ गवेसहि।
अट्ठ भंति हि जिणपूयकरें सहि, सिद्ध चक्कफलु सुहु भुंजेसइ।
जिणउ धम्मरित्तिमाइं इदेसइ, पुणु मंदियंति चक्कवइ हवेसहिं।
पहिविरत्त पुणु मोक्खु लहेसहि, ...।

घत्ता

सिद्धचक्क विहि रइयमइं, णरसेण भणइ णियसत्तिए।
भवियण जणआणंदयरे, रविव जिणेसर भत्तिए॥

इय सिद्धचक्ककहाए महारायसिरिपालमयणासुंदरिदेविचरिए पंडितसिरिणरसेण विरइए इह

लोयफलसुहंकहाए सिरिपालमहारायणाम द्वितीय संधि।

संवत् १५१० वर्षे चैत्र बुदी ११ भौमे रावरपत्तने राजाधिराज श्री डूंगरसिंहदेवराज्यप्रवर्त्तमान श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः खंडेलवालान्वये सरस्वती गोत्रे साह काल्हा तद् भार्या साध्वी राना तयोः पुत्राः साह बीमा स॰थोलाल एतेषां मध्ये साह मांधो भार्या साध्वी महाश्रीसफलादे निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं श्रीपालचरित्रं स्वहस्तेन लिखाप्य महासिरि दत्तं। ज्योतिषी प्रयागदास स्वपुत्र ज्योति॰श्री बाल लिखितं।

प्रति नं॰ २ पत्र संख्या ४८-साइज ११x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०x३४ अक्षर। प्रति पूर्ण तथा स्पष्ट है।

संवत् १५८६ वर्षे मार्गसिरमासे द्वितीया दिवसे बुधवारे रोहणी नक्षत्रे सिद्धनामजोगे टौंकपुरनाम नगरे पार्श्वनाथ चैत्यालये।श्री,मूलसंघे नद्याम्नाये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा-स्तदाम्नाये ,खंडेलवालान्वये टौंग्या गोत्रे साह धरमसी तस्य भार्या स्यात तयोः पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह नीको तस्य भार्या-गल्ली तत्पुत्र हामा। द्वि॰ पुत्र जाल्हा। तृतीय पुत्र नेता। चतुर्थ पुत्र श्रीवन्त। साह हामा तस्य भार्या सोना तत्पुत्र तेजसी। साह जाल्हा तस्य भार्या पदमा तत्पुत्र सहसमल्ल। साह नेता तस्य भार्या उंदी तत्पुत्र बुचमल्ल साह श्रीवंत तस्य भार्या बाली तत्पुत्र सोहमल्ल द्वि॰ पुत्र पद्मसी तृ॰ पुत्र रणमल सा॰ लाखा तस्य भार्या रोहिणी तत्पुत्र गुणराज द्वि॰ माझू तृतीय पदारथ। साह संग्राम तस्य भार्या रय-णादे तत्पुत्र साह कुंभा तस्य भार्या परमा तत्पुत्र गाईद साह धरमू तस्य भार्या नीकू साह डूंगर तस्य भार्या खेत तत्पुत्र चाचा तस्य भार्या चादणादे एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखापित श्रीपालचरित्र बाई पदमसिरि जोग्य दातव्यं।

प्रति नं॰ ३ पत्र संख्या ४३ साइज ११x४॥ इञ्च।

लेखक प्रशस्ति—

अथ संवत्सरेस्मिन श्री विक्रमादित्यराज्ये संवत् १५८४ वर्षे भादौ वुदि ८ रविवासरे मृगसिर नक्षत्रे शाके १४४६ गते पञ्चाब्दयोः मध्ये मन्मथनामसंवत्सरप्रवर्त्तने मुनिनालसोर बब्बरराज्यप्रवर्तमाने श्री कालपागढश्रीजमसाहि प्रवर्त्तमाने टोलानिपुरशुभस्थाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंद-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे श्री जिनचन्द्रदेवः। तदाम्नाये धर्मात्ककुचुकान्वये जह समसुद्र-सर्वाजनचरणकमलचञ्चरीकान दानपूजासमुद्यतान परोपकारनिरतान् प्रशान्तचित्तान् साधु श्री थेघू तद्भार्या धमपत्नी सुशीली साध्वी श्रमा। तत्स्योदरसमुत्पन्न जिनचरणाराधनतत्पर सम्यक्त्वप्रतिपालकान्

सर्वजीवधर्मरंजितचेतसान् कुटुंबभारधरधुरान् साधु श्री नीकु तद्भार्या शीलतोयतरंगिनी हीरा तयो. पुत्र सर्वगुणालकृत देवशास्त्रगुरुविनयवत सर्वजीवदयाप्रतिपालकान् इद्धरणधीरान् दानश्रेयांसावतारान् आभार- सेरान परमश्रावक महासाधु श्री सह सुतेनेद श्रीपालनामशास्त्र कर्मक्षयनिमित्त लिखापितं। लिखितं पं० वीरसिंघु। वाई मानिकी योग्य प्रदानार्थं।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २७ साइज ११x५ इञ्च।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३० वर्षे वैशाख अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शाखरतपगच्छे पं० न्यास, श्री प० नयरत्नगणिगणि प० न्यास न्यास विद्यासुन्दरगणि लिख्यत चाटसुमध्ये।

श्री पार्श्वनाथचैत्यालये चंपावतीमहादुर्गे महाराजाधिराजराव श्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसंघे नद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकीर्त्तिदेवा खंडेलवालान्वये साह गोत्रे साह टेहू भार्या दाहू। तत्पुत्र साह नानू भार्या नारगदे। द्वि० भार्या दिवू। नानू पुत्राः पंच प्रथम पुत्र साह कपूरा भार्या नमा। तत्पुत्र गुणराज। द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिबदे तत्पुत्र, हारित ' ''।

३८. श्रीपाल चरित्र।

रचियता प० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १९८ साइज ११x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६x३० अक्षर। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

सिद्धह सुर्गसद्धह वसुगुणसिद्धह, हियइ कमले धारे वि निरु।
अक्खाम पुणु सारउ सुहमयमारउ, सिद्धचक्क माहप्पुवरु॥

अन्तिम पाठ—

इय चरिउ सुहायरू बुहयणमणहरू नंदउ महियलि गुणभरिउ।
भवभमणविणासणु दुरियपणासणु अत्थपसत्थहि विप्फुरिउ॥
सम्यं वर्धति व्रतानि कुरुते शास्त्रं पठत्यादरात्।
मोहं सुन्दनि गच्छति स्वसमयं धत्ते निरीहपदं॥
पापं लुंपति पाति जीवनिवह ध्यानं समालंबते।
सोऽयं नंदतु साधुरेव हरसो पुष्णाति धर्मं सदा॥ १॥

पुणु देवि भरासइ नविवि समासइ नेमिणिहु वंसु जि भणमि।
पुणु जासु हि रज्जें दुणयवज्जें हुवउ सत्थ तं पुणु थणंमि॥

गोपालचलु दुग्गु पसिद्धु नामु, धणकचणरिद्धु जणाहि रामु।
गोउर पाथारकिउ सवित्तु, परनर अगमु न सयहि चित्तु।
तहि आस्थिराय अरिकुलक्खयतु, तोमर कुलि पायडु सहमहंतु।
सिरि डूंगरेंदु नामेण सूरू, विप्फुरिय पयावे नाइ सूरू।
तहु कित्तिपाल नंदणु गरिट्ठु, न रूविकामु सविहं मणिट्ठु।
तहु रायर जि समाणवतु, सिरि अइरवाल वसहि महंतु।
सावयवयपालण विगयतंदु, रिसिदाण पहावें जो अमंदु।
वाहुडु जिसाहु हुउ आसिधणु, नियजसेण जेण दिसि मग्गु छुणु।
तहु भज्ज जसोवइ कमलवत्त, तहि उवरि उवणाविणि पुत्त।
गुण गणु भायणु राहू सुजेट्ठु सिणचरणकमल जो भसलसिट्ठ।

घत्ता

वीयउ नंदणु पुणु भाविय जिणगुणु सकलकलालउ सुद्ध मणु।
वाटू साहु जिहउ वंदियणहि थउ रंजिय अहनिसु सयणु यणु॥ १॥

तहु तियसोल विसुद्ध पवत्ती, असपालहिय नाम साउत्ती।
नंदण चारि ताहि उर जाया, चारि दाणमनं पायड जाया।
पढमु साहु नयणसिहु पउतउ, सीयमग्गु जि मुणिउ निरुत्तउ।
विजपालहिय तासु पुणु भामणी, साहुय सील महाधण सामिणी।
वाटू साहु हु वीयउ तणुरुह, धणसी णामु सुपरियणु कियसुह।
वील्हाही पियथम अणुरायउ, पुत्तहु जुयलु ताहि उर जायउ।
जाटा नामे पढम भणिज्जे, गायणेहिं जो अहनिसु गिजइ।
जोल्हाही तहु पिययमउत्ती, सा गोविंद सुवेण सुपत्ती।
गविदहु तिय घोल्ही वुच्चई। तहु नंदणु पुणु चोचा वुच्चइ।
धणसीहहु सुउ वीयउ माला, तहु तिय लाडो अइसुकुमाला।

घत्ता

वाटू साहहू सुउ तीयउ पुणु हुउवोहिथ नामेहीह सुउ।
गुणगणरयणापर जिणवयणायरुनानिग ही पिय भज जुउ॥ २॥

जो पुणु वाटूसाहु पयासउ, तहु चउत्थु नंदणु विजयासिउ ।
हरसी साहु नामु महि पायडु, जो जिण भणिय सेंछ अत्थहु पडु ।
तहु कलत्त परियणह पहाणी जिह सिरि रामहु सीया झाणी ।
देवसत्थ गुरु वयणकलायर, दिवचवही नाम नेहायर ।
वाई भज्जा पुणु ओल्हाही, न गोविंदुहु लच्छिपसाई ।
तहु नदणु पुणु कइयण वेणिउ, जो डूंगररायें निरूमणिउ ।
नामें करमसीहु सो नंदउ अहनिसु जिणवर चरणई वंदिउ ।
तउ णाही तहु तिय सुपसिद्धो, विहु कुल सुद्ध रूवगुणरिद्धि ।
पुणु हरसीहहु पुत्ति पउत्तो, न मानंतमई गुणजुत्ती ।
जाइ अखडु सीलु वर पालिउ, कलिमलु असुहु मचित्तहु खालिउ ।
पुणु विननो तहु लहु सुयसारी, सयलहु परिवारहु सुपियारी ।
एहु गोतु नंदनु महि मंडलि, जा रवि ससि निवसहि आहंडलि ।
एयह सव्वह सरिस पहाणउ, सत्थ पुराण भेय बुह जाणउ ।
कलिकालें जिणमग्गु दुरियउ, चेयणु गुणु अरुहु विप्फुरियउ ।
तहिणिकाल रयणत्तउ अचइ, सुद्ध धम्मु जो अहनिसु सचइ ।
जि वलहइ पुराण सुहरू, कारा वियउ पयत्ते मणहरू ।
सो हरसीह साहु चिरु नंदउ, सज्जण चित्तहु जणिया णंदउ ।

घत्ता

पोमावइ पुरवाड वसिउ वणउ कुलतिलउ ।
हरसिघ नघविहु पुत्तु रइधू कइगुण गणनिलउ ॥

इति श्रीपलसिद्धचक्रवरित्रे रइधू पंडितकृत समाप्त ।

संवत १६३१ वर्षे कातिक वुदी ६ शुक्रवासरे पुष्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये षट्त्रिंशद् गुणविराजमान व्याकरणछंदोलंकारसाहित्य-तर्कागमादिशास्त्रार्णवपारप्राप्तान भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्तिदेवास्तत् भ्राता आचार्य श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पुस्तिका लिखापित नागरचालमध्ये टौंक समीपे साखिणा नगरे पातसाह श्री अकबरविजयराज्ये सोलंकी महाराय श्री सुरजन श्री साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे पुत्र निरजीव साह डूंगा भार्या ऊलांदे पुत्र द्वि० चिं० साह भीखा । साह भीखा भार्या भावलदे पुत्र जैसा द्वि० पुत्र मोटा । साह मीया भार्या सिंगारदे पुत्र चि० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छीत

धमा, लाखा, पर्वत, नानग। साह छीत भार्या चतरंगदे पुत्र खीमसी, सांगा माल्हा। माह धर्मा भार्या धारादे पुत्र ताल्हू। माह चादू भार्या चाहणदे। माह श्री रग भार्या सुहागदे माह हीरा भार्या हीरादे……।

३८. सकलविधिविधान काव्य।

रचियता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३०४ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८×४० अक्षर। लिपि संवत् १५८० चैत्र वुदि ४।

मंगलाचरण—

धवलमगलणंद जयवड्ढ मुहलमिमिद्धत्थणिव।
मंदिरंमि णरलोय हरिसुव संकमिउ सग्गाउ जिणु॥
जयउ पुरिमकल्लाणफलसुव अहरणं णिद्धि वहूविमल।
मुत्तावलिहिं णिमित्तु सुहसुत्तिए पियकारणिहि, सिप्पहि मुत्ति उखित्त ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

घत्ता

आराहिय आराहणाए मव्व च्छसिद्धि सुहु भुंजंति।
तीह महि सिद्धवहूणिलउ णयणंदिय पहियमुणिरंजंति॥

मुणिवरणयणंदोमणिणवद्धपसिद्धे सयलविहिणिहाणे एत्थकव्वे सुभव्वे अरिहपमुहसुत्तवुत्त मआराहणाए पभणिउं फुडु संधी अट्ठावण समोरि। लेखक काइस्थ स धू। अथ प्रशस्तिका। संवत् १५८० वर्षे चैत्र वुदि ४ गुरुवासरे श्री मूलसंघे नयाम्नाये ···· ·····।

३९. सन्मति जिन चरित्र।

रचयिता महापंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२६ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४२ अक्षर। लिपि संवत् १६२४।

मंगलाचरण—

घत्ता

जयसरसुहभाणहुं वड्ढियमाणहु वढम णाविथेसरहु।
पणिवविपयजमल णहपहविमल चरिउ भणमि तहु इयसरहु ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

× × × × ×

णदउ राणउ णीइ वियाणउं, पयपुणु णदउ पाउ णिकदउ।

णामेण पयड्डुजणि देवसेणुगणि मजायउ चिरु वुहतिलउ ॥

तासु पट्टिणि रुवमगुणमंदिरु, णिच्चाभव्वजणणयणाणंदरू ।
विमलमई फेडियमलसंगमु, विमलसेणु णामे मुणि पुगमु ।
वत्थसरूवधम्मधुरधारउ, दहविह धम्मु भुवणि वित्थारउ ।
वयतवसीलगुणहिं जो सारउ, वज्झभंतरसंग णिवारउ ।
धम्मसेणु मुणि भवसर तारउ, भावग्गु पुणु भाविय णिय गुणु ।
दंसणु णाणु चरणु तहं चेयणु, दोविह तव तेवण तावियतणु ।
धम्मामइ पोसिउ भव्वहं गणु मूलुत्तर गुणेहिं जो पावणु ।
सुद्धप्पासरूउ सभावणु, कम्मवलकपंकमोसणइणु ।
सहसकित्ति उव्वासिय भववणु, तासु पट्टि उदयाद्द दिवायरू ।
वज्झभ्भंतर तव किय आयारू, ।
वुहयण सत्थअत्थ चिंतामणि, सिरि गुणकित्ति सूरि पायडु जणि ।
तहु सिंघासणि सिहरि परिट्ठउ, जुत्ति रमणि राएणो क्कठिउ ।
सुजसपसर वासियदिवासउ, सिरि जसकित्ति णामदिठ्ठासउ ।
तहुं आसणि गुणगणिमणिसायरू, पवयणअब्भासणसायरू ।
दोविह तव त वें तवियगो, भव्वकमलवणवोहपयगो ।
वेज्झभ्भतरसगअसगो, जिं दुज्जउणि जियउ अणगो ।
पुव्वापरियहमग्गपयासणि, सच्चेयणु मउ रदुव णिरूज्जणि ।
णिग्गथु विप्पत्थह सजुत्तउ, सत्थाणविइयरहं परिचत्तउ ।
छदतक्कवायर णहिं वाइय, जिणि जिणि विसि सिक्खादाविय ।
उत्तमकखमवासेण अमंदउ, मलयकित्ति रिसि वरू चिरू णदउ ।

घत्ता

एयहं मुणिविंदहं भवतमचंदह पयकमलहं जे भत्तहुय ।
ताह जि णामावलि पयडमिभूयलि वंदिगणहं जाणिच्चथुय ॥

णियजसपसर दिसामुहं वासिय, वर हिसार पट्टणहिं णिवासिय ।
अयरवाल कुलकमलदिवायर, गोयल गोतिपयडणियमायर ।
आसि पुरिसजे अगणिय जाया, ताहं जि कि वण्णमि विक्खाया ।
जिणपयपंकयाहं णिरुछप्पउ, परियाणियउ जेण परमप्पउ ।
जाल्हे णामु साहु चिरु वुत्तउ, पुत्तु जुयलु तहु हुयउ णिरुतउ ।

महजो भवगुणमणिरयणायरु, तिविह पत्त दाणेण कयायरु ।
सडढपालु पढमउ नय वल्लहु, तेजू इयरु विबुह जण दुल्लहु ।
णिरुवम रुवसीलव्वयसज्जा. ...... ही पढमिल्लहु भय ।
पुरिमयणउ पाय णरस्वाणी, सचित्तजि परहु उवसमवाणी ।

घत्ता

तहिं उयरि उवरणा लक्खणपुण्णा छह णंदण आणंदयर ।
ण जिणवर भासियं दव्व सुहासिय णं छहरसजणपोसयर ॥

ताह पढमु परकीत्तिलयाहरु, दुहिय जणाण दुक्खघणखयमरु ।
दाणु णय करुणं सुकखरि नरु परिवारहु पोसणे सुरभूरुहु ।
निणपूयाविहि करणपुरंदरु, णियकुलमंदिर वहु सोहाहरु ।
भूरि दव्वु ववसाएं अज्जिअ, लच्छि महाउ चवलु पडि वज्जिअ ।
जिणणाहहु पइट्ठ कराविवि, मणइ छिय दाणवहु दाविवि ।
तित्थयरत्तु गोत्तु जि बद्धउ, सघहिउ महदेउ जसद्धउ ।
धामाहिय तहु भामिणिभासिय, जिणदासहु सुवरसणेहासिय ।
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय, बहु उवमिज्जइ तहिं सीलहु सिय ।
णागरणु णाइय खिणपय कमला, तिएणि पुत्त हुयताहं गुणाला ।
पढमउ बीयउ तीयउअमला, वछरजुमाभु नामाला ।

घत्ता

मइलपाल सुंडउ यउ पुणु हुउ छोतमु गयतमु विमलजसु ।
दुहियण दुहखंडणु णियकुलमंडणु, गुणरयणाणि कोई सुत ॥

तासु पियागिम गुणसील अतुल्ली, जायण जण आसातरु वल्ली ।
खिउ धरहिय अहि छाणें साहिग, ताहि गांभहुय पुत्त गुणाहिय ।
छह पमाण भूयलि सुपमाणिय, गुरुयण जहि,णिच्च मम्माणिय ।
वणिवर यद्दह नो मुक्खेसरु, वीयराय पय पकय महुयरु ।
वीरदेउ पढमउ गुणमंदिरु, दाणु णाय करु जो नांग सुदरु
वीयउ देमाहेमु न दुल्लहु, णियपरियणयणम्मि अइवाल्लहु ।
लच्छी णामे मानिउ तीयउ, देव सत्थगुरपाय विणायउ ।
रुपां रुयें जिय मय रद्धउ, जि महियलि जसु विम्मलुलद्धउ ।

आत्थिथिरा पंचमु धम्मंगो, णिच्चवि हियवुद्धयणजणसंगो।
गिर णायरहु जत्तहं संवाहिउ, चउविह संघभारू णिव्वाहिउ।
छट्ठउ जालपु वणिणय जाणणु, परिवारहु भत्तउ कमलाणणु।
सहजुपाल णंदणु पुणु तीयउ, जिणसासणु वि जेण मणिभायउ।
मणवंछिय दायणु चिंतामणि खेमटु णामे विक्खायउ जणि।
भीखू ही तहु पियग्रमसारी, पुत्त चउक्कहि सोहाधारी।
पढमु पुत्तु खेता खेमकरू, बीयउ वाचा वाय सुदरू।
ठाकुरू णामे तायउ णंदणु, भोजा चउत्थउ जण आणंदणु।

सिरिमहजपालु सुउ तुरिय पुणु हु डाला णामे बीण सुउ।
अमाहिय तहु पिय णं रामहु सिय चारिपुत्त संजायसुउ॥

जिणदेवभत्त दुदणु गरिट्ठु, परिवारभत्तु दरवेसु सिट्ठु।
सेवू णामे तिजउ सपुण्णु, जामा चउत्थु णंदाणिकण्णु।
पुणु सहजपाल सुउ पचमिल्लु, थील्हा णामें बहु गुणगरिल्लु।
केमवइ भाखिकलत्तु तहं तिणिण पुत्त जाया पवित्त॥
पहराजु पसिद्धउ गब्भलोइ, चउविहदाणें जो भव्वजोइ।
हरिराजु जि पढिय गुणपहाणु, छक्कम्मर तुगुणगणणिहाणु।
जगसाहु जयम्मि मईपहाणु, णियकुलकमलस्स वियासभाणु।
सिरि महजपाल सुउ भणिउ छट्ठ, समार महाणव पडणभट्ठु।
सगवसणविरत्तउ धम्मि रत्तु, पालियउ जेण सावयचरित्तु।
गेहंमि वसति अइपवित्ति, धणु अज्जिउ जिं दाणहु णिमित्ति।
तोसउ णामे तोमिय जणोह; आजाही तहु पिय जणिय सोह।
णं कुलहरकमलणिवासलच्छि, सुर सिंधुरगामिणि दीहरच्छि।
सुर वल्लिव परियणपोसयारि, जुवईयण सयलहं मउकमारि।
दाणें पीणिय णिरू तिविहपत्त, महमीलपट्टव्व यणाहभत्त।
तहि गब्भि समुब्भव पुत्त दुण्णि, णं महिपयक्खउ वउयर्वाणिण।
जेट्ठउ दंसणरयणहुं करंडु, कुलकमलवियसणकिरणचंडु।
विल्हा णामे गुण सेणि संडु, मिच्छत्तसिहरि सिरि वज्जदंडु।
कुरुखेतदेस वासिय पवित्त, सावय वय पालण विमलचित्त।
जिणपूयाइविह छकम्मरत्तु, परिवारहु मडणु गुणणिउत्तु।
जिणधम्मधुरंधर इत्थलोइ, तंह गुण वण्णणि को सक्कु होइ।

सल्जासाहु हिं पमुहहिं वणु,
भायर चउक्कउ उपुणु चियणु ।
सिरि सेट्ठिवंस उप्पणु धण्णु,
तेजा साहु जि णामें पसण्णु ।
तहु पिय जालपा य वण्णणीय,
परिवारभत्त सीलेणसीय ।
तहिं णांदिभउ वण्णासुयपुण्णि,
राजसपालु ढाकरू जि तिण्णि ।
तुरिया वि पुत्त जा पुण्णसुद्धि,
णिणच्चजि विरइय जिणणाह भत्ति ।
खेमी ण मा वरसीलजुत्त,
कोकइ वण्णइ तहिं गुणह कित्ति ।
सा परिणिय तेण गुणायरेण,
बहुकालि जंति सायरेण ।
णिय भायर णंदणु गुण णिउत्त,
मग्गेप्पिणु णिणिहउ कमलवत्तु ।
हेमा णामे परिवारभत्तु,
तहु घरहु भारदेप्पिणु विरत्तु ।

× × × × ×

जिण वयधारणु उक्कठएण,
ससारू असारुउ मुणिमणेण ।
जणणी जणु वि परवारलोउ,
सयलह विषमावणु करि विसोउ ।
अणुणु वि न्वसेप्पिणु तवरणेण,
जिणवेसुधरिउ णीसल्लएण ।
जसकित्तिमुणिदहु णवि तिपाय,
अणुवयधारिय तिं विगयमाय ।
तासउ णंदणु दिवराजु अण्णु,
सा वाहिय पियणेहि पसण्णु ।
परिवारभत्त गुण सेणिजुत्त,
णियवसगयण उज्जोयमित्त ।
सच्चावइ भासि सच्चेवलीणु,
जिणधम्मकज्जिकारणयत्तीणु ।
तहु णंदणजाया दुण्णिवीर,
जिणधम्मधुरधरगुणगहीर ।
चंदुज्जलयरू सिखरचन्दु,
पढमउ सज्जणह जणइ अणंदु ।
बीयउ पुणु णामें मल्लिदासु,
सेगूणहुं जिणवरहु दासु ।
तोसहु पुत्ति पुणु विणिणजाय,
जिणधम्मि कम्मि रयविगय माय ।
जोठी णामें बीजो जिउत्त,
जिणपयगधोवयणिचसित्त ।
वयणियमसीलपालणमग्ग,
जिणसमयहु भरू धरणअभग्ग ।
लहुडी णामें सेल्ही पवित्त,
विहुं परिवारहं जा णिचभत्त ।
सेले मोहग्गे मिय समाण,
णिरू पत्तहं चउविह देइ दाण ।
तहिं णंदणहू याविणिसल्ल,
माढा तेजा णामें मणुज्ज ।
पंच वि भयरहं जि अण्णसुया,
जालही बीरो पमुहाईं हुया ।

इहु परियणु वुत्तउ सजसपवित्तउ, जा कणयायलु सूरससि ।
जावहि महि मउलु छिवे आहंडलु, णंदउ तावहि सजसवसि ॥

इय सम्मइजिणचरिए णिरुसंवेयरयणसंभरिए वरचउवग्गययासे वुहयणविन्तस्य जणियउल्लासो सिरिपंडियरइधूविरइए साहु सहजपाल सुय सिरिसंघाहिवसहदेवलहुभायरमहाभव्व साहु तोसडणामणामंकिए कालवकतहेव दायालंमणि देसवणणो णाम दशमो सधी परिच्छेउ सम्मत्तो।

सव्वत्थे महदो विशुद्ध करणो जो जईणत्तभोरदो। णिसत्रादिगुणावली परिविढो सम्मग्ग सगउग। णट्ठीसम्मांनलाससिक्खिदयए सवसुजोहाणिस। सो जीवउ सिरि तोमडो तह कई रइधू गुणिंभोणधि ॥

सवत् १६२४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १४ गुरुवासरे श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक अष्टाविंशाति मूलगुणप्रतिपालकान् जिनमदनकरिघटाकुम्भविघटनकेसरीकिसोरान् श्री श्री श्री हेमकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक परमोदासीनगुणविराजमान कुमारसेनदेवाःतत्पट्टे भट्टारक हेमचन्द्रदेवापत्पट्टे भट्टारक अबोधजीवमतिप्रतिबोधकान् परोपकारकरणसमर्थान भव्यांबुजविकासनैकमार्त्तंडान भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे आगमाध्यात्मरसःनिकान् परमपनीयससोपितगात्रान् परमोदासीनपदरसत्यागी भट्टारक श्री यशःकीत्तिसूरिनामधेयान् तदाम्नाये शिष्यणी शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी पचअनोवृत व्रतपालकी अर्जिकादेवी श्री ब्रह्म जिनप्रभावनाकारक हीनदीनदुखितमंमुद्धरण ब्रह्म पचायण अज्जिकादेवश्री तत् शिष्यणी सीलतोय तरंगिनी विनयवागेश्वरी वाईजी ब्रह्मपचाइण इद वर्द्धमानचरित्र लिखापित। लिखितं पांडे तिपरदास अलवरगढ-वास्तव्याय।

४०. सुदर्शनचरित्र।

रचयिता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३५-४० अक्षर। रचना संवत् ११०० लिपि संवत् १५६७. विषय-सुदर्शन स्वामी का चरित्र अथवा णमोकार मंत्र का प्रभाव।

मंगलाचरण –

इह पंचणमोकारइं लहेवि गोउवि हुवउ सुदसणु।
गउ मोक्खकहु अक्खरमि तहो चरिउ वरचउवग्गपयासणु ॥

अन्तिम भाग—

आयहो गंथहो वुहजणियतुट्ठि, विरइए अरहंतहिं अत्थसिट्ठि।
पुणु गंथसिद्धि जय मणहरेण, गोयमअहिहाणेँ गणहरेण।
सोहम्मे जंवूसामि एण, पुणु विण्हुदत्त णंदिमित्तएण।
पुणु णंदिमित्त अपराजिएण, गोवद्धणेण सुरपुज्जिएण।
पुणु भद्दवाहु[1] परमेसरेण, पयडेविणु साहु[2] मुणीसरेण।
पोढिल्लएण पुणु क्खत्तिएण, जय णामे धम्मपवित्तएण।

---

१ पउढिल्ल २ धम्मयत्तएण

णामें सिद्धत्थें सं णएण, विदिसेणें तवसिरिरंजिएण।
पुणु विजयसेण पुट्ठिल्लएण, पुणु गंगएव णामिल्लएण।
पुणु धम्मसेण णक्खत्तएण, जइपालें मुणिजय पत्त एण।
पुणु धुवसेणें जियसएण, पुणु कंसायरियं गयभएण।
भद्दे जय भद्दें पुणमेण, लोहज्जे सिवकोडियकमेण।

घत्ता

गणहरणव मुणिवंदि कुवलयचंदहं एयहिं अवरहिं अविचलु।
आहासिउं पवयणो जहं सउभवियणितहं पचणमोकारहो फलु॥

जिणिंदस्स वीरस्स तित्थे महंत्तें, महाकुंदकुंदण्णए एंतसते।
सुणिक्खाहिहाणों तहा पोमणंदी, पुणो विसहुणंदी तउ णंदणंदी।
जिणुद्दिट्ठ धम्मं धुराणं विसुद्धो, कयाणेय गंधो जयंते पसिद्धो।
भव भोहि पोउ महीविस्स णंदी, खमाजुत्तसिद्धं तउ विसहणंदो।
जिणिंदागमाहासणे एयचित्तो, तवायारणिट्ठाइ लद्धाइ जुत्तो।
णरिंदामरिंदाहिवाणंदवंदी, हुउ तस्स सीसो गणीरामणंदी।
असेसाणगंथम्मि पारम्मिपत्तो, तवे अंगवी भव्वराईवमित्तो।
गुणावास भूओसु तिल्लोक्कणंदी, महापंडिओ तस्स माणिक्कणंदी।

घत्ता

पढमसीसु तहो जायउ, जगविक्खायउ मुणिणयणंदि अणिंदिउ।
चरिउ सुदंसण णाहहो तेण, अवाह हो विरइउं बुहअहिणंदिउ।
आराम गाम पुरवरणिवेसि, सुपसिद्ध अवंती णाम देसि।
सुरवइ पुरिव्व विवुहयणइट्ठ, तहि अत्थि धारणयरी गरिट्ठ।
रणदुद्धर अरिवर सेलवज्जु, रिद्धियदेवासुरजणियचोज्जु।
तिहुयण णारायण सिरिणिकेउ, तहिं णरवइ पुगमु सोयदेउं।
मणिगणपहदूसिय रविगभत्थि, तहि जिणवर बद्धु विहारु अत्थि।

१ विदिसेणएण २ अविचलु ३ सउभवियणितह ४ पचणमोकारहं फलु ५ महाकुन्दकुन्दएण ६ णक्खिरकादि, सुणक्खत्र, ७ भोहि ८ महीविस्स, महाविस्स ९ भूउ ।

णिव विक्कमकालहो ववगएसु, एयारह संवछर सएसु।
तहि केवलि चरिउ अमरछरेण, णयणंदी विरयउ विछरेण।
जो पढइ सुणइ भावइ लिहेइ, सोसासय सुहु अविरल लहेइ।

घत्ता

णयणंदयहो मुणिंदहो कुवलयचंदहो णरदेवासुरवंदहो।
देउ देह मइ णिम्मल, भवियहमगल वाणजिणवरचंदहो॥

इत्थसुदंसणचरिए पचणमोकारफलपयासरे माणिक्कणंदितइविज्ज सीसणयणंदिणारइए, गईदगरिविस्थरो सुरवरिंदथोत्त तहा मुणिदसहमडवं तसु विमोक्ख यासे गमंतणमोपयफलं दोहदमो पुणो–सयलसाहुनामावलीइ माणक्कयवएणो भणिउ संधि दोदहमो।

संवत् १५६७ वर्षे माघ मास कृष्णपक्षे द्वितीयाया तिथौ बुधवासरे पुष्यनक्षत्रे श्री कुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रदेवाःतत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवाः तोडागढमहादुर्गात् राजाधिराज सालकोराउ श्री सूर्यसेन विजइराज्ये तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सह गोत्र साह तेजा भार्या करम इतो द्वितीय भार्या लोचमदे। प्रथम भार्या करम इती तत्पुत्र साह डूलह, द्वितीय भार्या लोचमदे तत्पुत्र साह श्रीपाल, साह दूलह भार्या दूलहदे तत्पुत्री द्वौ साह आशा द्वितीय पुत्र साह हेमा। आशा भार्या अहंकारदे द्वितीय कनौलादे। साह हेमा भार्या हपमदे। साह श्रीपाल भार्या सरस्वति। तत्पुत्रौ साह होला द्वितीय साह लाला। होला भार्या हुलसिरि तत्पुत्र साह सुरत्राण लाला भार्या ललितादे। पुत्र साह रतसी भार्या रयणादे एतेषां मध्ये साह रतनसी इदं पुस्तक सुदर्शन चरित्रं लिखापितं। पल्यविधान व्रत निमित्तंआचार्य श्री अभयचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि पद्मकीर्त्ति समर्पितं।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ११५. साइज ११।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे २५–३० अक्षर। प्रति मे दो तीन पुस्तको के पृष्ठों की मिलावट है।

संवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्वादश्या तिथौ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्तिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये चंपावत्यां वास्तव्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये खंडेलवालन्वये बोहरा गोत्रे सा० श्री जोरम तद्भार्या

१ भोजराउ २ विसयरेण।

वयपंचतिक्खणहरो पवयणमायासुदीहजीहालो ।
चारित्तकेसरड्ढो जिणवरपंचाणणो जयउ ॥
तिहुयणकमलदिणेसु णिरणासियघणतिमिरभरू ।
पयाडमि चरिउ पसत्थु पणविवि रिसहु जिणेसरू ॥१॥

अन्तिम पाठ—

पुणुलहेवि पयमणुयत्तउं दिक्खिउपालविसंजमु
देवसेणगणवंदियउ होइसिद्ध जयउत्तमु ॥

इय सुलोयणाचरिए महाकव्वे महापुराणहिट्ठिए गणिदेवसेणविरइए अट्ठावीसमो परिछेउ संमत्तो।

प्रशस्ति—

णंदउ सुइ रूजिणिंदहो सासणु, जयसुहयरु भव्वयणासासणु ।
णंदउ पयजें धम्मपयासिउ, पाढउजेणसत्थु उ णासिउ ॥

साहुवग्गुरयणत्तयधारउ, णंदउ सावउ वयगुणसारउ ।
दाणु देवि इंदिय बलडमराहं, वेज्जावच्चु करेउ मुणिपरहं ।
णंदउ णरवइ सहु परिवारें, पालिय णाणिय यारें ।
णंदउ पयपरि मुच्चउपावे, रंगिज्जउ जणधम्मपहावें ।
वीरसेण जिनसेणपरियह, आयमभावभेयबहुभरियह ।
तहसंताणि समायउ मुणिपवरु, होट्टलमुत्त णाम बहु गुणधारु ।
रावणुव्वबहुसीस परिग्गहु, सयलायम हुत्तउ अपरिग्गहु ।
गंड विमुत्त सीसु तहो केरउ, रामभद्दु णामें तवसारउ ।
चालुक्किय वंसहो तिलउल्लउं, होवउणरवइ चाएं भल्लउ ।
तिणमिवमुय विरज्जु दिक्खंकिउ, तिरयणरयणाहरणालंकिउं ।
जायउसासुसीसुसंजमधरु, णिवडिदेउणा मुणिहणियसरु ।
तासु सीसु एक्को जि मजायउ, णिहणिय पंचेंदिय सुहरायउ ।
सीलगुणोह रयणरयणारु, उवसम खम संजमजलसायरु ।
मोहमहल्लमल्लतरुगयवरु, भवियण कुमुयचंदु च्छणससहरु ।
तवसिरि रामालिंगियविग्गहु, चारिय पंचायारु परिग्गहु ।
पंच समिदिगुत्तियत्तयरिद्धउ, गणवंदिउ भुवणयलि पसिद्धउ ।
मयरयद्धय सरपसरणिवारउ, दुद्धर पंचम हव्वय धारउ ।
सिरिमल धारिदेउ पभणिव्वइ, णामें विमलसेणु जाणिज्जइ ।

तासु सीसु णिच्चि मयखुंभउ, गुरु उवएसें णिच्चाहियतउ।
कहिय धम्मु परिपालियसज्जणु, भवियरंमलरविणिणासियतमु।
सच्छपरिग्गहु णिहयकुसीलउ, वम्मेकिहाए पहाँवंशः सीलउ।
उत्तम णिलउ परिव रंयरयेणत्तउ, सोम्मु सुयंग्रु जिणु गुणअणुरत्तउ।
देवसेण णामे मुणि गणहरु, विरइउ एउ कव्वु तें मणहरु।
अमुणि तेण किंपि होणाहिउ, सुयदिवइंउंकाँई मिंसाहिउ।
सयलु विरुगउ देवअएसरि, तिहुयण णरावंदिय परमेसरि।
फुडु कुठयणु मोहेणिणु भइ तउ, केरंतु परदेइणवलउ।
रक्खस संवत्सरे बुहदिवसए, सुक्क चउदहसि सावणमासए।
चरिउ सुलोयणाहि णिप्पउ, सदअत्थवणयसंपुणउ।

घत्ता

णरि मइकंदित्त गव्वेणकियउ, अवरुण केणवि णाहें।
किउ जिणधम्मंहो अंणुत्तर गुहमणे कयधमुछाहें॥

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यगताब्दे संवत १५७७ वर्षे पोसमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवारे अश्वनी नक्षत्रे श्री योगिनीपत्तनने श्री कालिंदीनद्दे श्री फेरोजावाददुर्गे गुणिजनव्रतिसंसेव्यमान त्रिभुवनसिलनिनामाख्या भव्यजनाध्यासविविनाखिलनिवासिमनष्वृत्तेनासाया जिनधर्मरत्नाकारप्रियायां दुष्थितस्वस्थीकरणक्षमाया प्रतापपरमेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इवराहिमसाहि रक्षमाणायां जैनबौद्धचार्वाक माम्य नैयायिक मीमांसक षट् दर्शनाद समन्वयताया जयवंत श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे वादिकविभजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्त्तिदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्ततपट्टे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्ततपट्टोदयाद्रिभास्वद्‌ भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेना स्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे श्री योगिनीपुरवास्तव्य. सुश्रावक साधुनानिग तस्य भाया साध्वी महीवरही लखणसी भार्या देवराजही तत्पुत्र वीरदास तस्य भार्या धनराजही तृतीय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषा मध्ये चउधरी लखणसी तस्य भार्या शीलतोय तरंगिणी प्रिया नाम दिवराजही तत्पुत्र वीरदास दिक्षानां पचमहाव्रतधारकः विवेकगुणसंपन्नः भिवजनमभारंजन भव्यजीवप्रतिबोधकः मुनि श्री ३ विमलकीर्त्तिदेवैरिदं सुलोचना चरित्र लिखापित निजकर्मोपार्जित कर्मक्षयनिमित्तार्थं मद्भावतरंगेण लिखापितं आत्मपठनार्थं।

४२. सुकुमाल चरित्र।

रचियता मुनि श्री पूर्णभद्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५ साइज .१०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ३१×३३ अक्षर। प्रारम्भ के २ पृष्ठ से ३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है।

मंगलाचरण—

पढमु जिणवरू णविवि भविण जडमउड विहुसियउ विसह···मयणारि णासणु।
असुरासुरणरथुअचलुणु सत्ततच्चणवणयपयासणु ॥
लोयालोयपयासयरूजमु उप्पण्णउणाणु।
सो पणवेप्पिणु रिसहजिणु अक्खयसोक्खणिहाणु ॥

प्रशस्ति—

इय भरह खेत्ते संपण्णवेसु, विउगुज्जरत्त णामेण देसु।
तासु वि मज्झह ठिउ सुप्पसिद्धु, णायरमंडल धणकणसमिद्धु।
तहिं णयरु णाम संठियउ ठाणु, सुपसिद्धु जगत्तय सियपहाणु।
सिरि वीर सूरि तहिं पवरभासि, विणयालंकिउ गुणरयणरासि।
मुणिभद्दसीसु तसु जाउ संतु, मोहारि विणासणु णिम्मसत्तु।
तासु वि सुकुमाउह ह्याउ, सिरि कुसुमभद्द मुणि सीस जाउ।
तासु वि भवियायण आसपूरि, सजाउ सीसु गुणभद्द सूरि।
हउ तासु सीसु मुणि पूण्णभद्दु, गुणसील विहूसिउ गुणसमुद्दु।
मइ बुद्धि विहूणइ एहु कव्वु, विरयउ भवियण णिसुणत सव्वु।

जमजय सायरु तवइ दिवायरू जाम मेरु महि वलइ थिरू।
जो वाइ पहंजणु जणमणरंजणु ताइउ सत्थु जइ होइ चिरू ॥

इय सिरिसुकुमालसामिचरिए भव्वयणाणंदयरे सिरिगुणभद्दसीसु मुणिपुण्णभद्दविरइए सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणाए छट्ठो परिच्छेउ समत्तो।

४३. सुकुमाल चरित्र।

रचयिता श्री पं० श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०×४४ अक्षर। रचना संवत् १२०८ लिपि संवत् १५४६ लिपि संवत् बाद में लिखा गया है।

मंगलाचरण—

सिरिपंचगुरुहुं पयपंकयइ पणविवि रंजियसयणहं।
सुकुमालसामिकुमरही चरिउ आहासमि भव्वयणहं ॥

प्रशस्ति—

आसि पुरा परमेट्ठिहि भत्तउ, चउविह चारुदाण अणुरत्तउ।
सिरि पुरवाड वंस मंडण धउ, णियगुणणियराणंदिय बंधउ।

गुरुभत्तिय परिणामिय मुणीसरु, णामे साहु रजाणु वणीसरु।
तहो गल्हु णामेण पियारी, गेहिणि णामणाइंहिय सुहयारी।
पविमलसीलाहरण विहूसिय, सुहि सज्जण बुहयणहपसंसिय।
ताह तणूरुह पीथे जायउ, जणसुहयरु महियलि विक्खायउ।
अवरु महेंदो वुच्चइ बीयउ, बुहयणु मणहरु तिक्कउ तइयउ।
जाल्हणु णामे थणिय चउत्थउ, बुणु विसलक्खणु दाणमहत्थउ।
छट्ठउ सुवंस पुण्णहु यउ जइ, समुदपालु सत्तमउ भयउतहु।
अट्ठमु सुयणइ पालु समासिउ, विणया इय गुणहि परिभूसिउ।
पटमहु पियणामेण सलक्खण, लक्खणकलिय सरीर वियक्खण।
तहि कुमारु णामेण तणुरुहु, जायउ पकय जेम सरोरुहु।
णिवियविहूसण भूसिय कायउ, महियलिमय मिच्छत्त परिचत्तउ।

घत्ता

णामे धवरु बीयउ पवरुकुमरहो हुय वरगेहिणि।
पढमा भणियासुयणहि गणिय जिणमय रयवहु गेहिणि॥

तहि पाल्ह णामेण पहूयउ, पढमु पुत्त णं मयण सरूवउ।
बीयउ गल्हणु जो जिणु पुज्जई, जसु रूवेण णामणसिउपुज्जइ।
तउ यउ धणि जाणिउ जणिज्जइ, बंदव सयणह सम्माणिज्जइ।
सुणियउ चायउ रूपहु णामे, णावइ णियसवुदर सियकामे।
पयहणोसइ कम्मरूवउ, जिणसयरयहो दोउ दुक्खक्खउ।
मज्झु वि एउ जि रज्जण अण्णों, ससाणिय सुहणोसुरवण्णों।
चउविहु सघु महीयलि णंदउ, जिणवरपयपंकयए वदउं।
णंदहु चाउ पिसुणु खलु दुज्जणु, दुट्ठदुरासउ णिदिय सज्जणु।
एउ सत्थु मुणिवरहं पढिज्जउ, भत्तियभवियणेहि णिसुणिज्जउ।
जामणहंगणि चदंदिवायर, कुलगिरिसेरू महीयलसायर।
पीथे वसु ताम अहिणंदउ, सज्जणसुहिमणाइआणंदउ।
वारहमयइं गयइं कय हरिसइं, अट्ठोत्तरइ महीयलि वरिसइ।
कम्मणपक्ख आगहणो जायए, तिउज दिवसि ससि वामरि मायइ।

घत्ता

पाठर मज्झ गंथ महउ पद्धडियहिर वयणाइ।

जणमणहरणु सुहवित्थरणु एउ अत्थु सपुण्णउं ।।

इय सिरिसुकुमालसामिमणोहरचरिए सुदरयरगुणरयणणियरभरिए विबुहसिरिसुकईसिरिहरविरइए साहु पीथे पुत्र कुमारणामंकिए सुकुमालसामिसव्वत्थसिद्धि गमणो णाम छट्टो परिच्छेउ सम्मत्तो। इति सुकुमालस्वामि चरित्र पंडित श्रीधर विरचितं।

संवत् १५४६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवासरे पुष्पनक्षत्रे वारावतीनगर्यां सुरत्राणगयासुद्दीनराज्ये श्री श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री नंदिसंघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा ....।

४४. हरिवंश पुराण।

रचयिता आचार्य श्रुतकीर्त्ति, भाषा अपभ्रंश। पत्रसंख्या ४१७. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५। ४० अक्षर प्रति प्राचीन है। रचना संवत् १६०७।

मंगलाचरण—

समिइणवोमंसई स हरिवंसई पावतिमिरहरविमलरवि।
गुणगणजसभूसिय तुरय अदूसिय सुव्वयणेमियहाजयहरि।

अन्तिम पाठ—

वीरजिणिंद चलणपणवेप्पिणु जिणसासणमहंतहो।
दिसतु सम्माहि संति भव्वयणहं धम्मणु रायरत्तउ ।।

इय हरिवंशपुराणे मणहरसरायपुरिसगुणालंकारकल्लाणे तिहुयणकित्ति सिस्स अप्पसुदकित्तिणा महाकव्वु विरयतो णाम चवालीसमो संधि परिछेउ समत्तो।

णिवणियरदेसुरट्ठो, जयसिरि धम्माणु राउमणिहिट्ठो।
णंदउ जणवउपवरो, सुह संपइ दाणकप्पयरो ।। १ ।।
चउविह मुणिगणसहिउ, णंदउ सिरिणंदसंघुसुरहिउ।
णंदउ जयसिरिजुत्तो, सावयगणुधम्मअणुरत्तो ।। २ ।।
हरिवंसगयणचंदो जहदसण सयल भुवणआणंदो।
सयलोयसुजसपवरो णेमिजिणो भवियदुरिपहरो ।। ३ ।।

प्रशस्ति—

इय हरिवंसपुराणु, अइगरिट्ठु कइणा विहिउ।
पयडमितहोअविहाणु, जे लेहाविउ पुणु लिहिउ।
भूभरह पसिद्धउसुह समिद्धु, कुरु भूमिपदह विहिरिद्धि रिद्धु।

तहिं चेयालइ त्रिवससिरोमणि, भवियण कमल पवोहण दिणमणि।
पोमावइ पुरवारु गुरुक्कउ, वसुमय विमणपमायपमुक्कउ।
सीखमावचसणदु महपंडिउ, णिम्मल विउज चारिदेहमंडिउ।
आयमवेयपुराण पहाणउं, जोईमअत्थ संत्थ गुण जाणउं।

घत्ता

चायहँ सुपहाणु चोइमल्लु सरसइ णिलउ।
पणवासरूणाई सोहइ वुहयण कुल तिलउ॥ ३॥

गुज्जर गोठि गुट्टि सुपहाणवि, सेयं सुवपयडे चउदाणवि।
धम्मुजुत्त संम्मत्तालंकिय, पुण्णपवित्तणामचडंकिय।
रज्जकज्जसज्जणसुहदाइय, विहविलच्छि चेईहरिलाइय।
पूयपतिट्ठइट्ठसुणिमित्तें, णियउवणयकरमुक्कलचित्तें।
मंगलगायसहणाडयरस, णिच्चमहुछव पुण्णहु सरहस।
जिण कल्लाण मिलिवि णारीणर, तणसिंगारसार सोहधर।
हावभावविब्भम अइकुछर, चउणकाय सुरणावइ सछर।

घत्ता

कि वण्णमिताह गुज्जरगुट्टिसमत्थ जहिं।
जिमधम्मपहाणो पयडुं पहावणधम्मु तहिं॥ ४॥

जेणलिहाविउ गंथं गरिट्ठउ, पयडमितांसु वंसु सुविसिट्ठउ।
गुज्जर गुट्टि आसि पयडियजस, पीणिय भव्वलोय चाए रस।
हेरुकिया वंसह सुयहाणवि, पीणिय भव्वलोय चउदाणवि।
हरसीसाहु णामु सुगरिट्ठउ, लहुराइसोविवसमणइट्ठउ।
हरसीभज्जलच्छिकमलच्छिय, गिहधम्महु पडिपालणदच्छिय।
तासु उवरि णंदणु उप्पणउं, उधू णामु जसरासि भणुण्णउ।
तासु सरो गेहिणिगयगामिणि, धम्मलीण परिवारहु सामिणि।
तासु पुत्त चंदू चंदाणणु, सुकियविहिलिलच्छीहलेमाणणु।
वीयउ मदूमणोहर गारउ, परम धम्मरहधरधुरधारउ।
चदू भज्ज सयलगुणसारी, णाम णयणा सिरि णयणपियारी।

घत्ता

तहु गेहिउववण्ण वेविपुत्त णं चंद रवि ।
सिउ गणु पढमिल्लु अयससहो हरणाइंपवि ॥ ५ ॥

लहु भीपमु पुण्णालय खमुअ, धम्मधराहसिचणअमुअ ।
भिउगणतिय रुपारुवदरउ, दाणपुण्णचेलणियमहासइ ॥
भीखमभज्जपटोगुणजुत्तिय, सीलणिकेयजणाय ण पुत्तिय ।
भिउगुणतणय वेविकुलमंडण, मीणुवीउ भाउ अहखडण ।
णाणभज्ज पाथुल मणमोहण, मुह ससिहर समिकिरण णिरोहण ।
चदू वधु मदू चिरु भासिउ, जासु सुजसु वुहयण सुपयासिउ ।
तासु भज्ज पदमागुणसारी, रुवरासि वल्लहसुपियारी ।
बीई गुद्ध कुवरि णामंकिय, जा मोहग रुवरइ संकिय ।
सीलाहरणविहसियदेहिय, मुणिवर विणयदाणसुसणेहिय ।
कुवरिउयरसुव तिणिणउ वण्णइ, सुजसपुंज कव्वह वण्णीकइ ।
णरयणतय धम्महु कारण, कप्पतरुवजण दुक्खणिवारण ।
दादू साहु पढमसुउ भासिउ, जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ ।
जगहरु बीउ भुवणि जस सायरु, णयण सीहु तहु लहु वडभायरु ।
दादू णामिउ हयसु मणोहरि, णरइ पीड वेवि कामहु घरि ।
पढम भज्ज रुइ सासुय खण । लाछ पयंकित अगसुह लक्खण ।
खिउ सिरिणाम अवर सुपहाणी, ससमुह जिम इंदहु इंदाणी ।
दाणमाण सम्मत्त सुरेवइ, रइ मोहग सुजस णादेवइ ।
अतिहि दाणु अणु दिणु वहु दिज्जइ, चउविह संघ विणउ विरइज्जइ ।
तासु सरीर पुत्तु उप्पण्णउं, माणससरिह सुवसु मणुण्णउ ।
अभमरण्णु णामेण मणोहरु, चिरु णदउ जें माढउ णिवघरु ।
गेहणितासु रुवगुणसारी, णाम राउ सिरिपहसुपियारी ।
परियणु अवरु जइं वणिज्जइ, तउ वीयउ पुराणु विरइज्जइ ।
णयह मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु, वणिउ जासु सुयण गुण कित्तणु ।
दादू साहु जिणेसरि भत्तउ, पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ ।
अभयाहारमन्य पुणु ओसह, तिविहि पत्तपीणियसंतोसहु ।

घत्ता

लंदाविउ एहु गुणणिहाणु कल्लोलणिहि ।

णिसुणत कहंत भवियण जणमण होइ दिहे ॥ ५ ॥

संवच्छरु सोलह सइ उत्तउ, उवरि सत्तवरि सह संजुत्तउ।
मग्गसिरह सियपंचमि णिम्मल, गुरुवासरु गरिट्ठु पयडउइल।
जोगु महुत्त लग्गुणरकत्तुवि, सुहदायउससिहरुव सु जुत्तु वि।
चंदवार गढ दुग्ग दुग्गिमज्झह, सघाहिव चेयाले मज्झह।
रामपुत्त पंगारवलिहियउ, जिम सुइ कित्ति कईसें विहियउ।
सुद्धुर्कार वि जो भवियण भासइ, बोहि लाहु तहु देउ सरसइ।
णंदउ भवियणु धम्म गुरुक्कउ, णंदउ जइण संघु मलमुक्कउ।
णंदउ पुहइ चंदुवुहु गुणीणहिं, दाणु पूयसुपयासिय बहुविहि।
णंदउ कमू चउद्धर माणउं, णंदउ दीपु भुवणि सुपहाणउं।
णंदउ-रुहरीवगरिट्ठउ, णंदउ चूहरु चंदु जणिट्ठउ।
णंदउ साहु सधारणु सुदंरु, णंदउ राम गरुवगिरिमदरु।
णंदउ पदमसीहु जें साहिउ, वारसगुसयलु वि अवगाहिउ।
एयहं पमुह सघु णंदउ चिरु, सुहु संपय समूहुणर्वाणहि थिरु।
णंदउ पढइ सुणइ वर काणइ, णंदउ भाव सुद्धु मणिमाणइं।

घत्ता

णंदउ गुज्जरगुट्टि परियणपुत्तकलत्तज्जुउ।
जव लगि कह हरिवंस जाम ससि रवि अटल धुउ ॥

४५. हरिषेण चरित्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २४. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८-३२ अक्षर। प्रति पूर्ण है। विषय-चक्रवर्त्ति हरिषेण का जीवन चरित्र।

मंगलाचरण—

भावें पणविवि मुणिसव्वयहो, चरणकमलभवतावमहा।
निसुणहु भवियहु वहु रसभरियहु, हरसेणहु पयडेमिकहा ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

छुहयणाह णवपरियव्वहो, गुरु उवए सिंजाणियउ।
काविजीयइ जिणपणवोप्पिणु, तें हरिसेण सम्माणिउ ॥ १ ॥

संवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनामजोगे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तदाम्नाये पोरवाडगोत्रे साह कुंभा भार्या पुरी तत्पुत्र हे तस्य भार्या हिवसिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या बाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौहादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय साह वोधु तस्य भार्या राता तस्यः पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडो तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्र लिखापितं। बाई पदमसिरि जोग।



हिन्दी भाषा के ग्रन्थों की प्रशस्तियां



१. अनित्य पंचाशत ।

रचियता श्री त्रिभुवनचंद । भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य सख्या ५५, छन्दों में अधिकतर छप्पय तथा सवैया हैं ।

प्रथम पद्य—

सुद्ध स्वरूप अनूपम मूरति जासु गिरा करुनामय सोहै ।
संजमवंत महामुनि जोध जिन्हों घट धीरज चाप धरो है ।
मारन कौ रिपु मोह तिन्है वह तीक्षन साइक पकति हो है ।
सो भगवत सदा जयवंत नमों जग मे परमातम जो हैं ।।१।।

अन्तिम पद्य—

पदमनंदि मुनिराज तासु आनन जलधारी,
ता तहिं भई प्रसूति सकल जन मन सुखकारी ।
धन वनिता पुत्रादि सोक दावानल हारी,
भय दलनी सद्‌बोध अन्न उपजावन हारी ।।
उन्नत मतिधारी नरनिकौं अमृत वृष्टि ससय हरनि ।
जय यह अनित्य पंचासिका त्रिजग चंद मगल करनि ।।१।।

।। दोहा ।।

मूल सस्कृत ग्रथ तै, भाषा त्रिभुवनचद ।
कीनी कारन पाइ कै, पढत बढत अनद ।।

२. अनेकार्थध्वनिमंजरी ।

रचयिता श्री नन्ददास । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र सख्या ६. साइज १२x५ इञ्च । रचना संवत् १८२४

मंगलाचरण—

यो प्रभु ज्योतिर्मय जगत मय, कारन करत अभेव ।

विघन हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

भात पुत्र अवतंस कहि, कुल अवतंस सुजानि।
सोरह वरिप हैं सु जो, अभिनव कहं बखानि॥

मार्गसीर्प दशमी रवौ असित पक्ष सुभ जानि।
अब्द अठारसैं वरसि ऊपरि चौवीस मानि।
पढन काज लिख प्रेम कर नद किसोर द्विवेद।
ज्ञानी लेहु सुधारि करि अक्षर ही को भेद।

३. अष्टाह्निका कथा।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर। रचना संवत् १८७१.

मंगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा नमिहु मन वच काय।
वरत अठाई की कथा कहु ग्रंथ अनुसारि॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि मुनीश्वुर जेम, कथा करी हिरदै धरि प्रेम।
गोधो जीवणराम सुजान, वरत करै विधि सुं अभिराम।
ताकै करी कथा या सही, या कुं बुधजन सोधो सही।
रेणी नगर कसबो सुभ ठाम, वनवाडी बापी अभिराम।
पार्श्व जिनालय सोभै सदा, पूरन करी कथा हम यदा।

॥ दोहा ॥

अठारह सैं इकैंतरया भादव उजली तीज।
वार वहस्पतिवार नैं सतगुरु कथा कहीज॥

४. अष्टाह्निका कथा।

रचयिता श्री खुशालचन्द। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५. पद्य संख्या ११७, रचना संवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनेसुर वंद फिरि, वर्धमान जिनराय।
यहु अठाई की कथा. सुण ज्यो भवि मन लाय।

सतरासैंरचहौतरै, कातिग मास बखानि।
सुदि आठैं वरनन करुं, त्रिसपतिवार सुजान।

अन्तिम पाठ—

कीयो कथान दिल्ली कैं मांहि, जैंय्यंचपुरं मनोहर गांव।

दोहा— सतरासैं चौहैतरे, मास असाढ बखानि,
कहै खुशाल सुध भावतैं, सुकल तीज मनि आनि।

लिखतं पांडे दयाराम। जाति मोती।

५. आदिनाथस्तुति।

रचयिता श्री मुनि कमलकीर्त्ति। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य)। पृष्ठ संख्या ५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७–४० अक्षर।

मंगलाचरण—

श्री जिनवर शुभ सारदा नमंते गणधर पाय।
कर जोडी करुं वीनती अवधारु जिनराय॥

प्रशस्ति—

आदि दिगंबर कवहोए, कवाडा कवाडा श्रीमूल संघ कि।
सरसति गछ मोहामाणए, ए गछपति गछपति गिरुआसार कि॥
गच्छ पतीय गिरुआ सुमति कीरति सकल भूषण सूरी सरु।
तास पाय प्रणमी मधुरी वाणी कहि कमलकीरति मुनिवरु॥
नर नारि अति घणु भाव आणी गीत जिनागम गावए।
सुर नर किन्नर पद लही निमी पछि सिव पुरि पामए॥

६. आदि पुराण॥

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) सख्या २१५. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में २८×३० अक्षर।

मंगलाचरण—

आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आदरणमेसु।
सरस्वती सामी ने वलीस्तवु,
बुधि सारद्द मागउ निरमल श्री सकलकीर्त्ति पाय प्रणमीन॥

मुनी भुवनकीर्त्ति गुरु वंदसोंऽजला रासकरीसोंहूरु वडो ।
तस प्रसादे सार,
श्री आदि जीणंद गुण वरणवु चारित्र जोहू भवतार ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

रास कीयो मे नामेलोए, भाव सहित वीसालतो ।
आदपुराण जोई करीए, सुगम कीयो मे गुणमाल तो ।
पढे गुणे जे साभलए, तेह ने पुन्य अपारतो ।
मनवाछीत फल ते लहए, मुगति रमणी वसी होय तो ।
लखे लखावे ते वडोए, करे ह्य न उधार तो ।
तेह ने नरनीध सरजेए, मुगति रमणी होय हार तो ।
जे भवियण विस्तार करए, तेह ने पुन्य अपार तो ।
जिनवर गणधर मुनीवर, गुण गुथ्यां मे सार तो ।
तार्थंकर श्री वृषभ जीन ए, कीयां पर उपगार तो ।
जुगल्या धर्मनी वरो या उ, लोक कियो जयवंत तो ।
पद् कर्म स्वामी थापी पाए, धमाधर्म वीचार तो ।
मुगति रमणी प्रगट कायो ए, त्रिभुवन जय २ कारतो ।
तेह गुण मे जाणा' या ए, सद गुरु तणो पसावतो ।
भवि २ स्वामी सेवसु ए, लागु सह गुरु पाय तो ।
आदि जिनवर २ तणो मेग ए, कीयो सार सोहामणो ।
एक चित भाव आणीए, पढे गुणे जे साभले ।
जिनसासण गुण प्रगत जाणीए, श्री सकल कीत्ति गुरु प्रणमीने ।
मुनी भुवनकीर्ति भवतार, ब्रह्म जिनदास कहे निमलो ।
रास कीयो मे सार ।

दोहा

अक्षारो ते ह वडा सभा मांहि गुणवत ।
रसि सहित जे साभले ते ह ने पुन्य महत ।
समकीत गुण उपजे वस्त नीमलनी सार ।
तत्व पदारथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार ॥

संवत् १८५६ मंगसीर सुदी ३ गांव श्री मैतवाल मध्ये पार्श्वनाथ उपासरे लिखापितं श्रीमत् भट्टारक जी श्री रत्नचन्दजी। सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे आचार्य श्री कुन्दकुन्दाम्नाये सकलकीर्तिजी आचार्यो म्नाये तसपट्टे भट्टारकजी श्री १०८ देवचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तसपट्टे भट्टारक जी श्री १०८ महीचन्द्रजी तत् शिष्ये आज्ञाकारी ब्रह्म प्रेमचन्द ने लिख्यो है।

७. आदित्यवार की कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र १८. साइज ८×४।। इञ्च। पद्य संख्या १५७. लिपि संवत् १७२०. विषय—दीतवार व्रत की कहानी।

मंगलाचरण—

रिसहनाह प्रणमुं जिणंद, जा प्रसाद चित होइ आनंद।
प्रणमौं अजित पणासै पाप, दुख दालिद्र हरे संताप॥ १॥

अन्तिम पाठ—

अजर अमर निर्मल रह्यो, सो जिणदेव सुभा कौ जयो।
दीन्ही ठौर रच्यौ पुराण, हीण वुद्धि कौ कियौ वखाण॥
हीण अधिक अक्षर जो होइ, बहुरि सवारै गुणीयर लोय॥
अग्रवालीयैं कीयो बखान, कुवरि जननी तिहु नग्री थान।
गरग गोत मल्ल कौ पूत, भयो कविजन भगति सजूत॥
करण कथा कुं मो मति भई, तौ यह धम कथा अरठई।
मन धरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर सुरग देवता होइ॥

८. आदीश्वर फाग।

रचयिता भट्टारक ज्ञानभूषण। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ३१. साइज १०।।×५ इञ्च। पद्य संख्या ५६१. कवि ने पहिले संस्कृत पद्य लिखे हैं और उन्हीं का हिन्दी पद्य मे भाव दिया है। विषय—भगवान आदिनाथ के जीवन की एक घटना का वर्णन।

मंगलाचरण—

आहे प्रणमीय भगवति सरसति जगति विबोधनमाय।
गाइस्यूं आदि जिणंद सुरदवि वंदित पाय॥

अन्तिम—

आहे उपनउ पंचकल्याणक ऊपरिमानसिराग।
ज्ञानभूषण गुरिइ कीधउ तेह भणी एक फाग॥

आदि नारीय नर जे भाव धरी नित गाइसिइ एह ।
इन्द्रादिक पद पामीय शिवपुर जासिइं तेह ।
आदि पराणइ अधिका गत पच सलोक प्रमाण ।
सुणइ भणिसिइं लिखसिइं ते नर अतिहिं सुजाण ।

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त । संवत् १६३४ वर्षे पौष बुदी १० बुधवार लिखितमिदं शास्त्र । मालपुरा मध्ये पांडे श्री डूंगा लिखावितं ।

९. आराधना प्रतिबोध ।

रचयिता श्री भट्टारक सकलकीर्त्ति भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४ पद्य संख्या ४५-३६ नम्बर के गुटके मे ४६ से ४७ पृष्ठ तक है । विषय-आराधना । अराधनासार का संक्षिप्त भाव दिया हुआ है ।

मंगलाचरण—

श्री जिनवरवांणी नमेवि गुरु निग्रन्थ पाय प्रणमेवि ।
कहू आराधना सुविचार संक्षेप सारोद्धार ।

अन्तिम—

जे भणई सुणइ नरनारि, ते जाइ भवि तेइ पारि ।
श्री सकलकीर्त्ति कहु विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

१०. ऋषभविवाहलो ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ८, साइज ६×५॥ इञ्च । गुटका ५३, नं० गुटके के २२७ से २३४ पृष्ठ तक है ।

मंगलाचरण—

समर श्रीसरसतीयोमइ शुभमती करो बरवाणी पसाउ लोए ।
प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर चरणाचुं ताम विवाहलोए ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

संवत सोल अठोतरे ॥ मास आसाढ धनसार सु ।
उजलो बीज रलो आसरलो॥... ... ... ।
लक्ष्मीचंद्र पाटे निरमलो ॥, अभयचन्द्र मुनिराय ।
तस पट्टे अभय ... रतन कीरति शुभकाय ।
कुमुदचन्द्रे मन उजलोए,..... ....

११. कर्णातमृतपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८२. साइज ६×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर । रचना संवत् १८२६. अन्तिम पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये हैं । प्रशस्ति दी हुई है । लेकिन पत्रों के चिपक जाने से नहीं दी जासकी ।

मंगलाचरण—

॥ दोहा ॥

बानी जांनी भारती उपनी जिन मुख जैन ।
सो सब कौ मंगल करौ, हरौ दरिद्र दुख मैंन ॥ १ ॥
विमल बुद्धि वह सारदा, श्री गौतम गणधार ।
वंदौ वंदित देवकौं, देय भवोदधि पार ॥ २ ॥

प्रशस्ति का एक अंश—

संवत् अठारह सौ छवीस, ग्रन्थ रचित···· बीस ।
कार्त्तिक वदि बारस गुरुवार, रूप नगर में रच्यौ सुसार ॥१॥

११. कल्याणमन्दिर स्तोत्रभाषा ।

रचयिता महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ७. पद्य संख्या ४४.

मंगलाचरण—

परमज्योति परमात्मा, परमज्ञाण परवीन ।
वंदौ परमानंद मे, घटि घटि अंतर लीन ॥ १ ॥
निरभै करन परम परधांन, भाव समुद्र जल तारन जानि ।
सिवमंदिर अघहरन अनंद, बंदौ पारस चरन जिनंद ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

इहं विधि श्री भगवंत सुजस जे भविजन भासै ।
ते निज पुंनि भंडार संचिर पाप पनासै ।
रोमराय बलसंति अग प्रभु के गुन गावै ।
सुरग संपदा भुजि, वेग पंचमि गति पावै ।
इह किलाण मन्दिर कियौ कुमचन्द्र की बुधि ।
भाषा कहत बनारसी, कारण समकति सिधि ॥१॥

१३. कथा कोश संग्रह।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६७. साइज ६×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १६-२० अक्षर। कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष सप्तमी व्रत कथा, चादण षष्ट व्रत कथा, आकाश पचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पच परमेष्ठी गुण वर्णन का संग्रह है। गुटका नवीन है। मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग २ है। दश लक्षण व्रत कथा का मंगलाचरण इस प्रकार है—

मंगलाचरण—

श्री वीर जिणवर पाय, पाय प्रणामवि सरस्वती।
स्वामिणी वलीस्तवु, बुद्धि सार हू वेगि मांगउ॥ १॥
वलि गणधर स्वामी नमस्करु, श्री सकल कीरति पाय वंदतु।
रास करीस्यू हू निरमलो, ब्रह्म जिणदास भणै सार॥ २॥

अन्तिम पाठ—(पच परमेष्ठी गुण वर्णन)

श्री सकल कीरति पाय प्रणमीने, श्री भुवन कीरति भवतार।
ब्रह्म जिणदास गुण वरणया, पच परम गुण सार॥ १॥
पढे गुणे जे साभले, मनि धरी निरमल भाव।
मन वंछित फलरुवरणा, पावें शिवपुर ठाव॥ २॥
इति श्री पंच परमेष्ठी गुणवर्णनरास समाप्त।

१४. चतुर्दशी चौपई।

रचयिता श्री टीकम। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २० साइज १२×५॥। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १२-३४ अक्षर। रचना संवत् १७१२. लिपि संवत् १७६३, विषय-अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा।

मंगलाचरण—

प्रथम नंदि पार्श्व जिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव।
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणै जीत्यो जिहि मार॥

प्रशस्ति—

सतरह से बारहत्तरै फागुण तेरसि जांणि।
वो छौ अधिकौ शुद्ध करि, पंडित कहै वखाणि॥ १॥
बुद्धि सारु टीकम कहै, काल पर्मा हैं वास।

पंडित होइ छोटो बड़ौ हुं सबही कौ दास ॥ २ ॥
भोजराज को राज है दादौ भयौ खंगार।
घणौं भार दे थापियौ, सुखमल साह हुजदार ॥ ३ ॥
चौइसी के देहुरं, बैठें श्रावक आय।
राति दिवस चरचा करें, बंदे जिनवर पाय ॥ ४ ॥

संवत् १७६३ का मिति वैशाख बुदी १२ दिल्ला का जैसिंहपुरा मे पांडे दयाराम ने लिखा। जाति मोनी ॥

१५. चरचासमाधान।

रचयिता श्री भूधरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४१. साइज १०×५ इञ्च। रचना सवत् १८०६. प्रति पूर्ण है। विषय—धार्मिक चर्चाओं का वर्णन।

जयो वीर जिन चंद्रमा उदै अपूरव जासु।
कलिजुग काले पापमय कीनौ तिमिर विनाशु ॥
वंदौ वांणी भगवती विमल जोन्हि जग माहि।
भरमातप जासो मिटै भवि सरोज विगसाहि ॥
गौतम गुरु के पद कमल हृदय सरोवर आनि।
नमो नमो नित भाव सों करि अष्टांग विधान ॥

प्रशस्ति—

ठारहसै षटहोतरै माघ मासे अवसान।
सुकल पक्ष तिथि पंचमी ग्रंथ समापति ठान ॥
भूधर विनवै विनय करि सुनिये सज्जन लोग।
गुण के गाहक बहु जिनौ यह विनती तुम योग ॥

१६. चन्द्रनृपरास।

रचयिता पं० लब्धरुचि। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८०. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४०—४३ अक्षर। रचना सवत १७१३. लिपि सवत १७६४. विषय—चन्द्रप्रभु भगवान का जीवन चरित्र।

मंगलाचरण —

श्री जिननायक सधारीय ऋषभदेव अरिहंत।
वंछित पूरण सुरगुरु, भय भंजण भगवंत ॥

शिव सुखदायक सेवीयें, शांतिनाथ जिणचंद।
यादववंश नभो मणी, नमोइं नेमि जिणंद ॥

प्रशस्ति—

जुगप्रधान श्री हरिविजै गुरु सोह रमसम अवतारे।
पातसाह अकबर प्रतिबोधक जिणसासण सिणगार रे ॥१॥
तस पटोधर सूरि सवाई श्री विजैसेन सुरीसरे।
साध परुपणह परम गुरु गुण निध गच्छाधीशरे ॥ २ ॥
पट प्रभावक गछ धुरंधर श्री विजैदेव गणदेवरे।
नाम जपंता नवनिधि लहीये उपसम रस भंडारीरे ॥ ३ ॥
तास पटोधर वछित सुहकर उदयो अविचल जायरे।
श्री विजैप्रभ सूरी पुरंदर सुंदर गुणमनि खानि रे ॥ ४ ॥
तस गच्छ पंडित वड वैरागी सवेगी गुण भरीयोरे।
श्री गुरु सहज कुसल सुखदायक उपसमरसनो दरीयोरे ॥ ५ ॥
साखी पांच तिहां प्रगटी कुसल चंद रुचि सार रे।
वधंन धर्म धमंना धोरी सहज गुणी सिरदार रे ॥ ६ ॥
प्रथम ऋषि श्री सहज कुसलना सकलचंद उजलीयारे।
बीजा श्री लक्ष्मी रुचि पंडित नामैं नवनिधि पायरे ॥ ७ ॥
तास सीस सुध सयमधारी श्री विजै कुसल वुध ईसरे।
क्रियाव्रत पंडित कुलदीपक 'जै कारी सु जगीसरे ॥ ८ ॥
तस पदपकज भ्रमर वीरजी श्री उदै रुचि कविराय जी।
कुमत मतगज कुंभ विदारण कंठीरव कहि वायरे ॥ ९ ॥
तास सीस संवेग महोदधि श्री हर्ष रुचि विबुध कहीईरे।
उपगारी मुज गुरु मिलीयो दरसण सुख लहीयेरे ॥ १० ॥
विवुध सिरोमणि मुकट नगीनो, श्री विद्यारुचि तस सीसरे।
गुण मणि मंडित पूरो पडित सुखदायक सुजगीसोरे ॥ ११ ॥
तस लघु बंधु विबुध लब्ध रुचि रच्यो चंद नृप राम रे।
ईं छो अधिको जे कहियो ऊ वैमि वासिहू कड तीसरे ॥ १२ ॥
मुनिसुव्रत जिन चारित्र थकीयै सरस संबध वखाणुरे।
चारित्र प्रभावक मांहि पणिए प्रगट प्रणमै जाण्यो रे ॥ १३ ॥
संवत् सतरहसोतेरह कात्तिक मास उदार।
सुदी तेरस दिन निरमलो बलवंत गुरुवार ॥ १४ ॥

सवत् १७६४ वर्षे वैशाख सुदी १४ दिने लिखित सकलपंडित पडितोत्तमपंडित श्री पं० विनयसागर जी तत शिष्य प० विनोदसागर जी तत शिष्य गणो वृद्धिसागर लिपि कृत।

१७. चिद्विलास।

रचयिता श्री दीपचन्द काशलीवाल। भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ६६. साइज ६×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे १६-२० अक्षर। रचना संवत् १७७६.

मगलाचरण—

अविचल ज्ञान प्रकाशमय गुण अनंत की खान।
ध्यान धरत शिव पाइये परमसिद्ध भगवान ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इस ग्रंथ में प्रथम परमात्मा का वर्णन किया। पीछे उपाय परमात्मा पायवे का दिखाया। जे परमातमा को अनभो कियो चाहै ते या ग्रन्थ को बारबार विचारो। यह ग्रन्थ दीपचद साधर्मी कीयो है वास सांगानेर। आमेर मे आये तब यह ग्रन्थ कियो सवत १७७६ मिती फागुण बुदी पंचमी को यह ग्रन्थ पूर्ण कियो।

देव परम मंगल करो परम महासुखदाय।
सेवत शिवसुख पाइये हैं त्रिभुवन के राय ॥ १ ॥

१८. चेतनकर्म चरित्र।

रचयिता भैया भगवतीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या १७. साइज ११॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या १६८. रचना सवत् १७३२

मगलाचर—

श्रीजिनचरण प्रणाम करि भाव भक्ति उर आनि।
चेतन और कछु कर्म्म कौ कहु चरित्रबखानि ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

चेतन अरु यह कर्म कौ कर्यौ चरित्र प्रकास।
सुतन पर सुख पाईये. कहई भगोतीदास ॥
संवत् सत्रवत्तीसकै, ज्येष्ठ सप्तमी आदि।
श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कीनी अनादि ॥

इति श्री चेतनकर्म चरित्रं सम्पूर्ण।

संवत् १८४३ वर्षे क्वारमासे कृष्णपक्षे मिती क्वार बुदी १४ शुक्रवारे भट्टारक श्री रत्नकीर्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतनकर्म चरित्र लिखायो शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालेये।

१६. चौदह गुणस्थान चर्चा।

रचयिता श्री अखयराज श्रीमाल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ६६. साइज ६||×५|| इञ्च। लिपि संवत १८०३.

अन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र कह्या। जिनवाणी अनुसारि कथन करि पूरन किया। जौ कहीं भूल चूक भइ होइ तौ जो पंडित जिनवानी में प्रवीन होइ सो सुधारि पढियो।

|| दोहा ||

चौदह गुणस्थानक कथन भाषा सुनि सुख होई।
अखैराज श्रीमाल ने करो जथा मति जोइ ||

इति श्री गुणस्थान की चर्चा संपूर्ण। ग्रंथ कर्त्ता साह अखैराज श्रीमाल शुभ भवतु। लिपि कर्त्ता साह सवरदास स्वामी चाटसू का। संवत १८०३ मिती वैशाख सुदी ७ बुधवार संपूर्ण भयौ।

२०. छंदशिरोमणि।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ३० साइज ६×५ इञ्च। ग्रंथ संख्या २००. रचना संवत १८७५ लिपि संवत् १८७६

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोर की, कृपा चाहि अभिराम।
सोभनाथ पंडित कियो, छंद शिरोमणि नाम || १ ||
× × × × × ×
संवत् अठारह सतक ता पर बरष पचीस।
जेष्ठ मास सुदि सुदिन लहि, भयो ग्रंथ यह गीम || २ ||
सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज।
इक छित गज छत्र धरि, पृथ्वीस्यंघ महाराज || ३ ||
ताके तीछन तेज ते, गारति होत गनीम।
पीथल नृप माधव तनैं, ह्वै है बल की सीम || ४ ||
ताकौं चाख्यो चक्क क, नृपति नवावैं सीस।

सूरजि कुल मडन मही पृथ्वी सिंह अवनीस ॥ ५ ॥
माधव माहि नरेस नै, मनि में करिकै हरप।
सोभनाथ पै कृपा करि, राख्यौ कै गुन परख ॥ ६ ॥
पृथ्वी सिघ के सुजस कौ, आलंवन अभिराम।
ग्रंथ कियो इक अवर यह, छंद सिरोमणि नाम ॥ ७ ॥
× × × × × ×
आरम्भ्यो जय नगर में पृथ्वीसिंघ जह भूप।
पडित वहुत प्रकार के जित बडे कविन के भूप ॥ ८ ॥

इति श्री महाराज गुरुदेव सरसि रसिककिसोरमणि सेवक कवि सोभनाथ कृते छंद शिरोमणि वरण वृत्ति सपूरण।

संवत् १८२६ तिथौ फागुण सुदी १० शनिवासरे लिखतं जोसी स्योजीराम स्थान देवपुरीमध्ये। लिखापितं पाडे देवकरणजी।

२१. जबूस्वामीचारित्र।

रचयिता पांडे श्री जिनदास। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ३५. साइज ६॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य सख्या ५०३. रचना संवत् १६४२. लिपि संवत् १८४३.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

प्रथम पंच परमेष्ठी नउं दूजो सारद को वीनउ।
गणधर गुरुचरणन अनुसरों होय सिध कवित उचरुं ॥१॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

संवत सोलैसे जे भये बयालीस ता उपर गये।
भादो वदि पंचमी गुरुवार, ता दिन कथा कीयो उचार ॥ १ ॥
अकवर पातसाह के राज, कीनी कथा धम के काज।
भूल्यो विछुरो अछर जहां, पंडित गुनी सवारो तहां ॥ २ ॥
करै धर्म्म सो ढीया साह, टोडर सुत आगरै सनाहु।
ताकी नांम कथा यह करो, मथुरा मे जिन निस हो करी ॥ ३ ॥
रिखवदास अरु मोहनदास, रुपचंद अरु लछमनदास।
धम्म बुधि तुम रहियो चित, राजकरहु परिवार संजुत ॥ ४ ॥
ब्रह्मचर्य भये संतीदास, ताको सिप पांडेजिनदास।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥
पढ़ै सुनें मन लावै कोय, मनवांछित फल पावै सोय ।
जब लग मेरु सुर सांस रहे, तब लग खीर समुद्र जल वहै ।
जब लग तारा गन अरु चदं, जब लग सूर उद्योत करंत ।
जब लग जैन धम अवलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सवैया

सवत् सत्रैहसे इक्यावन फागुन दूज बुधि वदि आइ,
अंतिम केवली केरी कथा रचिकै जिनदास विचित्र बनाई ।
सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमनुभाई,
तदपि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, बरनी परम पवित्र ।
और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजंबूस्वामीचरित्रे भाषा पांडे जिनदासविरचिते कथा सपूर्ण । संवत् १८४३ पौषमासे शुक्ल- पक्षे गुरुवासरे शेरगढ़मध्ये अष्टमी जाटू लिखितं ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ३४. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७६३.

संवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज बृहस्पतिवारे जिहानावादजैसिंहपुरामध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तदाज्ञानुवर्ती पं० दयारामेनै जंबूस्वामी ग्रंथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता प० भूधरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४. साइज ६×४॥ इञ्च। पद्य संख्या १०७ रचना सवत् १७८१.

मंगलाचरण—

ग्यान जिहाज बैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नांहिं तरें हैं।
अमर समूह आन अवनी सौं घसि घसि सीस प्रणाम करें हैं ॥
किधौं भाल कु करम की रेखा दूरि करण को वुधि धरैं हैं ।

ऐसे आदिनाथ के आहि निसि हाथ जोर हम पाय परे हैं ॥

प्रशस्ति—

आगरे में बाल बुधि भूधर खण्डेलवाल।
बालक के ख्याल से कवित कर जाने हैं ॥
ऐसे ही करत भयो जैस्यंघ सवाई सूवा।
हाकिम गुलाब चंद आये तिए थाने हैं ॥
हरीस्यंघ साह के सुवंस धर्मरागी नर।
तिनके कहे सौं जोर कीनी एक ठानें है ॥
फिरि फिरि परे रे मेरे आलस को अंत भयो।
उनकी सहाय यह मेरे मन मानें है ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥
सत्राहसै इक्यसि पोष मास तम लीन।
तिथि तेरस रविवार कौं सतक संपूरन कीन ॥ २ ॥

२३. तत्वार्थ सूत्र भाषा।

भाषाकार मुनि प्रभाचन्द। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या १४२. साइज ८॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। लिपि संवत १८०३. सूत्रों का विस्तृत अर्थ दिया हुआ है।

प्रथम अध्याय की समाप्ति—

इति तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः। इति तत्वार्थसूत्रप्रभाकरग्रन्थे मुनि धर्मचन्द्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र विरचिते।

अन्तिम पाठ—

केईक जीव कर्म भूमि विना सिद्ध होइ है। केईक जीव दीपस्यौं सिद्ध होइ है। केईक जीव उदधिस्यौं सिद्ध है। केईक जीव थल सिद्ध हैं। केईक जीव रिधि प्राप्त सिद्ध हैं। केईक जीव रिद्धि विना सिद्ध है। केईक जीव चारणी रिधि करि सिद्ध है। केईक जीव चारणी विना सिद्ध है। केईक जीव घोर तप करि सिद्ध है। केईक जीव उर्द्ध सिध है। केईक जीव मधि सिद्ध है। केईक जीव अधो सिद्ध है। कई भांति करि घणा ही भेद स्यौं सिद्ध हुवा है। सो सिद्धान्त थे मर्मकि लीज्यौ।

इति तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रे दसमोऽध्यायः

संवत् १८०३. वर्षे असाढ वुदी १ शनिवारे लिपि कृतौ जोसी कुस्यालराम टौंकनगरमध्ये वास्तव्य लिखापितं पांडे श्री कुंभाकरण जी स्वयं पठनार्थं।

प्रति नं २. पत्र सख्या १५५. साइज ११।।×४ इञ्च । मिति वैशाख सुदी ३ सवत् १७८२ का । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी का सिष्य दयाराम लिखित । दीतवार के दिन सपुरण करो।

२४. त्रिभुवननो विनती ।

रचयिता श्री गगादास । भाषा हिन्दी गुजराती । (पद्य)। पत्र संख्या २७. पद्य संख्या ६३. ६ पक्तियों का एक पद्य माना गया है।

मंगलाचरण—

गभीरार्णव जिंदुना नभ तारा सख्या ।
गहन मही मे वृक्ष जे तृण ते पण लेख्या ॥
द्राविड भजणा अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या ।
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणधर गुण भाख्या ।
कर्त्यां कविता घणा ए, ते मिइ किंपि न थाय ।
हितवर दिउ मुझ सारदा, थोडि बहु बोलाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महापुराण समुद्र थी, मइ काढ्या मोती ।
खरा करो निकंठ करी, मणि माला मोती ।
सूरत नगर सोहामणउ, वणिकोत्तम वास ।
नरसिंहपुरा न्यातिमा, जिन धर्म अभ्यास ।
परवत सुत कविता कहइ, गगादास गुणवत ।
भणइ भणावए पय करी, तेहन पुण्य महंत ॥ २ ॥

२५. त्रिलोक दर्पण ।

रचयिता कविवर श्री खडूगसेन । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १५७. साइज १०×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३१–३३ अक्षर । रचना सवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नम सिद्ध नमूं जिनराय, हुवा और होसी कर भाय ।
साधु सकल जे सम्यक् सार, सरस्वति आदि नमुं सिरधार ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही लाभपुर नगर मैं, श्रावण परम सुजांण ।
सब मिलि करि चरचा करै, ताकौ जो उनमांन ॥

खड्गासन तिनमैं रहे, सबकी सेवा लीन।
जिनवाणी हिरदैं बसैं, ग्यान मगन रस चीन॥
ताकू यह इच्छा भई, काल लब्धि परभाव।
अकृत्तम जे जिन भवन हैं, ते सुमरु चितलाय॥
एकदिवस रजनी समै, पढी एक जयमाल।
नाम पंच परमेष्ठी, तामैं अकृत्तममाल॥
हृदये परम आनंद भयौ, लखी लोक विधिसार।
प्रति अधिक चित मे भई, सुलट्यो बोध विचार॥
अधो मध्य ऊरध जिते, है जिनवर के धाम।
ते प्रतिभासे सहज ही, सुमरत गुरु मुख ग्यान॥
ता दिन तैं आनंद बढ्यो, भयो परम रस पोष।
अब यह किस विध धारिये, सो कीजे निरदोष॥
तब विचार असी भई, रचिये कथा अनूप।
जब चाहे तब देखिये, यह त्रिलोक सरुप॥
धरि विवेक जीव मे तबैं, किस विधि सीभै काम
ग्रन्थ चारि मे देख लैं, तब पायौ विश्राम॥
काल पांचमौ अति विषय, अलप पुनी ए जीव।
ए सजोग तिन ही मिलै, निकट भवी सु अतीव॥
छ पर्णै समझन कारणै, यह गूंथो गुणमाल।
दूषण कोउ लेहु मति, भूषण दीज्यो घाल॥
या कथ तैं सुख अति लह्यौ, मुख करि कह्यो न जाय।
अंतर सब सांचो लखो, अरोन कछु सुहाय॥
घट मद लाकी ताल मैं, उठे तरंग अपार।
ऊपरि है वदरंग सा, अंतर वदरंग असार॥
जो कछु या मैं सार है, ताहि गहौ बुधिवंत।
दोष भरैं सब जगत जीव, तीन्यौं काल अनंत॥

चौपाई

जिनवर चैत्य लाभपुर मांही, महा मनोहर उत्तिम ठांहि।
तहां आय बैठे सब लोक, गुण गावै पढिये बहु थोक॥

तहां बैठि यह कियौ विनोद,	तीन लोक का है यह मोद।
पूजा करि पूरब विधि धरी,	रची मोल ते बहु विधि सरी॥
जो यह कथा पढै धरि कंठ,	मुक्ति श्री लावै तसु कंठ।
उघडै पलक तिमर मिटि जाय,	दूजै वेद तणौ परभाय॥
पंडित राय नरिंद समान,	मिसर गिरधर जगत प्रमांण।
सभा मध्य वहा गुणवंत,	ग्रन्थ वखाणै सुरित्तवंत॥
सभा सिंगार हार मुख सूर,	सुणत सबै रजै चित्त धार।
वाणी सुणत तृपति नहि होय,	अमृत वचन पीवै सहु कोय॥
सुरता पढै अति गुणवंत,	अपणी बुधि अनुसार लहंत।
तिन का नाम सुणौ तुम जोय,	भूर पुण्य उपजै तहां सोय॥
पंडित हीरानंद प्रवीण,	चौदह विद्या मे लय लीन।
मथन्नी जग जीवन गुण खाण,	सकल शास्त्र मय अरथ सुजाण॥
रतनपाल ग्याता बुधवंत,	हिरदै ग्यान कला गुणवंत।
अनूपराय अनूपम रूप,	वाल पणौ जिम साहै भूप॥
दामोदर दंसण गुण लीन,	माधोदास मधुर प्रवीण।
हीरानंद हिरदै परगास,	तिलोकचंद तहां ग्यान विलास॥
विपनदास बुधि तीषण संरी,	प्रतापमल्ल पूरण मति धरी।
मोहनदास महा गुण लीन,	हंसराज जि हिरदै प्रवीन॥
कुंदन कनक नारायणदास,	ग्यान कला आगम परवास।
पांडे हिरदै पूजा करै,	हिरदै हरष सेव चित्त धरै॥
हृदय राम भो जग हितकार,	सेवा करै सुजिन गुणधार।
ए मध ग्याता अति गुणवंत,	जिनगुण सुणै महा विकसंत॥
सब श्रावक अति ही गुणवन्त,	सुणैं ग्रन्थ पावै विरतंत।
× × ×	× × ×
साहि जहां सुलितान महान,	फेरी चहुं चक्क में आन।
छत्रपति सेवै तसु पाय,	चक्कवा चकवै सुभीहांन॥
संवतसर विक्रमतैं आदि,	सतरह सैं तेरहै सुखस्वाद।
चैत्रशुक्ल पंचमी प्रमाण,	यह त्रिलोक दरपण सुपुराण॥
× × ×	× × ×
वागड देश महा विसतार,	नारनोल तहां नगर निवास।

तहां पौण छत्तीसों वसैं, अपणे करम तणां रस लसै ॥
श्रावक वसै परमगुणवन्त, नाम पापडीवाल वसन्त।
सव भाई मैं परमित लियैं, मानू साह परमगण कियै ॥
तिसके दोय पुत्र गुणरवास, लूणराज ठाकुरसीदास।
ठाकुरसी कै सुत है तीन, तिनकौ जाणौं परम प्रवीन।
वडो पुत्र धनपाल प्रमाण, सोहिलदास महा सुख जाण।
करमचंद अति भये प्रधान, माने श्री जिनवर की आन ॥
लूणराज के सुत दोय भये, पुन्यवंत सुन्दर वहु कहे।
धरमदास सवमैं गुणगास, मूरति धर्मवत प्रतिभास ॥
खडगसेन दूजी वुधिवंत, ताकैं हृदय ग्यान विलसंत।
गुरु प्रसाद कीयौ अति घणौ, द्रव्यरूप लिख्यौ वहु गुणौं ॥
चतुरभुज वैरागी जांण, नगर आगरै मांहि प्रमाण।
तिन वहुतौ कीयौ उपगार, द्रव्य सरूप दीये भंडार।
तवतैं वुधि वढी अतिभार, सोलहसै पिच्यासीया धार ॥
पायौ मरम हृदय भयौ चैन, अगणित जिन गुण लागौं लैण।
बहुत वार आये लाहौर, कछु न उपजी मन मैं और ॥

× × × × × ×

संवत् १७६८ का वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दुतिया दिने सोमवारवारे भगवतगढ नाम नगरे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी तत शिष्य पं० दयाराम जाति सोनी नरायण का वासी इदं पुस्तकं लिखितम्।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८. साइज १२×५॥ इञ्च।

संवत् १७६८ वर्षे मितिमासोत्तममासे पोस शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी आचार्यजी श्री ज्ञानकीर्त्ति जी तस्य पट्टे आचार्य श्री सकलकीर्त्ति जी तस्य शिष्य पंडित खेतसी लिखापित श्री उदयपुर नगरमध्ये राणाजी श्री जगतसिंहजी राजकरे श्री मंडाकूं देहुरै लिख्यो।

२६. त्रेपनक्रिया।

रचयिता श्री ब्रह्मगुलाल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४. साइज ६×५ इञ्च। रचना संवत १६६५.

मंगलाचरण—

प्रथम परम मंगल जिन चच्चनु, दुरित तुरित तजि भाजै हो।
कोटि विघन नासन अरिनंदन, लोक सिखरि-सुख राजै हो।
सुमिरि सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ वानी हो।
गन गधर्व जत्थ मुनि इद्रनि, तीनि भुवन जन- मानी हो।

अन्तिम पाठ—

ए त्रेपन विधि करहु क्रिया भवि पाप समूहनि चूरे हो।
सोरह से पैसठि संमच्छर कातिग -तीज अंधियारी हो।
भट्टारक जग भूपन चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो।
ब्रह्म गुलाल विचारि बनाई गढ गोपाचल थानै।
छत्रपती चहु चक्र विराजै साहि सलेम मुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोष।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७५. साइज १०×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३५-४० अक्षर। रचना संवत् १७८४. लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

समवसरण लछमी सहित, वर्धमान जिनराय।
नमो वंदित चरण, भविजन कूं सुखदाय॥

प्रशस्ति—

खंडेलीवालं वंसविसालं नागरचालं देसथियं।
रामापुरवासं देवनिवासं धर्म प्रकासं प्रगटकियं॥
संगही कल्याणं सवगुणजाणं गोत्र पाटणी सुजसलियं।
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपायं नमैं सकति निज दानदियं॥ १ ॥
तसु सुत दुय एवं गुरुसुखदेवं लहुरो आणंदसिंघसुणौ।
सुखदेव सुनंदन जिनपदवंदन थान मान किसनेस सुणौ॥
किसन इह कीनी कथा नवीनी निजहित वीनी सुरपद की।
सुखदायक्रियामनि यह मनवचननि सुद्धपलैं दुरगति पदकी॥ २ ॥
माथुरराय वंसंत को जानैं सकल जिहांन।
तसु प्रधान सुत को तनुज किसनसिंघ मतिमान॥ ३ ॥

अडिल्लछंद

चेत्रविपाकी कर्म उदै जव आईया, निजपुर तजि कें सांगानेरि वसाईया।

तह जिनधमप्रसादि गमैं दिन-सुख लही, साधर्मीजन सज्जनमानैं दे हित गही ॥

॥ दोहा ॥

इह विचार मनि आइयौ किया कथन विधिसार।
होई चौपई बंध तौ सब जन कौ उपगार ॥

× × × × ×

अढिल्लछन्द

किसनसिंह इह अरज करै सब जैन सुनौं, करि मिथ्यात कौ नास निजातम पद मुनौं।
क्रिया सहित व्रतपाल करणवसिकीजिये, अनुक्रमलहि सिवथान सास्वता लीजिये ॥

सवैया

सत्रहस संवत चौरासिया सु भादौमास वर्षाति तिश्वेत तिथि पुन्यौ रविवार है।
सतिविपारिपिधृतिनाम जोग कुंभ सासस्यंघ कौ दिन समूहरत अति सार है।
ढूंढारह देश जांन बसै सांगानेरि थांन, जैसिंहसवाई महाराज नितिधार हैं।
ताकैं राजसमैं परिपूरण की इह कथा, भव्यन कैं हिरदैं हुलास दैनहार है ॥

× × × × × ×

श्री सकल पंडितोत्तमपंडित श्री ३ श्री नायक विजयगणि तत् शिष्य सेवक पं० मुक्तिविजयेन लिपिकृतं श्री पद्मावानगरमध्ये साह स्वरूपचन्दजो शास्त्र लिखायो। संवत् १८२६ का मिति मंगसिर मासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तमी भृगुवासरे।

२८. त्रेयनक्रिया विनती।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। भाषा हिन्दी (पद्य)। पद्य संख्या १३.

मंगलाचरण—

वीर जिनेश्वर मनि धरुं, प्रणमुं गुरु पाय।
त्रेयन किरिया नो विचार, कहि सु सुखदाय ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

ए त्रेयन उपवास, सर्व कहि लक्ष्मीचन्द्र।
अभयचन्द्र गुरु अभयनन्दि गत माया तन्द्र ॥ १ ॥
रत्नकीरति वाणी विशाल गुणवंत मुनींद्र।
ललित वाणी कहि कुमुदचन्द्र पद नामत नरेंद्र ॥ २ ॥

जे नर नारी गावसे ए वीनती' सुचंग।
ते मन वंछित पावसे नित्य नित्य मंगल तरंग ॥ ३ ॥

२९. दशलक्षणव्रतकथा।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ५५. लिपि संवत् १८३८.

मगलाचरण—

प्रथम नमन जिन वरनैं करु' सारदा गणधर पद अनुसरु'।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु' जिन अगम अनुसार ॥

प्रशस्ति—

भट्टारक श्री भूषणधीर सकल शास्त्र पूरण गभीर।
तसु पद प्रणमो बोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ १ ॥

सवत् १८३८. श्रवाणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्या पट्टणनगरे भट्टारक सुरेंद्रकीर्त्तिना लिखितं।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी।

रचयिता श्री दिलाराम। भाषा हिन्दी पद्य। साइज ६×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति में २७–३० अक्षर। प्रति पूर्ण है।

मगलाचरण—

परम पुरुप परमात्मा परम जोति परधान।
परमेसुर परब्रह्म प्रभु पूजौ परम पुरान ॥ १ ॥
सवै काल के सिध सहु नमौं सदा पद तास।
जा प्रसाद जग विस्तरौ यह दिलाराम विलास ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिवर्णन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज बूंदी मवासेदहाये,
भये भोज नामी बडे राव वंसी तनैं रत्न सांचे भये रतन अंसी।
भये नाथ गौपी न टीकैं विराजे भये छत्रसालै तिन्है राज साजे,
लखै राजधानी सवैं शत्रु कंपै चहूं चक के चकवै सास जंपै।
भये तास के देवता राव भाऊ सवै देस मैं दक्ष नीभौ पुजाऊं,
लह्यो भाग तैं पाट अनुरुद्ध जाको वढ्यो देश मे राज आतंक ताको।

भये बुद्ध ताकें तिन्है राज साजा किया छत्रधारी कीयो रावराजा,
मयैं तास के राज में राजधानी कहै भोग देवा पुरी सुभिमांना।

बूंदी नगर वर्णन—

वन उपवन चहुं नंदन से मधि गिर मेर नदी गंग सम मोभ है वढ वती।
अतुल विलास में वसत सवैं धनपति धन भोंन भोंन रंभातिय गावती।
महल विमान सभा सुर मधि जै राव बुद्ध इंद जिमताके किति लछि अवती।
ग्रंथनि मैं सुनियत नैंनांन को अभिलाप पूजत लखैं तें अैसी बूंदी अमरावती।

कवि वंश वर्णन—

वसि विपुल आदर सहित ल्याए रतन नरेश।
सो कविकुल वंसावली वर्णन करत सुदेस॥
प्रथम खंडेले तैं प्रगट 'जाति धर्म जिनराज।
पुर पट्टन तैं पाटनी जाको विपुल समाज॥
सो वर्णन संक्षेप सौं दस पीढी मध्य चारि।
टोडैं प्रथम विचार पुनि पट् बूंदी मध्य धारि॥

सरवन कीरति सुनी जो साह सरवन दूल्हे कविकुल के सुदूल्हे गुनदत्त हैं।
गुनदत्त गेगराज भामें जग भामें माह,
धनपाल धनकारि सुजस अघाए हैं।
चत्रभुज वाहुवली तनय दौलतिराम,
भजनेरी दो वलकारि संगही कहाए है।
ताही के प्रसाद हिदें रांमकुलमंडनभो,
तनुज साहिबराम वंस वरनाए हैं॥

॥ दोहा ॥

सतरासै अठसठि समै दसमी विजैकुमर।
लगन महुरत वार सुभ भयो ग्रंथ तत सार॥ १॥
अैसो रस या ग्रंथ में जो थापैं घट मांहि।
सो नर कर्म निवार करि भवदधि आवैं नांहि॥ २॥
सहसकृत प्राकृत नहीं नहीं छदं अलंकार।
बाल ख्याल रचना रची सुकीवसु लेहु सुधारि॥

सहसंकृत संमजिन परे पराक्रित गम नाहि।
भाषा कछु एक कवि कला ची ग्रथ या मांहि॥
मबै काल के सिंघ महु नमों जोरि पद तास।
जा प्रसाद जग विस्तरो यह दिलागम विलास॥
धनि सम यो धनि वा घडी धनि वा वार मिलाय।
अनुभव करण सुर पूजिये गोगि सधर्मी पाय॥
बहुत गये मिथ्यात मों अजहूं नांहि अघाय।
थांनां सु दल बीनती मेरो वेगि वलाई॥

३१. धनपालरास।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र ६. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८–४२ अक्षर।

मगलाचरण—

वीर जिनवर २ नमुं ते सार, तीर्थंकर चोवीस मो।
वंछित फल बहु दान दातार, सारद सामिण वीनवुं॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार।
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहें सार॥ १ ॥
पढे गुणें जो साभलें, मनधरी निरमल भाऊ।
मनवंछित फलरु बडां, लाभें शिवपुर ठाउ॥ २ ॥

इति श्री दानफलमहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतबधे धनपालधनमतीरास संपूर्ण। संवत १८२८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तिथौ रविवासरे पांडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे।

३२. धर्मपरीक्षा।

रचयिता श्री मनोहरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या १२४. साइज १२×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००.

मगलाचरण—

प्रणमुं अरिहंतदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि॥

प्रशस्ति—

धर्मपरीक्षा पूरी भई बुधिसारु मनोहर निरमई।
मुझैं दोस मति लावौ कोई जैसी मति तैसी गति होई॥

॥ सोरठा ॥

स्रुमुनि अमितगति जान सहसकीर्त्ति पूर्व कहा।
यामैं हुधि प्रमान भाषा कीनी जोरि कै॥

॥ दोहा ॥

विक्रम राजा को भयौ सात अधिकुसहजार।
वरप तवै यह सहसकृति, भई कथा सुभ सार॥
देश दादरो परवति भली, तहां घामपुर सोभा भली।
च्हूं दिशि शोभित बाडी बाग, करै कोकला पंचम राग॥
कूपं वाउरी शुभ पोपरी, दीसैं निर्मल पांणी भरी।
मधि कमलनी करै विगास, मधुकर आइ लेहि तिस बास॥
तहां वसै धनपति सव लोगु पांन फूल के कीजे भोगु।
तहां सराउग नीकै सुखो, कर्म उदै कोई होइ दै दुखी॥
वितसारू सव दांन करहि, जुग्म धार जिन थांनक जांहि।
तिन मधि आसू जेठ साह, खरचं द्रव्य लेह धन लाह॥
दुरजन कोई धीरन धरै, करण मतै सोही विधि करै।
घणी बात को करै वढाइ नगर सेठ है मन वचकाय॥

॥ दोहा ॥

जेठमल सुत त्रिथाचद दाता दीन दयाल।
सज्जन भगतां गुण उदधि दुर्जन छाती साल॥
कुल धन जोवन रूप मद, अवर काणि मद ताहि।
एते मदन विमद करै वडो तमासौ आहि॥
सव ही भाई हैं भले, अपणे अपने काजि।
मति कोउ मानौ वुरी सत्त कहत हौ राजि॥

॥ सवैया ॥

वाणारसी सेठ प्रतिसागर पृथ्वी प्रसिद्ध कौतिक कौ घनी ताकै पाप उदै आयो थो।

सदन सौ निसि अजोध्या कौ गमन कीनौं अजोध्या के सेठ उह उछिम करावें थो ॥
अपनी बराबरि को करि नाना भांति सेती देकर वडाई निज थांन कौ पठायौ थो ।
असे हम आसू साह राखे निज बांह देके कहै मनोहर हम पुनि जोग्य पायौ थौ ॥

॥ दोहा ॥

मालौ पहुँचे शुभग गति वारो सुभग बजाई।
निधी चद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित्त लाई ॥
हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार।
दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरहै घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रावति सालिवांहण आगरै कौ वुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है।
जगदत्त मिश्र गौड हिसारको वासी शुभ विद्यावलि जगत में सरजस लीयौ है ॥
गंगुराज बांभण पंडित है नगर माहि जोतिया कौ पाठी सरस्वती वर दीयो है।
इतने साई भये दोहो जिनराज जू की तब मैं विचार करि भाषा वुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया सर्म ब्रह्मदालीया भयौ दूसरौ नाव।
निरलोभी मन कौ सरल दया धर्म शुभ गाव ॥
सो भी हम प्रेरक भयौ दिन में वारंवार।
तब हम यह भाषा करी लघु वुधि अरि विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धामपुर मांहि करी भाषा वुधि सारु
धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन धरि वारु ॥
ना कछु कीर्त्ति हेति न कुछ अरति धनु वछन
जथा शुक्र मडली रचो पद २ रस चंदन ॥
'पढै सुणै उपजै सुवुधि है कल्याण शुभ सुख धरण।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मंगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पूर्णिमा वार वृहस्पतिवार श्री सवाई जैपुरमध्ये ईश्वरीसिंह राज्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण लिपिकृतम् ।

३३. धर्म स्वरूप।

रचयिता ब्रह्म श्री गुलाल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पद्य संख्या ६२. रचना संवत् १७२०. लिपि संवत् १७३२.

मंगलाचरण—

प्रथम सुमरौ सारदा, गणपति लागू पाय।
गुण गाऊं श्री जिण तणा, सुनो भव्य मन लाय॥

प्रशस्ति—

संवत सतरासैं बतीसा, भादवा मास सुकल पख तीज।
सोमवार सुभ वेला घटी, तब यह कथा वंचे करयौ करी॥ १॥
जैसो विधि श्री गुर कहा, तैसो ही सगला सर रही।
सुभचन्द्र भट्टारक भलो, वराड देस मही छै निलो॥ २॥
सभा मांहि घणा वैण साह, खरचै द्रव्य पुनि कौ लाह।
वीरजी सगहो विद्यावंतं, धनजी लालचदं गुणवत॥ ३॥
सब ही मिलि यौ कारिज कियो, भामा श्रावग ने पोरिस दियो।
कीजै वाणी श्री जिणवर सार, समार संग उतरैं पार॥ ४॥
खानदेश मे सौहे सलो, ब्रह्मानपुर नग्र है भलो।
छतीसपुरा विधि वाजार, साहिदरो सोहे अति सार॥ ५॥
श्रावक गोठि उजम आचार, व्रत विधान निश्चैं व्योहार।
मंदिर वेदी दारघ होइ, जीणवर धरम जपै सो होइ॥ ६॥

३४. धर्मरासो।

रचयिता श्री अचलकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २४ साइज ८×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ७१. रचना संवत् १७२३. लिपि संवत् १७२६.

मंगलाचरण—

प्रथम जोतीस्वर लांगो जी पाइ, सिद्धि सतगुरु नमौं।
सरस्वति स्वामिणी दे मति माइ, राज भणौं जिण तणौं॥

प्रशस्ति—

सत्रह सै जु तेईस मै, पौष सकल पक्ष सुभ दिन जोग।
दोज सोमवार सुहं भण्यो, उत्तम नक्षत्र तहां उत्राषाढ॥

सहर नगर सुभ थांन मे, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥
श्री काष्ठाये सवनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण।
श्री कुवरसेण कुल केवल दिणन्द, विद्या वचन, गुण वारिधि।
रतन कीरति तस सीप सुजाण, दिलो मंडलाचार्य दीपता।
आज्ञा कारी तस आचार्य जांण, अचलकीरति अवगाहि कै।
धरम रासौ कीयो धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर उपगाहु॥
पढत सुणत सुख सपदा होइ, सुरग मुकति सुख सास्वता ॥ २ ॥

३५. धर्मोपदेश श्रावकाचार।

रचयिता श्री धर्मदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४६. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८-३० अक्षर। रचना सवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है। विषय-आचार धर्म दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शीतलनाहु, शीतलगुन निज अधिक अगाहु।
दह भेय जिन भास्यौ सव्व, वंदहु ताहि सयल तजि गव्व॥

प्रशस्ति—

पन्द्रहसें अट्ठहत्तरि वरिसु, सवच्छरु कुसलह कन सरसु।
निर्मल वैसाखी अपतीज, वुधवार गुनियहु जानीज॥

ता दिन पूरो कियो यहु ग्रंथ, निर्मल धर्म भनौ जो पंथ।
मंगल करु अरु विघनि हरनु, परम सुख भवियन कहु करणु।
अच्छरसवदछद करि हीन, किंचितु मात्र में जुयहु कीन।
सो मो मद बुधि जानेहु, तातैं यहु जन पिमा करेहु।
सुध असुध मात्र करि हीन, इहु प्रमाद ज्ञान में कीन।
सो सब समहुं देवि सरसुती, जान ही मोहि वालक सममती।
बारहसैंनी उत्तम जाति, मूल सघ श्रावग विख्यात।
जिनवर पय भत्तउ होरिल साहु, सो जु दान पूज को पवाहु।
तासु मनू, सत्य जस गेहु, धर्म शीलवंतु जानेहु।
तसु पुत्र जेठो करमसी, जिनमति सुमति जासु मन वसी।
दया आदि दे धर्म हि लीन, परमविवेकी पाप विहीन।
पदम नाम ताकै भो पूत, कवियनु वैदरु कला सजूतु।
अवरु बहुत गुन गहिर समान, महा सुमति अति चतुर सुजानु।

अरु मो सज्जनता गुण लीन, पर उपगारी विधना कीन ।
बहु मित्रो तम मन वि कोइ, सलहहो देस देस के लोइ ।
राम सिरी तसु तनिय कलत्त, परम सील वे पण्य पवित्त ।
तासु उदर सुत उपनौ वेवि, जिनु तिजि अवरुन घावहिं तेवि ।
जे कौ धमु विवुह सिरमनी, जिंह पराम अंवागनी ।
दया लीन जिनवर पय धुनो, पर पायो धनु धूलिसम गिनी ।
पचौंदर न मिथ्या जेवि, अरु निशि झूठे मानै जेवि ।
जैन धर्म सेवै नित्त, अरु दह लक्षण भाव पवित्त ।
नित निर्ग्रंथ मुनि मानंउ, जिन आगम कहु पठतु सुवउ ।
निः केवल अरहत थुनै, और देवि मिथ्या करि गिनै ।
तिहि यहु क्रियौ धर्म उपदेशु, धर्म सुण्य जो करै असेसु ।
विघनकलक पाप कहु हरै, मंगल सवे सुजन कहुं करै ।
पठतन हुं मति हरइ वित्त, उपजइ निर्मल बुधि पवित्त ।
जे जिन सासन लीन निरुत्त, तिन कहु उपजै सुख बहुत ।
घन कन दूध पूत परिवार, घ ढै मगल सुजसु अपार ।
मेदिनी उपजहु अनत अनत, चारि मास भरि जल वरसंत ।
मगल वाजहु घर घर वार, कामिनी गावहि मंगल चारु ।
घरि धरि सीत उपजहु सुख्य, नासे रोग आपदा दुख ।
घरि घरि दान पूज अनिवार, श्रावग चलहु आप आचार ।
नंदउ जिन सासन ससार, धर्म दयादिक चलौ अपार ।
नदहु जिन पडिमा जिन गेह, नदहु गुर निर्ग्रंथ अमोह ।
नंदउ धर्म धुरधरु साहु, दान पूज जे करहि अगाहु ।
जिनि केवल जति व्रत पालत, धर्म कथहि कर्मनि जालत ।
ए मत निविमांगै जिनदेव, भव भव करौ तुम्हारी सेव ।
भवि भवि श्रावगकुलि अवतारु, जिनकै धमु अधमु विचार ।
जन्मि जन्मि उपसम चित हेउ, जन्म जन्म जिन सासन भेउ ।
भवि भवि गुर निर्ग्रंथह संग, जातें छोड पाप कइ भग ।
भवि भवि दया उपजौ चित्त, क्षमादि · · भाव पवित्त ।
भवि भवि जैन धर्म की लीव, पावहि मुक्ति जासु ते जीव ।
कहै धर्म कवि सुनहु संत, नर भव पायो वहुत भमंत ।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु, पायौं तो दूर करि मानेहु।
जिन पूजहु जिनवर थुनहु, गुरु निग्रंथ सत्ये करि सुनहु।
जिन सिद्धांत जु कह्यो विचार, सो पालहु त्रिभुवन मांहि सार।
कह्यै धर्म कवि वेकर जोडि, पंडित जन मन लावहु खोडि।
मति सारु हम कीनो एहु, कपटु मुनि विर्मानि दया करेहु।
जह अट्ठ तह सुद्ध करहु, अपनी सज्जनता विस्तरहु।
साधु नित नौ भाउ वह नित्त, पर उपगारु धरहिं ते चित्त।

इति धर्मोपदेशश्रावकाचार पं० धर्मदास विरचित समाप्त। मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्यां तिथौ शनिवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथो। पं० शल्योदयेन मुनिना लिखितमिति।

३६. नयचक्र भाषा।

भाषाकार श्री हेमराज। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २४. साइज ६×४ इञ्च। रचना संवत् १७२६ विषय—नैगमादि सात नयों का वर्णन।

मंगलाचरण—

वंदौ श्री जिनके बचन, स्यादवाद नये मूल।
ताहि सुनत अनुभव तही, है मिथ्यात निरमूल॥
तां कारन नयचक्र की, सरल वचनिका कीन।
अधिक हीन अवलोकि के, करहु सुद्ध परवीन॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरै, जिनप्रभु सूरि सतानि।
लवधी रग उवभाय मुनी, तिनके शिष्य सुजान॥
विवुध नारायण दास नें, यह अरज हम कीन।
जो नयचक्र सटीक हैं, पढे सबे परवीन।
तिनें प्रसन्न ह्वै के सही, भलो भली यह बात।
तब हमहुं उद्यम कियो, रची वचनिका भाव।
हेमराज की वीनती, सुनियो सुकवि सुजान।
यहु भाषा नय चक्रकी, रची सुबुधि उनमान।
सत्रहसेर छवीस कौ, संवत् फागुण मास।
उज्जल तिथ दसमी जहां, कीनो वचन विलास।

इति श्री प० नारायनदासोपदेसेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्त।

३७. नेमीश्वर गीत ।

रचयिता श्री चतुरमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५. साइज ६×४॥ इञ्च । पद्य संख्या ४४. रचना संवत १५७१. लिपि संवत १८२०.

मंगलाचरण—

प्रथम चलन जिन स्वामि जुहारु, ज्यों भव सायरु पावहि पारु ।
लहइ मुरति टुति दुरित निरै, पच परम गुरु त्रिभुवन मारु ॥ १ ॥
सुमरित उपजैं बुद्धि अपारु, सारद मनावउ तोहि ।
गुरु गोतमु मो देउ पसीउ, जौ गुन गांउ जादुराउ ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

श्रावग सिरीमल अरु जसवंत, निहचैं जिय धर्म धरंत ।
चरु चलन भवि वंदतौ, पुत्र एक ताकैं घर भयौ ।
जनमत नाउ चतुरु तिन लियौ, जैन धर्म दिढु जीयह धरौ ।
नेमि चरित ताकैं मन रहै, सुनि पुरान उर गानो कहै ।
नेमि .... देसु सुख सयल निधान, गढ गोपाचलु उत्तिम ठान ।
एक सोवन का लंका जसि, तौ वरु राउ सबल बरवीर ।
भुव बल आगु जु साहस धीर, मानसिंह जग जानिये ।
ताके राज सुखी सब लोगु, राज समान करहि दिन भोगु ।
जैन धर्म बहु विधि चलैं, श्रावग दिन जु करैं षट धर्म ।
निहचैं चितु लावैहि जिन धर्मे, नेमि कुवर नेमि जिन वंदि हैं ।

(२)

संवतु पंद्रहसैं हो गनें, गुन गनहुं नरि ताउपर भने ।
भादौ वदि तिथि पंचमीवार, सोम नांपतु रेवती ।
सगुन भलो सुभ उपजामती, चंद्र जन्म बलु पाइयौ ॥
चतुरु भनें भावी मयलानि दासु, गुनिय सुनत जिय करहिनगासु ।
लखिय उपसमैं बुधि हीन, मैं स्वामी रो कियो वखानु ।
पढत सुनत जी उपज्यें ग्यान, मन निहचल धरि जिय धरहु ।
राजमती जिन सजमु लियौ, नेमो कुवर नेमी सयल मयो नयौ ।
नेमि कुंवर नेमिजिन वंदि है ॥

संवत् १८२ ...वर्षे माह सुदी १४ लिखित गुरु देवेन्द्रकीर्ति आचार्य ।

३८. नेमीश्वर चंद्रायण—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८. साइज ६ × ४ इञ्च। पद्य संख्या १०४। लिपि संवत १६६०। विषय—नेमिनाथ का जीवन।

मंगलाचरण—

परम चिदानंद मन्यधरी अनि प्रणमी श्री गुरु पाय।
हरष आणि सु स्तवु श्री नेमीश्वर जिनराय॥ १॥

प्रशस्ति—

महीयल महिमिमावत वखांणो, श्री मूलसंघ गछपति जांणो।
विजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्ट दायक श्री शुभचन्द्र॥
तत्पट्ट पंकज सुर समान, सुमति कीरति सुरी गुणह निधान।
ते चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेंद्रकीर्त्ति कहि रे रसाल॥
नरेंद्रकीरति पाठक कहि अनि नेमिचंद्रायणसार।
भाव सहित भणि सामलि ते पावे भव पार॥

संवत् १६६० वर्षे भादवा सुदी ६ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचायान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत् गुरु भ्राता मुनि श्री देवकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याणकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिहजी लिखित।

३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २७. साइज ७ × ६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १२६. उक्त रचना गुटके में है। गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों मे है। रचना संवत् १६१८, लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमीसर जिननाथ, चरणां वंदे धरि मस्तके हाथ।
मन अरु वचन काया शुधां, सोभा जी सावला वर्ण सरीर॥ २॥

अन्तिम पाठ—

अहो मूल संगि मुनि सरस्वति गच्छ, छोडि हो चार कषायनि निर्भछि।
अनतकीर्त्ति गुरु वंदितै अहो तास तणो सखी कीयो वखाण।
राइमल ब्रह्म सो जाणिज्यो, स्वामी हो पारसनाथ के थानि॥ १॥

अहो सोलहसै पन्द्रह रच्यौ रास, सांवालि तेरसि सावण मास।
वार ते जी बुधवासर भलैं, जैसि जी बुद्धि दिन्हौ अवकाम ॥
पंडित कोइ जी मत हंसो, अहौ तौसि जि बुधि कियो परमास।
अहो बाग बाडी घणा, नीकौ हो ठाणि।
बसैं हा महाजन नगर फौणि पौंणि छत्तीस लीला करैं।

४०. पद्मनंदिपंचविंशिका—

रचयिता श्री जगतराय। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १३२, साइज १०॥ × ६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७। ३० अक्षर। रचना संवत १७२२, लिपि सवत १८१८

मंगलाचरण—

अमल कमल दल विपुल नयन भल—
सकल अचल बल उपसमधरि है।
अखिल अवनितल अटल प्रबल जस
सुरपति नरपति स्तुति बहुकरि है।
धृति मति पंति धर सब जन सुखकर
कनक वरण तन सिद्धि वधु वरि है।
वृषभ लछिन धर प्रगट तनय भर
अघ तिम रवि कर भव जल तरि है ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

पदमनंदि पचवीसी सार, जगतराय भाखी सुविचार।
उठो अधिको जे कछु होइ, सो अपराध खमहु कवि सोइ ॥
पांनी पंथ सुदेस सहर गुहानो जानिये।
कबहीं न दुखको ले सुख बरतैं जहां सवदा ॥

दोहा

अग्रवाल है उमग्यानि, सिंघल गोत्र वसुधा विख्यात।
माई दास श्रावक परसिद्ध, उत्तम करणी कर जस लिद्ध।
नदन दोइ भये तसु धीर, रामचंद नंदलाल सुधीर।
सालिभद्र कलियुग में एह, भाग्यवंत सब गुण को गेह।
उपगार आंनी मन मांहि, जगतराय श्रावक उछांहि।
पदमनन्दि पचवीसी किद्ध, भाषा बध भई परसिद्ध।

पद्मनंदि की बानि गंभीर, ताको अर्थ लहै कोइ धीर।
भाषा पढतै न ह्वै खेद, मूरख जन पुनि जानै भेद।
सहर आगरो है सुख थांन, परतपि दीसै स्वर्ग विमा।
चारौं वरन रहै सुख पाइ, तहा पहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ।
संवत् सतरासै वावीस, फागुण मासि सुदिपक्ष जगीस।
तिथि दशमी पुष्य मंगलवार, ग्रन्थ समाप्त भयौ जयकार।
नवखंड मे है जाकी आन, तेजवंत दीपै जिन भान।
राज करै श्री अवरंग साहि, जाकै नहीं किसी परवाहि।
न भई भीति कछु ताके राज, धर्मी भविजन पढन कै काजि।
निजमति के अनुसारे यह, भाषा कीनी मन धरि कै नेह।

॥ छप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गणि दीपै।
आगम युगति अनेक भेद करि वादी जीप्पै।
कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भाषी।
पंडित महामति संत वीरदास जु है साषी।
वाढे वहुविधि सकल पाप संताप हर।
इहुं ग्रंथ संतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर॥

चौपई— सुजान सिंघ नंदलाल सुनद, जगराय सुत है टेकचंद।
जौ लौं सागर ससि दिनकार तो लौ अविचल ए परिवार॥

सोरठा— अभय कुसल आनंद पद्मनदि पंचवीसि की।
भाषा भई निरदंद सुनियो भविजन सर्वदा॥

इति श्री जगतराय विरचितायां पद्मनंदिपंचविंशिकाया भाषा समाप्ता संवत् १८११ वर्षे मिति…।

४१ पंचेन्द्रिय बोल

रचयिता कवि घेल्ह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७. साइज ७x७ इञ्च। पद्य संख्या ६. रचना संवत् १५८५. लिपि संवत् १६८८. पाच इन्द्रियों की बात चीत।

प्रशस्ति—

कवि घेल्ह सुजन गुण ठावो, जगि प्रगट ठकुरसी नावो।
तौ वेलि सरस गुण गाया, चित चतुर मुरिख समझया।

मूरिख मनि संकउ पाइ, तहि तणो न चिंति सुहाइ।
नहुजपो घणो पमारो, यौ एक वचन मै सारौ।
सवत पंद्रासैर पिच्यास्यो, तेरसि सुदि कातिग मासे।
इ पांच इंद्री वसि राखैं, सो हरत परत सुख चाखैं।

४२ पंचास्तिकाय भाषा,

भाषाकर्त्ता पांडे हेमराज। पत्र संख्या १४८. प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७२६. लिपि सवत १७३६. विषय-सिद्धान्त।

सवत् १७३६ वर्षे आषाढ सितपक्षस्य द्वादशीतिथौ गुरुवारे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री चंद्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ जगत्कीर्ति जी तदाम्नाये अग्रवालान्वये गोइल गोत्रे सा. धानू तस्य भार्या धनादे तयोः पुत्र सा. श्री रूपचदजी तस्य भार्या तारादे तयोः पुत्र सा० श्री तेजन तस्य भार्या मथुरा ननू तयोः पुत्र सा० श्री रूपचदजी तस्य भार्या मानकदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा० श्री चूहडमलजी तस्य भार्या गगा तयो. पुत्रारचत्वार प्रथम पुत्र चि० रणधोर द्वितीय पुत्र चि० मानसिंह तृतीय पुत्र चि० चतुभु ज चतुर्थ पुत्र चि० जोधसिंह। द्वितीय पुत्र सा० श्री बनारसीदासजी तस्य भार्या कपूरां तयो पुत्र चि० सिवदासजी एतेषा मध्ये सा० श्री बनारसीदासेनेमं पचास्तिकायाभिध ग्रथं लिखाप्य आचार्य श्री दयाभूषणजी तत् शिष्य पंडित हीरानंदाय दत्तं ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं। कामानगरमध्ये।

४३ परमार्थ दोहा।

रचयिता कवि रूपचद। भषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४. पद्य संख्या १००. सुन्दर पद्यों का सकलन है।

मगलाचरण—

अलखरुपचिद्रूप जोतिमय ज्ञान प्रकास
अचल अबाधित अमय परम आतम सुभाउ धर।
निराकार अवगाह मैंनगन सून गगन वत
अमल अनाकुल परम तेज घन सुद्ध मन्यगत।
सुखधाम अनादि अनत अज जगत सिरोमनि सिद्ध गन।
मनधरि सरूप अनुभवनि पुन करहि बंदना भव्य जन॥

अन्तिम पाठ—

रूपचंद सद्गुरनि की जन बलिहारी जाइ।

आपुन जे सिवपुर गये, भव्यनि पंथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३७. साइज १०।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८—४२ अक्षर। रचना संवत् १७२२. विषय—जीवन चरित्र।

मंगलाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि जिनेश्वर पाय।
यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमु तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ मुकुटमणि श्री सकल कीर्त्ति गुरु पायरे।
भुवनकीर्त्ति तेह निपाटि, बहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥
तास पटांबर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण अवतार रे।
विजयकीर्त्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥
तेह यह कुमुद पूरण सषो, शुभचन्द्र अवतार रे।
न्याय प्रमाण प्रचंड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥
तस पट्टोधर प्रगटीया श्री सुमतिकीर्त्ति जयकार रे।
तस पट्ट धारक भट्टारक, गुणकीर्त्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥
तेह तणि पारि प्रसिद्ध वणी श्रीयवादि भूषण सूरी सत रे।
रामकीर्त्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावत रे ॥५ ॥
तस पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे।
विद्यावाद विनोदथी जेहिं नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥
तस पट कमल कमल मधु, श्री देवेंद्रकीर्त्ति गच्छ ईशरे।
प्रद्युमन प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥
संवत् सत्तर बावीसि सुदि चैत्र तीज बुधवार रे।
महेश्वर मांहि रचना रचि, रहि चद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥
सूरत वासी संघपती देमोज सूरजि दातार रे।
तेह आग्रह थी प्रद्युमन नो ए प्रबध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुथ्यो करि विवेक।
प्रद्युमन गुण सूत्रिकरी, सत्र वन कुसुम अनेक ॥ १० ॥

भवीयण गुणि कंठि करो,	एह अपूरव हार
घरि मगललक्ष्मीवणो,	पुण्यतणो नहि पार ॥
भणि-भणावि साभलि,	लिखि लिखावइ एह ।
देवेंद्रकीत्ति गच्छपतीकहि,	स्वर्गमुक्ति लहि तेह ॥

इति श्री प्रद्युम्नप्रबन्ध सपूर्णः ।

४५. प्रवचनसार भाषा —

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या ७२, साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३–३६ अक्षर । प्रति नवीन है। विषय–सिद्धान्त। लिपि संवत् १८४६। रचना संवत १७२६।

प्रारम्भिक मगलाचरण—

परम ज्योति परमातमा नमौं सुद्ध परधान।
एक अनूपम जोध कहि सिव दायक सुखथान॥

प्रशस्ति—

कुदकुद मुनिराज कृत,	पूरन भयौ वखांन।
अब कवि को व्यवरन कहौ,	सुनहु भविक धरि कांन॥
मूल ग्रंथ करता भये,	कुंदकुद मुनिराय।
तिन प्राकृत गाथा करी,	प्रथम महा सुख पाय॥
तिन ऊपर टीका करी,	अमृतचन्द्र सुख रूप।
सहसकृत अति ही सुगम,	पडित पूज्य अनूप॥
ता टीका कौं देखि कैं,	हेमराज सुखधाम।
करी वचनिका अति सुगम,	तत्त्व दीपिका नाम॥
देख वचनिका हरषियौ,	जोधराज कविनाम।
तब मन में इह धारिकैं,	कीये कवित सुखधाम॥
सत्रह सैं छवीस सुभ,	विक्रम साक प्रमान।
अरु भादों सुदि पंचमी,	पूरन ग्रंथ बखान॥
सुनय धरम हि सुख करन,	सब भूपनिसिर भूप।
मान वंस जयस्यघ सुव,	रामस्यघ सुख रूप॥
ताकैं राज सु चैंन सौं,	कीयो ग्रंथ यह जोध।
सगानेरि सुथान मे,	हिरदै धारि सुबोध।

जौ कहूँ मेरी चूक ह्वै, लीज्यौ सत सुधारि।
वरण छंद कौं देखि कैं, गुण औगुण सुविचारि॥
यहां मिश्र हरिनामजी, रहौ सदा सुखरूप।
ताकी संगति जो करी, पायो काव्य सरूप॥

सवैय्या—

कोई देवी खेतपाल बीजासनिमांनत है,
केई सती पित्र सीतलां सौं कहै मेरा है।
कोई कहै सावलौ कबीर पद कोई गावै,
केई दादू पंथी होय परे मोह घेरा है।
कोई ख्वाजै परमान कोई पथी नानिग के,
केई कहै महाबाहु महारुद्र चेरा है।
याही बारा पंथ मे भरमि रह्यौ सबै लोक,
कहै जोध अहो जिन तेरापथी तेरा है।

× × × × × ×

इति श्री प्रवचनसार सिद्धांन्ते जोधराज गोदीका विरचिते नवि वर्णन नाम द्वादश प्रभाव। संवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार सवाई जयपुर मे लिख्यौ अमल महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहजी का मे पुस्तक जोधराज गोदीका की है संवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखो पुस्तक जीवण-राम गोधा रैणी का को। लिखतं कन्हीराम चाकलीवाल सपतरामगोधा।

४६. प्रवचनसार।

भाषा प्राकृत संस्कृत–हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ४४ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८–४२ अक्षर। लिपि संवत् १७२७. प्रस्तुत ग्रंथ मे प्राकृत और संस्कृत मूल ही दिया हुआ है। हिन्दी मे प्रत्येक गाथा मे वर्णित विषय का संकेत दिया गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में फुटकर टीका भी दी हुई है। भाषा परिमार्जित है।

भाषा का प्रारम्भ—

आगै श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम ही आरंभ विषै मंगलाचरण निमित्त नमस्कार करै है। .... । आगैं आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध ऐसे तीन भावनि की ठीकता करैं है।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रुक्ष गुणविषै अनन्त अंश भेद है। एक परमाणु दूजे परमाणु सौं तब बधै जब दोइ अंश अधिक स्निग्ध अथवा रुक्ष गुण का परिणाम होइ ... .,

संवत १७२७ वर्षे अषाढ मासे शुक्लपक्षे नवम्या गुरुवासरे रामपुरे श्री जिनचैत्यालये लिखापितं प० बिहारीदास आत्मपठनार्थे। लिखतं ब्राह्मण दीनानाथेन।

४७. प्रद्युम्नरासो।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १८ साइज १२×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४×३८ अक्षर। रचना संवत् १६२८ लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

हो तीर्थंकर वंदू जगनाथ।
तोह सुमरण मनि होइ उछाह तो हुवा छूं अरू होयसी जी सी॥
तिह कारण रहै घट पूरि गुण छीयालीस सोभैं भला जी।
दोष अठारह किया दूरतो रास भणो परद्यमन को जी॥ १॥

प्रशस्ति—

हो मूलसंघ मुनि प्रगटें लोय, अनतकीर्त्ति जांणैं सहु कोय।
तास तणो सिष्य जाणज्योजी. हो रायमल ब्रह्म मुनि कियो वखान॥
बुधि थोडी जाणूं नहीं जी, तिहि दीठो हरिवंशपुराण तो॥ १॥
हो सोलासैं अठवीस विचारो, भादवा सुदी दुतिय बुधवारो।
गढ हरसोर महा भलो जी, तिह में भला जिनेसुर थान।
श्रावक लोक वसैं भला जी, देव शास्त्र गुरु राखे मान तो॥ २॥

४८. पार्श्वनाथ चौपई।

रचयिता श्री आचार्य महेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १७. साइज १२×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४० अक्षर। पद्य संख्या २६८. रचना संवत १७३४. लिपि संवत् १७६३.

मंगलाचरण—

प्रथम वंदि पार्श्वजिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव।
रिद्धि सिद्धि वर सुखदातार, बाल पणैं जीत्यो जिहि मार॥

प्रशस्ति—

संवत् सत्तरासैं चौतीस, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस।
नौरंग तपै दिली सुलतान. सबै नृप अति वंदै सिरि आण॥
नागर चाल देस शुभ ठाम, नगर वगरुटो उत्तम धाम।

सब श्रावक पूजैं जिनधर्म, करैं भक्ति पावैं बहु शर्म्म ॥
कर्मक्षय कारणशुभहेत पार्श्वनाथ चौपई समेत।
पढित लाग्गो लाख समान सवौ धर्म लहौ सुख थान ॥

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी का शिष्य पांडे दय राम नरायणा का वासी जाति सोनी। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति का राजपट विषै दिल्ली का जैसिंहपुरा का देहुरा में पार्श्वनाथ चौपई लिखी।

४६. पार्श्वनाथपुराण।

रचयिता श्री भूधरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६१, साइज १०॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है।

मंगलाचरण—

मोह महातम दलिनदिन तखलच्मी भरतार।
ते पारस परमेस मुझ होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गान।
श्री पारस परमेस कौ पूरन भयौ पुरान ॥
पूरब चरित विलोक कै भूधर बुधि समान।
भाषा बंध प्रबंध यह कियौ आगरै थांन ॥

× × × × ×

दोहा— संवत सत्रैसै समैं और निवासी लीन।
सुदि असाढ तिथ पंचमी, ग्रन्थ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण। लिखावित साहजी श्री चैनरामजी ठोल्या सवाई माधोपुर मध्ये। महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराज्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटा का।

५०. पोसहरास।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञानभूषण। भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ११५.

मंगलाचरण—

सरसति चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आणू।
वार वरत महि साह वरत पोसहवरे काणू ॥ १ ॥
आठमि चउदसि नीम सहित नित पोस लीजे।
उत्तम मध्यम अधम भेदि त्रिहुं विधि जाणी जे ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

चारि रमांणय सुगति जमम अनुप सुख अनुभवइ।
भवमक्तारि पुनरपि न आवइ. इहक फल जस गमइ ॥
ते नर पोसह शांन भावइ, एणि परि पोसह धरइ।
जे नर नारि सुजण गुरु रम भणइ ते करउ वखाण ॥ २ ॥

५१. बनारसी विलास।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ६६. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४० अक्षर। रचना संवत १७७१. लिपि संवत् १८२१.

मगलाचरण—

परमदेव परनाम करि गुरकों करूं प्रणाम।
बुद्धि बल बरनों ब्रह्म के सहस अठोतर नाम ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

गुरु उपदेस सहज उदयागत मोह विलकलता छुटैं।
कहत बनारसि होइ करुना मय अचल अपैनिधि लूटैं ॥

नगर आगरे मे अगरवाल आगरो
　　गरगगोत आगरे में नागर नवलसा।
सघ ही प्रसिध अभिराज राज मांननीक
　　पचवाल नलना गे भयो है फवलसा।
ताके प्रसिद्ध लघु मोहनदेसषइनि,
　　जाके जिनमारग विराजित धवलसा।
ताहि को सपूत जगजीव सुदिढ जैन,
　　बनारसी वंन जाके हिए मे सबलसा ॥ १ ॥
समैं जोग पाइ जग जीवन विख्यात भयो,
　　ज्ञान की मंडली मे जिसको विलास है।
तिन तैं विचार कीनां नाटक बनारसी का
　　आपछे निहारवे को आरसी प्रकास है।
और कविधनी खरी करी है बनारसी नैं
　　सो भी एक क्रम सेती कीजैं ज्ञान भास है।

ऐसी जांनि एक ठौर कीनी सब भाषा जोरि
ताको नांम धर्यो यो बनारसी विलास है।

॥ दोहा ॥

सत्रहसैं एकोत्तरें समैं चैत सित पाख।
दुआसौं पूरन भई इह बनरसी भाष॥ १ ॥

सवत् १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापित पंडित जोधराज जी वृंदावती मध्ये। साह शम्भूराम वाकलीवाल आंवांका लिपि कृतं।

५२. वाशिठिया वोलरो स्तवन।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार। भाषा हिन्दी पद्य,। पत्र सख्या १५. साइज ८×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६-३० अक्षर। रचना संवत् १७८३. विषय-सिद्धान्त

मगलाचरण—

श्री गुरुवचनलंही करी आगम नैं अणुसार।
वोल वाशिठिया मार्गनों, द्वार तणो सुविचार॥
वासठ वोल कह्या जिनैं, घन ते जिन चौवीश।
ते माहे वाशिठिया वोलत वन पभणीश॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सतरैं त्र्याशिया वरसैं, नगर उदयपुर मांहि रे।
नर नारि समझावण हेतैं एह तवन कर्यो उछाहि रे।
तपगच्छ मांहि सुर शिरोमणि श्री विजयक्षमा सुहरायो रे।
गुणवंता नयवंता वर तो जस अनैतेज जस वायो रे।
कान्तिसागर पंडित सुपसाया जसवंत सागरराय रे।
इम थुण्यो जिनवर सयल सुखकर-तीर्थंकर चोवीस ए।
वासिठ वोलें अमिय तोलैं जे कह्या जगदीस ए।
जसवंत सागर सुजस आगर, जिनेंद्रसागर शिष्य ए।
नवनिधि होस्यैं सव नैं घर दिएं इम आसिश ए॥

इति श्री वाशिठिया वोलरो स्तवन संपूर्ण। मुनि मोहनविजय वाचनार्थं।

५३. भरतबाहुबलि छंद ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६. गुटके नं० ५३ के ४० वें पृष्ठ से ४८ तक । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५-२८ अक्षर । रचना संवत १६०७.

मंगलाचरण—

पणविवि पद आदीश्वर केरा, जेह नामें छूटें भव फेरा ।
ब्रह्म सुता समरु मति दाता, गुण गण मंडित जग विख्याता ॥
वंदवि गुरु विद्यानंद सूरि, जेहनी कीर्ति रही भर पूरी ।
तस पट्ट कमल दिवाकर जाणु, मल्लि भूषण गुरुगण वखाणु ॥ २ ॥
तस पट्टे पट्टोधर पंडित, लक्ष्मीचन्द्र महाजश मंडित
अभय चंद्र गुरु शीतल दायक, सेहेर वंश मंडन सुख दायक ॥ ३ ॥
अभयनंदि समुरु मनमांहि, भव मूला वल गाडे वाहि ।
तेह तणि पट्टे गुणभूषण; वंदवि रत्नकीरति गत दूषण ।
भरत महीपति कृत मही रक्षण, बाहुबलि बलवंत विचक्षण ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत सोलसमे सत सहें, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तिथि छहें ।
कविवर वारे घोघानयरे, अति उत्तम मनोहर सुघरे ॥
अष्टम जिनवर ने प्रासादे, सांभलीये जिन गान सुनादे ।
रत्नकीरति पदवी गुण पूरे, रचियो छंद कुमुद शशि सूरे ॥

॥ कलश ॥

उत्कट विकट कठोर गोरगिरि भंजन सपवि,
विहत कोह संदोह मोह तम उपहरण रवि ।
विजित रूप रति भूप चारु गुण कूप सनुत नवि.
धनुष पांच से पचवीश वर उच्च तनु छवि ॥
संसार सरिस्पति पार गत विबुध वद वंदित चरण ।
कहे कुमुद चन्द्र भुज वली, जयो सकल संघ मंगल करण ॥ १ ॥

५४ भविष्यदत्त कथा ।

रचयिता कविवर ब्रह्म रायमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६३. साइज ७×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे १८-२१ अक्षर । रचना सवत् १६३३ लिपि संवत् १६६०.

मंगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिणनाथ, नमौं चरणधरि मस्तकि हाथ।
लंछिन बण्यौ चंद्र माता सु, काया उज्जल अधिक उजासु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल संघ शारद शुभ गछि, छोडी चार कषाय निरभछि।
अनंत कीर्त्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कीयो बखाण॥

ब्रह्म रायमल थोडि बुधि, अखिरपद की न लहै सुधि।
जैंनी मति दीनैं औकास, व्रत पंचमी को कीयौ परकाश॥
केवल पाइ तहिने फुरै।
जो इह कथा सुणे दे कान, काल लहिविपहुचै निरवान।
सोलह सै तेतासा सार, कातिग सुदी चौदसि सनिवार।
स्वाति नक्षत्र सिद्धि शुभजोग, पंडा ख न व्यापै रोग।
देस ढूंढाहड सोभा घणी, पुजं तहा आ ल मण तणी।
निमल तलें नदी बहु फिरै, सुख स बसै बहु सांगानेर।
चहु दिशि बाण्या भला बजार, भरे पटोला मोती हार।
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा, सोभै चदवा तोरण घणा।
राजा राजै भगवतदास, राजकंवर सेवहि बहु तास।
परजा लोग सुखी सुख बसैं, दुखी दलिद्री पुरवै आस।
श्रावक लोग बसै धनवंत, पुजा करहि जयहि अरहंत।
उपराउ परी वैरन कास, जिहि अहिमिद सुगे सुख वास॥
मंगल श्री अरहंत जिणि, मंगल अनंतकीर्त्ति मुणिंद।
मंगल पढइ करई बखाण, मंगल ब्रह्म राइमल सुजाण॥

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

अखिर मात जु भूलौ होय, पंडित जन सहु खमिज्यो मांहि।
अति अयाण मति थोडी भई, कथा पंचमी व्रत की कही॥
बारबार नवि भणै पसार, जामैं जीव दया व्रतसार।
जो नर जीव दया को पाल, रोग सोग न व्यापै काल॥

संवत १६६० वर्षे भाद्वा बुदी १ शुक्रवारे पोथी लिखी सा० जत्ता पाटणी दातुकाकी लिखी आगरा मध्ये साहिश्रीजहां की हवेली श्री जलाखांकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी।

५५. भक्तामरस्तोत्र भाषा।

रचयिता श्री नथमल विलाला और श्री लालचन्द। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७१. साइज १०×४॥ इञ्च। रचना संवत् १८२६. लिपि संवत् १८५३.

मंगलाचरण—

परम सघन वन दहन अगिनि कन तपत कनक तन दुति रवि करसी,
    परम धरम मग परमत तम खग नमत सकल जग लखि सिव दरसी।
प्रबल मदन अरि निज बल वसि करि वसु मद हरि करि सिव तिय परसी,
    समवसरन थल महित अतुल बल रिषभ सुजिन नम मन वच सिरसी॥

प्रशस्ति—

यह भाषा रचना करी नथमल निज पर हेत।
पढ़ैं सुनैं जे नर सदा ताहि अखै सुखदेत॥ १ ॥
हूंबड वंस मझार वनिक पृथिवी सुनामधर,
    सीलवतो गुनग्राम नाम चपासु नारिघर।
जिनचरणांबुज भवर तुल्य ताकैं सुत सोहै,
    रायमल्ल गुनगेह व्रती देखत मन मोहै॥ १ ॥
श्री वादिचन्द्र मुनिराज के प्रनमि चरन जुग जोरि कर।
कीनी कथा इसतवन की पढत सुनत सुख होय॥ २ ॥
संवत सोलहसैं परधान तापैं सरसठ वरष प्रमांन।
मास अषाढ स्वेत पख सार, तिथ पाचैं जानों बुधवार॥ ३ ॥
सिंधु नदी के तट विषैं ग्रीवापुर अभिराम।
तुंग कोट जुत तहं लसैं सांमि प्रभ जिनरो धाम॥ ४ ॥
ब्रह्म कमसी वचन तैं रायमल्ल अविचार।
भगतामर की कथा वर वरनी मति अनुसार॥ ५ ॥
जिहि विधि भाषा रचना भई, सो अब कथन सुनौं चित दई।
कारन विन कारज नहिं होय, सो अब कथन सुनौं बुध लोय॥
नगर आगरे मांहि वसैं जैंसिहं पूनमीको,
    तहां जैठमल साह भगत सोभैं जिनजी को।
तासु तनुज गुणवंत सर्व जुग कुल सुख दायक,
    जेठो सोभाचंद चंद मोहन लघु लायक॥

५६. मृगावती चरित्र ।

रचयिता श्री समयसुन्दर गणि । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३०. साइज ६॥×४॥ इञ्च । रचना संवत् १६६८. लिपि संवत १६८७. प्रति जीर्ण हो चुकी है । जगह २ उसके अक्षर मिट गये हैं ।

प्रशस्ति—

श्री खरतरगच्छ कमलदिणंदा युगप्रधान जिनचंदा वे ।
प्रथम शिष्य श्री पूज्याकरो. सकलचन्द्र गुरु मेरा वे ।
तसु प्रसाद किया ग्रंथ पूरा, प्रगट्या सुजसपडू राखे ।
सोलइसइ अठसठा वर्षइ, हुई चउपई घणे हरणइ वे ।
मृगावती चरित्र कह्यो तिहुं खंडे, घणो आणंद धामंडइवे ।
मोहण वेल चउपई सुणतां, भणतां नइ वलि गुणतांवे ।
समयसुंदर घइ सब आसीस, रिद्धि वृद्धि सुजगीसावे ।

संवत् १६८७ कार्तिक सुदी ५ शनिदिने श्री मालपुरा मध्ये श्री खरतरगच्छे वा० श्री गुणरंगगणि शिष्य प० श्री रत्ननंदिगणि शिष्य मुख्य पं० सुमतिसेन गणिना लिखितं ।

५७. माधवानल चौपई ।

रचयिता श्री कुसललाभ गणि । भाषा–हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४१. साइज ७×७ इञ्च । पद्य संख्या ५५१. रचना संवत् १६१६ लिपि संवत् १६६०. लिपि कर्त्ता श्री जौता पाटणी ।

मंगलाचरण—

देवी सरसति देवी सरसति, कासमीर कमलावती ।
महापुत्र कर वीणा सोलहइ, मोहन तरु वर मंजरी ॥

प्रशस्ति—

संवत सोल सोलोतरइ, जैसलमेर मझारि ।
फागुण सुदि तेरसि दिवसि, विरचि आदित्यवार ॥
गाहा दूहा चउपई, कवित कथा संबंध ।
काम कंदला कामिनी, माधवानल संबंध ।
कुसल लाभ वाचक कहइ, सरस चरित्र सुप्रसिध ।
जे वाचइ जे सांभलइ, तीया मिलइ नवनिधि ।
गाथा साढी पांचसइ, ए चउपइ प्रमाण ।
तेह सुणंता सुख दीयइ, जे हुइ चतुर सुजाण ।

रावल मालि सुपाट धरि, कुवर श्री हरिराज।
विरचिएह सिणगारसि, तास कतुहल काज।

५८. मिथ्या दुकड।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पद्य संख्या २३. लिपि संवत् १७६२.

मंगलाचरण—

आदि जिणेसर भुवि परमेसर सयल दुख विणासणो।
भुवि कमल दिणेसर मोह तिमर हर तत्त्व पदारथ भासणो॥ १॥
हूँ विनती करुं हवें आपणीय।
तुं त्रिभूवन स्वामी सुणि धणीय॥
जे पाप करया ते कहूँ अनुम।
ते मिथ्या दुकड होउ नमम॥ २॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी मुगति हिं गामी सिद्धि नयर मंडणो।
भव वंधण लीणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय वंदणो॥ १॥

५९. यशोधरचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर। लिपि संवत् १८२६. पंडित रूपचंदजी के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी।

मंगलाचरण—

मुनिसुव्रत जिन मुनिसुव्रत जी नतवु ते सार।
तीथंकर जे वीससु वांछित वहु दान दातार॥
सारदा स्वामिणि वलीस्तवु, जिमिवुद्धि सार हु वेगी मागु।
गणधर स्वामिनमस्करु, वली सकलकीरति गुरु भवतार॥
तास चरण प्रणमीनें, करें सुरासुर सार॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणु जे रास जीवदयानु पीहर।
पाप मिथ्यात निकंदसार, रागमोह विहंडणु॥
गुणहतणु भंडार सुणिइं, जेनर अनुदिन भणें
हिय में धरी वहुभाव, ब्रह्म जिणदास इम परिभणें
तेहनें शिवपुरे ठाम॥

इति श्री ब्रह्म जिनदास विरचिते श्री यशोधरस्वामीरास संपूर्णः। सवत् १८२६ वर्षे आषाढमासे कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ रविवासरे पंडित रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे उदयपुरवरे।

६०. यशोधरचरित्र।

रचयिता श्री लक्ष्मीदास। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ४६. साइज ११×५ इञ्च। रचना सवत १७८१. लिपि संवत १८०१.

प्रारम्भिक मगलाचरण—

आदि जिनद नमूं सदा त्रिजगत गुरु जिनराय।
सोभै महिमा अनंत जुत धर्म राज पति थाय॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राव यसोधर की कथा ऐसी विधि भाषी।
भवि सुणज्यौ इसकूं सदा सव थिर चित राखो॥
जीव दया के कारणै चरित्र सु कीन्हूं।
मेरो बुधि माफिक इहा, अखियर सुभ लीन्हूं॥
जे सुणसी इसकू सदा मन वच सुध काई।
ते जग के सुख पायकै पीछे शिव जाई॥
अक्खर जो चूक्यौ जु हौं बुध सुध करि लीज्ये।
श्रुत की विधि जाण नहीं, कोउ रोस न कीज्यो॥
राजा जयहि राजई, विस्नसिंघ को नंदो।
तेज प्रताप घणू यथा मध्यांन दिनंदो॥
सांगेनेरि सुथान मे मूलनाईक थांनो।
भट्टारक देवेन्द्र कीरति, को नहि आनो॥
पंडित लिखिमोदासजी तिन करि कीन्ह।
गहिस्य सकलकीरति महा मुनिवर को लीन्ह॥
पद्मनाभ काईरूद्ध कौ कछु इक अनुमारो।
लीन्ह है इस ग्रन्थ मैं भवियण सुखकारो॥
पूरण कीन्हो भाव सो, रामें सुभ वेरा घारो।
लागत है सदा, भवि जीवान फेरा॥
दया कारणै भावसौं निति सुणि जे भाई।
राव यशोधर ता विना नाना गति पाई॥

दिल्ली साहर विषें भलो जेसिहपुर जानु।
घम संथान समानय। अनि थानन मानूं ॥
सुन्दर नद सुस्यालए रचना ठहरानी।
भव्य धरौ निज चित्त में, भगवन की वांनी ॥
संवत सतरासैं भले अरु और इक्यासी।
जे पढिसी सुणिसी सदा, ते ही सुख पासी ॥
कातिक षष्टी भावती, ससि के उजियारै।
भव्य जीव सुणि जे पढें, वे ही विसतारै ॥
जैन धर्म परभाव सौं सबही सुख होई।
तातैं घमं सुधारिहै तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन् श्रीमन्नृपति विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्यां बृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहांनावादस्थ जेसिहपुरामध्ये श्री महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाधिराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पडित श्री रूपचदजी तत शिष्य पडित दयारामेण इद पुस्तकं हस्तेन लिखित।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा।

मूलकर्त्ता कायस्थ श्री पद्मनाभ। भाषाकर्त्ता साह लोहट। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या १३३. साइज ६×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २३-२६ अक्षर। रचना सवत् १७२१ लिपि सवत् १८०३.

मंगलाचरण—

तीर्थंकर जिनं बीसमौ मन मनंसुव्रत वंदि।
तां समया की या कथा हिरदै धरि आनद ॥

प्रशस्ति—

थांव नधर खैराड महंत, हांडोती वर देस कहंत।
तामैं गढ बूंदी सुभ थांन, इंद्रपुरी सम सोभै आंन ॥
महाराज राजा सिरताज, पातिसाही थांभनवंधिपाजं।
राव रतन गुन रतन समांन, ... सुरभांन।

दया सील सागर प्रभु मेर, अरि धरि जिति कायौ जुग जेर।
तिनकी महिमा कही न जाय, चहुवान मुकट मनिराय।
तिन सुत त्रिलोक समान, गोपीनाथ बड़े प्रभ ज्ञान।
जिनकै दस सुत भुं दिगपाल, सत्र सकल धो धरि अरिकाल।
निवलराम थ्थपण समरथ, सबल उथ्थ पणहार सुहथ।
पतिसाही पतिभखणहार, हींदुव भ्रम आगल भुज भार।
राजनीति निति पालनहार, विक्रम भोजराज अवतार।
चौदा विद्या जांन प्रवान, सुरवीर दाता गुर कीन।
जिन लखि वैरी धीरन धरै, दसूं दिसा नृप सेवा करै।
तास तखत वर बखत विलंद, भावस्यंघ प्रतपै जिमचंद।

॥ कवित्त ॥

मेर अचल ध्रुव अचल अचल सूजैतिराज घर,
तेज पुंज रवि ते मन पहुपौ हमो प्रसिध पर।
गुण गंभीर वरवीर धीर सागर रतनागर,
रतन वंस अवतंस अंस सत्र सल सुत नागर॥
श्री भावस्यंघ हिंदवानपति छत्र तिलक सुभ सिरधर्यो।
संभरि नरेस राजै तखत बखत दसुं दिसन धर्यो॥ ८॥
मही अडोल मेर सम राव, दिन दिन बधौ चौगनी आव।
चदं सूर धर सेष महेस, तौ लग राज भोगवो देस॥ ६॥
घर घर वृधि बधाहोई, कांन पड्यौ नविसुन जे कोई।
तिनकै राज सुखी सब लोग, जानै पांन फूल रस भोग॥ १०॥
बाग बावड़ी महल अपार, मैडी छाजा जाली सार।
च्चार तलावै चहुं दिसि कुंड दूवै दुरग बिचि बसैं सह्र म॥ ११॥
कौ लग सोभा कहुं अपार, गली गली सौभे बाजार।
अन धन कपडौ चीर कपुर, भरि वेचै ले मोलि जरूर॥ १२॥
सिखर बध देवल धुज सीस, डौलि बुलावै लगि सुर ईस।
इन्द्र पुरी तै अधिक अपार, बूंदी गढ देख्यौ ख्यर सार॥ १३॥

॥ सवैया ॥

बूंदी इंद्रपुरी जखिपुरी किंनुवर पुरी,
रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिका सी घरो घर मैं।

धौलहर धाम घर घर मे विचित्र वाम,
नर कामदेव केसे सवै सुखसर मैं ॥
वापी वाग वारुण वजार वीथी, विद्या वेद विवुध विनोद ।
वानी वोलें मुखि नरमैं, तहां करै राज राव भावस्यंघ महाराज ॥
हिंदु धर्म लाज पाति सही आज कर में ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

श्रावक लोग वसै धर्म वतं पुजाकरै जपै अरिहृत ।
तिनको सवेक लोहट साह, करो चौपई धरी सुभ लाह ।
वस वघेर वाल मोवाल, दुगैरथा वरगो भवि साल ।
धरम धुरंधर धरमौं धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।
हीरो सुन्दर वड़े सुजान, लघु लोहट वुधि कौनिधान ।
श्री जिनदेव सगुरको दास, कीनौ भाषा ग्रन्थ प्रकास ।
लघु दीरघ गण अगण विचार मात छद विस्तार ।
सव्द शास्त्र कौ लह्यौ न भेद, तातैं वुधि मति करौ न खेद ।

× × × × × ×

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।
पाख उजाल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥
सवंत सत्रासै इकईस करी चोपई फली जगीस ।
मन अभिलाष संपूरन भए, जिन गुरु चरन सीस धरि लए ॥

इति श्री राव जसोधर की चउपई वध कथा संपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता श्री पद्मनाभ दतनुसारेण साह लोहट डुगरथौ गोत्रे धर्मा सुत वघेरवाल वासिगढ वूंदी राजराव श्री भावसिंहजी विजयराज्ये ।

६२. योगीरासो ।

रचयिता पाडे श्री जिनदास । भाषा (पद्य) । पत्र संख्या २. साइज ११॥×४॥ इञ्च । पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४६–५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुरुष जो आदि जु गोतम आदि जती आदिनाथो ।
तास परंपरहुवा मुनिवर दिगंवर सहतांणो कुंदकुंदाचारिजगुरुमेग ॥१॥

अन्तिम पाठ—

हूं बलिहारी चेतनकेरी सोइक चित्तमनि ध्यावै।
छोडि अचेतन क्युं पडा रे भाई आपण सिवपुर जावैं॥ १॥
जोगीरासौ सीखौ रे भाई श्रावग दोष न कोइ दोज्यौं।
जो जिणदास त्रिविधि त्रिविधिकरि सद्धिह सुमिरण कोज्यौं॥ २॥

६३. रत्नपालरासो।

रचयिता श्री सुरचद। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६३. साइज १०×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७३२. लिपी सवत १८२३. प्रति पूर्ण है लिखावट सुन्दर है।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

श्री वृषभादिक जिन नमु, वर्त्तमान चोवीस।
श्रीमधर प्रमुखां नमु, विहरमानवली वीस॥ १॥
वृषभसेन गौतम नमु, गणधर थया गुणवतं।
चउदेसिं [बा]वन नमु, मोटा महिमावतं॥ २॥

प्रशस्ति—

गछ दिगंबर गीरुया गौतम, इन्द्र भूषण सूरी रायरे।
तास सीष्य श्री पतित्रणचार, जिनवर भक्ति सुहायरे॥ १॥
कथा कोस ग्रंथ जो ईने, रच्यो रास मीरदार रे।
सुरचंद भंया नें आदर, एह प्रबंध उदार रे॥ २॥
अल्पबुधि श्रावक अवतार, पंडित सुर प नाम रे।
गुरुपसायें बुधि प्रकासी, सज्जन सुणि सुखपामेरे॥ ३॥
संवत सतरह बत्रिसा वर्षे, शुभ मूरत शुभ वाररे।
आसोज सुदि ईग्यारस रविदिन, वर्द्धनपुर मझार रे॥ ४॥
रत्नपाल मूंनीना गुण गाथा, मन नाम मनोरथ फलीयारे।
अनेक देश देसनी देशी, रास उत्तम मे कियोरे॥ ५॥
कवियण कहे मे पुरो कियो, त्रिजोनह रमाल रे।
विनति करहु बुधि जन साधैं, शुद्ध करो नुविमानरे॥
भणता गुणतां नें साभलता, सुणता हर्ष अपार रे।
गुण गाता वली गुणवतं केरा, वरत्यो जयजयकाररे॥ ६॥

इति रत्नपाल श्रेष्टिनो रास सपूर्णम्। संवत् १८७३ वर्षे पोष सुदि १३ सोमवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुंदाचार्यान्वये श्री सुरतबंदिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानंदजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी लिखापितं।

६४. राजुल पच्चीसी।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या २५.

मंगलाचरण—

प्रथमहि सुमरुं जादौराय, पुनि सारद हि मनावस्यौ जीव वे।
वंदौ अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वे॥ १॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावे, सुनत सब जन गह् वरौ।
राजुल पति श्री नेमि जिन सब संघ कौ मगल करौ॥

६५. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ७. पद्य संख्या ८५

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो थाय।
रात्रि भोजन कहुं निहाल, सांभल ज्यो सहु बाल गोपाल॥

अन्तिम पाठ—

भोला कांई भ्रमें पडो जीत्यो जू उ महार।
रात्री भोजन परहरो जेम पावो भवपार॥ १॥
मूल संघ महल मणी सरस्वती गच्छे राय।
भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय॥ २॥

६६. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज ६×४ इञ्च। पद्य सख्या ४१५.

मंगलाचरण—

समोसरण सोभा सहित जगतपूज्य जिनराज।
नमौं त्रिविध भवबुधिनकौ तरण विरुद जिहाज॥ १॥

जिन मुख अंबुज खरी, स्याद्वाद मय सोय।
ता स्वरसुति कौं भावधरि, नमौं मरल मद खोय ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

माथुर वसंतराय वोहरा कौ परधान।
संगही कल्याणदास पाटणी बखानिये।
रामपुर वास जाकौं सुत सुखदेव सुधी,
ताकौं सुत किस्नसिंह कविनाम जानिये ॥
तिहि निसिभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी,
तांकी कीनी चौपई सुआगमप्रमाणिये।
भूलि चूकि अक्षरधर जौ वाकौ बुधजन,
सोधि पढि वीनती हमारी मनि आनिये ॥ १ ॥

६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा।

भाषा श्री पं० दौलतराम भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या १३४. साइज ६×४॥ इन्च। गाथाओं के ऊपर ही भाषा में अर्थ लिखा हुआ है।

मंगलाचरण—

दोहा

इंद्र मुकट के रतन की जोती हुई जलधार,
ता करि सिंचे पद कमल जिनके भव तप हार ॥ १ ॥
केवल बोध प्रबोध करि परकासे सहु तत्व।
सुकल सु ध्यान विधान करि, हरे सकल अतत्व ॥ २ ॥
श्रावक अर जति धर्मकौ, दीयो जिह उपदेस।
सुरनर मुनीवर गणधरा, ध्यावैं जाहि असेस ॥ ३ ॥
ताहि प्रणमि श्रावक धरम, भासौं मति अनुसार।
श्रेणिक प्रति ज्यौं प्रगट, भाख्यौ जी गणधार ॥ ४ ॥

अन्तिम पाठ—

अब तुम सुनहु भव्य इक बैन, सा विधि टबा भयो सुख दैन।
उदयापुर मैं कीयो बखान, दौलतिराम अनन्द सुत जान ॥
बान्च्यौ श्रावक व्रत विचार, वसुनन्दी गाथा अविकार।
बोले सेठ वेलजी नाम, सुनि नृप मंत्री दौलतराम।
टबा होय जो गाथा तनौं, पुन्य उपजै जियकौं घनौं।

सुनि के दौलति वेल सु वेन, मन धरि गायो मारग जैन।
नंदो विरधो जिन मतसार, सुखपावो चउ संघ अपार।
दौलति वेल लहो निज बोध, होहु होहु सब को प्रतिबोध।

संवत् १८०८ कार्त्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ १४ भौमवासरे उदयपुर मध्ये सेवकालुवालालजी सुख जी की वहु बाई मीठी तथा राजबाई ने लिखा।

६८. व्रतकथाकोष।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११४ साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७८७, लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ वंदू जिनराय, कर्मकलंक रहित सुकथाय ।। १ ।।
धनुष पचसै जाकी काय, वृष लक्षण सोमें अधिकाय।
वर्द्धमान वंदौ जिनदेव, प्रियकारिणी मात सुत एव ।। २ ।।
सप्त हस्त तन हेम समान, सिद्धारथ नृप को सुत जान ।। २ ।।

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिसि की कूंट में जो सु कह्यौ आवास।
तिस मंदिर मांही रहै पंडित लिखमीदास ।। १ ।।

॥ सवैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलसंघ भट्टारक कौ पदस्थ जाकौ सोहितु है।
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनो सुमूरति लखेतैं मोहितु है ।।
जाही के सुगच्छ मांहि पंडितश्रीय जु दास बांनी कामधेनु तैं सुग्यान दोहि इतु है।
खिमावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति घोस आगम विचार टोहि इतु है ।।२।।

× × × × ×

ऐसे लिखमीदास ढिग मैं कुछ पढ्यो सुग्यान।
पठन कीयो मो बुध्य लौं वे तो ग्यांन निधांन ।।
तिनिहीं के उपदेस तैं भाषा सार बनाय।
श्रुत सागर ब्रह्मचार कौ सुभ अनुसार सुनाय ।।

॥ चौपई ॥

सांगानेर थकी इकवार, मैं आयौ दिल्ली सुमझारि।
श्री जिनराज तणी बरसेव, करिहूँ सुखदा मनवच एव ।।

× × × × ×

और सुणौं आगै मन लाय, मैं सुन्दर कौ नदं सुभाय।
सिह तिया अभिधा मम माय, ताहि कूंखि मै उपजू आय।
चदं खुशाल कहै सब लोक, भापा कीनी सुणत असोक।

॥ दोहा ॥

एकसात अठसात लखि संवत सुख दातार।
फाग अरिष्ट त्रिपैं जु थिति चारित नाम विचार॥
सतरासै रु सित्यासिये फागुण तेरसि सार।
कृष्ण पक्ष मांहि लखो उत्तम मगलवार॥

मिती जेठ शुक्ल १३ संवत १८२० लिखापित पंडित जोधराजजी भूरामल लिपिकृतं वृंदा नगर मध्ये।

६६. वैद्यमनोत्सव।

रचयिता श्री केशवदास नयनसुख। भापा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति में २२-२५ अक्षर। रचना संवत् १६४६. लिपि सवत १७७४.

प्रशस्ति—

वैद्य मनोत्सव ग्रथ यह कह्यो सकल निज आनि।
दुखकदन पुनि सुख करन आनंद परम निधान॥ १॥
कंसराज सुत नयनसुख कर्यो ग्रथ अभिरद।
सुभग सहज सीहजंद मैं अकबर राजनरेंद्र॥
अंक वदे रस मेदनी शुक्ल पक्ष शुभ माम।
तिथि दुतिया भृगुवार पुनि पुन्यचन्द्र सुधराम॥

सवत् १७७४ जेठ सुदी ११ को श्री दयारामसोनी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपी बनायी।

७०. समयसारकलशा भापा।

मूलकर्त्ता आचार्य अमृतचन्द्र। भापाकार श्री राजमल्ल। भापा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. साइज ११×४॥ इञ्च। केवल दसवें अध्याय की प्रति लिपि है। प्रति की हालत विशेष अच्छी नहीं है। लिपि संवत १६५३, लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६५३ फागुण सुदी १४ शनिवासरे गढरणस्थंभ मध्ये चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे

वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति आम्नाये खण्डेलवालान्वये गोरपुरा को श्राविका लिखाइत मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थं उपदेश वाई धनाई। लिखतं पांडे केसोसाह मान्या सुन संगही पूरा संगुणदत्त का देहुरा को पांडे लिखो।

७१. समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि वनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११८. साइज १०×५६ इञ्च। रचना संवत १६९३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कही है जैसे, नाटक भाषा भयौ सु ऐसे।
कुंदकुंद मुनिमूल उथरता, अमृतचन्द्र टीका के करता।
समैसार नाटक सुखदानी, टीका सहित संसकृत वानी।
पंडित पढै मुढमति वूझै, अलपमती कौं अरथन सूझै।
पाडे राजमल्लजिनधर्मी, समैसार नाटक के मर्मी।
तिह्नी गरथ की टीका कीनी, वालावोध सुगमकरिदीनी।
इहि विधि वोध वचनिका फैली. समै पाइ अध्यातम सैली।
प्रगटी जगत मांहि जिनवानी, घर घर नाटक कथा वखानी।
नगर आगरे मांहि विख्याता, कारन पाइ भये वहु ज्ञाता।
पंच पुरुष अति निपुन प्रवीने, निसिदिन ग्यांन कथा रस भीने।

॥ दोहा ॥

रूपचंद पंडित प्रथम, दुतीय चतुर्भुज जांन।
तृतीय भगौतीदास नर, कौरपाल गुणधाम॥
धरमदास ए पच जन, मिलि वैठहि इक ठौर।
परमारथ चरचा करै, इन्हीं के कथन ने ओर॥
कवहौं नाटक रस सुनहि. कवहौं और सिधत।
कवहौं विग वनाई कै, कहै वोध वितंत॥
वास हमारा टोडो जांनि, सागनेरि वसे पुनि आंनि।
फेर जिहांनावाद मझारि, आप रहै जैरयंध पुरिसार॥
महावीर को मन्दिर जहां, सकल पंच जन आवें तहा।
चित कौं रागरु धरम धरु, सुमति भगौती पास।
चतुर भाव धिरता भए, रूपचंद परगास॥

इहिं विधि ज्ञान प्रगट भयौ, नगर आगरे माहि।
देस देस महिं विस्तर्यौ, मृपा देस महि नांहि॥

॥ चौपई ॥

जहां जहां जिनवानी फैली, लखैं न सो जाकी मति मैली।
जाके सहज बोध उतपाता, सो ततकाल लखै यहु बात॥

॥ दोहा ॥

घट घट अन्तर जिन वसैं, घट घट अंतर जैन।
मत मदिरा के पांन सौं, मतवाला समुझैं न॥

॥ चौपई ॥

बहुत बढाउ कहां लौ कीजें, कारज रूप बात कहि लीजें।
नगर आगरे मांहि विख्याता, बनारसी नाम लघु ग्याता।
तामैं कवित कला चतुराई, कृपा करिहि ए पांचौ भाई।
पंच प्रपच रहित हिय खोले, ते बनारसी सौं हसि बोले।
नाटक समैसार हित जी का, सुगमरूप राजमल टीका।
कवित बद्ध रचना जौ होइ, भापा ग्रंथ पढै सब कोइ।
सोरहसैं तिरानवे बीते, असू मास सित पच्छ विनीते।
तिथि तेरसि रविवार प्रवीना, ता दिन ग्रन्थ समापत कीना।

॥ दोहा ॥

सुख निधान सक बंध नर, साहिब साहिकिरांन।
सह समाहि सिर मुकुट मम, साहिजहां सुलतान॥
जाके राज सुचैन सौं, कीनौ आगमसार।
ईति भीति व्यापी नहीं, यहु उनकौ उपगार॥

॥ सवैया ॥

तीनिसे दसोत्तर सोरठ दोहा छंद दोऊं जुगल मैं पैंतालीस इकतीसा जानि है।
छियासी सु चौपई सैंतिस तेईस सवैए बीस छप्पै अठारह कवित बखानें है॥
सात पुनि ह्यां अडिल्ल च्यार कुंडलिए, मिलि सकल सातसैं सताईस ठीक ठानें है।
बत्तीस अछर के सिलोक कीने तातें, ग्रंथ संख्या सतरहसै सात अधिकाने है।

॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरब, नाटक भाव अनंत।
सोहू आगम नाम मैं, परमारथ विरतंत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धांत पूर्णम्।

७२. समयसारनाटक भाषा।

भाषाकार श्री रूपचंद। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या १३७, साइज १२॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या ७२४. महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य में अर्थ लिखा गया है। रचना संवत् १७००.

मंगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ, कौ लग होय बखान।
रूपचन्द तौहुं लखै, अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्हे,
सत्रहसै बीते परिठांनु आव रस मैं।
आसू मास आदि धौंसु सपूरन ग्रन्थकन्हौ,
वारतिक करिकै उदारमसिमैं।
जौ पै यहु भाषा ग्रन्थ सबद सुबोध या कौ,
ठौहू बिनु सम्प्रदाय नावैं तत्व बस मैं।
यातें ग्यान लाभ जांति सबनि कौ बैन मानि,
बात रूप ग्रन्थ लिख्ये महा शांत रस मैं ॥ १ ॥
खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मैं।
खमसाखमांडि जिनहर्ष जू वैसगी,
कवि शिष्य सुखवर्द्ध शिरोमनि सधम मैं।
ताके शिष्य दयासिंध गणी गुणवंत,
मेरे धरम आचारिज विख्यात श्रुत धर मैं।
ताकौ परसाद पाइ रूपचंद आनद सौं,
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मैं ॥ २ ॥

वाचत पढत अव आनंद सदा एकसौं,
संग ताराचंद अरु रूपचद वाल के ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

देसी भाषा कौ कहै　　　अरथ विपर्यय कौन।
ताकौ मिछा इक्क मे　　　सिद्ध सखी हम कौन ॥ ४ ॥

७३. सम्यक्त्व कौमुदी कथा।

भाषाकार श्री जोधराज गोदीका। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६१. साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। रचना संवत् १७२४. लिपि संवत १७६३.

मंगलाचरण—

परम पुरुष आनंदमय　　　चेतनरूप सुजान।
नमूं शुद्ध परमात्मा　　　जग परकासक भान ॥
परम जोति आनंदमय,　　　सुमिति होइ आनंद।
नाभिराज सुत आदि जिन,　　　वंदौं पूरण चंद ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलग्रन्थ मैं ज्यों सुनी　　　कथा कहै कवि जोध।
सोई ए भषा मही　　　दायक दरसन बोध।

॥ चौपई ॥

मिश्र एक हरि नाम सुनी　　　पढ्यो छंद व्याकरण प्रमांन।
ज्योतिष ग्रन्थ पढ्यौ वहु भाय,　　　मित्र जोध कहै गुनराय ॥

॥ दोहा ॥

तिनहि पढायो जोध को　　　मूलग्रन्थ परवान।
ता पर भाषा गुन कीयौ　　　जोधराज गुन थांन ॥
पढित चतुर सुजान है　　　इह जोध हरनाभ।
ताकी संगति जोध को　　　भयौ सामतर लाभ ॥
परम प्रजा पालै सदा　　　सब भूपनि सिरमौर।
रामसिंह राजा प्रगट　　　ता सम नांही और।
ताकै राज सुचैन स्यौं　　　कियो ग्रंथ इह जोध।
नाम समकिति कौमुदी,　　　दायक केवल बोध।

सांगानेर सुथान मे देश ढुढांहडि सार।
ता सम नहि कौ और पुर, देखे सहर हजार॥
अमर पूत जिनवर भगत, जोधराज कवि नाम।
वासी सांगानेर को करी कथा सुखधाम॥
धर्मदास को पूत लधु जाति लुहाड्यो जोय।
नाम कल्यांण सु जानिये कवि को मामो सोय॥
ताके पढिवें कारनै, कियो ग्रन्थ यह जोध।
नाम समकित कौमुदी, दायक केवल बोध॥
इहै समकित कौमुदी, जो नर पढै सुभाय।
सो सुर नर सुख पाय कैं अनोकरमि सिव जाय॥

॥ चौपई ॥

संवत सत्रासै चौवीस फागुन वुदि तेरस शुभ दीस।
सुकरवार सो पूरन भई इहै कथा समकित गुन ठई॥

॥ दोहा ॥

ग्यारासैं अठहत्तरि इहै छंद चौपई जान।
कह्यौ कौमुदी ग्रंथ कौ जोध सुमति अनुमान॥

महाराम के हेतो सौं राखे अपने पास।
काम खजानां कौ दयौ नथमल कौं सुखरास॥

पुनि भाषा रचना विषैं धार्‌यो मैं उपयोग।
पै सहाय विन होय नहीं, तवहि मिल्यौ इक जोग॥

कारन विन शुभकाज की सिद्ध न होय लगार।
तातैं सो कारन सुनौ, वुध जन सुख करतार॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खांन, चोजामत सु गछ नभ भांन।
बसवा नाम नगर सुखधाम, मूलवास जानो अभिराम॥
अमोदक के जोग वसाय, वसुवा तजैं भरतपुर आय।
जिनमन्दिर में कियो निवास, मूलवास जानौं अभिराम॥

जो कहूं मेरी चूक है लीज्यौ संत सुधारि।
वरण मातरा देखि कै गण औगण सुविचार॥
वंदौ सिव अवगाहना अर वंदौ सिव पंथ।
असह देव वदौ विमल वंदौ गुरु निरगंथ॥
जिनवाणी पूजौ सही तातै सब सुख होय।
कविता दुखन नहीं लगौ सुख से पूरण होय॥
चदं सूर पानी अवनि पवन अरु आकास।
मेरादिक जव लग अटल तव लग जैन प्रकास॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीकथायां साह जोधराज गोदीका विरचितायां उदितोदय भूप अरहदास सेठादिक सुरग गमनो नाम एकादसम परिच्छेदः।

संवत्सरे १७६३ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुधवारे जिहानाबाद जैसिंहपुरा मध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्यम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रस्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तदाम्नायानुवर्त्ती पं० दयारामेन इदं सम्यक्त्वकौमुदी भाषा चौपई ग्रन्थ स्वहस्तेन लिपि कृता।

७४. सम्यक्त्वरास।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी। पत्र संख्या २६. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३०-३४ अक्षर। प्रथम पत्र नहीं हैं।

दूसरे पत्र का प्रारम्भ पाठ—

त्रोटक

जयवंत जय जगि सार सुंदर रामचद्र वखानिये।
लखमीधर अरु भरत शत्रुघ्न च्यारि पुत्र घरि जाणीइये॥
कुलकमल दिनकर सकल शास्त्र सुज्ञानवंत महामती।
देव धर्म्मह गुरु परीक्षण रामचन्द्र नतिपती॥ १॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

समकित रासो निरमलाए मिथ्यातमोहनिकंदाता।
गावो भवीयण रूवडो ए जिमि सुख होइ अनंताता॥ १॥
श्री सकल कीरति गुरु प्रणमीनए श्री भवन कीरति भवतार तो।
ब्रह्म जिणदास भणो रुवाडए गाइए सरस अपारतो॥ २॥

७५. सिद्धान्तसारदीपक ।

रचयिता श्री नथमल बिलाला । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १६६ साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । भट्टारक सकलकीर्ति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है ।

सर्वदर्शी सर्वज्ञ महत सकल अर्थ दीपक श्रीमंत ।
गणधर पद वंदित जगनाथ, वंदौ चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जिहि विधि भाषा ग्रंथ यह, भयो परम हितकार ।
सो वरनन बुधजन सुनो, करि निज चित्त इक ठार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

नगर आगरो परमपुनीत, साधर्मीजन बसैं विनीत ।
जहाँ जेठमल साह सुजांन, गुन गर्न मंडित परम निधान ॥
ताके तनुज दोय गुनवान, निजकुल कमल प्रकाशन भान ।
जेठौ सोभा चंद उदार, लघु सुत गोकुलचंद विचार ॥
वंस खण्डेवाल अवदात, गोत बिलाला जग विख्यात ।
अन्नोदक को कारण पाय, बसे भरतपुर माहो आय ।

॥ दोहा ॥

नंदन सोभाचंद कौ, नथमल निपट अयान ।
छंद कोस पिंगल तनौं ज्ञान अस नहीं जान ॥

॥ चौपई ॥

संगही चादूवाड प्रसिद्धि, केसोदास धरन बहु रिद्धि ।
मयाराम ताकौ सुत सही, पोतदार जानै सब मही ।
मोदी······महाराज जाकौं सनमान दीह्नो,
फतेचंद पृथ्वीराज पुत्र धनमाल के ।
फतेचंद जूके पुत्र जसरूप जगन्नाथ,
गौतमानघर मैं धरैयासुभचाल के ।
ता मैं जगन्नाथ जू के बुझिवेकै हेतु,
हम ब्यौरी कैं सुगम कीन्हे बंधन दयाल के ।

नथमल नैं सुखरास सौं, कही प्रीति दरसाय।
मूलग्रन्थ कौ अर्थ तुम मोकूं देय बताय॥
मूल ग्रन्थ अति कठिन है पढ़ै जु पंडित होय।
भाषा रचना होय तो पढ़ै सुधी सब लोय॥
अर्थ समझि सुखराम तैं मध्य लोक को सार।
नथमल नै भाषा रची निजमति के अनुसार॥

महावीर जिन जात्रा हित नथमल आये संघ समेत।
पांडे लालचंद सौं कही पूरन ग्रंथ करो तुम सही।

॥ दोहा ॥

नथमल वच उर आनि के, पर निज हेत विचार।
श्री सिद्धान्त सार की, भाषा कीनो सार॥
आधों लोक की कथन अब ऊरध लोक विचार।
भाषा पांडेलाल नैं कीनी मति अनुसार॥

॥ छप्पय ॥

भट्टारक विख्यात सकलकीर्ति विसालमति,
कियो सहंसकृत पाठ ताहि समझे न तुच्छ गति।
ताही के अनुसार अर्थ मन में आयो,
निजमति के अनुसार किमपि भाषा करि गयो॥
जो छंद अर्थ अनमिल कहूं बरन्यौ होय सुजांनि कै,
लीज्यौ सवारि बुधजन सकल यह विनती उर आनियैं॥
नमौं देव अरिहंत मुक्ति मारग परकासी,
नमौं सिद्ध चिद्रूप लोक के अग्र निवासी।
नमौं साधु निरग्रन्थ सकल परिग्रह परिहारी,
सहत परीषह घोर सकल जन के हितकारी।
वंदौं जिन धर्मवर देव सकल सुख संपदा,
यह उत्तम तिहुं लोक मे करौ क्षेम मंगल सदा॥

॥ चौपई ॥

संवत अष्टादश शत जांन ऊपर पुनि चौतीस प्रवांन।
माह शुक्ल पांचैं रविवार ग्रन्थ समापत कीनौ सार॥

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यतं महात्मा गुमानीराम नासरीदा मध्ये।

७६. सिन्दूर प्रकरण।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२, साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या १०४, रचना संवत १६६१.

मंगलाचरण—

सोभित तप गजराज सीस सिन्दूर पूर छवि,
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि
मंगल तरु पल्लव कषाय कंभार हुतासन
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासन
इहि विधि उपमा सहित अरुन वरन संताप हर।
जिनराय पाय नपजोतिसर नमत बनारसी जोरिकर॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगल इक चित्त।
तिन गरंथ भाषा कियौ बहुविध छंद कवित्त॥
नाम सुक्ति मुकावली द्वाविंशति अधिकार।
शत शिलोक परवान सब, इति गरंथ विस्तार॥
सोलासै ईक्यानवे रितु ग्रीषम वैशाख।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र मित पाख॥

७७. सीताचरित्र।

रचयिता कविवर रायचंद। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४४, साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३३ अक्षर। रचना संवत् १७१३, लिपि संवत् १८०८, प्रति पूर्ण है।

मंगलाचरण—

प्रणमौं परम पुनीत नर वर्द्धमान जिनदेव।
लोकालोक प्रकास तस करें समकिती सेव॥ १॥

प्रशस्ति—

कियो ग्रन्थ रविषेण नें रघु पुराण जिय जांन।
वहै अरथ ईण में कह्यौ रायचंद उर आंण॥

× × × ×

संवत सतरंतेरौंत्तरै मंगसिग ग्रन्थ समापति करें।
सुकल पक्ष तिथि है पंचमी, आपो जांणि कुमति जिणवमी ॥

संवच्छरे १८०८ वर्षे वैसाखमासे शुक्लपक्षे अक्षयतीजतिथौ बुधवारे श्री सवाई जयपुर नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक शिरोमणि भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टोदयाद्रि दिनमणिप्रख्यः भट्टारकजी श्री १०८ महेन्द्रकीर्त्तिजी श्री १०८ श्री माधोसिंह राजपाटविराजिते साह श्री डाहूरामजी का देहुरा मध्ये पंडित श्री ईसरदास सोभाराम रूपचंदविराजिते संगही श्री नोकरामजी की पुस्तक सौं तदाज्ञानुवर्त्ती पं० दयारामेण सीताचरित्र चौपई भाषा ग्रंथ स्वहस्तेन लिपि कृता।

७८. सीता हरण।

रचयिता श्री जयसार। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११४. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४–२८ अक्षर। रचना संवत् १७३२. लिपि संवत् १६१५ प्रति पूर्ण है तथा साधारणतः अच्छी है।

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सकल जिनेश्वर पद नमूं   सारदा सुमरुं माय।
गणधर गुरु गौतम नमूं   त्रिभुवन वंदि पाय ॥ १ ॥
सहै गुरु पद नमो   रामचन्द्र घर नार।
सीता हरण जहं कहूं   सांभल जो नरनार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ सरसती वर गच्छे   बलात्कारगण सार जी।
बीद्यानन्दि गुरु गोयम सरपो   प्रणमूं बीरो वार जी ॥
गधार नगरे प्रत्यक्ष अतीसय,   कलीयुगे छे मनोहार जी।
तेह तणो पाटे मलीभूषण   बोधा नो नहीं पार जी ॥
लक्ष्मीचंद्र ते अनुक्रमे जांणो   लक्षण संकीन पाय जी।
बीरचन्द्र भट्टारक वांणी   सांभली तां सुखथाय जी ॥
ज्ञानभूप तस पटे सोहे   ज्ञानतणो भंडार जी।
लाडजं वंसे उद्योतज कीयो   भव्यतणो आधार जी ॥
प्रभाचन्द्र गुरु तेहने पटे,   वांणी अमी रसाल जी।

वादीचन्द्र वाद वहु जीत्या घट सरतां गुणमाल जी ।।
महीचन्द्र मुनि जन मन मोहन, वाणी जेह वीस्तार जी ।
परवादी नामा नमूं काव्या गर्व न करीं भगार जी ।।
मेरुचन्द्र तसें पटें सोहे, भोहें भवीयण मन जी ।
व्याख्यांय वांणी अमीयसमांणी, सांभलोय के मन जी ।।
गोर महीचन्द्र भोप जयसागर, रच्यो सीता हरण नो रास जी ।
नरनारि ले भणे छे सूणे छे तसें घरे जय जय कार जी ।।
हूंवडं वसो रांमा संतोपी, रामादे तेह नी नार जी ।
तेह तणो पूत्र से तस घरे जय जय कार जी ।।
तेह तणे आदे सासी हरखे, कीधु मन उलास जी ।
सांभल भांगा तां सूख हो सी, सीता सील विलास जी ।।
संवत सतरवत्रीसानरसे वैसाख सुदी बीज सार जी ।
बूधवारें परिपूर्ण ज चर्यु, सूर तनय रयभार जी ।।
आदी जिणेसर तणे प्रसादी पद्मावती पसाय जी ।
सांभलतां गातां ए सहूनें, मन मां आनंद थाये जी ।।
महापुराण तणे अणुसारी, कीधूं से मनोहार जी ।
कवि जिन दोप में देसो कोई, सोधजो तमे सूखकार जी ।।
मुझ आलसूने वजय चढयुं, सारदा ए मती दान जी ।
तेह प्रसादे ग्रन्थ ए कीधो, श्यामदासे जसलीद्ध जी ।।
सीता सील तणो ए महीनां, गांड सहू नरनार जी ।
भावधार जे गाए महीनां, तस घर मगल च्यार जी ।।

॥ दोहा ॥

भावधार लें भणे सूंणे सीता सीलविलास ।
जयसागर रई उचरे यह चेतस मन नी आस ।।

इति भट्टारके महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-वर्णनं नाम षष्टमोऽधिकार समाप्त। ।

संवत १९२५ वर्षे पोषवुदी २ शुक्रवासरे गांम श्री देवदनगरे पद्मप्रभचैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत् शिष्य ब्रह्म गोकलजी वल्लघु भ्राता ब्रह्ममेघजी लिखितं स्वहस्तं ।

७६. सुदर्शन रासो ।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल्ल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११. साइज ११॥ × ५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२. ४५ अक्षर । रचना संवत १६२६ ।

मंगलाचरण—

प्रथम प्रणमौं आदि जिणिंद, नाभि राजा कुलि उदयाजी चंद ।
नगर अजोध्या उपने स्वामी पूरव लाख, चौरासी सी जी आउ,
मरुदे जी मात हैं उर धरिउ ॥

प्रशस्ति—

अहो श्री मूल संघ मुनि प्रगटौ जी लोइ,
अनंत कीर्ति जाणै सहु कोइ तास चणौ सिप जाणज्यौ ॥
अहो रायमल ब्रह्म मनि भयो जी उछाह, बुधि करि हीण जाणैं नहीं ।
अहो वर्णयो रास सुदर्शन साह ॥ १ ॥
अहो सोलहसैं गुणनीसइ जी वप वैसाख सातैं जी ऊजलौ पाख ।
साहि अकबर राजई, अहो भोगवैं राज अति इंद्र समान ।
और चर्चाउर राखैं नहीं अहो छह दरसण कौ राखैं जी मान ॥ २ ॥

८०. श्रावकाचार रासो ।

रचयिता श्री जिनसेवक । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ११२. साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । रचना संवत १६०३ लिपि संवत १८८०. रासो के कर्त्ता ने अन्य भी ग्रन्थ रचना की है प्रशस्ति ठीक तरह से लिखी हुई नहीं है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर २ चरण कमल ते नमुं
गुण छइतालीसधारक, वारण मोहतिमिरनिभर, पंच कल्याणक नायक
पायक सिवसुख सार मनोहर, सारदा सामनिमनिकर
अणुसरु गुरुनिर्ग्रंथपाय, श्रावकाचार विधि वरणवु जो नन्दो रास प्रमाण ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ बलात्कार गुण विनाननो ।
कुंदकुंदाचार्य हुवा अनुपमि गुरु गुणमाननो ॥
श्री जिनसेन गुणभद्रसूरी अकलंक अमृतचन्द्रनो,
ज्ञानी ध्यानी दिगंबर जती परंपरा सूरी प्रभाचंद्रनो ॥

श्री पद्मनन्दि पाट हुंवा	सकलकीर्त्ति भव तारतो।
भुवनकीर्त्ति तपमूर्त्ति	श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो।
श्री विनय कीर्त्ति पाटि उपन्या	भट्टारक श्री शुभचंद्रतो॥
भव्य कुमुदचंद्रजसो,	कुवादी गजमृगेंद्रतो।
आम्नाय गुरु श्री शुभचंद्रती	आगम गुरु मुनिचंद्र तो।
अध्यात्म गुरुकमेसी ब्रह्म,	शिष्य गुरु हीर मंझिद्रतो॥
अक्षर शास्त्र कवित गुरु,	ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो।
जैंण धर्म उपदेश दियो	शास्त्र श्लोक पट भापना॥
ते सहु गुरु हुवा सुमनणां,	कर जोडि करू प्रणाम तो।
गुरु गुण नविलोपिये,	गुरु लोपी पापी नाम तो॥
सुम हृदय पदम मांहि,	गुरु भानु वाणी किरण तो।
मोह तिमर दूरैं हरी,	ते गुरु तारण तरण तो॥
सामंतभद्रसूरी कृत,	वसुनन्दि श्रावकाचारतो।
आसाधर पंडित कृत,	सकल कीरति कृत सारतो॥

× × × × ×

वानवार देश सोहामणि,	शाकपुर नयर मझारि तो।
हाट हार मंदिर मालीया,	प्रजा वासि वर्ण च्यारतो॥
श्री आदिनाथ तीरथ तणों,	सोहै जिन प्रासाद तो।
समोसरण कल्याण त्रय आदि,	जिनविंब, कर आह्लादतो॥

× × × × ×

त्रेपनक्रिया रास जेणैं कीयो,	जेणैं कीयो ध्यानामृत रासतो।
श्री महावीर रास कीयो,	तेणि कीयो एह भासतो॥
कर जोडि पद मों कहै,	श्रावका चार कीयो रासतो।
निज वुद्धि नैं अनुसारैं,	साह्यकारी मित्र जिणदास तो॥

× × × × × ×

संवत संख्या जिन भावना,	संवच्छर सख्या प्रमाद तो।
मास मांहि सुहामणों,	भादवा सुदि मर्याद तो॥
तिथ संख्या चारित्र भेदो,	रस संख्या शुभ वारतो।
शुभ नक्षत्र शुभ योगि,	कीयो मैं श्रावकाचार तो॥

× × × × ×

श्रावकाचार तणो श्रावकाचार तणो रास कियों मैं एणी—

परिभव जन मन रजन, भंजन कर्म कठोर निर्भर।
पंच परमेष्ठिनि धरी समरी शारदा गुरु निरग्रंथ मनोहर।
अनुदिन जे धर्म पालजी टाली सवे अतीचार।
जिनसेवक पद मो कहि ते पांमसें भवपार॥

संवत १८२० भट्टारकोत्तम भट्टारक जी श्री देवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक जिद्धी महेंद्रकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक जिद्धी १०८ क्षेमेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पंडित पठनार्थे हेमराज जाति बघेरवाल गोत्र भगडा ग्राम मउ लिपि कृतं सहास्यं भूरामल बाकलीवाल।

८१. श्रीपालचरित्र।

रचयिता कविता श्री परिमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पृष्ठ तथा प्रति पक्ति में २६–३३ अक्षर। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत १७६४.

प्रारम्भिक मंगलाचरण—

सिद्ध चक्र विधि केवल रिद्धि गुण अनंत फल जाकैं सिद्धि।
प्रणमुं परमसिद्धि गुरु सोइ भविक बंध ज्यौं मंगल होइ॥

प्रशस्ति—

उग्रं गोपगिरि च दुर्गमगढं रत्नवरं भूपितं,
जधीरं कृतमंवरं मदगलं पाषाण ऐरावतं।
तन्मध्ये श्रीमांनसाहिधिपते भूलोकवरविश्रुतं,
ततराज्यं सुरनाथ तुल्य गदिनं तत केन स वर्णितं॥ १॥
.... जातु कूलुलो नामेन चंद्रे तयं,
तत्पुत्र गुरु रामदासविपुलं भुक्तं न भोग्यं सदा।
तत् सूनुः कुलदीपकास्तप्रगटं नामं म पर्णे शुभं,
तत्पुत्रं परिमल्ल धर्ममदनं ग्रंथरिदं क्रियते॥ २॥

॥ चौपई॥

गोत्रि गौरी ठाढौ उत्तिम थान, सूरवीर यह गमान।
ता आगैं चंदन चौधरी कीरति सब जगमे विस्तरी॥
जाति विरहिया गुणहगंभीर, अति प्रताप कुल रंजन धीर।
ता सुत रामदास परवांन, ता सुत आसित महा नर ग्यांन।
तसु कुल मंडल है परिमल्ल, सबै आगम मैं अतिमल्ल॥

तासु महिन बुद्धि नहि आन, कीयौ चौपई बंध प्रवांन।
होय अशुद्ध जहाँ पदहीन, फेरि सवारौ गुणियन वीन ॥
वार वार जंपौं करि जोर, बुधिजन मोहि देहु मति खोरि।
वंदौ जिन सासन कौ धम्म, ज.पसाय नासै अघ कर्म्म।
वंदौ गुरु जे गुण के मूर, जिनके होय ग्यान कौ पूर।
वंदौं माता सीह वाहिनी, जातैं सुमति होय अतिघनी।
वंदौ मुनियन जे गुन धम्म, नवरस महिमा रदतिन कर्न।
वंदौ सज्जन कुल सुख धाम, वंदौ धर्म्म बुद्धि वर नांम।
महिमा सागर महा सुजांन, ... ।
जाकै हृदै दया कौ वास, जीवन कबहू देयन त्रास।
ताकै एक अपूरव रीति, सुरही सौं अति राखै प्रीति।
मुख में जल पीवै तृण खाय, अपणैं मारग आवै जाय।
तिनकी सक सीह मनि धरैं, अकबर कै आयस तें डरै।
मारसबद मुख थैं नहि चवै, एक छत्र महि मडल तवैं।
नवौ रिद्धि पूरण भंडार, हय गय वाहण अगणी अपार।
नृप अनेक सेवैं दरबार दुःखी दीदन कौ आधार।
सुखो भये जिनसए पाय, विमुख भये दुख लहै अवाय ॥
परनारी परधन अति आहि, तिन तन कोउ सकयन चाहि।
सत्तराज महि मंडल तेज, सुरपनि हू थै अधिकसतेज।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई बंध परिमल्ल कृत संपूर्ण। संवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १० भोमवासरे तत्दिने इदं पुस्तकं लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्यं। तत्दिने इदं पुस्तक लिखायत बाई तुलसा पठनार्थं।

८२. श्रीपालरास।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४०. साइज ७×६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २६७, रचना संवत् १६३०, लिपि संवत् १६८१.

मंगलाचरण—

हो स्वामी प्रणमो आदि जिणंद, वंदो अजित होई आनंद।
संभौ वंदो जुगति स्यौ, हो अभिनंदन का प्रणमो पांइ॥

अन्तिम पाठ—

हो मूलसघ मुनि प्रगटै जानि, कीरतिअनंत सोल की खानि।
ता तस तनों सिपि जानिजे, हो मह्म राइमल्ल दृढ करि चित्त ॥
भाव भेद जानें नहीं होत, हि दीठैं श्रीपाल चरित्र ॥
हो सोलासै तीसौं सुभ वप, तिथि तेरस सित सोभिता।
हो अनुराधा नक्षत्र सुभ सर, वरन जोग दीसैं भल।
हो भनैं वार सनीसरवार ॥ १ ॥
हो रणथभमर सोभा कविलास, भरिया नीरताल चहु पास।
बाग विहर बावडी घणी हो धन कन सपत्ति तणो निधान।
साहि अकबर राजइ, हो सोभा घणो जिसो सुर थान ॥ २ ॥
हो श्रावक लोग वसो धनवत, पूजा करे जपें अरहंत।
बहुविध यात्रा दान दे हो नम लोग धम सजोग।
सामाइक योसौं करें हो ....तन नीको फिरैं ॥ ३ ॥
हो दोसौ अधिक छानवैं छद, कवियन भनौं तसु मति मद।
यद अक्षर कोइ घटै, हो पंडित मति को करौं प्रणाम।
जैसी मति मोहि उपनी, हो तोसी मति सौ बने राम।
राम भनौ सिरिपाल री ॥ ४ ॥

संवत् १६८६ वर्षे आसोज सुदी ५ दिने सुक्रवार आगरा मध्ये साहिजहां....... लिखतं जैता पाटणी दानु पुत्र।

८३. श्रेणिकचरित्र।

रचयिता लक्ष्मीचन्द चांदवाड। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२४, साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३१ अक्षर। रचना संवत १७२६, लिपि संवत १८०८.

मंगलाचरण—

गणपति श्री अरहंत पद महावीर भगवान।
घाति करम मिथ्यात तम हरि उदयाचल भान ॥
समवसरण लक्ष्मी लिये महिमा अगम अपार।
इन्द्र आदि चरणा नमैं नमैं भूमि सिर धार ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्री सरस्वती गछ गण बलात्कारान्वय कुन्दकुन्द महान ।
नद्यम्नाय अव्यचित्त कमलसु पदमनन्दि जिम भान ॥ १ ॥
तिनके पटि श्री सकलकीर्त्ति मुनि भवि जीव समोद दिवाड ।
सुकवि सरल वानी करि महीयल वुधजन मन रजवाड ॥ २ ॥
तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तमकीर्त्ति भवनपसरान ।
ज्ञातातत्त्वपूरान काव्य करता जिन विंब प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥
तिह पर श्री ज्ञान भूषण विराजै परकासन सुभ ग्यान ।
निज वचनैं दिन कर सम उदयै अद्भुत मनाम भव्यान ॥ ५ ॥
तिन पट विजय कीर्त्ति जैवतं गुरु अन्यमती परवत समान ।
स्याद्वाद वज्रे करि फोडत तिन शिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥
जिन मुंनी पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियौ सुभग वखान ।
ना कवि मद थैं न कीर्त्ति अहंकार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥
निज अघहण कारन ग्रंथ संस्कृत ता मुनि संक्षेप आनि ।
भापा करी ढाल चौवन मे लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥
सुनौ भवी भावीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुभचन्द्राचार्य तिन्ह, कह्यौ सहसकृतसार ।
ते मुनि, लक्ष्मीदास भनि, भापा ढाल पियार ॥ ९ ॥
ना मैं देख्या ग्रथ कोऊ, व्याकरण छंद न जानि ।
तुच्छ मति रह भापा रची, वुधजन मसीह सवांन ॥ १० ॥
आगम चूक पनीसकांत, उदीर कैं धन जूत क्रपनतनूर ।
तासा मित्रापन अधिक, प्रति पर सपरस मान ।
कूसलसीध करनो उचित, ताकी सम नहीं आंनी ॥ ११ ॥
पंडित जसरथ सुत सुभग, सदानद तस नाम ।
ता उपदेस भापा रची, भविजन कौ विसराम ॥ १२ ॥
सवत सत्तरासै उपरि तेतीस जेठ सु पाख ।
पंचमी ता दिन पूर्ण लहि मंगल कारी भाप ।
फेरि लिखी गुनचास मैं लक्ष्मीदास निज वोध ।
भूलौ चूकौ सवद कौउ वुधजन लीज्यौ सोधि ।

इति श्रीश्रेणिकमहाराजचरित्र भाषा लक्ष्मीदासचादवाडकृत सपूर्ण। सवत १८०८ कार्तिक सुदी ६ गुरौ।

८४. श्रेणिकरास।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास। भाषा गुजरातीमिश्रित हिन्दी पद्य। पत्र सख्या ४७, साइज ६॥×४॥ इंच। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति पर २६–३२ अक्षर।

मंगलाचरण—

वीर जिणेश्वर पाय प्रणमेश, तीथकर स्वुवीनमे।
वांछित फल बहू दान दाता, सारदा स्वामीनि वलिस्तुवुह विवुधि सार॥

अन्तिम पाठ—

श्रेणिकराजा श्रेणिकराजा तणो ए रास, पढे गुणे जे सांभलिए।
कमनें धरि भाव वकजन, तेह घरें न वहनीढन।
संपजे सरग मुगती फलसार निर्मल, श्री सकलकीर्ति गुरुप्रणामिति॥
मुनि भुवनकीर्त्ति भवतार, ब्रह्म श्री जिणदासभणो निरमलो सुणता पुण्य अपार॥१॥

८५. हनुमतं कथा।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या ६७, साइज ६×६ इंच। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २३–२४ अक्षर। रचना संवत १६१६, लिपि सवत १७१६

मंगलाचरण—

स्वामी सुव्रतनाथ जिनंद, सुमिरत होइ सिद्धि आनंद।
नमौ सीस जोड कर दोय, नासै पाप भलो मति होइ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूलसंघ भवतारण हार, सारद गछ गर्यो संसार।
रत्नकीर्त्ति मुनि अधिक सुजाण, तास पटि मुनि गुणनिधान।
अनतकीर्त्ति मुनि प्रगटयँ नाम, कीर्त्ति अनंत विस्तरो साम।
मेव पृष्ठ ते आइन गिनी, तास मुनिगुण आदर भणी।
तास सीष्य जिण चरणां लीन, ब्रह्म रायमल मति कौ हीन।
हणु कथा को कियो प्रकास, उत्तम जिया धर्मोश्वर दास।
भणो कथा मन में धरि हर्ष, सोलासैं सोला शुभ वर्ष।

रितु वसंत मास वैशाख, नौमि सनीसर कृष्ण है पक्ष ।

× × × : × × ×

स्वामी सुव्रत नाथ जिनद, सुमरत होइ सिद्धि आणंद ।
नासै पाप भली मति होइ, नमो सीस जोडे कर दोय ॥

८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुसालचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २५६, साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४०-४२ अक्षर । रचना संवत् १७८०, लिपि संवत् १८६०, लिपि सुन्दर है ।

मंगलाचरण—

महावीर वंदौ जिनदेव, इंद्रादिक करि हैं तिनसेव ।
तीन लोक में मंगल रूप, ते वंदौ जिनराज अनूप ॥ १ ॥
नेमिसुर वंदौ चित लाय, तिहु जग करि पद अघाय ।
पाप विनाशन है जिन नाम, सब जिन नाम वदौ गुणधाम ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन, सब जन वन सुखदाय ।
तहां ब्रह्म जिनदास जू, करि लीही अधिकाय ॥ १ ॥
ताही श्री जिनदासजी, ग्रन्थ रच्यौ इह सार ।
सो अनुसार खुस्याल ले, कह्यो भविक सुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

मेरी बात सुनो अबै, भव्य जीव मन लाय ।
कालौ जाति खुस्याल जु, सुन्दर सुत जिनराय ॥

॥ चौपई ॥

देश ढुंढाहर जांणौ सार, तामैं धरम तणु अधिकार ।
बिसनसिंघ सुत जैसिंहराय, राजकरै सबकूं सुखदाय ॥
देशतनी महिमा अति बनी जिन गेहा करि अति ही बनी ।
जिन मंदिर भवि पूजा करैं, कइक व्रत ले केइक धरैं ।
जिन मंदिर करवाये नवा, सुरग विमल तनो वर छवा ।
रथ जात्रादि होत बहु जहां, पुन्य उपावन भवियन तहां ।

इत्यादिक महिमा जुत देश, कहि न सकौं मैं और असेस।
जा मैं पुर सांगावति जांनि, परम उपावन कौ वर थान ॥ ५ ॥
ताकी सोभा है अधिकार, कबलौं भाखूं भवि विस्तार।
जा मधि श्री मूलनायक थांनि, सोभै भवि जीवा सुख दानि ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

संघ मूलसंघ जांनि गच्छ सारदा वखांनि,
गणजु बलातकार जांनो मन लायकैं।
कुंदकुंद मुनि की सु आमनाय मांहि,
भये देवइन्द्रकीर्त्ति पठ्यतर पायकैं ॥
जिन सु भये तहां नाम लिखमीदास,
चतुर विवेकी श्रुत ग्यांन कुंवपाय कैं।
तिहनैं पास मैं भी कछु अल्प सौ प्रकाश भयो,
फेरि मैं वस्यो जिहांनावाद मध्य आयकैं ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

नहर जिहानावाद मे जैसिंघ पुरो सुथान।
मैं वसिहूं सुखतैं सदा जिनेशाऊं चित्त आनि ॥ ८ ॥

॥ छप्पय ॥

महमदसाह पातिसाह राजकरै सुचिकर्छौ,
नीतवंत बलवंत न्याय विन लेन करणौ।
ताके अमल सुमांहि ग्रन्थ आरंभक कीन्हो,
पर को भय दुख सोक प्रभूह हम कौयन लीन्हौ।
इह विचार राजा तनौं इतनो ही उपगार है,
कोऊ दहन सकै जिनमत को विस्तार है ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सहर मध्य इक वणिक वर, साह सुखानंद जानि।
ताके गेह विषै रहै, गोकुलचन्द प्रमानि ॥ १० ॥
तिन ढिग मैं जाइ वसा, पढ्यौ ग्रन्थ सुभाय।
तिनसौं वर उपदेश लै, मैं भाषा [illegible] ॥ ११ ॥

ग्रन्थ तनी भाषा रची, जिन सेवक अनुसार।
जसकी कारिज ना करयौ, करयो भविक उपगार ॥ १२ ॥

॥ चौपई ॥

ऐसी जांनि भविक सुखदाय, पढिजै सुनिजै मनवचकाय।
काला जाति खुस्याल सुनाम, भाषा रची परम सुख धाम ॥ १३ ॥
संवत् सतरासै अरु असी, सुदी वैशाख तीज वर लसी।
सुकरवार अति ही वर जोग, सार नख्यत्र कौ संजोग ॥ १४ ॥
पहर डोढ दिन वाकी रह्यौ, भाषा पूरण करि सुख लह्यौ।
अमर देखि पंडित जन कोय, सुन कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ॥
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नांहि, सार विचार नहीं मुझ मांहि।
यातैं दोष न दीजौ कोय, अलप थणौं गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥
जिनवर चरित सुवर्णतैं, उपजै पुन्य अपार।
जे भवि सुनरै भाव भौं, ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥
हरिवंशं महत्शास्त्रं तस्य भाषा विनिर्मित।
नाम्ना खुस्यालचंद्रेण भव्याना खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

संवत् १८६० का भाद्रवमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ८ लिखते वैष्णव चेतनदास नाखरोदा नगर मध्ये शुभं भवतु।

८७, हरिवंशपुराण।

रचयिता श्री नेमीचन्द्र। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७७, साइज १२×५ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५ रचना संवत १७६६, लिपि सवत् १७६३, प्रति पूर्ण है। इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है।

मंगलाचरण—

श्री भगवान जी वीनउं, अरहंत देव निरदोष अठारतौ।
छीयालीस गुण शोभना, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतौं ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस दुंढाहड सोभितौ नाना विधि वृच्छ भला सुसार तौं।
कलपवृछिकी वोपमा जसी मन वांछित फल का दृचारतौ ॥ १ ॥
चहुं दिसि सरवर वापिका नदी कुवा अर कुंड अपार तौ।
निरमल पांणी स्यौं भरया, कमल उपरि भ्रम करै गुंजार तौं ॥ २ ॥

अंबावती गढ सोभिता,	गिर विचि वसै अपार।
कोट बुरजि अर कांगुरा,	दरवाजा बहु सार॥ ३॥
बाजार सोहै चौपडि तणा,	विविध २ की वस्त अपारतौ।
पाटंबर भरिया सवे,	मणि माणिक मोती परवारतौ॥ ४॥
कौलग सोभा वरणइं,	गली २ सोभो बाजारतो।
अन धन कपडा स्यौं भरया,	भरिवेचैं लो मोल पारतो॥ ५॥
महिलां की पंकति सोभिति	सप्तभूमि उपरि विसतार तौ।
मेडी चौबारा अति घणा,	नरनारी सब देव कुमार तौ॥ ६॥
चन्द्रवदन सी कामिणी,	वस्त्राभूषण पहिरयां सार तौ।
गोखा झांकी भांकती,	चन्द्र सूर्य लीजै तिहि वारतौ॥ ७॥
घरि घरि तोरण बांदि जे	घरि घरि मंगल होयविवाह तौ।
घरि २ गावै कांमिणी	घरि २ जानैं पुत्र उछाह तौ॥ ८॥

* सोरठा *

अबांवती सुभ थान सवाइ जैसिंघ महाराजई।
पातिसाह राखै मान राजकरै परिवार स्युं॥

दया सील पालै सदा,	वैरी जीति कीया सब जेर तौ।
तिन की महिमा अतिघणी,	हिन्दु की पति राखण मेरतौ॥ १०॥
श्रावक लोक सवैं सुखी,	नवनिधि स्यौं भरया भण्डार तौ।
मन वांछित सुख भोगवैं,	दुख न जांणै कोटि लगार तौ॥ ११॥
रथयात्रा निकसै सदा,	अष्टविधि पूजा को अधिकार तौ।
पोसो सामायिक करैं,	गुरु को विनैकरैं भव्य सारतौ॥ १२॥
जिनवर थानिक सोभिता,	धवला गिर पर्वत पै थ ग तौ।
सोवन कलस सिखरा परे,	घटा बाजे पुजा करत तौ॥ १३॥
श्रावक लोग सबैं मिलैं,	पूजा करि अर आरितसो।
निहचौ देव गुरु शास्त्र को,	धारयौ मन करै ह्यावत तौ॥ १४॥

॥ दोहा ॥

श्रावक की बरणन करयो,	जिनधर्म दल सहेत।
अब जो गुरु उपदेस दे,	सो कहूं मनलायत॥ १५॥
गुरुसंघ महिमा घणी,	परगाराय गत सार।

सरसत्ति गछ महा सोभिता. कुंदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥
कुंदकुंद भट्टारक भणौं, जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।
सूत्र सिधांत ल्याया तवै. प्रगट वात जाणै सब एव तौ ॥ १७ ॥
ता पाछै क्रमि क्रमि भया, भट्टारक गुणधाम ।
पंच महाव्रत पालवैं, आचारैं अभिराम ॥ १८ ॥
भट्टारक सब उपरैं, जग कीरति जग जोति अपारतौ ।
कीरति चहुं दिसि विस्तरी, पाच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥
प्रमत्त मैं जीतै नहीं, चहुं दिसि मैं सब ताकी आणतौ ।
खिमा खडग स्यौं जीतिया, चौरासीवें पट नायक भाणतौ ॥ २० ॥
ताकौ सिष नेमचंद जी, लघु भ्राता तसु झगडु जाणितौ ।
सेठी गोत पद्मावत्या, खंडेलवाल तसु वै सब खांणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नेमचंद के सिख भला, डूंगरसी रूपचंद ।
पंडित चतुर विवेक सब, सील तणा सब कंद ॥ २२ ॥
लिखमीदास दोदराज जी, पंडित सब मनके सिर मौरतौ ।
ज्यां दीयो उपदेस नै, रासौ रच्यौं विविध स्यौं दोरतौ ॥ २३ ॥
देव गुरु शास्त्रप्रसाद थी, सरसति माता तणौ पसावतौ ।
रच्यौ रास श्री नेम कौ, नेमिचंद मनि धरकरि भावतौ ॥ २४ ॥
आचार्य ब्रह्म बाई नवै, पंडित सब्रयन स्यौ मनहारितौ ।
नेमचंद विनती करै, कवियन सबहो लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥
सतरासै गुणहत्तरे, सुदि आसोज दसैं रवि जांणतौ ।
रास रच्यौ श्री नेमि कौ, बुधि सारु मैं कीयौ वखांणतौ ॥ २६ ॥
दोय सवैया दीपता, सोरठा कहियै तहां पचीस तौ ।
दोइ सै साठि दोहा कह्या, एकादास कंड खैर जगीसतौ ॥ २७ ॥
एकहजार दस ढाल की, गाथा कही सबै शुभ शुद्ध तौ ।
वार्त्ता ठांम पैंतीस मैं, कहे अधिकार छत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥
गाथा दोहा सोरठा, सबमिलि कह्या तेरासे आठतौ ।
वार्त्ता उपरि जांणि ज्यौं, सब ग्रंथ इकईस सैंवाल आठसौ ॥ २९ ॥

जा लगि भापा विस्तरै, चन्द्रसूर गिर मेर सुदीसतौ।
सकल सघ आनंद रहो, नेमचद इम देय असीसतौ ॥ ३० ॥
रास भण्यौ श्री नेम कौ ॥ टेर ॥

ई कथन में श्रेणिक ने गणधर कह्यो। पाछैकवि अग्ज देस नाम वर्णन राजा को वर्णन, देवस्थल को, गुरु को वर्णन, कवि को वंस वर्णन। इति श्री नेमिचन्द्र कृत हरिवंश भाषायां देशगुरुवर्णन ग्रन्थ कर्त्ता कथन वर्णनो नामाधिकार षट्त्रिंशत्तमः।

इति श्री भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति शिष्य नमिचन्द कृत नेमरासौ संपूर्ण। भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति का शिष्य पांडे दयाराम जाति सोनी नरायणा का वासी दिल्ली का जैसिंहपुरा मध्ये लिखी मिती चेत सुदी १३ रविवार सवत् १७६३ का। भट्टारक जी श्री महेन्द्रकीर्त्ति जी का पट्ट समय लिखी।

८८. होली की कथा।

रचयिता श्री छीतर ठोलिया। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या ६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य सख्या १०१. रचना संवत १६६०. लिपि सवत १८१०.

मंगलाचरण—

वंदौ आदिनाथ जुगिसार जा प्रसाद पवु भव पार।
वरधमान की सेवा करै जौ संसार बहुरि नहि फिरै ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

सोलासे साठ शुभ वर्ष, फालगुण शुक्ल पूर्णिमा हर्ष।
मोहि मोजाबाद निवास, पूजै मन की मंगलो आस ॥
सोहै राजा मांन को राज, जिहि धाधी पुन्य तण पाज।
सुखी सबै नगर में लोग, दान पुन्य आनै सह भोग।
इंह विधि कलजुग में दिनगात, आवौ नहीं दुख की जाति।
छीतर ठोल्यो वीनती करै, हिवया मांहि जिन वाणी धरै।
पंडित आगै जोडै हाथ, भूलो हुं तो दियि ज्यौ साथ।
वार वार या विनती जाण, भूलो अक्षर मांगो ठाण।
पंडित हासौं को मति करौ, क्षमा भाय गुण उपरि धरौ।

परिशिष्ट

१. पउमचरिय ।

रचयिता महाकवि स्वयभु त्रिभुवनस्वयभु। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या ३७५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर। लिपि सवत् १५४१ वैशाख सुदी १५।

प्रारम्भिक अंश—

(१)

णमह णवकमल-कोमल-मणहर — वर-वहल-कंति-सोहिल्लं।
उसहस्स पायकमल समुरासुरवदिय सिरसा ॥ १ ॥
चउमुहमुहम्मि सद्दो दंती सद्द च मणहरो अत्थो।
विण्णि वि सयभुकव्वे कि कीरइ कइयणो सेसो ॥ २ ॥
चउमुहएवस्स सद्दो सयभुएवस्स मणहरा जीहा।
भद्दस्स य गोग्गहणं अज्जवि कइणो ण पावंत ॥ ३ ॥
जलकीलाए सयभु चउमुहएव च गोग्गहकहाए।
भद्द च मच्छवेहे अज्जवि कइणो ण पावंति ॥ ४ ॥
तावच्चिय सच्छंदो भमइ अवब्भस-मच्च मायंगो।
जाव ण सयंभु-वायरण- अकुसो पडइ ॥ ५ ॥
सच्छद-वियउ-दाढो छदालकार-णहर-दुप्पिच्छो।
वायरण-केसरड्ढो सयंभु पचाणणो जयउ ॥ ६ ॥
दीहर-समास-णालं सद्ददलं अत्थकेसरग्घविया।
वुह-महुयर-पीयरस सयंभु-कव्वुप्पलं जयउ ॥ ७ ॥

(२)

वड्ढमाण-मुह-कुहर विणिग्गय, रामकहाणए एह कमागय।
अक्खरवास-जलोहमणोहर, सुयलंकार-छंदमच्छोहर।
दीह-समास पवाहावंकिय, सक्कय-पायय पुलिणालकिय।
देसीभासा-उभय-तडुज्जल, कविदुक्करघणसद्दसिलायल।
अत्थबहल—कल्लोलाणिट्ठय, आसासय-सम तूहपरिट्ठिय।

एह रामकह-सरि सोहंती, गणहरदेवहिं दिट्ठ वहंती।
पच्छइ इंदभूइ-आयरिएं, पुणु धम्मेण गुणालंकरिएं।
पुणु पहवें संसाराराएं, कित्तिहरेण अणुत्तरवाएं।
पुणु रविसेणायरिय-पसाएं, बुद्धिए अवगाहिय कइराएं।
पउमिणि-जणणि-गब्भसंभूएं, मारुयएव-रूव-अणुराएं।
अइतणुएण पईहरगत्तें, छिव्वरणासें पविरल-दंतें।

घत्ता

णिम्मलपुण्णपवित्तकह कित्तणु आढप्पइ।
जेण समाणिज्जंतएण थिरकित्ति विढप्पइ॥ २॥

बुहयण सयंभु पइं विण्णवइ, मइं सरिसउ अण्णु णाहिं कुकइ।
वायरणु कयावि ण जाणियउ, णउ वित्ति-सुत्तु वक्खाणियउ।
णउ पच्चाहारहो तत्ति किय, णउ संधिहे उप्परि बुद्धि थिय।
णउ णिसुणिउ सत्तविहत्तियाउ, छव्विहउ समास-पउत्तियाउ।
छक्कारय दस लयार ण सुय, वीसो वसग्ग पच्चय बहुय।
ण बलाबल-धाउ-णिवाय-गणु, णउ लिंगु उणाइ वक्कु वयणु।
णउ बुज्झिउ पिंगल पत्थारु, णउ भम्मह दंडियलंकारु।
ववसाउ तो वि णउ परिहरमि, वरि रयडा वुत्तु कव्वु करमि।

ग्रन्थ समाप्ति—

इय पोमचरियसेसे सयंभुएवस्स कह वि उव्वरिए,
तिहुयणसयंभुरइए। रावणवहणिव्वाणपव्वपव्वामिणं॥ १॥
वंदइ आसिय तिहुयणसयंभुपरिवीरइ यम्मि महाकव्वे।
पोमचरियस्स सेसं संपुण्णो णवइमो सग्गो॥
संधि ९० ॥ पोमचरियं समत्तं॥

प्रशस्ति—

सिरिविक्कमकालहे संवच्छरे ह्रीन पोमपरिमाण।
छक्कारंटम्मि तहा ग्रावीस सुणेइ गमाणाय॥
सहदसमुन्नरकडे एकाहिय बीस गुम्मंडे य।
इसारखंडे तेरह संधीओ गयउ सज्झाउ॥

तिहुयणसयंभु णवर एक्को कइरायचक्किणुप्पणो।
पउमचरियस्स चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥
कइरायस्स विजयसेसियस्स वित्थारिओ जसो भुवणे।
तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥
तिहुयणसयंभुधवलस्स को गुणा वण्णिउं जए तरइ।
बालेण वि जेण सयंभुकव्वभारो समुव्वूढो ॥
वायरणदढक्खंधो अ गमअ गोपमाणेविअडपओ।
तिहुयणसयंभुधवलो जिणतित्थे वहउ कव्वभरं।
चउमुहसयंभुवाएण वणियत्थं अचक्खमाणेण।
तिहुयणसयंभुरइय पंचमिचरियं महच्छरियं ॥
सव्वे वि सुयापंजर सुयव्व पढअक्खराइं सिक्खंति।
कइरायस्स सुओ पुणसुयव्वसुइगब्भसंभूओ॥
तिहुअणसयंभु जइ णहो हुंतुणंदणो सिरिसयंभुदेवस्स।
कव्वं कुलं कवित्तं तो पच्छा को समुद्धरइ ॥
जइ ण हुउ च्छंदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुलहुतणउ।
तो पद्धडियाकव्वं सिरिपचमि को समारेउ ॥
सव्वो वि जणो गिण्हइ णियतायविढत्तदव्वसंताणं।
तिहुयणसयंभुणा पुणुगहियं वसु कित्तदव्वसंताणी॥
तिहुयणसयंभुमेक्कं मोत्तूणं सयंभुकव्वमयरहरो।
को तरइ गंतुमंतं मज्झेणिस्सेसमीमाण ॥
इय चारुपोमचरियं सयभुएवेण रइयसमत्तं।
तिहुअणसयंभुणा तं समाणियं परिसमत्तमिणं ॥
चेष्टितमयणं चरितं करणं चारित्रमित्यमोयशब्दापेद्या।
यां रामोयणमित्युक्तं तेन चेष्टित रामस्यबोधपत्ति ॥
शृणोति जन तस्यायुर्वृद्धि मोयते पुण्यं वा।
श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरपि ण करोति वैरमुपसमेति॥
मो वरसुयसिग्भिवइ रायतणयकयपोमचरिय अवसेसं।
सपुण्णं वंदइवलहुउसपुण्णं गोईदमयणसुयणंतविरइय ॥
वदइ पढमतणयस्स वच्छल्ल दाएं तिहुयणसयंभुणारइयं ॥
महप्पयं वंदइयणागसिरिपालपहुई भव्वयणसमूहस्स।

आरोगतमसिद्धी सांत सुह होउ सव्वस्स ॥
सत्तमहामगंगीतिरयणमूमासुरामहएणा।
तिहुयण मयभुजतयापरिणउ वंदउ यमणतणउ ॥

संवत् १५४१ वर्षे वैशाख सुदी १४ सोमवासे सख्या १२७७५ सरे अनुराधा नक्षत्र घटिका ६० सुरिताण बहलोल राज्ये—

सकलविधिविधान (नयनन्दि) पृष्ठ १८१ नं० २६ के मंगलाचरण के आगे का भाग।

दरसियसुवएण गुणगणसलग्घु, मुत्तालंकरिउ महामहग्घु।
णं वसुहविलासिणि हियहारु, अत्थीहारवंती विमद्द सारु।
पडिवक्खपक्ख पयहिय णगहु, सिगारविलासविसमभोहु।
तहिं सुकइ कहाडवचित्तहार, णयरी घरगगण धरणधार।
तहि मरसइ कंठाहरणु देउ, रणरंगमल्लु आलीसमेउ।
तिहुयण णारायणु भुअणभाणु, परमेसरु अत्थी जणणिहाणु।
पम्मारवंसणयणेक्कचंदु, जय सीरिणिवास भूवइणरिंदु।
तहो णेमिणामु ठक्करु गरिट्ठु, म उल्लुणुल्लु तव माणगिट्ठु।
ते लोकरित्तिकामि णहे भ सु, सुपसिद्धउ चउविह न णासु।
महिमा णिहे मउडुवमाणिट्ठ, कार चिउ कित्तणु तें गरिट्ठु।

घत्ता

तहि अत्थसुरइरिसिपुमुणि,
वणसि तरंगिणि मयरहरु,
मनोविणिविट्ठ णयच्छातेण,
पउत्तु पउरिय चित्ताहमासु
तुमपुरु किंपि करिसु मणिट्ठु,
तिणा भणियं ण कइत्तु मुणेमि
निगा भणियं ण कइत्त मुणेमि,
पर मह अट्टगुणाहुय जोय,
ण देवहि वाणय रिउहि पत्त,
गुणेकगु विक्करयवि पावित जेत,
मण पुणु भ गुलि रंजिय तासु,

घत्ता

पराणदाणिइल्लेसलढणु,
सढवढगत्तणट्ठिय।
कलिकदल अट्ठवि गुणगरुव,
मइ मुणिवि कसुसंठिय ॥३॥
परंणिदपमुहगुणेजंडणवत्त,
महुंतोकिंकित्तिणाउ किंवरत्त।
मा धारु चायसुहडत्तणेण,
अह हवइ सगस सुहइत्तणेण।
वभेण भुवणु काओ ण भव्वु,
गयकण्णवनेदिण्णउं दियहंसव्वु।
परुसेण परुपरामेहयात्त,
खत्तियहणोवि दिण्णयहरित्ति।
कणेण कणयकोडिहिं कयत्थ,
कयातत्तचित्त विप्पाण सत्थ।
चाएणविदुत्थिय कयविरामु,
हरिचंदु चंदमाणाहियणामु।
तक्खयरक्खणे गरुडहो अभगु,
जीमूयवाहणेणावि अंगु।
दिण्णउं सिवेण सप्पहोपसंसु,
दइ क्खणमसरीरमंसु।
जेणाहु दवीइणा अट्ठिदण्ण,
को पावइ तिहुयणे तहो पइण्ण।

घत्ता

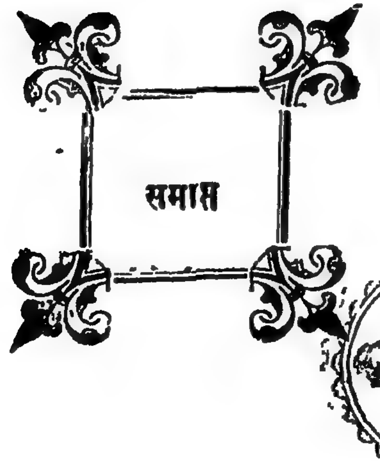
तहो चारुचरिय चलणहंचलिय,
कित्तिरमणिविंभपंकरि।
अलिविजणजणिय णंदभरे,
भैणइ भुवणे मवणंतरे ॥ ४ ॥
णिक्कलंककिसियाए जुत्तवीरवित्तियाए,
देवदाणवाहंमल्लु रावणो जगेक्कमल्लु।
कुसुकुमयण्णसुंभु सावणो सुओणिसुंभु,
इंदई महिददक्खु अक्खओ गयक्खु वक्खु।
जुवुजं ववंसुतारु णीलुमारुईकुमारु,
लक्खणो विवक्खतासु रामचंदु सप्पयासु।
दोणु भीममो असंगु दुद्धरो कलिगुतुंगु,
सावहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भीममल्लु।
अज्जुणो णियारजूरु आसथासु आसपूरु,
कीएहु कंसि कंसणासु दुट्ठरिट्ठकालपासु।
आहवे अदिण्णपिट्ठि कालसेणु पचहुट्ठि,
दप्पओ तलप्पहारि खुणणखप्परोपहारि।
कावली तहेन मुच्चु सूरवीरुणिप्पवंचु,
वंकिवीरिउब्भियंकु संकुकेसरी णियंकु।
कुटु चंदु डिंडएउ खडयण्णु खंदएउ,
वामएउ मोरएउ केउघोसुसावलेउ।
साहमीउ साहमल्लु भीमएउ भाइमल्लु,
इट्ठु सखलादु गुल्लु देवईउ देवतुल्लु।
मिघलो महामहग्घु घुग्घु सोसलग्घु वग्घु,
रोमसोसरोमजंघु रिच्छकहिताडिजंघु।
मिवइ उवग्घइउ वज्जसत्तिविवएउ,
चंडइट्ठ इट्ठसंमु मुट्ठिउं मणिट्ठु रंमु।
आरुणोव आरुणत्थु पट्टहोइ ओविहत्थु,
वोसलोविसालवत्थु हत्थिवच्छु सुदवत्थु।
सुदत्तु वीरराउ कक्कसीसु अंगराउ,
सालिवाहणो रसल्लु कुतली सुकुंतलिल्लु।

घत्ता

इय अवरविरै विवेपयाव्रज्जुँय, सुहीडमविहत्तए असरिसं ।
समिकामकुसुमसंकामरस, पसरपूरपूरियदिस ॥ ५ ॥
मणु जण्णवक्कु वम्मीउ वासु, वररूइ वामणु कविकालियासु ।
काऊहलु वाणु मऊरसूरु, जिणसेणु जिणागम कमलसूरु ।
वारायणु वरणाउ वियड्ढ, सिरिहरिसुराय सेहरु गुणड्ढ ।
जसइंधु जएजय रायणामु, जयदेउ जणमणाणंदकामु ।
पालित्तउ पाणिणि पवरसेणु, पायजलि पिंगलु वीरसेणु ।
सिरि सिंहणंदि गुणसिंहभद्द, गुणभद्द गुणिल्लु समंतभद्द ।
अकलंकु विसमवाइय विहंडि, कामद्दरुद्दु गोविंदु दंडि ।
भम्मुह भारहि भरहुवि महंतु, चउमुहु सयंभु कइ पुप्फयंतु ।

घत्ता

सिरिचंदु पहाचंदु वि विबुह, गुणगणणंदि मणोहरु ।
कइ सिरि कुमारु सरसइ कुमरु, कित्ति विलासिणि सेहरु ॥ ६ ॥



शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

१४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम		लेखनकाल	रचनाकाल
१.	उत्तरपुराण	[पुष्पदंत]	१३९१ ज्येष्ठ सुदी ६ गुरुवार	
२.	क्रियाकलाप	[अज्ञात]	१३९९ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार	

१५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

३.	आदिपुराण	[पुष्पदत]	१४९१ भादवा सुदी ६ बुधवार	
४.	पार्श्वनाथचरित्र	[पद्मकीर्त्ति]	१४९४ भादवा सुदी ८ शनिवार	११८६
५.	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्त्ति]	१४७६ असाढ सुदी ५ बुधवार	१२७५

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

६.	आदिपुराण	[जिनसेनाचार्य]	१५८७ मगसिर सुदी ७ सोमवार	
७.	उत्तरपुराण सटीक	[प्रभाचन्द्राचार्य]	१५७७ आषाढ सुदी ७ रविवार	१०८०
८.	धन्यकुमारचरित्र	[सकलकीर्त्ति]	१५३३ पोष सुदी ३ गुरुवार	
९.	धर्मपरीक्षा	[अमितिगति]	१५९९ पोषसुदी ६ शुक्रवार	१०७०
१०.	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	[मेधावी]	१५४२ कार्तिक सुदी ५ गुरु	१५४१
११.	प्रतिष्ठापाठ	[आशाधर]	१५९० वैशाख सुदी १५ शनि.	१२८५
१२.	प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति	[ब्र० रत्नदेव]	१५७६ असाढ सुदी ३	
१३.	"		१५४३ भादवा सुदी ६	
१४.	राजवार्त्तिक	[भट्टाकलंकदेव]	१५८२ असाढ सुदी १३	
१५.	श्रावकाचारसार	[पद्मनन्दि मुनि]	१५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार	
१६.	सम्यक्त्व कौमुदी	[अज्ञात]	१५८० फागुण सुदी १४	

१७.	”		१५६०	माघ सुदी १३ रविवार	
१८.	हरिवंशपुराण	[ब्रह्म जिनदास]	१५५५	मगसिर सुदी १३ रविवार	

प्राकृत—अपभ्रंश

१९.	अमरसेनचरित्र	[माणिक्कराज]	१५७७	कार्त्तिक सुदी ४ रविवार	१५७६
२०.	आत्मसबोध काव्य	[रइधू]	१५३४	श्रावण सुदी ५ मंगलवार	
२१.	आदिपुराण	[पुष्पदंत]	१५९४	श्रावण सुदी ३ मंगलवार	
२२.	करकंडुचरित्र	[कनकामर]	१५८१	चैत्र सुदी ६ गुरुवार	
२३.	कर्मप्रकृति	[नेमिचन्द्र]	१५७७	असाढ सुदी ३	
२४.	क्रियाकलापस्तुति	[समंतभद्र]	१५७७	वैशाख सुदी ४ शुक्रवार	
२५.	चन्द्रप्रभचरित्र	[यशःकीर्त्ति]	१५८३	आषाढ सुदी ३ बुधवार	
२६.	जम्बूस्वामीचरित्र	[महाकवि वीर]	१५१६	मांगसिर सुदी ११	१०७६
२७	नागकुमार चरित्र	[माणिक्कराज]	१५९२	पोष सुदी ५ मंगलवार	१५७९
२८.	पउमचरिय	[त्रिभुवन स्वयंभु]	१५४१	वैशाख सुदी १५ मंगलवार	
२९.	पद्मपुराण	[रइधू]	१५५१	फाल्गुन सुदी ९ मंगलवार	
३०.	पार्श्वनाथचरित्र	[श्रीधर]	१५७७	आषाढ सुदी ३	११८९
३१.	प्रद्युम्नचरित्र	[श्रो सिंह]	१५८७	माघ सुदी ५ रविवार	
३२.	”		१५९५	भादवा सुदी १३	
३३.	”		१५१८	ज्येष्ठ सुदी ९ शुक्रवार	
३४.	बाहुबलिचरित्र	[धनपाल]	१५८६	वैशाख सुदी ७ बुधवार	१४५४
३५.	”		१५८४	आसोज सुदी ९ बुधवार	
३६.	भविष्यदत्त चरित्र	[धनपाल]	१५९५	माघ सुदी १५ रविवार	
३७.	”		१५८९	मंगसिर सुदी २ बृहस्तिवार	
३८.	”		१५८७	श्रावण सुदी ११ रविवार	
३९.	”		१५४०	आसोज सुदी १२ शनिवार	
४०.	मदनपराजय	[हरिदेव]	१५७६	कार्त्तिक सुदी १३	
४१.	मेघेश्वरचरित्र	[रइधू]	१५६६	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
४२.	यशोधरचरित्र	[पुष्पदंत]	१५७५	मंगसिर सुदी ४ शुक्रवार	
४३.	”	”	१५८०	आसोज सुदी १० शनिवार	

४४.	रत्नकरंडशास्त्र	[श्रीचन्द]	१५८२	शक १४४७	११५०
४५.	वर्द्धमान चरित्र	[जयमित्रहल]	१५६३	ज्येष्ठ सुदी ५ बृहस्पतिवार	
४६.	”	”	१५५५	वैशाख सुदी ७ रविवार	
४७.	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्त्ति]	१५६२	कार्तिक सुदी ५ शनिवार	
४८.	”	”	१५५८	चैत्र सुदी १० सोमवार	
४९.	”	”	१५५३	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
५०.	षट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्दाचार्य]	१५८१	माघ सुदी ५	
५१.	”	”	१५६४	माघ सुदी २ बुधवार	
५२.	श्रीपालचरित्र	[नरसेन]	१५१२	चैत्र सुदी १२ मंगलवार	
५३	”	”	१५८४	शक १४४६ भादवा सुदी ८ रविवार	
५४.	”	”	१५७६	मंगसिर सुदी २ बुधवार	
५५.	सकलविधिविधानकाव्य	[नयनन्दि]	१५८०	चैत्र सुदी ४ गुरुवार	
५६.	सुदर्शनचरित्र	[नयनन्दि]	१५६७	माघ सुदी २ बुधवार	११००
५७.	”	”	१५०४	मंगसिर सुदी ६ गुरुवार	
५८	सुलोचनाचरित्र	[गणिदेवसेन]	१५७७	पौष सुदी ६ सोमवार	
५९.	सुकुमाल चरित्र	[श्रीधर]	१५४६	ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार	१२०८
६०.	हरिषेण चरित्र	[अज्ञात]	१५८३	आसोज सुदी १० शनिवार	

१७ वीं शताब्दी

संस्कृत

६१.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१६६३		
६२.	जयकुमारपुराण	[ब्रह्म कामराज]	१६६१	भादवा सुदी ३ शुक्रवार	
६३.	जीवंधरचरित्र	[शुभचन्द्र]	१६३६	अषाढ सुदी १३ सोमवार	१५६६
६४.	दुर्गपदप्रबोध	[श्री वल्लभगणि]	१६८१	कार्त्तिक सुदी ७	
६५	धर्मपरीक्षा	[अमितगति]	१६६६	कात्तिक सुदी ३ शुक्रवार	
६६.	नेमिनाथपुराण	[ब्र० नेमिदत्त]	१६४३	शक १५०८ फाल्गुन सुदी ८ सोमवार	
६७.	”	”	१६७४	फाल्गुन सुदी ७ शुक्रवार	
६८.	पद्मपुराण	[धर्मकीर्त्ति]	१६७०		
६९.	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	[गुणसुंदर]	१६५४	कार्त्तिक सुदी १४	

७०.	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	[ब्रह्म रायमल्ल]	१६६८	कार्तिक सुदी १३ शनिवार
७१.	,,	[अमरप्रभसूरि]	१६३६	माघ सुदी २ सोमवार
७२.	,,	,,	१६६५	पौष सुदी ११ बृहस्पतिवार
७३	यशोधर चरित्र	[ज्ञानकीर्त्ति]	१६६१	श्रावण सुदी २ बृहस्पतिवार
७४.	,,	[सकलकीर्त्ति]	१६३०	आषाढ सुदी २ सोमवार
७५.	वरांगचरित्र	[वर्द्धमानदेव]	१६६०	ज्येष्ठ सुदी १४ शुक्रवार
७६	सम्यक्त्वकौमुदी	[अज्ञात]	१६२५	शाके १४९० मंगसिर शुक्ला ८
७७.	,,	[गुणाकरसूरि]	१६११	भादवा सुदी ४
७८.	हनुमच्चरित्र	[ब्रह्मजित]	१६८०	मंगसिर सुदी ५ रविवार
७९.	हरिवंशपुराण	[ब्र० जिनदास]	१६६१	ज्येष्ठ सुदी ४
८०.	,,	,,	१६४५	कार्तिक सुद ५ सोमवार
८१.	हरिवंशपुराण	[जिनसेन]	१६६२	पौष सुदी ५
८२.	,,	,,	१६१६	आसोज सुदी १ शुक्रवार

प्राकृत—अपभ्रंश

८३.	आचारांग सटीक	[शीलांकाचार्य]	१६०४	मंगसिर सुदी ३
४८.	आत्मसबोधकाव्य	[पं० रइधू]	१६०७	अषाढ़ सुदी ८ शनिवार
८५	आदिपुराण	[पुष्पदत]	१६६२	१६९३ श्रावण सुदी ५ मंगलवार
८६.	,,	,,	१६६४	कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार
८७.	उपासकाध्ययन	[वसुनन्दि]	१६२३	पोष सुदी २ शुक्रवार
८८.	,,	,,	१६१२	भादवा सुदी ८
८९.	कर्मकाडसटीक	[सुमतिकीर्त्ति]	१६२२	भादवा सुदी १५
९०.	चन्द्रप्रभचरित्र	[यशःकीर्त्ति]	१६०३	शाके १४६८ श्रावण सुदी १० शनिवार
९१.	जिनदत्तचरित्र	[प लाखू]	१६११	चैत्र सुदी ११ सोमवार
९२.	धनकुमारचरित्र	[प० रइधू]	१६३६	फाल्गुन सुदी ७ रविवार
९३	नागकुमारचरित्र	[पुष्पदत]	१६१२	ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार
९४.	पद्मपुराण	[रइधू]	१६५६	मंगसिर सुदी १३ सोमवार
९५.	पाण्डवपुराण	[यश.कीर्त्ति]	१६३६	भादवा सुदी १ रविवार
९६.	,,	,,	१६१६	भादवा सुदी १४ बुधवार

९७	पाण्डवपुराण	[यशः कीर्त्ति]	१६०२	माघ सुदी १४	
९८.	पार्श्वनाथ चरित्र	[पद्मकीर्त्ति]	१६११	आषाढ सुदी ६ शुक्रवार	
९९.	पचास्तिकायप्राभृत	[टी. अमृतचन्द्र]	१६३७	आषाढ सुदी १४ शनिवार	
१००.	मृगांकचरित्र	[भगवतीदास]	१७००	फागुण सुदी ७ रविवार	
१०१.	मेघेश्वरचरित्र	[रइधू]	१६१६	माघ सुदी ११ बुधवार	
१०२	यशोधरचरित्र	[पुष्पदंत]	१६१२	आसोज सुदी १२ गुरुवार	
१०३.	"	"	१६१०	भादवा सुदी ६ सोमवार	
१०४.	वर्द्धमानचरित्र	[जयमित्रहल]	१६२७	अपाढ सुदी ६ ५	
१०५.	"	"	१६३१	माह सुदी ११ शुक्रवार	
१०६	षट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्द]	१६०२	वैशाख सुदी २ रविवार	
१०७.	श्रीपाल चरित्र	[नरसेन]	१६३२	वैशाख सुदी १५ मंगलवार।	
१०८.	श्रीपाल चरित्र	[पं० रइधू]	१६३१	कार्त्तिक सुदी ६ शुक्रवार	
१०९.	सन्मतिजिनचरित्र	"	१६२४	ज्येष्ठ सुदी १५ गुरुवार	
११०.	सुदर्शन चरित्र	[नयनन्दि]	१६७७	माघ सुदी १२	
१११.	"	"	१६३२	चैत्र सुदी १४	

हिन्दी

११२.	आदीश्वरफाग	[भ. ज्ञानभूषण]	१६३४	पौष सुदी १० बुधवार	
११३.	नेमीश्वरचन्द्रायण	[भ. नरेन्द्रकीर्त्ति]	१६६०	भादवा सुदी ६ रविवार	
११४.	पञ्चेन्द्रिय वोल	[वेल्ह]	१६८८		
११५.	भविष्यदत्त कथा	[ब्र. रायमल्ल]	१६६०	भादवा सुदी १ शुक्रवार	१६१५
११६.	मृगावती चरित्र	[समयसुन्दरगणि]	१६८७	कार्त्तिक सुदी ५ शनिवार	
११७.	माधवानलचौपई	[कुशललाभगणि]	१६६०		
११८.	समयसारकलश भाषा	[राजमल्ल]	१६४३	फागुण सुदी १४ शनिवार	
११९.	श्रीपाल रास	[ब्र. रायमल्ल]	१६८६		१६३०

१८ वीं शताब्दी

संस्कृत

१२०.	आदिनाथपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१७७५	आसोज सुदी ५ बुधवार
१२१.	उपदेशरत्नमाला	[सकलभूषण]	१७५५	माघ सुदी १४ गुरुवार

१२२.	कर्मकाण्ड सटीक	[ज्ञानभूषण]	१७७७	आषाढ सुदी ६ मंगलवार	
१२३	जयकुमार पुराण	[ब्रह्म कामराज]	१७३०		
१२४.	"	"	१७१६		
१२५.	धर्मपरीक्षा	[अमितिगति]	१७३३	कार्त्तिक सुदी ६ मंगलवार	
१२६.	पद्मपुराण	[सोमसेन]	१७५१ शाके १६१६ भादवा सुदी १४ वृहस्पतिवार		
१२७.	प्रतिष्ठापाठ	[आशाधर]	१७८२	भादवा सुदी १ गुरुवार	
१२८.	प्रद्युम्नचरित्र	[सोमकीर्त्ति]	१७७४	कार्त्तिक बुदी १३	
१२९.	मेघदूतावचूरि	[टी. सुमतिविजय]	१७५१		
१३०.	"	[मेघराज]	१७८५	वैशाख सुदी ६	
१३१.	यशोधरचरित्र	[कायस्थ पद्मनाभ]	१७६६		
१३२.	श्रीपालचरित्र	[ब्र० नेमिदत्त]	१७१४	श्रावण सुदी २ मंगलवार	
१३३.	श्रेणिकचरित्र	[शुभचन्द्र]	१७६६	कार्त्तिक सुदी १ सोमवार	
१३४.	"	"	१७३०	माघ सुदी ४ वृहस्पतिवार	
१३५.	सारस्वतचन्द्रिका सटीक	[टी. चन्द्रकीर्त्ति]	१७४६		
१३६.	स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	[टी. शुभचन्द्र]	१७२१		
१३७.	सम्यक्त्व कौमुदी	[खेता]	१७६३	कार्त्तिक सुदी ८ शनिवार	
१३८	हरिवंशपुराण	[जिनसेन [	१७८५	पौष सुदी ४ सोमवार	
१३९.	षटपाहुड सटीक	[कुन्दकुन्द]	१७६५	माघ सुदी ५	

हिन्दी

१४०.	चतुर्दशी चौपई	[टीकम]	१७६३	वैशाख सुदी १२	१७१२
१४१.	चन्द्रनृपरास	[लब्धरुचि]	१७६४	वैशाख सुदी १४	१७१३
१४२.	चिद्विलास	[दीपचन्द कासलीवाल]	१७७९	फागुण बुदी ५	१७७६
१४३.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१७६३	श्रावण सुदी ३ वृहस्पतिवार	
१४४.	त्रिलोकदर्पण	[खड्गसेन]	१७६८	वैशाख सुदी २ सोमवार	१७१३
१४५.	"	"	१७६८	पौष सुदी १३ गुरुवार	
१४६.	धर्मरासो	[अचलकीर्त्ति]	१७२६		१७२६
१४७.	पंचास्तिकाय भाषा	[पांडे हेमराज]	१७३६	आषाढ सुदी १२ सोमवार	
१४८.	प्रवचनसार भाषा	[अज्ञात]	१७२७	आषाढ सुदी ६ वृहस्पतिवार	
१४९.	वैद्यमनोत्सव	[केशवदास नयनसुख]	१७७४	ज्येष्ठ सुदी ११	१६४९

१५०.	सम्यक्त्वकौमुदी कथा	[जोधराज गोदीका]	१७६३	ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार	१७२४
१५१.	श्रीपालचरित्र	[परिमल्ल]	१७६४	पौष सुदी १० मंगलवार	
१५२.	हरिवंशपुराण	[नेमीचन्द]	१७६३		१७६६

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

१५३	आदिपुराण	[जिनसेनाचार्य]	१८०३	माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार
१५४	आदिनाथपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१८३३	भादवा शुक्लपक्ष
१५५.	उपदेशरत्नमाला	[सकलभूषण]	१८२६	मगसिर सुदी २ बृहस्पतिवार
१५६.	करकण्डुचरित्र	[शुभचन्द्र]	१८६१	
१५७.	ज्ञानसूर्योदय नाटक	[वादिचन्द्र]	१८३५	अषाढ सुदी १३ सोमवार
१५८.	दुर्गपदप्रबोध	[वल्लभगणि]	१८१२	पौष सुदी १० रविवार
१५९.	पाडवपुराण	[शुभचन्द्र]	१८३१	वैशाख सुदी ६ रविवार
१६०.	पुराणसार संग्रह	[सकलकीर्त्ति]	१८२२	कार्तिक सुदी ८ सोमवार
१६१.	"	"	१८२४	मगसिर सुदी ८ शनिवार
१६२.	भोजप्रबन्ध	[रत्नमन्दिरगणि]	१८०५	चैत सुदी ११
१६३.	महीपालचरित्र	[चारित्रसुन्दरगणि]	१८२५	ज्येष्ठ कृष्णा
१६४	मुनिसुव्रतपुराण	[रायकृष्णदास]	१८५०	पौष सुदी ५ सोमवार
१६५.	वरागचरित्र	[वर्धमानदेव]	१८७३	आसोज सुदी ५ बुधवार
१६६.	वर्द्धमानपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१८०४	माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार
१६७.	सिद्धान्तसारसंग्रह	[नरेन्द्रसेन]	१८०३	
१६८.	सिन्दूरप्रकरण	[सोमप्रभसूरि]	१८८६	भादवा सुदी २ बृहस्पतिवार
१६९.	हरिवंशपुराण	[ब्र० जिनदास]	१८२७	ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार
१७०.	श्रावकाचार	[लक्ष्मीचन्द्र]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार

हिन्दी

१७१.	आदिपुराण	[ब्रह्म जिनदास]	१८५६	मंगसिर सुदी ३	
१७२.	छंदशिरोमणि	[शोभानाथ]	१८२६	फागुण सुदी १० शनिवार	
१७३.	जम्बूस्वामीचरित्र	[पांडे जिनदास]	१८४३	पौष शुक्ला बृहस्पतिवार	१६४२

१७४.	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	[प्रभाचन्द्र]	१८०३	आषाढ बुदी १ शनिवार	
१७५.	त्रेपनक्रियाकोष	[किशनसिंह]	१८२६	मंगसिर सुदी ७ शुक्रवार	१७८४
१७६.	दशलक्षणव्रतकथा	[ज्ञानसागर]	१८३८	श्रावण सुदी ७	
१७७.	धनपालरास	[ब्र० जिनदास]	१८२८	श्रावण सुदी १ रविवार	
१७८.	धर्मपरीक्षा	[मनोहरलाल]	१८०२	श्रावण सुदी १५ बृहस्पतिवार	
१७९.	नेमीश्वरगीत	[चतुरुमल]	१८१	माघ बुदी १४	१५७१
१८०.	पद्मनन्दिपंचविंशिका	[जगतराय]	१८११		१७२२
१८१.	प्रवचनसार	[जोधराजगोदीका]	१८४६	कार्त्तिक सुदी १२ शुक्रवार	१७२६
१८२.	बनारसीविलास	[बनारसीदास]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार	१७७१
१८३.	भक्तामरस्तोत्र भाषा	[नथमलविलाला लालाचन्द]	१८५३	माघ सुदी १४ शुक्रवार	१८२९
१८४.	यशोधर चरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१८२६	आषाढ बुदी ९ रविवार	
१८५.	यशोधर चरित्र	[लक्ष्मीदास]	१८०१	कार्त्तिक बुदी ९ बृहस्पतिवार	१७८१
१८६.	यशोधर चौपई वधंकथा	[साह लोहट]	१८०३		१७२१
१८७.	रत्नपालरासो	[सुरचंद]	१८२३	पौष बुदी १३ सोमवार	१७३२
१८८.	वसुनन्दिश्रावकाचार भाषा	[दौलतराम]	१८०८	कार्त्तिक सुदी १४ मंगलवार	×
१८९.	व्रतकथाकोष	[खुशालचन्द काला]	१८२०	ज्येष्ठ शुक्ला १३	१७८६
१९०.	सिद्धान्तसारदीपक	[नथमलविलाला]	१८६०	आसोज बुदी १३ मंगलवार	१८२४
१९१.	सीताचरित्र	[रायचंद]	१८०८	बैशाख बुदी ३ बुधवार	१७१३
१९२.	श्रावकाचाररासो	[जिनसेवक]	१८२०		१६०३
१९३.	हरिवंशपुराण	[खुशालचंद]	१८६०	भादवा सुदी ८	१७८०

ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

ग्राम व नगर का नाम	शासक का नाम	समय	पृष्ठ तथा पंक्ति	विशेष
अदेहद्वारपल्लीनगर	×	संवत् १५३०	३४×१७	
अजमेर	राव श्री जगमल	" १५८६	१४६×१	
"	×	१५६५	१३८×३	
अकबरनगर [बंगाल]	महाराजा मानसिंह	१६६२	५०×१५	महाराजा मानसिंह बंगाल के राज्यपाल थे
आगरा	अकबर	१६२२	६७×७	
"	"	१६४२	२१३×१२	
"	×	१७८१	२१५×५	
"	औरंगजेब [अवरंगसाह]	१७२७	२३४×८	
"	×	१७७१	२४१×१५	
"	×	१६६०	२४४×२६	
"	×	१७६३	२५६×१२	
आमेर [अंबावती]	सवाई जयसिंह	१७७७	७×७	
"	राजाधिराज भारमल	१६१६	७७×२	
"	"	१६११	१०४×२१	दूसरा नाम आम्रगढ है
"	"	१६१६	१२६×१५	
"	" पृथ्वीसिंह	१८२५	२१२×२३	
आल्हणपुर	×	१६११	१२८×१६	
उदयपुर	महाराणा जगतसिंह	१७६८	२१६×२१	
"	×	×	२५५×२७	
"	×	१८०८	२५५×४	
करौली	×	१८२६	२४६×८	
कालख	×	१७१२	२०८×२८	
कुंभमेरु [कुंभलमेर]	×	१६०४	८५×१०	
कृष्णगढ़	बहादुरसिंह	१८८१	३५×१६	

वृन्दुरदुर्ग [बूंदी]	कुवर नरबद	१५६०	६३×२४	इनके पिता का नाम अखयराज था
ग्रीवापुर	×	१६६७	२४५×२०	सिंधु नदी के किनारे पर स्थित
गोपाचल [ग्वालियर]	महाराजा मानसिंह	१५५८	१७३×१४	
,,	राजा श्री वीरम्मदेव	१४७६	१७३×२४	
,,	डूंगरेन्द्र	×	१५६×६	
,,	सलीम [जहांगीर]	१६६५	२२०×७	
,,	महाराजा मानसिंह	१५७१	२३१×१४	
गोपागिरि [ग्वालियर]	,,	×	२७१×१०	
गोव्वगिरि [,,]	डूंगरेन्द्र	×	११७×३	
घठ्यालीनगर	राव श्रीरामचन्द्र	१५८१	६६×८	
घटियालीपुर	×	१५८२	१६७×१७	
चंपावती [चाटसू]	महाराजाधिराज भारमल	१६२३	६४×२	
,,	सग्रामसिंह	१५८३	६६×२०	राव श्रीरामचन्द्र नगर प्रधान थे।
,,	शाह आलम	१६०२	१७४×२५	
,,	महाराजा भगवानदास	१६३२	१७८×६	
जयपुर	×	१८३३	२×११	बालचन्दजी छावडा इस समय दीवान थे।
,,	×	१८२६	४×१६	
,,	×	१८५०	४८×११	
,,	महाराजा प्रतापसिंह	१८०४	५६×२७	
,,	×	१८०३	६६×३	
,,	×	१८२७	७२×१७	
,,	महाराजा माधवसिंह	१८२१	१७५×२०	
,,	महाराजा ईश्वरीसिंह	१८०२	२२६×२६	
,,	महाराजा प्रतापसिंह	१८४६	२३८×१६	
,,	×	१७०७	२६७×३	
जावादपुर	×	१६११	६×१४	
जसलमेर	कुवर हरिराज	१६१६	२४७×२०	

जिहांनावाद [आगरा]	×	१७६३	२१६×१५	जैसिंहपुरा का नामोल्लेखभी हुआ है।
जयसिंहपुरा [दिल्ली]	×	१७७४	२०३×४	
,, ,,	×	१७६३	२०६×५	
,, [आगरा]	मुहम्मदसाह	१८०१	२५०×१२	महाराजा ईश्वरीसिंह का शासन भी लिखा है
जैसिंहपुरा [देहली]	×	१७८१	२५०×१	
झिलाय	महाराजा कुशलसिंह	१७८५	७७×१२	
टोंक	×	१८७५	४७×५	
,,	×	१५७६	१७७×१०	
,,	×	१८०३	२१५×२७	
ढाका	×	१७५७	२×८	
तक्षकगढ[टोडारायसिंह]	महाराजा जगन्नाथ	१६६४	८६×७४	यह गढ जयपुर प्रांत मे स्थित है।
,,	राजाधिराज राव श्रीरामचन्द्र	१६१२	११३×४	
,,	,,	,,	१६७×१६	
,,	सलीम [जहांगीर]	१६१०	१६३×१३	
देवपुरी	×	१८२६	२१३×१०	
देहली	×	११८६	१२६×१३	कवि ने 'ढिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है।
,,	औरंगजेब	१७३४	२३६×२६	
दौलतपुर	बाबर	१५८४	१७७×२४	
धामपुर	×	,,	२२५×६	
नयनपुर	गयासुद्दीन	१५३३	१६×१७	
नरसिंहपुरा	×	×	२१६×१८	सूरत प्रांत में स्थित है
नागपुर	फिरोजखां	१५४१	२३×५	
,,	महाराजा विजयसिंह	१८२४	४१×२७	
,,	×	१५७७	६६×२६	
,,	×	१५६७	१३२×२	
नारनोल	×	१६८५	२१८×२८	
नैणवाहपत्तन	आलाउद्दीन	१५१८	१३८×१२	

पडावा	×	१८२६	२२१×२४	
फरुक्खाबाद	×	×	६६×१६	
फिरोजाबाद	इब्राहीम	१५७७	१९२×१५	
नगरु [जयपुर]	×	१७६५	१७४×१०	
बणाहटा [जयपुर]	×	१७३४	३३९×२७	
बीजवाडा	जहांगीर	१६७४	२८×१	
बूंदी	रावराजा भावसिंह	१७६८	२२२×२७	
"	"	१७२१	२५०×२७	
"	×	१८२०	२५७×६	
भगवतगढ	×	१७९८	२१९×२१	
मधूक नगर	×	१६४८	१६×१२	
मह	×	१८२०	२७१×६	
महीसार	×	१६०१	६८×१८	
मान्यखेट	×	×	११०×२०	
मालपुरा	महाराजा मानसिंह	१६४५	७३×७	
"	भगवानदास	१६४१	१७०×१६	
"	×	१३४	२०६×६	
"	×	१६८७	२४७×१२	
" मेडता	×	१६११	६४×१२	
मेदनीपुर [मारवाड]	अकबर	१६३६	१०८×२	मुहम्मदखां वहां का राज्यपाल था
मोजमाबाद	करमचंद	१५६५	१४८×१६	
मैतनाल	×	१८५६	२०५×१	
योगिनीपुर	मुहम्मद तुगलक	१३९१	९२×२१	देहली का नाम पहिले यही था।
"	"	१३९९	९७×१९	
"	×	१३६५	१६०×२७	
रणस्थंभ [रणथम्भोर]	×	१६५३	२५७×२६	
राजमहल	महाराजा मानसिंह	१६६१	५५×१४	
"	"	"	७७×२२	

रामपुर	×	१७८४	२२०×१६	
"	×	१७२७	२३६×१	
"	×	×	२२५×६	
राणापुर	हेमकरण	१५६४	८८×२७	
रावरवत्तन	राजाधिराजडूंगरसिंह	१५१२	१०६×२	
रेणी	×	१८७१	२०२×१६	
रोहतक	अकबर	१६१६	१५६×१५	
"	सिकन्दर लौदी	१५७६	८०×१६	
"	अकबर	१६५६	११६×२४	
लवाण		१७५१	२६×१६	पचवारा प्रान्त में स्थित है
लाभपुर	×	१७१३	२१६×२८	
लालकोट	महाराजा प्रतापसिंह	१८११	८×११	
वहादुरपुर	हुमायूं	१५६४	५६×१५	मेवात में स्थित है।
वारावती	गयासुद्दीन	१५७६	१६५×५	
बुरहानपुर	×	१७३२	२७६×१६	खानदेश में स्थित है
वेराट	×	×	२६×३	
वृंदावन	रावराजा विष्णुसिंह	१८३५	१६×१६	
"	सूर्यमल	१६०३	६६× ६	चौहान वंशजों का राज्य था।
"	×	१८२१	२४२×६	
शेरगढ़	×	१८४३	२१२×२	
शेरपुर	महाराजा जगन्नाथ	१६६५	४०×३	
"	×	१८५३	२५८×१	
श्रीपालव	इब्राहीम	१५८२	१४६×१०	
श्रीवालपुर	कर्णनरेन्द्र	११२०	१६६×२५	
सराजपुरी	×	१६६६	३०×२७	
सहारनपुर	बाबर	१५८७	१३७×२	
संग्रामपुर	महाराजा मानसिंह	१६६२	७६×२१	
सागपत्तन	×	१६६८	५७×१५	वागड देश में स्थित है
सालूंण	राय श्री सुरतान	१६३६	१५×४	

,,	राव श्री मालदे	१५६५	५५×४	रा.त श्री खेतसी प्रधान शासक था
सांगानेर	×	१७८४	२२०×२८	
,,	महाराजा जयसिंह	,,	२२१×११	
,,	राजा भगवानदास	१६३३	२४४×१४	
,,	महाराजा रामसिंह	×	२४६×१८	
,,	×	१७८७	२५६×२७	
,,	महाराजा रामसिंह	१७२४	२६१×२६	
साहदरा	मुलकगीर	१७३३	२०×१६	
सांरुढानगर	×	१६५४	४२×१	
सिकन्दराबाद	इब्र हीम लोदी	१५८०	१६४×१	
सिरिउजपुर	×	११४४	१०६×६	मेवाड मे स्थित
सिहनद	हुमायु	१५६२	१७३×८	
सूरत	×	१६६१	१३×२	
,,	×	१७२२	२३६×२५	
सुलतानपुर	×	१७२४	३५×१३	मालवा प्रांत में स्थित.
सुवर्णपथ	×	१५७७	८५×१	
हरसोरगढ	×	१६२८	२३६×१५	
हिसार	बहलोलसाह	१५४२	२६×१५	
,,	×	१७००	१५५×२०	

आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

कुल-वंश-जाति आदि की सूची

'आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर, की 'ग्रन्थ सूची' के सम्बन्ध में कुछ

पत्र पत्रिकाओं एवं विद्वानों के विचार

१. लोकवाणी (साप्ताहिक जयपुर)—इस सूची के प्रकाशन से देश के पुरातत्वान्वेषी विद्वानों और साहित्यकारों का ध्यान इस 'भण्डार' की ओर आकर्षित होगा। उस श्रम के लिये जो सम्पादक ने इस सूची को प्रस्तुत करने में उठाया है, हिन्दी जगत् उनका सम्मान ही करेगा ' हम आशा करते हैं कि विद्वान् इस शास्त्र भण्डार की ओर आकर्षित होंगे और उनके अन्वेषण कार्य के परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति के कुछ अमूल्य रत्न दुनियां के सामने प्रगट होंगे। ऐसे प्रयत्न में सहयोग लेने के लिये ही इस ग्रन्थ सूची का उपयोग है। आमेर शास्त्र भण्डार के साथ ही इसमें श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी शास्त्र भण्डार चान्दनगांव (जयपुर) की पूरी सूची दी गयी है जो इस पुस्तक की उपयोगिता को द्विगुणित बना लेती है।

२ वीरवाणी (जयपुर) सूची को प्रकाशित कर क्षेत्र के मन्त्री महोदय ने एक अनुकरणीय कार्य किया है इसके प्रकाशन के लिये हम क्षेत्र की प्रबन्धक समिति के मन्त्री महोदय को धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते कि ऐसे साहित्योद्धार के कार्यों की ओर उनकी अभिरुचि और प्रवृत्ति हुई है।

३. ज्ञानोदय (बनारस)— प्रस्तुत सूची शोध विषयक कार्य करने वाले विद्वानों के लिये बहुत ही उपयोगी है। अति प्रसन्नता की बात है कि आमेर ग्रन्थ भंडार के ग्रन्थों की प्रशस्ति भी निकट भविष्य में प्रकाशित होगी। '' ' सूची संग्रहणीय है।

४ जैन सदेश आगरा)— ' पुस्तक साहित्य सेवियों और अनुसंधान कर्त्ताओं के बडे काम की है। इस उपयोगी प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी को साधुवाद है। विद्वान सम्पादक ने इसमें जो परिश्रम किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

५. खण्डेलवाल जैन हितेच्छु (इन्दौर — ' यह बहुत बडा और सच्चा सेवा कार्य है जिसे महावीर क्षेत्र कमेटी ने अपने हाथ में लिया है।

६ जैन जगत् (वर्धा)— इस प्रशस्त कार्य के लिये क्षेत्र के कार्यकर्त्ता और सम्पादक विद्वान् धन्यवादार्ह हैं।

७ जैन-मित्र (सूरत)— ' ""इनकी सूची बनने की आवश्यकता थी अतः यह कार्य श्री खिन्दूकाजी ने महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से उठा लिया है मंदिर के शास्त्र भण्डारों के लिये अवश्य मंगाइये। साहित्य खोजी विद्वानों को तो अवश्य मंगाना चाहिये।

८ अनेकान्त (देहली)— "' महावीर क्षेत्र कमेटी की ओर से साहित्य प्रकाशन का यह कार्य अभिनन्दनीय है "' "पुस्तक अन्वेषक विद्वानों के बडे काम की है।

९. वीर—(देहली)— सूची के सम्पादक का प्रयत्न सराहनीय है जिन्होंने प्रयत्न और परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों को जनता के सामने उपस्थित किया। आशा है शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से साहित्य एवं इतिहास प्रेमी विद्वानों को अनुसंधान मे काफी सहायता मिलेगी। विद्वानों को ऐसी पुस्तकों की सूची अवश्य देखना चाहिये।

१०. जैन गजट (अंग्रेजी लखनऊ)—The Mahavir Kshetra Committee Jaipur deserves congratulations on publication a catalogue of the ancient manuscripts as old as 1334.

संवत् १३३४ तक के प्राचीन प्रतिलिपि वाले ग्रन्थों की सूची प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी धन्यवाद की पात्र है।

११ डाक्टर ए. एन उपाध्याय कोल्हापुर, लिखते हैं—By bringing to light the valuable contents of the Amer Bhandar you have highly obliged the students of Indian literature and those of Jain literature in particular It is a highly useful catalogue It is necessary that wide publicity should be given to the contents of the Amer Bhandar and I shall do my best in that direction

आमेर शास्त्र भण्डार के बहुमूल्य ग्रन्थों को प्रकाश मे लाकर आपने भारतीय साहित्यिकों तथा विशेषत. जैन साहित्यसेवियों के लिये बडा उपकार किया है। ग्रन्थ सूची बहुत उपयोगी है। आमेर शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों पर विस्तृत प्रकाश डालना आवश्यक है और मैं भी इस दिशा मे सभी प्रयत्न करने के लिये तैय्यार रहूंगा।

१२ प्रो० रामसिंह तोमर, इलाहबाद विश्वविद्यालय, लिखते है—भण्डारों मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री है। इस सामग्री से आपने इस ग्रन्थ द्वारा प्राच्यविद्या अनुसन्धान मे रुचि रखने वाले जगत् का परिचय कराया है। इसके लिये आप बधाई पात्र हैं। आपने बडा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी।

१३. श्री दलसुख मालवणिया जैन कलचरल रिसर्च सोसाइटी (बनारस)—आपने संशोधन विभाग की स्थापना करके अत्युत्तम कार्य किया है ऐसी सूचिया ही आगे जाकर साहित्य के इतिहास को लिखने मे बहुत काम की सिद्ध होती है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हू।

१४ श्री अगरचन्दजी नाहटा (बीकानेर)—आपने इस उपयोगी एवं महत्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर दि० समाज मे अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। प्रशस्ति संग्रह छप रही है यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई। आप अनुसंधान विभाग को जारी रख जयपुर के समस्त भण्डारों का निरीक्षण करवा कर सूची पत्र प्रकाशित कीजिए एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन करवाइये।

१५ श्रीयुत प्रकाशचन्द्रजी जैन व्यवस्थापक पन्नालाल सरस्वती भवन (ब्यावर) आपका इस दिशा में यह महान् प्रयत्न स्तुत्य है। इस सूची से साहित्य प्रसार में खासी सहायता प्राप्त होगी।

